सुकूने ख़ाना

औरतों के तर्बियती बयानों का मज्मूआ

सुकूने ख़ाना

औरतों के तर्बियती
बयानों का मजमुआ

तर्तीब

सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबंदी

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمٹیڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

सुकूने ख़ाना

तर्तीब

सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबन्दी

संयोजक

नासिर ख़ान

Sukoon-e-Khana

Compiled by
Salahuddin Saifi Naqshbandi

Edition: **2015**

Pages: **308**

प्रकाशक

2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New Delhi-2
Ph.: 011-23289786, 23289159 Fax: 011-23279998
E-mail: faridexport@gmail.com | Website: faridexport.com

Printed at : Farid Enterprises, Delhi-2

कि़ताब से पहले

﴿الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى امابعد!﴾

ज़ेरे नज़र किताब सुकूने ख़ाना हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़क़ार अहमद साहब नक़्शबंदी दामत बरकातुहुम के औरतों की इस्लाह व तर्बियत के मौज़ू पर मुल्क ज़ांबिया के शहर लूसा में पेश किए गए ख़ुत्बात का मजमूआ है।

हाँलाकि उनके मवाइज़ की अव्वल मुख़ातब तो औरतें थीं लेकिन मर्दों के लिए भी बहुत नफ़े की बातें हैं। उनको पढ़कर और उनको सुनकर मालूम होता है कि शरीअत की कितनी वाज़ेह और आसान बातें हैं जिनसे नावाक़्फ़ियत की वजह से आज समाज का हर आदमी बेसुकूनी की ज़िन्दगी गुज़ार रहा है और हर घर जहन्नम का नमूना बना हुआ है। ख़ुलूसे दिल से अगर इन कही गई बातों पर अमल किया जाए तो इन्शाअल्लाह हर घर जन्नत का नमूना बन जाएगा।

इस आजिज़ ने इन ख़ुतबात को तहरीर में लाकर किताबी शक्ल में उम्मत के सामने पेश करने की कोशिश की है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इसको बेइन्तेहा क़ुबूल फ़रमाए। हज़रत का साया उम्मत पर ता-देर रखे और आपके फ़ैज़ को क़यामत तक जारी रखे, आमीन।

इस किताब के जमा करने और तर्तीब देने में जिन दोस्तों ने मदद की है ख़ासकर यूनुस भाई, सुलेमान भाई और शाहनवाज़ भाई रावत वग़ैरह का यह आजिज़ बेइन्तेहा ममनून

है। अल्लाह तआला तमाम को अपने ख़ज़ान-ए-क़ुदरत से बेइन्तेहा हिस्सा अता फ़रमाए, आमीन।

वस्सलाम

फ़क़ीर सलाहुद्दीन सैफ़ी नक़्शबंदी अफ़ि अन्हु

ख़ुतबात एक नज़र में

○ ○ ○

﴿فالصّٰلحٰت قنتٰت حٰفِظٰت للغيب بما حفظ اللّٰه.﴾

प्यारे आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की महबूब इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब
दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

इक़्तिबास

आक़ा ने क्या पसन्द किया?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र मुबारक उस वक़्त पच्चीस साल थी और ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साथ थी। आजकल के नौजवान ज़रा इससे सबक़ सीखें। ये सिर्फ़ शक्ल व सूरत का हुस्न देखते फिरते हैं, जो सिर्फ़ चेहरों का हुस्न देखते फिरते हैं। वे ये देखें कि अल्लाह रब्बुल-इज़्ज़त के महबूब ने जिस औरत से पहला निकाह फ़रमाया वह आप से भी पन्द्रह साल उम्र में बड़ी औरत थीं और उनके दो निकाह पहले हो चुके थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी सिफ़ात को देखा, बीवी ने भी सिफ़ात देखीं, ख़ाविन्द ने भी सिफ़ात देखीं और यूँ यह निकाह हो गया और अल्लाह तआला ने फिर उस निकाह के ज़रिये अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ज़ेहनी अता फ़रमाया जैसे क़ुरआन मजीद में है ﴿لتسكنوا اليها﴾ कि तुम अपनी बीवियों से सुकून पाओ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा से इतना सुकून मिला कि आप पूरी ज़िन्दगी उस सुकून को याद करते रहे।

अज़ इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब मद्दज़िल्लुहु

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد الله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى امابعد!

اعوذبالله من الشيطان الرجيم
بسم الله الرحمٰن الرحيم.

﴿فالصّٰلحٰت قنتٰت حٰفظٰت للغيب بما حفظ الله.﴾

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين
والحمد لله رب العٰلمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰل سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰل سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰل سيدنا محمد وبارك وسلم.

जन्नती औरत

क़ुरआन मजीद की एक आयत का यह टुकड़ा है लेकिन अपने मज़मून के एतिबार से यह इतना कामिल है कि अगर कोई औरत इस पर अमल करने का दिल में अहद कर ले तो गिनती के चन्द बोलों पर अमल करने से उस औरत पर जन्नत वाजिब हो सकती है। इसमें तीन बातें बतायीं गयीं हैं:—

1. ﴿فالصّٰلحٰت﴾ "नेक बीवियाँ" तो हर शादीशुदा औरत को सबसे पहले नम्बर पर नेक बनना चाहिए क्योंकि अल्लाह

रब्बुल इज़्ज़त का हमारे ऊपर हक़ है। वह हमारे ख़ालिक़ हैं, मालिक हैं, राज़िक़ हैं तो उस परवरदिगार आक़ा का हमारे ऊपर यह हक़ है कि हम उसकी बन्दगी करें इसलिए औरत को चाहिए कि वह नेकोकार बनें। ﴿فالصّٰلحٰت﴾ नेक अमल करने वालियाँ, दौड़-द्रौड़ कर नेक अमल करने वालियाँ, भाग-भाग कर अमल करने वालियाँ, नेकी के मौक़े को तलाश करने वालियाँ, नेकी करके थकने वालियाँ और थक-थक के नेकी करने वालियाँ उनको ﴿فالصّٰلحٰت﴾ कहा जाता है। जिस तरह भूखा आदमी रोटी की तलाश में होता है उसी तरह नेक औरत नेकी की तलाश में रहती है। नमाज़ वक़्त पर अदा करे, ज़िक्र करे, तिलावत करे, अपने रब के साथ लौ लगाए, नेकी को अपनी पहचान बनाए, जैसे ही अपने घर के कामों से फ़ारिग़ हो, कभी मुसल्ले पर बैठकर नमाज़ पढ़े, कभी अल्लाह के क़ुरआन में सुकून पाए और कभी तस्बीह के ज़रिए अल्लाह के नाम के गुण गाए, अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करने वाली हो, अपने अन्दर नेकी की सिफ़ात रखने वाली हो तो ऐसी औरतों को कहा जाता है ﴿فالصّٰلحٰت﴾ नेक औरतें।

2. ﴿قانتات﴾ क़ानितात कहते हैं वह औरतें जो हर तरफ़ से हटकर कटकर अपनी पूरी तवज्जोह अपने ख़ाविन्द पर लगा दें। जिनकी तवज्जोह का क़िबला एक बन जाए जो अपनी ज़ात के लिए भी अपने ख़ाविन्द की होकर रह जाएं, अपने ख़ाविन्द से बे पनाह मुहब्बत करने वालियाँ, अपने ख़ाविन्द को टूटकर प्यार करने वालियाँ, अपने

ख़ाविन्द पर जान देने वालियाँ, अपने ख़ाविन्द की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी पर बढ़ावा देने वालियाँ, हर वक़्त अपने ख़ाविन्द की ख़िदमत में लगी रहने वालियाँ, अपने ख़ाविन्द के दिल को खुश करने वालियाँ, ऐसी औरतों को ﴿قانتات﴾ कहा जाता है।

3. और तीसरी सिफ़त फ़रमाई ﴿حٰفظٰت للغيب بما حفظ الله﴾ कि ग़ैब में जो अल्लाह ने उनको हिफ़ाज़त का हुक्म दिया है उसकी हिफ़ाज़त करने वालियाँ। इससे मुराद है कि अपनी इज़्ज़त की हिफ़ाज़त करें और ख़ाविन्द के माल की भी हिफ़ाज़त करें और अपने बच्चों की भी हिफ़ाज़त करें। ये तीन सिफ़तें अगर किसी औरत में आ जाएं तो ऐसी औरत को जन्नती औरत कहा जाता है।

क़यामत में सबसे पहला सवाल

हदीस पाक में आता है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला औरत से सबसे पहले नमाज़ के बारे में पूछेंगे और उसके बाद पूछेंगे कि क्या तेरा ख़ाविन्द तुझ से राज़ी था? अगर उसका ख़ाविन्द उससे राज़ी हुआ तो उस औरत के लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और वह आराम से जन्नत में चली जाएगी। तो इस तरह अगर पूरी ज़िन्दगी इस आयत के मुताबिक़ बना लें तो औरत के लिए जन्नत में जाना बहुत आसान है।

मर्दों के लिए तो हुक्म है क़ुरआन पढ़ें और पूरे क़ुरआन के

जितने भी मसाइल हैं उन पर अमल करें, पूरी शरिअत पर अमल करके दिखाएं, अपनी ज़िन्दगी में लागू करें, जहाँ रहते हैं उसके आसपास लागू करें, अच्छाइयों का हुक्म करें और बुराईयों से रोकें फिर जाकर उनकी बख़्शिश होगी और औरत के साथ अल्लाह तआला का मामला कितना आसानी वाला है कि उसको ऐसी चीज़ बता दी कि जिस को वह मुसल्ले पर कर सकती है, नरम बिस्तर पर कर सकती है, घर की चारदिवारी में कर सकती है। औरत अगर चाहे कि मैं अपने अल्लाह को मनाऊँ तो उसे घर की चारदिवारी से निकलने की कभी भी ज़रूरत पेश नहीं आती। चारदिवारी के अन्दर रहते हुए वह अपने मालिक को राज़ी कर सकती है, तो देखिए अल्लाह तआला को राज़ी करने की मंज़िल औरत के लिए कुछ क़दम का फ़ासला है, अपने बिस्तर पर अपने ख़ाविन्द को राज़ी कर ले और अपने मुसल्ले पर अपने रब को राज़ी कर ले तो उसके लिए जन्नत के आठों दरवाज़े खोल दिए जाएंगे।

जिनको जन्नत की बशारत मिली

अगर हम इस उम्म्त की अज़ीम औरतों की ज़िन्दगियों को देखें जिनको जन्नत की बशारतें मिल चुकी हैं तो ये तीनों सिफ़्तें उनकी ज़िन्दगी में बहुत नुमायां नज़र आएंगी। यह आजिज़ आज की इस महफ़िल में सिर्फ़ दो मिसालें पेश करता है और वे मिसालें उम्महातुल-मुमिनीन जो उम्मत की माँएं कही जाती हैं। उनकी मिसालें हैं। औरतों को चाहिए कि वह उन्हें

होश के कानों से सुनें कि उम्मत की माँऐं जिनको दुनिया में जन्नत की बशारत मिली। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ज़ुबान मुबारक से उनकी ज़िन्दगी इस आयत से किस तरह मुताबिक़ थी।

उम्मुल-मुमिनीन सैय्यदा ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की अज़दवाजी ज़िन्दगी

यह मक्का मुकर्रमा की एक बड़े इज़्ज़तदार क़बीले की औरत थीं, अल्लाह तआला ने माल व दौलत बहुत ज़्यादा दिया था, अक़्ल व समझ अल्लाह तआला ने बहुत ही ज़्यादा दी थी, अल्लाह तआला ने उन्हें अख़्लाक़े हमीदा अता किए थे। लिहाज़ा उनकी एक शादी हुई, ख़ाविन्द गुज़र गए फिर निकाह हुआ, फिर ऐसा ही हुआ तो ये अपने माल को तिजारत में इस्तेमाल करती थीं और शहर में उनको कोई अच्छा बन्दा नज़र आता तो उसको अपना माल देकर तिजारत के लिए भेजतीं और इस तिजारत से उनको नफ़ा होता।

यह अपने वक़्त की बड़ी अमीर औरत थीं मक्का मुकर्रमा में जो भी उनका नाम लेता था वह समझता था कि यह बहुत ही बाइज़्ज़त और मालदार और फ़ज़ल व कमाल रखने वाली ख़ातून हैं, उनका लक़ब ताहिरा पड़ गया। अब ज़रा सोचिए कि इस्लाम लाने से पहले के ज़माने में जब कि बेटियों को ज़िन्दा दफ़न कर दिया जाता था। जब कि औरतें बाज़ार में बिका करती थीं। उनकी क़ीमत लगा करती थी, उस वक़्त इस औरत

को उस माहौल में ताहिरा के नाम से पुकारा जाता था। ताहिरा का मतलब होता है पाकीज़ा, पाक ज़िन्दगी गुज़ारने वाली, तो इस लक़ब से ही उनकी अज़मत सामने आती है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में क्या सुना

उनको पता चला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में कि मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम नामी एक नौजवान है। दयानत, अमानत, सदाक़त में वह बुहत मशहूर है, लोग उसको बहुत पसन्द करते हैं तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पैग़ाम भेजा कि आप मेरा माल लेकर तिजारत के लिए शाम जाएं और जितना आम लोगों को पैसा देती हूँ आपको मैं दुगने पैसे दूँगी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने चचा अबू तालिब से इसका ज़िक्र किया तो उन्होंने कहा कि भतीजे यह रिज़्क़ है जो तुम्हारे लिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भेजने का सबब बनाया है।

प्यारे नबी शाम के सफ़र पर

लिहाज़ा उनके मशवरे पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने शाम का सफ़र फ़रमाया तो उस औरत ने अपना एक ग़ुलाम जिसका नाम मैसरा था उसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ कर दिया और उसके ज़िम्मे लगाया कि इस पूरे सफ़र की कारगुज़ारी तुमने वापस आकर मुझे सुनानी है। नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़र पर तशरीफ़ ले गए और इस सफ़र में फिर एक राहिब से भी मुलाक़ात हुई और उसने आपको बताया कि आप अल्लाह के नबी बनेंगे। फिर जो तिजारत का सामान था उसको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इतना सही सही बेचा कि ग़ुलाम भी हैरान रह गया आप की दयानत पर, आपकी सदाक़त पर। फिर वहाँ से दूसरा माल ख़रीदा और वापस तशरीफ़ ले आए। अल्लाह की शान देखिए कि ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने तिजारत के माल को पहले भेजती थीं तो जितना नफ़ा इसमें होता था इस बार नफ़ा उससे कई गुना ज़्यादा हुआ। देखिए माल पराया था लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास सदाक़त अपनी थी, दयानत अपनी थी, ज़हानत अपनी थी। दन सिफ़तों को उन्होंने पराए माल पर लगाया। अल्लाह तआला ने उनके लिए फ़ायदामंद बनाया तो अगर आज कोई आदमी अपने माल पर इन सिफ़तों को लगाएगा तो अल्लाह तआला उसको क्यों नहीं रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमाएगा।

शाम के सफ़र से वापसी

जब सफ़र से वापस आए तो मैसरा ने पूरे सफ़र के हालात सुनाए, कारगुज़ारी सुनाई। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा बड़ी समझदार थीं। उन्होंने इस नौजवान के अन्दर बहुत अज़मत के निशान ढूढंने के लिए उस वक़्त कि जब किसी को वहम व गुमान भी नहीं था। इस नेक औरत ने उस नौजवान के अन्दर

बहुत अज़मतें पा लीं। यहाँ तक कि उनके दिल में ख़्याल आया कि चाहे यह ग़रीब घर का बच्चा है मगर इन्सानी सिफ़ात से माला-माल है लिहाज़ा क्यों न मैं इसको अपनी ज़िन्दगी का साथी बनाऊँ? लिहाज़ा उनकी एक सहेली थी। उनका नाम नफ़ीसा था तो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपनी सहेली नफ़ीसा को अपने दिल का राज़ बताया कि मैं चाहती हूँ कि यह नौजवान इतने अच्छे अख़्लाक़ वाला, आदतों वाला है कि मैं इनकी जीवन साथी बनकर रहूँ। मेरे पास इस दुनिया का माल है और उनके पास अच्छे अख़्लाक़ की दौलत है तू इसका ज़रिया बन जाए तो कितना अच्छा है। नफ़ीसा समझदार नौजवान लड़की थी। वह कहने लगी कि मैं तुम्हारी बात का रास्ता हमवार करती हूँ। लिहाज़ा वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुई और अर्ज़ करने लगी कि ऐ मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! आप जवान हैं, आप निकाह क्यों नहीं कर लेते? तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मेरे पास तो अभी निकाह का सामान भी नहीं है। तो उसने आगे कहा कि अगर कोई सबब बने तो क्या आप राज़ी हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हाँ। लिहाज़ा जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में हाँ कर दी तो वह खुशी-खुशी वापस आई और उस ने आकर कहा कि ख़दीजा तुम्हारी मुराद पूरी हो गई। अब इसके लिए बाक़ायदा तरीक़ा अपनाओ। लिहाज़ा ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने अपने चचा को अपने दिल का राज़ बता दिया कि मैं निकाह करना चाहती हूँ और

मेरी निगाह में इस नौजवान से बढ़कर कोई बेहतर आदमी दुनिया में नहीं है तो उनके चचा ने अबू तालिब से राब्ता किया। चचा अबू तालिब भी ख़ुश हुए कि मेरे भतीजे के लिए अरब की बेहतरीन औरत का रिश्ता आया है।

महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निकाह

इस तरह निकाह के लिए एक जगह इकठ्ठे हुए। उस मौक़े पर अबू तालिब ने हैरान कर देने वाला ख़ुत्बा पढ़ा और उसमें उन्होंने अपने भतीजे यानी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ऐसे फ़ज़ाईल बयान किए, ऐसी सिफ़्तें बयान कीं, कि हक़ अदा कर दिया और फिर कहा कि मेरे इस भतीजे के निकाह के लिए आप जो भी चाहें मेहर तय करें, मैं अदा करने के लिए तैयार हूँ। उसके बाद ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा के चचा ने कहा, “वह नर है जिसकी नाक में ज़ख़्म नहीं लगाया जाता।” यह अरब में एक कहावत थी कि जो ऊँट बांधने के क़ाबिल होता है उसकी नाक में सुराख़ करके उसको एक जगह बाँध देते थे और जो अच्छी नस्ल का ख़ूबसूरत ऊँट होता उसके बाँधने की ज़रूरत नहीं थी उसको रेवढ़ में वैसे ही छोड़ देते थे कि वह जहाँ चाहे फिरे। उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के बारे में वह उस वक़्त मक़ूला इस्तेमाल किया कि यह नौजवान वह नर है कि जिसके नाक में ज़ख़्म नहीं लगाया जाता यानी हम इसके लिए मेहर की कोई शर्त नहीं लगाएंगे। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का निकाह हुआ और

आपके चचा ने इस मेहर में बीस जवान ऊँट अदा कर दिए, जिनको उसी वक़्त ज़िब्ह करके पूरे शहर की दावत कर दी गई।

इस तरह ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आयीं तो उन्होंने देखा कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब अकेले हैं और आपकी ख़िदमत के लिए तो मैं खुद हूँ, बाहर की ख़िदमत के लिए कोई नहीं तो उन्होंने पहला काम यह किया कि अपना एक ग़ुलाम जिनका नाम ज़ैद बिन हारिसा था, उनको नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हदिया कर दिया। अब देखिए नेक बीवियाँ अपने ख़ाविन्द का दिल कैसे जीत लेती हैं तो घर की ख़िदमत अपने ज़िम्मे रखी और बाहर की ख़िदमत के लिए अपना ग़ुलाम दे दिया।

ख़ाविन्द के लिए माल की क़ुर्बानी

जब यह निकाह हुआ तो पूरे मक्का में बातें चलने लग गयीं कि देखो यह नौजवान ग़रीबों में सबसे ग़रीब और यह औरत अमीरों में सबसे अमीर और इनका आपस में निकाह हो गया। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा को जब यह बात पहुँची तो उन्हें यह बुरा लगा कि लोग मेरे ख़ाविन्द को सबसे ग़रीब कहें। इसलिए उन्होंने क्या किया? अपना जितना भी माल था कुल माल नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हदिया कर दिया, आपकी मिल्क कर दिया। इसलिए लोग हैरान होकर कहने लगे कि देखो मुहम्मद जैसा अमीर नौजवान मक्का में

नहीं और ख़दीजा जैसी क़ुर्बान होने वाली बीवी की मिसाल पूरे क़बीले में नहीं। तो देखिए कि नेक बीवियाँ अपने ख़ाविन्दों पर अपना सब कुछ निछावर कर देती हैं। यूँ फिर वे हुकूमत करती हैं। ख़ाविन्द के दिलों में उनकी यादें होती हैं।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की औलादें

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को उनके माल से बहुत फ़ायदा हुआ और आपने इस माल को ख़ैर के काम के लिए इस्तेमाल किया। शादी के बाद फिर औलादें होने लगीं तो सबसे पहले आपके यहाँ बेटा हुआ जिसका नाम आपने क़ासिम रखा और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की कुन्नियत अबू-क़ासिम मशहूर हुई। फिर उसके बाद बेटियाँ हुईं ज़ैनब, रुक़ैया, उम्मे कुलसूम और एक बेटा हुआ जिसका नाम अब्दुल्लाह रखा गया उसको तैयब और ताहिर भी कहा गया और एक बेटी हुई जिनको फ़ातिमा कहा गया मगर अल्लाह की क़ुदरत कि आपके जितने बेटे थे वे बचपन ही में वफ़ात पा गए और आपकी चार बेटियाँ ज़िन्दा रहीं और उन चार में से भी तीन बेटियाँ आपकी ज़िन्दगी में वफ़ात पा गयीं और सैय्यिदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा जो आपकी सबसे छोटी और लाडली बेटी थीं आपकी वफ़ात के छः महीने बाद इस दुनिया से वह भी रुख़्सत हो गयीं।

आक़ा ने क्या पसन्द किया?

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र मुबारक उस वक़्त

पच्चीस साल थी और ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की उम्र चालीस साल थी। आजकल के नौजवान ज़रा सबक़ सीखें। ये सिर्फ़ शक्ल व सूरत का हुस्न देखते फिरते हैं जो सिर्फ़ चेहरों का हुस्न देखते हैं वे ये देखें कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने जिस औरत से पहला निकाह फ़रमाया वह आप से भी पन्द्रह साल उम्र में बड़ी ख़ातून थीं और उनके दो निकाह पहले हो चुके थे और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उनकी सिफ़ात को देखा, बीवी ने भी सिफ़ात देखीं, ख़ाविन्द ने भी सिफ़ात देखीं और यूँ यह निकाह हो गया और अल्लाह तआला ने फिर इस निकाह के ज़रिए से अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिमाग़ी सुकून अता फ़रमाया जैसे क़ुरआन मजीद में है ﴿لتسكنوا اليها﴾ कि तुम अपनी बीवियों से सुकून पाओ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा से इतना सुकून मिला इतना सुकून मिला कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरी ज़िन्दगी उस सुकून को याद करते रहे।

ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम में क्या महसूस किया

लिहाज़ा जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्र मुबारक चालीस साल के क़रीब हुई तो छः महीने ऐसे गुज़रे कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब आता और वह दिन में पूरा हो जाता। इसको "रुया-ए-सादिक़ा" (सच्चा ख़्वाब)

कहा जाता है। पूरे महीने आप ख़्वाब देखते वह सच्चा हो जाता। इन्हीं ख़्वाबों के ज़रिए ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा का दिल इस बात को जान गया था कि आप एक अज़ीम हस्ती हैं और आपसे अल्लाह तआला को काम लेना है। यह बीवी होती है जो ख़ाविन्द की पोशीदा सलाहियतों को जान कर उसकी अज़्मत की क़ायल होती हैं। आजकल की बीवियाँ तो अपनी आँखों से भी अपने ख़ाविन्द की ख़ूबियाँ देखें तो उनको नज़रअन्दाज़ कर देती हैं। यह वह बीवी थीं कि जो ख़ूबियाँ अभी ज़ाहिर नहीं हुईं उनको पहचानकर पहले से ही उनकी अज़्मत अपने दिल में मान चुकी थीं।

ग़ारे-ए-हिरा की इबादत

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़ारे हिरा में जब इबादत के लिए तशरीफ़ ले जाते तो कभी-कभी ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा पीछे आपको पानी और रोटी देने के लिए वहाँ जातीं थीं। ज़्यादातर तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूरे हफ़्ते के लिए कुछ रोटी और पानी साथ ले जाते थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को इबादत का शौक़ इतना ज़्यादा हुआ कि एक-एक हफ़्ते आप वहाँ क़याम फ़रमाते और अल्लाह तआला की इबादत में लगे रहते। ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा ने कभी यह ऐतिराज़ नहीं किया कि आप घर से क्यों चले जाते हैं? वह समझती थीं कि आप अपने रब की तरफ़ रुजू कर रहे हैं और यह एक नेकी की बात है और बीवी को चाहिए कि वह नेकी में मददगार बने रुकावट न बने।

पहली "वह्‌ी" और ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की तसल्ली

फिर एक वह दिन आया जब जिब्राइल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम "वह्‌ी" लेकर आए और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को आकर कहा,

﴿اقرأ باسم ربك الذى خلق.﴾

क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इससे पहले कभी पढ़ा नहीं था तो आपने जवाब में फ़रमाया ﴿ما انا بقارى﴾ मैं तो पढ़ा हुआ नहीं हूँ तो उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपने सीने से लगाया और ख़ूब अच्छी तरह दबाया। यहाँ मुहद्दिसीन ने लिखा है कि यह भी फ़ैज़ हासिल होने का एक तरीक़ा है। इसलिए अल्लाह वालों के साथ लोग गले मिलते हैं तो कई बार अल्लाह तआला एक सीने से फ़ैज़ दूसरे सीने में डाल देते हैं। जब तीन बार ऐसा हुआ तो उसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पढ़ना शुरू कर दिया मगर क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जिब्राईल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को अपनी असली हालत में देखा था और यह कैफ़ियत पहली बार हुई थी तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर एक ख़ौफ़ सा तारी था। और यह एक फ़ितरी और तबई सी चीज़ है कि कोई अजीब बात पेश आए तो इन्सान फ़ितरी तौर पर थोड़ी देर को घबरा जाता है तो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब अपने घर तशरीफ़ लाए तो आप ने फ़रमाया ﴿زملونى زملونى﴾ मुझे कम्बल उढ़ा दो, मुझे

कम्बल उढ़ा दो। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी ने आपको बिस्तर पर लिटा दिया फिर क़रीब आकर आपसे पूछा ऐ मेरे महबूब आपको क्या महसूस हो रहा है? आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ﴿خشيت على نفسى﴾ मुझे लगता है कि कहीं मेरी जान ही न चली जाए। जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बात कही तो बीवी साहिबा जो आपकी आशिक़ा थीं, क़द्रदान थीं, उन्होंने अल्लाह की क़सम खाकर कहा ﴿كلا﴾ हर्गिज़ नहीं ﴿والله﴾ अल्लाह की क़सम ﴿لا يخزيك الله﴾ अल्लाह तआला आपको रुसवा नहीं फ़रमाएंगे। फिर उन्होंने इस बात पर दलील दी और दलील में कहने लगीं

﴿انك لتصل الرحم﴾ आप सिला रहमी करने वाले हैं,

﴿وتحمل الكل﴾ और दूसरों का बोझ उठाने वाले हैं,

﴿وتقرى الضيف﴾ मेहमान नवाज़ी करने वाले हैं,

﴿وتكسب المعدوم﴾ जिनके पास कुछ नहीं होता उनको कमा कर देने वाले हैं,

﴿وتعين على نوائب الحق﴾ और नेक कामों में आप दूसरों के मददगार बनने वाले हैं,

क्योंकि आपके अन्दर ये सिफ़ात हैं। ऐसी सिफ़ात वाले बन्दे को अल्लाह ज़ाए नहीं फ़रमाएंगे। यह देखिए कि नेक बीवी की सिफ़्त कैसी होती है कि पहले वह किया जो ख़ाविन्द ने कहा यानी कम्बल उढ़ा दिया और फिर पास बैठकर प्यार भरी आवाज़ से मीठे-मीठे बोलों से ऐसी तसल्ली की बातें कहीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते हैं कि मेरे दिल

का जो ग़म था वह ख़त्म हो गया। यह नेक बीवियाँ होती हैं और इस तरह वह अपने ख़ाविन्द के दिल को जीता करती हैं। ख़ाविन्द के दिल लड़ाई से नहीं जीते जाते, तलवार से नहीं जीते जाते, प्यार के ज़रिए जीते जाते हैं। जो औरत अपने ख़ाविन्द का दिल प्यार से नहीं जीत सकी वह तलवार से भी अपने ख़ाविन्द का दिल नहीं जीत सकती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत तसल्ली हो गई।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को कहाँ ले गयीं

मगर बीवी ऐसी कि इतने पर ही उसने काम को ख़त्म नहीं किया। जब अगला दिन हुआ तो उनके एक चचेरे भाई थे जो तौरात के बड़े माहिर थे, इबादत गुज़ार थे। वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर वहाँ तशरीफ़ ले गयीं और वहाँ जाकर कहा ﴿اسمع لابن اخيك﴾ कि अपने भाई के बेटे से पूछें कि उनको क्या मामला पेश आया तो वरक़ा बिन नौफ़ल इसाई थे और इबरानी ज़बान जानते थे तो उन्होंने पूछा और फिर कहा यह वही फ़रिश्ता है जो मूसा अलैहिस्सलाम पर आता था, आप पर आया है तो आप तो अल्लाह के नबी हैं और फिर तौरात में जो निशानियाँ लिखी हुई थीं वह बतायीं कि आपकी क़ौम आपकी मुख़ालिफ़त करेगी और एक वक़्त आएगा कि आपकी क़ौम आपको शहर से निकाल देगी। इस पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने हैरान होकर पूछा कि क्या मुझे

निकाल दिया जाएगा? उन्होंने कहा हाँ ऐ काश! मैं उस वक़्त तक ज़िन्दा होता तो आपकी मदद करता। इससे इतना हुआ कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को यह यक़ीन हो गया कि यह कुछ मामला हुआ यह "वही" का था और अल्लाह तआला का पैग़ाम मुझे मिला है।

सबसे पहले आप पर कौन ईमान लाया?

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को लेकर घर आयीं और उन्होंने घर में आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान लाकर एक बहुत बड़ी फ़ज़ीलत पा ली। तो देखें कि जब तारीख़ (इतिहास) बन रही होती है उस वक़्त तसलीम कर लेना बड़ी फ़ज़ीलत होती है। जब तारीख़ बन जाती है तो दुश्मन भी मान लिया करते हैं। ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की यह बहुत बड़ी सिफ़्त थी कि जब पूरी दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब का कोई साथी नहीं था, आपकी तसदीक़ करने वाला कोई नहीं था उस वक़्त आपकी बीवी साहेबा ने कलिमा पढ़ा और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर ईमान ले आयीं। इस तरह कलिमा पढ़ने में यह औरत सारी दुनिया से बाज़ी ले गयीं और यही नहीं कि वह ख़ुद ईमान ले आयीं बल्कि उन्होंने घर के अन्दर माहौल ऐसा बना रखा था और अपने ख़ाविन्द की इतनी इज़्ज़त बना रखी थी कि घर के छोटे भी ईमान ले आए, लिहाज़ा उनके ग़ुलाम ज़ैद बिन हारिसा ग़ुलामों में सबसे पहले

ईमान ले आए और इन दिनों हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की किफ़लत में थे, उनकी वालिदा फ़ातिमा बिन्त असद जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से बहुत मुहब्बत करती थीं और उसने माँ की तरह उनको पाला था वह दिल में समझ गयीं थीं कि यह अज़ीम इन्सान हैं तो उसने अपनी ज़िन्दगी में अपने बेटे को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सोहबत में दे दिया था। लिहाज़ा आप ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के पास इस वक़्त रहते थे तो बच्चों में हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान ले आए, तो देखिए सिर्फ़ अपने आप ईमान नहीं लायीं बल्कि घर का माहौल ही ऐसा बनाया कि घर के छोटे भी ईमान ले आए फिर इसके बाद सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो आज़ाद मर्दों में सबसे पहले सिद्दीक़-ए-अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ईमान ले आए, फिर आपकी बेटियाँ भी आप पर ईमान ले आयीं तो इससे अन्दाज़ा लगाइए कि नेक बीवियाँ अपने ख़ाविन्द को कैसे घर में इज़्ज़त देती हैं।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की पहली नमाज़

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम कुछ ज़माने के बाद एक जगह तशरीफ़ ले गए तो वहाँ जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चश्मे पर वुज़ू करना सिखाया और फिर नमाज़ पढ़ना सिखाया, यह शुरू में

जबकि पूरी नमाज़ फ़र्ज़ नहीं हुई थी उस वक़्त की बात है। इबादत सिखाई, कुछ रकूआत सुबह पढ़नी कुछ रकूआत शाम को पढ़नी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम घर तशरीफ़ लाए और आपने ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि मुझे इस तरह जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने वुज़ू करना सिखाया और नमाज़ पढ़ना सिखाया। यह ऐसी नेक बीवी थीं कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को नमाज़ पढ़ते देखा तो आपने वैसा ही वुज़ू किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे फिर इसी तरह नमाज़ अदा की। तो उनको जो फ़ज़ीलतें हासिल कीं उनमें से एक फ़ज़ीलत तो यह है कि ईमान लाने में भी सबसे आगे थीं और इस उम्मत में सबसे पहले नमाज़ पढ़ने में सबसे आगे निकल गयीं।

इसीलिए एक सहाबी कहते हैं कि मैंने एक जगह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को देखा कि वह आए उन्होंने वुज़ू किया नमाज़ पढ़ी फिर मैंने एक औरत को देखा उन्होंने भी बिल्कुल उसी तरह किया, फिर एक बच्चे को देखा और वह बच्चा अली मुर्तज़ा थे। उन्होंने भी इसी तरह नमाज़ पढ़ी।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मीठे बोल

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने नबुव्वत का दावा फ़रमाया तो क़ुरैश-ए-मक्का सब के सब मुख़ालिफ़ हो गए और उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को तकलीफ़ें पहुँचाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। अल्लाह के नबी बहुत ग़मज़दा होते,

जब भी घर तशरीफ़ लाते आपकी बीवी साहिबा अपने मीठे बोल से मुहब्बत भरी बातों से अल्लाह के महबूब से यह कहतीं कि आप यह तो बताएं कौन से रसूल हैं जिनकी क़ौम ने उनकी मुख़ालिफ़त नहीं की। आपकी अगर लोग मुख़ालिफ़त करते हैं तो यह कौन सी बड़ी बात हुई। जब वह यह बात कहतीं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाते थे कि यह सुनकर मेरे दिल को तसल्ली हो जाती थी। देखो यह इज़दवाजी ज़िन्दगी कि बाहर से ग़मज़दा ख़ाविन्द घर आए और बीवी अपनी मुहब्बत भरी बातों से ख़ाविन्द के ग़म को दूर कर दे और आजकल तो हँसता मुस्कराता ख़ाविन्द घर आता है और बीवी उससे जंग करने के लिए तैयार बैठी होती है। फिर कहती है कि ख़ाविन्द हमारी बात नहीं सुनते, हमारी बात नहीं मानते, कोई तावीज़ मिल जाए कि ख़ाविन्द हमारी मुठ्ठी में आ जाए।

शरीक-ए-हयात जब शरीक-ए-ग़म बनी

इसी दौरान क़ुरैश-ए-मक्का ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ बायकाट कर लिया। लेन-देन हर तरह से बन्द करके समाजी बायकाट कर दिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक घाटी थी जिसका नाब शोबा अबि तालिब था वहाँ आ गए। अब बीवी की अज़मत देखें यह तो अमीर घराने की थीं और उनका ख़ानदान तो बड़े घराने का था यह अगर चाहतीं तो अपने मायके चली जाकर ऐश आराम के साथ ज़िन्दगी गुज़ारतीं और यह कह सकती थीं कि आप जाने और आप का

मिशन जाने मगर यह वफ़ादार बीवी थीं। उस बीवी ने कहा कि मैं आपके साथ हूँ। लिहाज़ा वह भी शोबा अबि तालिब में गयीं और इतनी नाज़ व नेमत में पली हुई औरत वहाँ पर कई-कई दिन फ़ाक़े से गुज़ारतीं। यह सिफ़्त होती है बीवी की कि ख़ाविन्द के ग़म को अपना ग़म समझती हैं, ख़ाविन्द के दुःख को अपना दुःख समझती हैं। अब यह जो दुःख उन्होंने झेला इख़्तियारी था। अगर यह चाहतीं तो अपने मायके से मदद ले सकती थीं, अपने मायके वालों के पास जाकर ठहर सकती थीं मगर नहीं वह समझती थीं कि बीवी को ख़ाविन्द के साथ कैसे होना चाहिए इसलिए तीन साल ऐसी हालत में गुज़ारे कि कई-कई दिन खाने को कुछ नहीं मिलता, पीने को कुछ नहीं मिलता, यह बहुत कठिन वक़्त था मगर उन्होंने अपने ख़ाविन्द का साथ नहीं छोड़ा।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा का आख़िरत का सफ़र

आख़िर जब वहाँ से निकले तो फिर थोड़े ज़माने के बाद ही हिजरत से तीन साल पहले पैंसठ साल की उम्र में इन्तिक़ाल हो गया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को बहुत बड़ा दुःख हुआ, उस साल में आपके चचा भी फ़ौत हुए और आपकी बीवी भी फ़ौत हुई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उस साल का नाम (عام الحزن) ग़म का साल रखा। देखो यह होती हैं अच्छी बीवियाँ कि अगर फ़ौत हो जाएं तो ख़ाविन्द उसको

ग़म का साल कहे, उसको निजात का साल न कहे जैसा कि आजकल की कोई औरत हो तो उसका ख़ाविन्द समझता है कि मेरी जान छूट गई। तो नेक बीवियों की पहचान देखिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इसका नाम ग़म का साल रखा।

तीन कामिल औरतें

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मर्दों में तो बहुत कामिल लोग गुज़रे मगर औरतों में तीन औरतें बहुत कामिल गुज़रीं:—

1. बीबी मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा,
2. आसिया बिन्ते मज़ाहिम फ़िरऔन की बीवी,
3. ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवी।

इन तीन औरतों का नाम लिया कि ये तीन औरतें बहुत कामिल गुज़रीं। अब ज़ेहन में सवाल पैदा होता है कि इन तीन औरतों का नाम क्यों लिया गया? अल्लाह तआला हमारे बड़े बुज़ुर्गों को जज़ा-ए-ख़ैर दे। उन्होंने उलूम और मआरिफ़ के दरिया बहाए। एक-एक नुक़्ता खोल-खोल कर बयान कर दिया तो उन्होंने यहाँ यह नुक़्ता लिखा, वे फ़रमाते हैं कि ये तीनों वे औरतें हैं जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में वक़्त के नबी की किफ़ालत की ओर फिर ख़ुद उसी नबी पर ईमान ले आयीं।

लिहाज़ा बीबी मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा को देखें। उन्होंने एक बच्चे को अपनी गोद में पाला और फिर उसी बच्चे को

नबी तसलीम किया। यह छोटी सी बात नहीं होती।

आसिया बिन्ते मुज़ाहिम रज़ियल्लाहु अन्हा को देखें कि उन्होंने मूसा अलैहिस्सलाम को अपने घर में पाला। उनकी आँखों के सामने पलने वाला बच्चा। उन्होंने यह नहीं समझा कि यह तो मेरा बच्चा नहीं है। जब अल्लाह की नेमत इस पर आई तो उन्होंने हक़ीक़त को तसलीम कर लिया और मूसा अलैहिस्सलाम पर ईमान ले आयीं।

और तीसरी ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा कि उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से उस वक़्त निकाह किया जबकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ग़रीबी के आलम में थे, तन्हाई के आलम में थे। उन्होंने अव्वल अपने माल से, अपनी ख़िदमत से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को मज़बूत किया और जब अल्लाह के महबूब को नबुव्वत मिली तो उन्होंने फिर हक़ीक़त को तसलीम कर लिया तो गोया इन तीनों औरतों में एक ख़ास चीज़ यह पाई जाती है कि यह हक़ीक़त को तसलीम करने वाली औरतें थीं। क्या आज की औरतें हक़ीक़त को तसलीम करती हैं?

अल्लाह के महबूब ने क्या फ़रमाया?

अल्लाह के महबूब ने फ़रमाया कि जो औरत इस हाल में मरे कि उसका ख़ाविन्द उससे राज़ी हो उसके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल दिया जाता है। क्या आज की औरतें इस हक़ीक़त को तसलीम करने के लिए तैयार हैं? अगर तैयार हैं तो यह आज अपने दिल में अहद कर लें कि हम आज के बाद

अपने ख़ाविन्द के दिल को ग़मज़दा नहीं करेंगी बल्कि ग़मज़दा परेशान ख़ाविन्द के दिल को ख़ुश करने के लिए हम अपना सब कुछ उसको पेश कर देंगी। आप भी हकीक़त को तसलीम करने की आदत डालिए। आपको भी अज़ीम औरतों में क़यामत के दिन शुमार कर लिया जाएगा जिसको अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने फ़ज़ीलत दी। आप अगर अपने घर में उसको फ़ज़ीलत देंगी तो इस हकीक़त को तसलीम करने पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ आपको बहुत अज्र मिलेगा।

अल्लाह के महबूब क़ब्र में ख़ुद उतरे

लिहाज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए जो आजकल जन्नतुल-मुअल्ला कहा जाता है, पहाड़ों की एक वादी है वहाँ क़ब्र खोदी और दफ़न के लिए ख़ुद अन्दर तशरीफ़ ले गए।

पाँच सहाबा और सहाबियात रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं जिनकी क़ब्र में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ख़ुद उतरे जिनमें से एक ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा हैं बाकी तफ़सील मैं करूँ तो वक़्त कम है मैं अपना उनवान पूरा नहीं कर सकूँगा।

जिनकी याद आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भुला न पाए

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अक्सर ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा को याद करते थे। आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा

फ़रमती हैं कि मुझे कभी किसी पर इतना रश्क नहीं आया जितना कि मुझे ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा पर रश्क आया कि वह बूढ़ी हो गयीं थीं मगर इसके बावजूद अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको याद करते थे और आपकी मुबारक आँखों में आँसू आ जाया थे। एक बार मैंने कह दिया ऐ अल्लाह के नबी! आप उस बूढ़ी औरत को याद करते हैं जब कि अल्लाह तआला ने आपको उससे बेहतर बीवी दे दी यानी अपनी तरफ़ इशारा करती थीं कि मैं कम उम्र हूँ, नौजवान हूँ, ख़ूबसूरत हूँ तो मैं इस तरफ़ इशारा करती कि अल्लाह के महबूब आप उस बुढ़िया को याद करते हैं जबकि अल्लाह तआला ने आपको उस से बेहतर नेमत दे दी। तो अल्लाह के महबूब के चेहरे पर ग़ुस्से के आसार ज़ाहिर हुए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, "आएशा! मुझे ख़दीजा के बारे में तकलीफ़ न देना इसलिए कि—

> **ख़दीजा ने उस वक़्त में साथ दिया जब सारी दुनिया ने मेरी मुख़ालिफ़त की,**
>
> **ख़दीजा ने उस वक़्त मेरी तसदीक़ की जब पूरी दुनिया में मेरी तसदीक़ करने वाला कोई नहीं था,**
>
> **ख़दीजा के ज़रिए अल्लाह तआला ने मुझे औलाद दी।"**

लिहाज़ा मैं यह समझ गई कि आज के बाद ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा के मामले में कोई बात नहीं करनी है।

जब आक़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रो पड़े

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हाला

बिन्ते खुवैलिद जो ख़दीजा रज़ियल्लाहु अन्हा की बहन थीं वह कभी कभी मदीने आया करती थीं तो एक बार वह मेरे पास बैठी हुई बातचीत कर रही थीं कि अल्लाह के महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर से घर में आए तो क्योंकि बहनों की आवाज़े मिलती हैं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के कानों में जब हाला की आवाज़ पहुँची तो आपको ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की याद आ गई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुबारक आँखों से आँसू आ गए—

टपक पड़ते हैं आँसू जब तुम्हारी याद आती है

यह होती है बीवी कि ऐसी दिल में यादें छोड़े कि अगर गुज़र भी जाए तो ख़ाविन्द याद करे तो आँखों से आँसुओं के साथ मुहब्बत की तसदीक़ हो जाए।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की सहेलियाँ

इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब कभी कोई क़ुर्बानी करते तो उसका गोश्त ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की सहेलियों के घरों में भेजा करते थे। पूरी ज़िन्दगी अल्लाह के महबूब का यही अमल रहा। इसको कहते हैं ख़िदमत और इसको कहते हैं वफ़ा, इसको कहते हैं मुहब्बत कि बीवी गुज़र गई लेकिन ख़ाविन्द पूरी ज़िन्दगी में जब भी क़ुर्बानी करता है अपनी बीवी की सहेलियों को भी गोश्त भेजता है और अपनी उस बीवी की यादें इस तरह ताज़ा करता है।

ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की फ़ज़ीलतें

लिहाज़ा ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा को अल्लाह तआला ने कुछ बातों में अव्वलियत अता फ़रमाई थी–

एक अव्वलियत तो यह थी कि वह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब पर सबसे पहले ईमान ले आईं।

दूसरी फ़ज़ीलत उनको यह मिली कि इस उम्मत में सबसे पहले उन्होंने नमाज़ पढ़ी।

और एक फ़ज़ीलत यह हुई कि अल्लाह तआला के महबूब की औलाद उनके पेट से हुई।

एक फ़ज़ीलत यह थी कि उनको दुनिया में जन्नत की बशारत दी गई।

और एक ख़ूबी यह थी कि दुनिया में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको सलाम भेजे। लिहाज़ा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि ख़दीजा जिब्राईल अलैहिस्सलाम आए हैं और तुम्हें अल्लाह का सलाम कह रहे हैं।

देखो जब बीवी ख़ाविन्द पर क़ुर्बान होती है तो अर्श पर रहमान को कितनी खुशी होती है कि वह अर्श से अपने सलाम फ़र्श पर भेज देते हैं तो ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा ने जब यह सुना तो हदीस पाक में आता है कि यह सुनकर उन्होंने कहा अल्लाह तआला का सलाम है, जिब्राईल को सलाम हो और आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर सलामती हो, अल्लाह की रहमतें हों और बरकतें हों।

मुहद्दिसीन ने लिखा है कि इस जवाब से उनके इल्म और ज़हानत का पता चलता है।

उनको एक फ़ज़ीलत यह हासिल हुई कि वह वफ़ात पाने वाली नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की पहली बीवी हैं।

और एक यह भी फ़ज़ीलत हासिल हुई कि दफ़न करने के लिए अल्लाह के महबूब खुद क़ब्र में उतरे।

इन बातों से पता चलता है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब को उनसे कितनी मुहब्बत थी।

उम्मुल-मोमिनीन हज़रत आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की एक और बीवी मोहतरमा थीं जिनका नाम आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा है। पहली मिसाल उनकी दी जो उम्र में बड़ी थीं और दूसरी मिसाल उनकी दे रहा हूँ जो उम्र में बहुत छोटी थीं।

फ़रमाती हैं कि मैं गुड़ियों से खेलती थी बल्कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के घर तशरीफ़ लायी तो उस वक़्त भी गुड़ियों से खेलती थी। उन्होंने एक घोड़ा बना रखा था जिसकी आँखें वग़ैरह ज़ाहिर नहीं थीं मगर उसके "पर" से बने हुए थे, रफ़ क़िस्म की बनी हुई चीज़ थी। एक दफ़ा उससे बैठी हुई खेल रही थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा यह क्या है? कहने लगीं यह मेरा घोड़ा है। आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि घोड़े के "पर" तो नहीं होते। कहने

लगीं कि सुलेमान अलैहिस्सलाम का घोड़ा था उसके "पर" थे। यह सुनकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मुस्करा पड़े तो इतनी छोटी उम्र में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पास तशरीफ़ लायीं। इसमें बड़ी हिकमतें हैं।

हदीस पाक में आता है कि आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा रिवायत करती हैं कि जिब्राईल अलैहिस्सलाम एक सब्ज़ रेशमी कपड़े पर मेरी तस्वीर आसमानों से लाए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दिखाई और बताया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इसको आपके लिए दुनिया और आख़िरत में आपकी बीवी के तौर पर चुन लिया है और फ़रमाया करती थीं कि अभी तो मेरी शक्ल मेरी माँ के पेट में बनी भी नहीं थी कि मेरी शक्ल अल्लाह तआला ने मेरे महबूब को दिखा दी थी।

इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब हिजरत करके आए तो आप बहुत ग़मज़दा रहा करते थे। ख़दीज-तुल-कुबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की याद में ग़मगीन रहते थे तो इस ग़म की हालत में फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम दोबारा आए और उन्होंने आकर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दोबारा शक्ल दिखलाई कि आप इनसे निकाह फ़रमाएं। आपने पहचान लिया कि यह तो अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु की बेटी हैं इसलिए उनके साथ आपका निकाह हो गया। यह उस वक़्त आयीं थीं कि जब बालिग़ भी नहीं हुईं थीं। इसमें क्या हिकमत थी?

दो हिकमतें थीं:—

1. एक हिकमत तो यह थी कि यह वह ख़ातून हैं कि अल्लाह तआला ने चाहा कि जब यह बुलूग़त की ज़िन्दगी में क़दम रखें तो उनकी पहली नज़र अल्लाह के महबूब के चेहरे पर पड़े।
2. और दूसरी हिकमत यह थी कि छोटी उम्र में याद्दाश्त बहुत पक्की होती है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम क़ी तालीम की जितनी आलिमा यह बनीं इतनी अज़्वाजे मुतह्हरात में से कोई और न बन सकी बल्कि इमाम ज़ुहरी रह० फ़रमाते हैं कि अगर तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात के इल्म को जमा कर लिया जाए तो आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का इल्म सबसे बढ़ जाएगा।

आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा की दस फ़ज़ीलतें

फ़रमाती थीं कि दस बातों में अल्लाह तआला ने मुझे तमाम अज़्वाजे मुतह्हरात में फ़ज़ीलत दीः—

1. पहली फ़ज़ीलत यह कि अल्लाह तआला ने मेरी सूरत अपने महबूब को दिखा दी कि यह दुनिया में और जन्नत में आपकी बीवी बनेगी।
2. दूसरी फ़ज़ीलत यह है कि मैं ही कुँवारेपन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निकाह में आई, बाक़ी जितनी अज़्वाजे मुतह्हरात हैं या तो वह बेवाएं हैं या तलाक़शुदा थीं।

3. और फ़रमाती थीं कि मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ एक बिस्तर पर लेटी होती थी कि इस हाल में अल्लाह का क़ुरआन नाज़िल होता था।
4. फ़रमाती थीं कि मैं ही थी कि जिसकी पाकदामनी की गवाही अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने क़ुरआन में नाज़िल फ़रमाई।
5. पाँचवी फ़ज़ीलत फ़रमाया करती थीं कि एक मौक़े पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को झंडा बनाकर लहराने की ज़रूरत थी और आप कोई चीज़ ढूंढ रहे थे। जब मुझे पता चला तो मेरा एक दुपट्टा था जो सफ़ेद बैकग्राउंड वाला था और उसमें काली लाईनें बनी हुई थीं। मैंने अल्लाह के नबी की ख़िदमत में पेश किया। अल्लाह के महबूब ने अपने मुबारक हाथों से मेरे दुपट्टे को इस्लाम का झंडा बनाकर लहराया।
6. छठी फ़ज़ीलत्त फ़रमाती थीं कि मेरे माँ-बाप दोनों मुहाजिर और सहाबी थे। यह फ़ज़ीलत किसी और को हासिल नहीं है।
7. सातवीं फ़ज़ीलत फ़रमाती हैं कि मैं कई बार सामने लेटी होती थी और अल्लाह के महबूब नमाज़ पढ़ते थे। यह फ़ज़ीलत आपकी अज़वाजे मुतह्हरात में से किसी और को हासिल नहीं है।
8. आठवीं फ़ज़ीलत कहती थीं कि मैं और अल्लाह के महबूब कई बार इकठ्ठे ग़ुस्ल फ़रमाते। एक बर्तन में पानी होता। हम दोनों क़रीब बैठकर नहा रहे होते। कभी मैं प्याले से

पानी अपने ऊपर डालती और कभी अल्लाह के महबूब अपने ऊपर पानी डालते। यूँ मिलकर नहाने की फ़ज़ीलत मेरे सिवा किसी और बीवी को हासिल नहीं हुई।

9. नवीं फ़ज़ीलत कहा करती थीं कि मैं बिस्तर पर बैठी थी और अल्लाह के नबी मेरे सीने पर अपना सिर मुबारक रखकर टेक लगाए हुए बैठे थे कि इस हाल में अल्लाह के महबूब ने इस दुनिया से पर्दा फ़रमाया।

10. और दसवीं फ़ज़ीलत कहा करती थीं कि मेरे हुजरे को अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने अपने महबूब के लिए पसन्द किया और उसे जन्नत का बाग़ कहा और जन्नत के बाग़ में अल्लाह के महबूब क़यामत तक आराम फ़रमाते रहेंगे।

आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा के कुछ और फ़ज़ाइल

इसके अलावा भी उनकी फ़ज़ीलतें थीं मसलन इस आजिज़ के ज़ेहन में यह बात आती है कि अज़वाजे मुतह्हरात में वही थीं जो आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के ख़लीफ़ा सिद्दीक़-ए-अकबर की बेटी थीं जो आपके पहले ख़लीफ़ा बने और जिन को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सिद्दीक़ का लक़ब दिया। यह फ़ज़ीलत भी किसी और को हासिल नहीं थी।

और अल्लाह तआला ने क़ुरआन पाक में जो आयत नाज़िल फ़रमाई इसमें मग़फ़िरत और रिज़्क़े करीम का जो

वायदा किया है वह बराहेरास्त उन्हीं के बारे में था। यह फ़ज़ीलत भी किसी और को हासिल नहीं हुई। फ़रमाती थीं कई बार हम खाना खा रहे होते। अल्लाह के महबूब गोश्त की बोटी खाते और आधी बोटी खाने के लिए मुझे अता फ़रमा देते। ऐसा होता कि मैं पानी पी रही होती और अल्लाह के महबूब मुझे फ़रमाते मुझे भी पानी बचा देना और मेरा बचा हुआ पानी ख़ुद अल्लाह के महबूब नोश फ़रमाते।

अक्सर ऐसा होता कि अल्लाह तआला के महबूब मेरी गोद में अपना सिर मुबारक रखकर सो जाते। अल्लाह के महबूब मेरी दिल लगी का इतना ख़्याल रखते थे कि मेरी हम उम्र लड़कियों को घर भेजते कि वह मेरे साथ आकर खेलें।

दो बार अल्लाह के महबूब ने दौड़ लगाई। यह फ़ज़ीलत भी इन्हीं को हासिल है। इसकी भी तफ़्सील है। फ़रमाती हैं कि पहले मौक़े पर मैं जीत गई फिर दूसरे मौक़े पर अल्लाह के महबूब जीत गए और आपने फ़रमाया ﴿تلك بتلك﴾ यह मेरी आज की जीत पहली तेरी जीत के बराबर हो गई।

यह अजीब वाक़िया है कि जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम दुनिया से पर्दा फ़रमाने से थोड़ी देर पहले हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की गोद में सिर रखकर आराम फ़रमा रहे थे तो उस वक़्त उनके भाई अब्दुर्रहमान रज़ियल्लाहु अन्हु आए और उनके हाथ में एक मिसवाक थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब इस मिसवाक को देखा तो फ़रमाती हैं कि मैंने पहचान लिया कि अल्लाह के महबूब

मिसवाक करना चाहते हैं। मैंने मिसवाक लेकर अल्लाह के महबूब को दी मगर सख़्त थी, मैंने समझा यह सख़्त है। मैंने पूछा कि ऐ अल्लाह के महबूब मैं आपको नरम बनाकर दूँ? तो अल्लाह के महबूब ने इशारे से फ़रमाया हाँ। मैंने उस मिसवाक को चबाया और मेरे चबाए हुए, नरम किए हुए मिसवाक को अल्लाह के महबूब ने अपने मुँह में लेकर चबाया। फ़रमाती हैं कि यह फ़ज़ीलत भी मुझे ही हासिल है कि आपके पर्दा फ़रमाने से पहले मेरे मुँह का लुआब अल्लाह के महबूब के मुँह के लुआक के साथ मिल गया।

एक बार आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनको दुनिया की औरत पर वह फ़ज़ीलत है कि जैसे सरीद (एक क़िस्म का खाना) को और खानों पर फ़ज़ीलत हासिल है।

माँ-बेटी की बातचीत

लिहाज़ा हज़रत फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ बैठी हुई थीं। माँ-बेटी का रुत्बा था मगर उम्र कम होने की वजह से आपस में दोस्ताना भी थी। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा मुस्करायीं। पूछा क्यों मुस्कराती हो? कहने लगीं कि मुझे ख़्याल आया कि आपके वालिद तो अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु हैं और मेरे वालिद मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। बस यह बात सुननी थी कि आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ें करनी शुरू कर दीं:

फ़रमाया फ़तिमा! तुम ने सच कहा कि तुम मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बेटी हो। हमें ईमान मिला उनके सदके़ क़ुरआन मिला, उनके सदक़े में हिदायत मिली, उनके सदक़े ईमान मिला। इतनी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीफ़ें कीं कि दिल खोलकर रख दिया और जब ख़ूब तारीफ़ें कर चुकीं उसके बाद फ़रमाने लगीं फ़ातिमा एक बात मेरे भी दिल में आ रही है। उन्होंने कहा क्या? कहने लगीं मेरे दिल में यह बात आ रही है कि आपके शौहर अली मुर्तज़ा हैं तो मेरे शौहर तो मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम हैं। फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा हैरान हुईं। थोड़ी देर के बाद फिर कहा फ़ातिमा एक और बात भी मेरे ज़ेहन में आ रही है वह यह कि जब आप जन्नत में जाएंगी तो आप जन्नती औरतों की सरदार होंगी मगर जिस तख़्त पर आप बैठेंगी आपके तख़्त पर अली मुर्तज़ा साथ बैठेंगे और फ़ातिमा जब मैं जन्नत में जाऊँगी तो मेरे तख़्त पर मुहम्मद मुस्तुफ़ा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम साथ बैठेंगे।

माँ आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का एहसाने अज़ीम

एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम एक ग़ज़वे पर तशरीफ़ ले गए। एक जगह पर क़याम फ़रमाया जिसका नाम था ज़ातुलजैश वहाँ से गुज़रते हुए पानी तो था नहीं मगर आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने एक हार पहना हुआ था। फ़रमाती हैं कि वह हार मैंने अपनी बहन अस्मा रज़ियल्लाहु

अन्हा से उधार मांगा था। वह मेरा हार कहीं टूटकर गिर गया तो जब टूटकर गिर गया तो मैंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने क़ाफ़िले को रुकने का हुक्म दिया। पड़ाव डाल दिया गया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दो आदमियों को भेजा कि जाओ हार ढूंढों। इस दौरान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरी गोद में सिर रखकर लेट गए। फ़रमाती हैं कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने महसूस किया कि अगली नमाज़ का वक़्त क़रीब है और पानी यहाँ नहीं है और अल्लाह के नबी ने पड़ाव का हुक्म दे दिया तो उनमें से एक मेरे वालिद के पास आए और आकर कहने लगे देखिए आपकी बेटी का हार ढूंढने के लिए यहाँ पड़ाव डाला गया और पानी है नहीं और नमाज़ का वक़्त क़रीब हो गया है तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ग़ुस्से में मेरे ख़ेमे में आए। अल्लाह के महबूब आराम फ़रमा रहे थे तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने आहिस्ता आवाज़ से मुझे डाँटा और कहा कि आएशा! क्या मुसीबत तुम ने खड़ी कर दी कि तुम्हारे एक हार की वजह से पूरे क़ाफ़िले को रोक लिया गया। तुम ऐसे बे मौक़ा बात क्यों करती हो और यह कहकर फ़रमाती हैं कि सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु जो मेरे वालिद थे उन्होंने मेरे बाज़ू के गोश्त पर चुटकी भरी जैसे ग़ुस्से में माँए अपने बच्चों को चुटकी भरती हैं तो वह फ़रमाती हैं कि मुझे सख़्त तकलीफ़ हुई मगर मैं डाँट भी बर्दाश्त कर गई, चुटकी की तकलीफ़ बर्दाश्त कर गई। इसलिए कि मेरी गोद में अल्लाह के नबी सोए हुए थे

कहीं उनकी नींद में ख़लल न आ जाए। फ़रमाती हैं कि इस सब्र पर फ़ौरन अल्लाह ने अज्र दिया कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब जब थोड़ी देर बाद सोकर उठे तो आपके ऊपर अल्लाह का क़ुरआन नाज़िल हुआ और इसमें तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने की आयत नाज़िल हो गईं। फ़रमाती हैं कि फिर मेरे वालिद मुस्कराते हुए और हँसते हुए मेरे पास आए और कहने लगे कि आएशा! तू कितनी खुशक़िस्मत है। तेरी वजह से अल्लाह ने उम्मत के लिए आसानी कर दी। अब अगर कहीं पानी न मिले तो उम्मत के लिए तयम्मुम करके नमाज़ पढ़ने का मस्‌अला साफ़ हो गया। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम फ़रमाया करते थे अम्मा आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा का एहसान हम कभी नहीं भूल सकते।

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की मुहब्बत का इम्तिहान

ग़ज़्वा ख़ैबर के बाद जब मुसलमानों के पास माल व दौलत की ख़ूब रेल-पेल हो गई तो उस वक़्त बाज़ अज़वाजे मुतह्हरात ने भी अर्ज़ किया कि हमें भी कुछ सालाना ख़र्च दीजिए, बढ़ाइए बहुत तंगी है, कई-कई दिन फ़ाक़े में गुज़रते हैं। अल्लाह के महबूब को यह बात नापसन्द हुई कि मेरी बीवियाँ अपने ख़र्चे की बात करें तो आपने एक महीने के लिए अपनी बीवियों से अलग वक़्त गुज़ारा तो उसके बाद आयत-ए-तख़ईर नाज़िल हुई। जिसमें अल्लाह तआला ने फ़रमाया ﴿يايها النبى﴾

ऐ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियो! अगर तुम दुनिया और उसकी ज़ेब व ज़ीनत को चाहती हो तो हम तुम को कई गुना माल दे देंगे मगर तुम्हें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से दूर होना पड़ेगा और अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को पसन्द करती हो तो फिर तुम्हें इस क़िस्म का कोई मुतालबा नहीं रखना पड़ेगा तो जब यह आयत उतरी तो फ़रमाती हैं कि अल्लाह के महबूब मेरे पास आए और अल्लाह के महबूब के दिल में यह बात थी कि आएशा उम्र में सबसे छोटी है पता नहीं फ़ैसला कर सके या न कर सके तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आएशा मैं तुम्हारे सामने एक बात पेश कर रहा हूँ मगर तुम फ़ैसला करने से पहले अपने वालिदैन से मशवरा कर लेना। इससे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की मुहब्बत का पता चलता है कि आप नहीं चाहते थे कि यह आप से दूर हो तो आपने फ़रमाया आएशा अपने वालिदैन से मशवरा कर लेना। मैंने पूछा कौन सी बात? तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बताया कि अल्लाह तआला की इस तरह से "वही" उतरी है कि तुम या तो दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को पसन्द कर लो तो हम तुम पर कई गुना ज़्यादा दुनिया के माल व दौलत की रेल-पेल कर देंगे या फिर तुम अल्लाह के महबूब को चुन लो। तो फ़रमाती हैं कि मैंने उसी वक़्त कहा इसमें मुझे वालिदैन से मशवरा करने की क्या ज़रूरत है मैं दुनिया की ज़ेब व ज़ीनत को छोड़ती हूँ और अल्लाह के महबूब को अपने लिए पसन्द करती हूँ। यह सुनकर अल्लाह के महबूब मुस्कराए तो मैंने कहा

अल्लाह के महबूब मेरा यह जवाब बाक़ी बीवियों को न बताना। अल्लाह के नबी ने फ़रमाया कि नहीं मैं सच-सच कहने वाला हूँ चुनाँचे अज़्वाजे मुतह्हरात को जब पता चला कि उम्मुल-मुमिनीन आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने यह कहा तो सब ने वही अलफ़ाज़ कहे। चुनाँचे सब अज़्वाजे मुतह्हरात ने अल्लाह के महबूब को पसन्द फ़रमा लिया।

आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की पाकदामनी पर अल्लाह की गवाही

हुआ यह कि ग़ज़वा बनी मसतलक़ में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ आएशा सिद्दीक़ा रज़ियल्लाहु अन्हा थीं। जब वहाँ से वापसी होने लगी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने कूच का हुक्म दिया। दस्तूर उस ज़माने में यह था कि अज़्वाजे मुतह्हरात के लिए एक पालकी बनाई हुई होती थी। जब सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम पर्दा कर लेते तो ज़ौजा मोहतरमा उसमें बैठ जातीं और फिर पाँच छः आदमी उसको उठाकर ऊँट के ऊपर रख देते थे। फ़रमाती हैं जब तैयारी होने लगी तो मैंने सोचा कि सफ़र लम्बा होगा। बेहतर यही होगा कि मैं क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होकर जाऊँ। जब मैं क़ज़ाए हाजत से फ़ारिग़ होकर वापस आ गई और पालकी मैं बैठने लगी तो लोगों ने पर्दा किया हुआ था। उस वक़्त मुझे ख़्याल आया कि मेरा एक हार था जो कहीं गिर गया। मैंने सोचा कि

अभी तो वक़्त होगा इसलिए बेहतर है कि मैं हार ढूंढ आती हूँ जहाँ मैं गई थी तो मैं बजाए पालकी में बैठने के फिर हार ढूंढने चली गई। थोड़ी देर के बाद सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम मुतवज्जोह हुए तो उन्होंने महसूस किया कि शायद उम्मुल-मुमिनीन अन्दर बैठ गयीं लिहाज़ा उन्होंने उस पालकी को उठाकर ऊपर रख दिया। फ़रमाती हैं कि मेरी उम्र भी छोटी थी, वज़न भी हलका था और पाँच छः आदमी उठाने वाले थे तो उनको पता ही न चला कि अन्दर कोई बैठा भी है। अब जब पालकी ऊँट पर रख दी गई और सब लोग तैयार हो गए तो क़ाफ़िला चल पड़ा। फ़रमाती हैं हार ढूंढने में मुझे ज़रा देर हो गई। जब मैं वापस आई तो मैंने देखा कि क़ाफ़िला तो वहाँ से चला गया। अब उनकी अक़्लमंदी देखें कि कहती हैं कि मैंने दिल में सोचा कि अल्लाह के महबूब जब देखेंगे कि मैं इस पालकी में नहीं हूँ तो आप इसी जगह पता करवाएंगे जहाँ से ऊँट चले थे। लिहाज़ा मैं आराम के साथ वहीं बैठ गई, थकी हुई थी मुझे नींद आ गई तो मैं अपनी चादर ऊपर लेकर सो गई।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका थी कि जब कहीं से कूच होता तो वहाँ एक सहाबी को तय कर देते थे ताकि वह बाद में देखे कि कोई गिरी पड़ी चीज़, कोई भूली हुई चीज़ रह जाए तो उन तमाम चीज़ों को समेटकर ले आएं। तो सफ़वान बिन मौतल रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी तो थे जो बदरी सहाबी थे और पक्की उम्र के आदमी थे। उनको आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस काम के लिए तय कर

दिया। जब वह चक्कर लगाने के लिए आए तो उन्होंने मुझे देखा कि कोई चादर में लिपटा हुआ सो रहा है तो उन्होंने पहचान लिया कि यह तो अज़वाजे मुतह्हरात के ख़ेमों की जगह थी और उन्होंने मुझे निकाह से पहले छोटी उम्र में देखा भी हुआ था तो वह पहचान गए कि मैं उम्मुल-मुमिनीन हूँ और मैं यहाँ पीछे रह गई हूँ तो उन्होंने ऊँची आवाज़ से पढ़ा ﴿انا لله وانا اليه راجعون﴾ "इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिऊन।" फ़रमाती हैं कि उनकी आवाज़ सुनकर मैं उठकर बैठी और अपने आपको अच्छी तरह चादर से लपेट लिया। उन्होंने अपने ऊँट को मेरे क़रीब बिठा दिया मैं ऊँट पर बैठ गई और वह उसकी रस्सी को पकड़कर चल पड़े यहाँ तक कि वह जाकर क़ाफ़िले वालों से मिल गए। क़ाफ़िले में कुछ मुनाफ़िक़ लोग भी थे जो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को दुःख पहुँचाने के लिए हर वक़्त मौक़े की तलाश में रहते थे। जब उनको यह पता चला तो उन्होंने तो इसका बतंगड़ बना लिया, कीचड़ उछालना शुरू कर दिया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जब मदीने मुनव्वरा पहुँचे तो उन्होंने पूरे शहर में यह बात फैला दी कि आपकी ज़ौजा मआज़ल्लाह (अल्लाह बचाए) जानबूझकर पीछे रहीं और एक सहाबी भी थे और हमारा ख़्याल है कि यह उससे बच नहीं सकीं।

अब यह बात सारे शहर में फैल गई। मुनाफ़िक़ों ने इसको हर कान में पहुँचा दिया। इतना बड़ा परोपगंडा किया कि कुछ मुसलमानों की भी इस बात में शक पैदा हो गया कि आख़िर पीछे क्यों रहीं? फिर इतना वक़्त वहाँ रहीं फिर जवान आदमी

वह भी था फिर दोनों मिलकर आए तो जैसे एक आम सोच होती है लोगों की। एक महीने परोपगंडा होता रहा है। फ़रमाती हैं कि मैं सफ़र के बाद घर में आकर बीमार हो गई और मुझे किसी बात का पता ही नहीं चला। एक दिन रात को मैं एक सहाबिया के साथ क़ज़ाए हाजत के लिए बाहर गई तो वह सहाबिया किसी जगह गिरने लगीं तो उन्होंने अपने बेटे के लिए बद्दुआ की। उम्मे मस्तह उनका नाम था। जब उन्होंने बद्दुआ की तो मैंने कहा अपने बेटे के लिए तो कोई बद्दुआ नहीं करता। उन्होंने कहा तुम्हें पता नहीं कि मेरे बेटे ने क्या कहा? मैंने कहा मुझे तो पता नहीं। उस वक़्त उन्होंने मुझे पूरा वाक़िया सुनाया कि इस तरह यह बात तो हर गली कूचे का तज़्किरा बन चुकी है और आपके ऊपर तो अजीब-अजीब तरह के इल्ज़ाम लग रहे हैं। फ़रमाती हैं कि यह बात सुनकर मेरे पाँव तले की ज़मीन ही निकल गई। अब मैं जब वापस आई तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मेरे हुजरे में तशरीफ़ लाए। मैंने सलाम किया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जवाब देकर अपना रुख़ दूसरी तरफ़ फ़रमा लिया। मैं दूसरी तरफ़ गई और उधर से सलाम किया तो अल्लाह के महबूब ने अपना चेहरा दूसरी तरफ़ कर लिया। मैं पहचान गई कि अल्लाह के महबूब का दिल बहुत ग़मगीन है और पता नहीं आपको क्या क्या बातें सुनने में आई हैं। और अल्लाह के महबूब ने यूँ पूछा कि उनका क्या हाल हैं। फ़रमाती हैं कि यह जो अलफ़ाज़ थे, "उनका क्या हाल है?" मेरे बारे में मेरी हालत पूछ रहे हैं और यूँ फ़रमाते हैं कि उनका क्या हाल है? तो मैं पहचान गई कि

यह मामला तो बहुत संगीन हो गया है। इसलिए मैंने अल्लाह के महबूब से अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के महबूब अगर आप मुझे इजाज़त दें तो मैं कुछ दिन के लिए अपने वालिद के घर चली जाऊँ। अल्लाह के नबी ने इशारे से हाँ कर दी और मैं अपने वालिद के घर आ गई। जब औरतों पर ऐसी मुसीबतें पड़ा करती है तो माँ-बाप याद आते हैं।

फ़रमाती हैं मैं अपने वालिद के घर आई। मेरी वालिदा ने दरवाज़ा खोला। मैंने देखा कि मेरी वालिदा की आँखें रो-रोकर लाल हो चुकी थीं। जब अन्दर पहुँची तो मैंने देखा कि मेरे वालिद अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु चारपाई पर बैठे क़ुरआन पाक की तिलावत कर रहे हैं और आँखों से आँसू टप-टप गिर रहे हैं। उस माँ-बाप का क्या हाल होगा जिनकी बेटी पर इलज़ाम लगे, वह बेटी जो अल्लाह के महबूब के निकाह में है। उनके लिए मुसीबत का पहाड़ था जो टूट पड़ा। फ़रमाती हैं कि जब मैंने अपनी वालिदा को भी ग़मज़दा देखा तो अब मैं सोचने लगी कि अब मैं किसके पास जाऊँ। ख़ाविन्द आख़िरी सहारा होता है वह भी मुझ से ख़फ़ा, माँ-बाप सहारा होते हैं वह भी ग़मज़दा हैं अब मैं क्या करूँ? फ़रमाती हैं कि इस वक़्त मुझे अपना रब याद आया। मैं अपने मकान के एक कोने की तरफ़ चली गई। मेरी वालिदा ने पीछे से मुझे देखा कि बेटी ग़मज़दा है कहीं कोई आख़िरी क़दम न उठा ले। मैंने मुसल्ला बिछाया और मुसल्ला बिछाकर मैं सज्दे में चली गई और मैंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से दुआ करनी शुरू कर दी। ऐ मिस्कीनों के परवरदिगार! ऐ ज़ईफ़ों के परवरदिगार अल्लाह!

सब फ़रियाद करने वाले तेरे दरवाज़े खटखटाते हैं आज तेरे महबूब की हुमैरा भी तेरे दरवाज़े को खटखटाती है। अल्लाह! यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर बोहतान लगा था, आपने उनकी पाकदामनी को वाज़ेह फ़रमा दिया, बीबी मरियम पर बोहतान लगा था। आपने उनकी पाकदामनी को वाज़ेह फ़रमा दिया, या अल्लाह! आज तेरी हुमैरा पर भी बोहतान लगा है। मैं फ़रियाद करती हूँ अल्लाह! मेरे महबूब के दिल को मेरी तरफ़ से साफ़ फ़रमा दीजिए, उनको तसल्ली दीजिए। फ़रमाती हैं कि मैं रो रही थी, दुआएं कर रही थी।

इधर अल्लाह के महबूब ने घर की औरतों से मेरे बारे में पूछताछ शुरू की। लिहाज़ा फ़रमाती हैं कि उन्होंने ज़ैनब बिन्ते जहश रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि तुम आएशा के बारे में क्या कहती हो? तो उन्होंने जवाब दिया कि मैंने उनमें ख़ैर के सिवा कुछ नहीं पाया। फिर उन्होंने अपने घर में काम करने वाली उम्मे ऐमन रज़ियल्लाहु अन्हा से पूछा कि तुम आएशा के बारे में क्या जानती हो? उन्होंने कहा भोली-भाली लड़की है। इतनी बात है कि सोई रहती है और कई बार बकरी आटा खा जाती है। इसके अलावा तो मैंने कोई और चीज़ नहीं देखी। अल्लाह के महबूब को मेरे बारे में तसल्ली हो गई।

इसलिए आप मस्जिद में तशरीफ़ लाए क्योंकि एक महीने से अल्लाह के नबी ग़मज़दा थे तो आपके जाँ निछावर करने वाले सहाबा भी दुखी थे। तो. अल्लाह के नबी मस्जिद नबवी में आकर बैठे। सहाबा भी ख़ामोश हैं, आँखों से आँसुओं की लड़ियाँ टूट रही हैं, अल्लाह के महबूब ख़ामोश बैठे हैं। अल्लाह

के नबी ने उस वक़्त सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम से भी मशवरा किया।

सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु तो क्योंकि वालिद थे और अपने घर में थे। बाक़ी सहाबा वहाँ मौजूद थे। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा उमर आप इस मामले में क्या कहते हैं? तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया अल्लाह के महबूब अल्लाह तआला ने आपको इतना पाक बनाया है कि गंदी मक्खी भी कभी आपके जिस्म के साथ नहीं लगी, यह कैसे मुमकिन है कि आपकी ज़ौजा जिसके साथ आप एक ही बिस्तर पर रात गुज़ारें उसके अन्दर कोई गंन्दगी हो और यह कहकर उन्होंने कहा मेरा दिल तो कहता है कि ﴿سبحانك هذا بهتان عظيم﴾ यह तो बहुत बड़ा बोहतान है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इसके बाद उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा आप इस बारे में क्या कहते हो? उस्मान ग़नी रज़ियल्लाहु अन्हु ने जवाब दिया ऐ अल्लाह के नबी आपको अल्लाह तआला ने इतनी अज़्मत दी है कि आपका साया भी ज़मीन पर नहीं पड़ता। इसलिए कि किसी का पाँव इस साए पर पाँव पड़ने को भी पसन्द नहीं किया। यह कैसे मुमकिन है कि आपकी ज़ौजा पर दूसरे को अल्लाह तआला क़ाबू अता फ़रमा दें। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सुना तो आपको और तसल्ली हुई। अली रज़ियल्लाहु अन्हु थे। पूछा अली! आप क्या कहते हैं? उन्होंने कहा ऐ अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! एक बार आपकी नालैन मुबारक पर निजासत लग

गई थी, गंदगी लग गई थी, आप पहनना चाहते थे तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम के ज़रिए से अल्लाह तआला ने आपको बता दिया कि इस जूते पर निजासत लगी हुई है तो जो परवरदिगार निजासत वाला जूता आपको पहनने नहीं दिया वह निजासत वाली बीवी को आपके बिस्तर पर कैसे आने देगा। अल्लाह के महबूब को तसल्ली हो गई मगर आप ख़ामोश थे तो अली रज़ियल्लाहु अन्हु ने आपका दिल रखने के लिए कहा अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम! क्यों ग़मज़दा होते हो आपके लिए तो औरतों की कमी नहीं। जब उन्होंने यह बात कही तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को फिर जोश आया। खड़े होकर कहने लगे अल्लाह के महबूब! आप इतना बता दीजिए कि आपने उन से अपनी मर्ज़ी से निकाह किया था या अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मर्ज़ी से निकाह किया था? तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उंगली से इशारा आसमान की तरफ़ कर दिया कि मैंने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मर्ज़ी से निकाह किया था तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा ऐ अल्लाह के महबूब! जिसको अल्लाह तआला ने आपकी बीवी बनाया उसके बारे में तो इस बात का तसव्वुर भी नहीं हो सकता। आप उमर को इजाज़त दें मेरी तलवार उन मुनाफ़िक़ों के बारे में काफ़ी रहेगी। लिहाज़ा अल्लाह के महबूब को और तसल्ली हो गई।

इसलिए इसके बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उठे और सिद्दीक़े अकबर के घर तशरीफ़ ले आए। हदीस पाक में आता है कि उम्मे रूमान जो आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की

वालिदा थीं। उन्होंने दरवाज़ा खोला। अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अन्दर तशरीफ़ ले आए। अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु तिलावत करते हुए उठे। उन्होंने भी सलाम किया और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को चारपाई पर बिठा दिया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखा माँ भी हैं, वालिद भी हैं मगर मेरी हुमैरा कहीं नज़र नहीं आती तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने पूछा हुमैरा कहाँ है? तो वालिदा ने बता दिया कि वह तो मुसल्ले पर सज्दे में अपने रब के सामने दुआएं मांग रही । फ़रमाती हैं उस वक़्त मेरी वालिदा ने आवाज़ दी बेटी उठ और अल्लाह के महबूब का इस्तिक़बाल कर। फ़रमाती हैं मेरा जी चाहा मैं उठूँ और मैं अल्लाह के महबूब के क़दमों से लिपट जाऊँ और अल्लाह के नबी को अपनी पाकदामनी का यक़ीन दिलाऊँ मगर मैंने सोचा कि अब तो मैंने अह्कमुल-हाकिमीन के दरबार में अपना फ़ैसला कर दिया है अब वही मेरी मदद फ़रमाएगा।

नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सबक़ देने वाले जुमले

कहती हैं यह आवाज़ सुनकर मैं उठी और आकर मैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के क़रीब बैठ गई। अल्लाह के महबूब की तबियत में गुस्सा नहीं था, शफ़क़त थी। आप मेरी तरफ़ मुतवज्जोह हुए फ़रमाया, "आएशा! अगर तुम पाकदामन हो तो अल्लाह तआला तुम्हारी पाकदामनी की वज़ाहत फ़रमा देगा

और अगर तुम से कोई ग़लती हुई है तो आएशा इस्तिग़फ़ार कर लो, तौबा कर लो, अल्लाह तआला तौबा करने वालों की तौबा क़बूल कर लेते हैं।"

अल्लाह के महबूब के इन बोलों में ख़ाविन्दों के लिए कितना बड़ा सबक़ है कि बीवी पर ज़िना का इलज़ाम लगे, पूरे शहर में इसका ढंढोरा पिटे और अल्लाह के महबूब फिर भी नाराज़ नहीं। समझाते हैं ऐ आएशा अगर तुम से कोई ग़लती हुई है तो तुम इस्तिग़फ़ार करो और अपने अल्लाह से माफ़ी मांगो अल्लाह तो तौबा क़ुबूल करने वाला है। फ़रमाती हैं जब आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने ये बोल कहे तो मेरे सब्र के बन्धन टूट गए। मेरी आँखों से आँसू आने लग गए मैंने अपनी वालिदा को कहा अम्मी मैं छोटी उम्र की हूँ आप ही मेरी तरफ़ से कोई जवाब दीजिए। वालिदा रोकर कहने लगीं बेटी हम क्या कह सकते हैं? मैंने वालिद की तरफ़ आँख उठाकर देखा कि अब्बू आप मेरे बारे में आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को जवाब दें मगर वह भी ग़मगीन थे। उनकी ज़बान भी नहीं खुलती थी। जब मैंने देखा कि अब न माँ जवाब दे रही है, न बाप जवाब देता है तो जवाब तो मुझे ही देना पड़ेगा। फ़रमाती हैं कि मुझे कुछ समझ नहीं आ रहा था मैंने इतनी बात कही ऐ अल्लाह के महबूब! आप इतने लोगों की बातें सुन चुके हैं अगर मैं आपको यक़ीन दिलाने की कोशिश करूंगी तो शायद आपके दिल में यह बात न आए। लिहाज़ा मैं वही कहती हूँ तो याक़ूब अलैहिस्सलाम ने कहा था ﴿فصبر جميل﴾ मैं सब्र करती हूँ और यह कहा था ﴿انما اشكو بثي و حزني الى الله﴾ मैं अपना ग़म

और अपना दुःख और दर्द अल्लाह के सुपुर्द करती हूँ। फ़रमाती हैं कि मेरे इस दुखे दिल से यह आवाज़ निकली और अल्लाह की रहमत आ गई। मैं दिल में सोचा करती थी कि अल्लाह तआला नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम को ख़्वाब के ज़रिए से हक़ीक़त की ख़बर दे देंगे।

मगर मैंने क्या देखा अल्लाह के महबूब की आँखें बन्द हो गयीं और सर्दी के मौसम में आपकी पेशानी पर पसीने के क़तरों के सितारें चमकने लगे। अल्लाह के नबी ने अपने ऊपर कपड़ा डाल लिया। यह वह कैफ़ियत थी जिसमें "वही" उतरती थी। फ़रमाती हैं कि जब मेरे वालिदा और मेरे वालिद ने देखा कि अल्लाह के महबूब पर "वही" उतर रही है तो उन्होंने बिलख-बिलखकर रोना शुरू कर दिया। उनको नहीं पता था कि अल्लाह के महबूब पर क्या "वही" उतरेगी। फ़रमाती हैं थोड़ी देर के बाद अल्लाह के महबूब ने जब कपड़ा हटाया तो आपका मुस्कराता चेहरा इस तरह सामने आया कि जिस तरह बादलों में चौदहवीं का चाँद निकल आता है। आपने फ़रमाया, "आएशा! तुम्हें मुबारक हो अल्लाह ने तुम्हारी बरा'त (बरी करना) खुद अता फ़रमा दी और एक आयत नहीं, दो आयत नहीं दस आयतें अल्लाह तआला ने तुम्हारी पाकदामनी के बारे में नाज़िल फ़रमायीं हैं और इर्शाद फ़रमाया,

﴿اولئك مبرّءون مما يقولون.﴾

यह बरी है उन तमाम बातों से जो बातें ये मुनाफ़िक़ करते फिरते हैं। फ़रमाती हैं कि यह बात सुनकर मेरी वालिदा के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ पड़ी। कहने लगीं बेटी उठ और

अल्लाह के महबूब का शक्रिया अदा कर। तो फ़रमाने लगी कि मैं नाज़ में आकर कहने लगी मैं अल्लाह का शुक्र अदा करती हूँ जिसने मेरी लाज रख ली।

सुनिए जब औरत पाकदामन होती है तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसको दुनिया में रुस्वा नहीं होने देते बल्कि अल्लाह आसमानों से उसके लिए गवाहियाँ दे दिया करते हैं लिहाज़ा जो औरत आज इन बातों के ऊपर पाबन्द रहे,

नेकोकार बने,

अपने ख़ाविन्द के साथ दिल से मुहब्बत रखने वाली बने,

और अपने नामूस और अपने माल और औलाद के बारे में अमानत करने वाली हो तो वह औरत अल्लाह तआला की पसन्दीदा औरत है। अल्लाह तआला तमाम औरतों को इन सिफ़ात के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

﴿و آخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين.﴾

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

ومن ايٰته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان فى ذٰلك لأيٰت لقوم يتفكرون.

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी की बहार

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

इक़्तिबास

एक बात ज़ेहन में रखिए कि आजकल एक बहुत बड़ी ग़लती यह की जाती है कि मर्द शादी करने के लिए औरत में सिर्फ़ निसवानियत (औरतपन) देखते हैं। तीन लफ़्ज़ों को याद कर लेंः—

एक निसवानियत

एक इन्सानियत

और एक ईमानियत

ये तीनों अलग-अलग चीज़ें हैं। ईमानियत तो यह है कि कोई औरत अल्लाह तआला, उसके रसूल पर ईमान लाए। कलिमा पढ़कर मुसलमान बन जाए। इस दीन को क़ुबूल कर लेना, यह ईमानियत है। उसके बाद उसके अन्दर अख़्लाक़ भी अच्छे हों, सदाक़त हो, दयानत हो, अमानत हो, ख़िदमत हो, वफ़ा हो। इन सारी चीज़ों को इन्सानियत कहते हैं और ज़ाहिर में भी उसके नैन-नक़्श अच्छे हों, क़द व क़ामत अच्छा हो, देखने में मर्द के लिए उसमें कशिश हो। इसको निसवानियत कहते हैं।

— अज़ इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब मद्दज़िल्लुहू

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد اللّٰه و كفٰى وسلام علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد.

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم.
بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم.

ومن اٰيٰته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها
وجعل بينكم مودة ورحمة ان فى ذٰلك لاٰيٰت لقوم يتفكرون.

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام علٰى المرسلين
والحمد للّٰه رب العٰلمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

इन्सानी ज़िन्दगी के उतार-चढ़ाव

इन्सानी ज़िन्दगी के अलग-अलग दौर होते हैं। शुरू में बच्चा पैदा होता है तो उस ज़िन्दगी को बचपन कहते हैं। इस बचपन की उम्र में बच्चा खाता पीता है। थोड़ा बड़ा हो जाए तो सारा दिन खेलता है। यही उसकी ज़िन्दगी का वज़ीफ़ा है। माँ-बाप भी उसको ख़ुश रखने के लिए खिलौने लेकर देते हैं और वह ख़ुद भी घर में एक खिलौने की तरह होता है। घर

का हर मर्द और हर औरत उस बच्चे से बात करके उसको गोद में लेकर प्यार करके खुश होते हैं। इस बच्चे के ऊपर घर के लोग उसकी खुशी पर खुश होते हैं और उसके रोने पर घर के लोग रोते हैं। वह होता तो है छोटा सा बच्चा लेकिन पूरे घर के लोगों के दिलों की जान होता है। ज़रा बच्चे की आवाज़ आए तो घर वाले फ़ौरन तवज्जोह करते हैं कि बच्चा क्यों रो रहा है। जब उससे कुछ बड़ी उम्र का होता है तो उसको लड़कपन कहते हैं। इस लड़कपन की उम्र में इस बच्चे की तालीम का सिलसिला भी शुरू हो जाता है। दीनी तालीम भी दिलवाई जाती है, क़ुरआन पाक भी पढ़ाया जाता है और स्कूल भी भेजा जाता है। दुनिया की तालीम के लिए माँ-बाप उसके ज़िम्मे पढ़ाई लगाते हैं ताकि यह बच्चा अच्छे अन्दाज़ से पढ़े। तो इस उम्र में बच्चा मदरसे में, स्कूल कालेज में पढ़ता है और माँ-बाप की उमंगों को पूरा करता है। जो फ़ारिग़ वक़्त होता है वह भी खेलकूद में गुज़रता है। यहाँ तक कि फिर ऐसी उम्र आती है कि जिसमें आकर लड़का और लड़की दोनों बालिग़ हो जाते हैं, जवान हो जाते हैं और उनकी तालीम का सिलसिला भी पूरा हो जाता है। तो जब लड़के की तालीम का सिलसिला मुकम्मल हो तो अब माँ-बाप उसको किसी बिजनेस में लगाते हैं या किसी नौकरी में लगाते हैं यानी कोई न कोई कमाई का ज़रिया उसके लिए बनाया जाता है। जब इस बच्चे को हलाल रोज़ी भी मिलनी शुरू हो जाए और जवानी की उम्र हो, इसी तरह लड़की भी घर में रहकर भरपूर जवानी की उम्र को पहुँच जाए तो उनकी ज़िन्दगी का अब एक अगला मोड़ शुरू होता है

जिसको शादी-शुदा ज़िन्दगी कहते हैं। इसके लिए लड़के के माँ-बाप भी रिश्ता ढूँढते हैं, लड़की के माँ-बाप भी रिश्ता ढूंढते हैं। फिर जहाँ दोनों तरफ़ मुनासिब मालूम होता है तो लड़के और लड़की दोनों का निकाह कर दिया जाता है और ये दोनों फिर एक दूसरे के साथ मियाँ-बीवी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं।

इस्लाम में निकाह का मक़ाम

दीने इस्लाम ने निकाह को इबादत कहा। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया ﴿النكاح نصف الايمان﴾ कि निकाह तो आधा ईमान है और हदीसों में आता है जब आदमी निकाह कर लेता है तो अल्लाह तआला उसको एक नमाज़ पढ़ने पर इक्कीस नमाज़ों के पढ़ने का सवाब अता फ़रमाते हैं। यह इसलिए कि अब इस नौजवान पर हक़ूक़ुल-इबाद (बन्दों के हक़) भी हैं और अल्लाह के हक़ भी हैं। जब हक़ूक़ुल-इबाद पूरा करने के बाद फिर उसने अल्लाह के हक़ को पूरा किया तो अल्लाह तआला ने उसके अज्र व सवाब को बढ़ा दिया। दुनिया में दीन इस्लाम ही ने शादी-शुदा ज़िन्दगी को इबादत कहा है वरना तो पहले मज़हब ऐसे थे कि सारी ज़िन्दगी कुँवारा रहना नेकी समझते थे। वह कहते थे कि मर्द ईसा अलैहिस्सलाम जैसे बनकर रहे और औरत मरियम रज़ियल्लाहु अन्हा जैसे बनकर रहें और दानों ने कुँवारेपन की ज़िन्दगी गुज़ारी तब जाकर अपने रब को राज़ी कर सके। इसको रहबानियत कहते हैं। दीन इस्लाम ने इसको बिदअत कहा है, अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस का कभी

हुक्म नहीं दिया। इसलिए कहा गया ﴿لا رهبانية في الاسلام﴾ इस्लाम में रहबानियत नहीं है।

जीवन साथी

इस्लाम ने औरत का वक़ार बढ़ाया और बताया कि जब इन्सान शादी-शुदा ज़िन्दगी गुज़ारता है तो बीवी उसके लिए अल्लाह के क़रीब होने का ज़रिया बनती है। इसलिए कहा गया कि औरत इन्सानी ज़िन्दगी का आधा हिस्सा है और बाक़ी की आधी ज़िन्दगी के बनने और बिगड़ने पर असर अन्दाज़ होती है। जिन समाजों में निकाह नहीं वहाँ मर्द-औरत एक दूसरे के साथ दोस्ताना ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। ब्वाय फ़्रेन्ड और गर्ल फ़्रेन्ड बनकर ज़िन्दगी गुज़ारते हैं। दीने इस्लाम में यह चीज़ हराम और गुनाह है। मर्द-औरत एक दूसरे के क़रीब तब आ सकते हैं जब निकाह के ज़रिए से दोनों मियाँ-बीवी बन जाएं। अब देखा भी यही गया है कि जिन मुल्कों में दोस्ताना ज़िन्दगी की रस्म व रिवाज आम है वहाँ पर औरत बहुत ज़्यादा परेशान हैं चूँकि वक़्ती साथी उनको रोज़ाना मिल जाते हैं मगर ज़िन्दगी का साथी कोई नहीं मिलता। इसलिए इब्तिदाई जवानी में तो वह औरत अलग-अलग लोगों के साथ वक़्त गुज़ारती है लेकिन जब उम्र थोड़ी सी ज़्यादा होती है मिसाल के तौर पर तीस साल से ज़्यादा तो अब उसको पूछने वाला कोई नहीं होता, वह तन्हाईयों की मारी अपने घर के अन्दर दिमाग़ी मरीज़ बनकर ज़िन्दगी गुज़ारती है। इसलिए जब ऐसी औरतों से पूछा जाता है

कि तुम्हारा क्या हाल है तो कहती हैं:

Life is very diffcult.

जिन लोगों ने थोड़ा-थोड़ा वक़्त उसके साथ गुज़ारा उनकी औलाद भी हो गई मगर ज़िम्मेदार उसके न बने, बोझ औरत के ही सिर पर पड़ गया अब बेचारी रोज़ जाकर दफ़्तरों में रोज़ी भी कमाए अपनी औलाद की परवरिश भी करे, घर की सफ़ाई भी करे और खाना पकाना भी करे तो इस तरह पर औरत पर बहुत ज़्यादा बोझ बढ़ गया। यह औरत के साथ बिल्कुल बेइंसाफ़ी है कि मर्द उससे अपना मतलब तो निकाले और उसकी ज़िम्मेदारी कोई न ले। अब न उसको विरासत में हिस्सा न उसके बच्चों का कोई निगरान तो आज़ादी के उनवान पर औरत को ऐसा ख़ूबसूरत धोका दिया गया कि उसको घर से बाहर निकालकर मर्दों के लिए खिलौना बना दिया गया।

आज़ादी के नाम पर मक्कारी

लिहाज़ा नाम तो आज़ादी का है कि हम ने औरत को आज़ाद कर दिया मगर इसको ग़ौर से देखा जाए तो हक़ीक़त में इसके पीछे मर्द की मक्कारी शामिल है क्योंकि मर्दों को पता है कि अगर हम निकाह के ज़रिए से मियाँ-बीवी बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे तो हमें इस औरत का ख़र्चा-पानी भी देना पड़ेगा, इसके बच्चों के भी हम ज़िम्मेदार बन जाएंगे और हमारी विरासत में भी इस औरत को हिस्सा मिल जाएगा और मर्द कोई ज़िम्मेदारी लेना नहीं चाहता। वह चाहता है कि बग़ैर

ज़िम्मेदारी के ही उसका काम चलता रहे तो यह सबसे अच्छा। इसलिए मक्कार मर्दों ने भोली-भाली औरतों को धोका दिया और उनको कहा कि अगर तुम घर से बाहर आओ तो यह तुम्हारे लिए आज़ादी है। हक़ीक़त में आज़ादी के नाम पर उसको बर्बादी की दावत दी गई। और वही हुआ कि उन मुल्कों में औरत इस क़द्र परेशान है, उनके दुःख का कोई साथी नहीं। जितना बुढ़ापा उन औरतों पर बुरा गुज़रता है वह किसी को बता भी नहीं सकतीं। ऐसी औरत की ज़िन्दगी में क्या ख़ुशियाँ होंगी कि जिस की उम्र अभी पैंतिस साल ही है और वह अपने घर में सारा दिन और रात अकेली गुज़ारती है न ख़ुशी का साथी न ग़म का साथी। दीन इस्लाम ने इसको तोड़ दिया और औरत को उसके हक़ देते हुए कहा कि जो मर्द व औरत को क़रीब करना चाहता है। वह उसकी पूरी ज़िम्मेदारी क़ुबूल करे। इस पूरी ज़िम्मेदारी के क़ुबूल करने का नाम निकाह है।

इसलिए याद रखें कि जहाँ निकाह नहीं होगा वहाँ ज़िना होगा। शैतान यह कोशिश करता है कि निकाह न होने पाए लिहाज़ा हमारे समाज में भी कितनी बच्चियाँ जवान हो जाती हैं और माँ-बाप के मैयार ही पूरे नहीं हो पाते। कहते हैं कि हमें तो इतना पढ़ा लिखा लड़का चाहिए, ऐसा कारोबार हो, आइडियल की तलाश में अभी बड़ी बेटी की शादी नहीं होती और उसके नीचे की तीन बेटियाँ भी जवान हो चुकी होती हैं। यह सरासर बेवक़ूफ़ी है भला बच्चियाँ जो आठ-आठ दस-दस साल से घरों में ज़िन्दगी गुज़ार रही हैं वे अपनी सोच को कैसे पाक रख सकेंगी। इसलिए शैतान को मौक़ा मिल जाता है वह

फिर उनको इन्टरनेट के ज़रिए दोस्तियाँ सिखाता है कोई न कोई गुनाह का रास्ता उनके सामने खुल जाता है और इसका गुनाह जैसे लड़के लड़की को होता है इसी तरह उनके माँ-बाप को भी होता है इसलिए शरिअत ने कहा कि जो माँ-बाप अपने बच्चों की शादी करने में देर करते हैं वे बच्चे जो गुनाह करेंगे उसका वबाल बच्चों पर भी होगा और माँ-बाप पर भी होगा। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब भी बेटी के लिए कोई मुनासिब रिश्ता मिल जाए तो तुम उसका जल्दी से जल्दी निकाह कर दिया करो।

कुछ चीज़ों में जल्दी करने का हुक्म

सैय्यदना अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि मुझे मेरे महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि कुछ चीज़ों में जल्दी करोः–

जैसे नमाज़ का वक़्त हो जाए तो पढ़ने में जल्दी करो।

जैसे ही कोई आदमी गुज़र जाए तो दफ़न करने में जल्दी करो।

और बेटी जवान हो जाए और उसके लिए रिश्ता हो तो उसकी शादी करने में जल्दी करो। इतना जहेज़ हो, ऐसा मकान हो। यह वह ख़्वाहिशात हैं कि जिनकी कोई हद नहीं, दीन इस्लाम ने कहा ज़रूरियात की हद होती है लिहाज़ा तुम ज़रूरतों को पूरा करो ख़्वाहिशात की कोई हद नहीं होती लिहाज़ा ख़्वाहिशात के पीछे मत पड़ो जितना अल्लाह तआला ने दिया

बस इसके ऊपर सब्र शुक्र की ज़िन्दगी गुज़ारो आगे अगर बच्चा बच्ची नेक व दीनदार होंगे तो उनका रिज़्क़ अल्लाह तआला अता करेगा।

निकाह रिज़्क़ की बरकत का सबब है

दीन इस्लाम में यह तसव्वुर है कि जब बीवी आती है तो अपने साथ अपना रिज़्क़ लेकर आती है। मर्द इस बात की तसदीक़ करेंगे कि जब कुँवारे थे तो जितना कमाते थे शादी के बाद उनके रिज़्क़ में अल्लाह तआला बरकत दे देते हैं, बढ़ा देते हैं बल्कि जब उनका बच्चा हो जाए तो अल्लाह तआला और बढ़ौतरी कर देता है। यह अल्लाह की तक़सीम है। रब्बे करीम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿نحن قسمنا بينهم معيشتهم﴾ हम ने उनके बीच रिज़्क को बाँट दिया। यह हम करते हैं लिहाज़ा कितने नौजवान थे जो कितने ग़रीब थे शादी के बाद ऐसा नसीब खुला कि वह वक़्त के सेठ बन गए तो औरत अपना नसीब अपने साथ लाती है इसलिए दीन इस्लाम ने औरतों के साथ बहुत ही ज़्यादा एहसान किया कि उनको हक़ दिलवाए और मर्दों को बाँध दिया कि तुम निकाह के बग़ैर औरत के क़रीब नहीं हो सकते। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उम्मत पर इस बात को अच्छी तरह साफ़ कर दिया।

लिहाज़ा औरतों को चाहिए कि रोज़ाना दरूद शरीफ़ पढ़कर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में हदिया भेजा करें और दुआ मांगा करें ऐ अल्लाह के महबूब! आपको हमारी

तरफ़ से सलाम हो उस तब्क़े की तरफ़ से जिनको इस्लाम से पहले के ज़माने में ज़िन्दा क़ब्रों में दफ़न कर दिया जाता था। आपने हम कमज़ोरों को विरासत में हिस्सा दिलाया, आपने माँ के क़दमों में जन्नत बताई, आपने अपने आख़िरी ख़ुत्बे में भी हमें याद रखा, औरतों के साथ अच्छे बर्ताव की तालीम दी लिहाज़ा अल्लाह तआला हमारी तरफ़ से आपको बेहतरीन अज्र व बदला नसीब करे।

अच्छे मर्द की पहचान

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया

﴿الدنيا كلها متاع وخير متاع الدنيا المراة الصالحة.﴾

कि दुनिया पूँजी है और इसकी बेहतरीन पूँजी नेक औरत है तो पूरी दुनिया सरमाया है और बेहतरीन सरमाया नेक बीवी है, मर्दों को यह बताया गया कि औरतें ज़िन्दगी का सबसे हसीन सरमाया होती हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया ﴿حبب الى النساء﴾ मेरी फ़ितरत में बीवी की मुहब्बत रख दी गई है। लिहाज़ा आपने वसीयत फ़रमाई कि तुम औरतों के साथ भलाई किया करो। एक हदीस पाक में इर्शाद फ़रमायाः

﴿خيركم خيركم لاهله وانا خيركم لاهلى.﴾

तुम में से सबसे बेहतर वह है जो तुम में से अपने घरवालों के लिए बेहतर हो। तो देखिए अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपने आपकी मिसाल पेश फ़रमाई। आप

अल्लाह के महबूब थे। नबियों के सरदार सारी सारी रात इबादत करने वाले अल्लाह के हुक्मों पर चलने वाले, सबसे ज़्यादा अल्लाह से डरने वाले भी, सबसे ज़्यादा आख़िरत की तैयारी करने वाले मगर आपने फ़रमाया कि मैं तुम में से अपने घरवालों के लिए सबसे ज़्यादा बेहतर हूँ तो किसी मर्द की अच्छाई का अन्दाज़ा उसकी दफ़तर की ज़िन्दगी से नहीं लगाएंगे, उसके दोस्तों की ज़िन्दगी से नहीं लगाएंगे बल्कि उसके घर के अन्दर की ज़िन्दगी से लगाएंगे अगर वह अपने बीवी-बच्चों के साथ मुहब्बत प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारता है तो वह एक अच्छा इन्सान है और अगर अपने घर में उसने मुसीबत का माहौल बना रखा है तो वह एक बुरा इन्सान है।

औरत और मर्द के अमल का दायरा

अल्लाह तआला ने मर्द और औरत के अमल का दायरा अलग-अलग कर दिया। माँ को ममता दी और बाप को मुशक्क़त बर्दाश्त करने का मिज़ाज दिया। लिहाज़ा औरत घर के माहौल में रहकर अपनी ज़िम्मेदारी को निभाए और बाहर की ज़िम्मेदारियों को मर्द संभाले। वैसे भी अगर आप देखें तो औरतें मर्दों के मुक़ाबले कमज़ोर होती हैं। अल्लाह तआला ने मर्द को मिट्टी से बनाया और औरत को मिट्टी से नहीं बनाया बल्कि मर्द की पसली से बनाया। औरतें मर्द के लिए फ़र्स्ट डेरीवेटिव (FIRST DERIVATIVE) यानी पहली मुशतक़ होने वाली चीज़ की हैसियत रखती हैं और जब भी कोई चीज़

किसी चीज़ के लिए अव्वल हिस्सा हो तो वह ज़्यादा नफ़ीस होता है, ज़्यादा चमकदार होता है। इसीलिए अल्लाह तआला ने पैदाईशी तौर पर औरतों में नरमी रखी है, नज़ाकत रखी, हुस्न व जमाल रखा क्योंकि उसकी ज़िन्दगी में इन्हीं चीज़ों की ज़रूरत थी और इसके मुक़ाबले में मर्द को ऐसा जिस्म दिया जो मुशक़्क़त झेल सकता है। अब अगर किसी औरत को कहा जाए कि सौ किलो की बोरी अपनी कमर पर उठाकर फ़लां जगह पहुँचाओ तो वह बेचारी दबकर मर ही जाएगी जबकि मर्द मुशक़्क़त के काम फ़ैक्टरियों में कारख़ानों में करते फिरते हैं।

मर्द को अगर कहा जाए कि तुम थोड़ी देर बच्चों को संभालो तो उसके लिए पन्द्रह मिनट से ज़्यादा गुज़ारना एक मुसीबत हो जाती है, इसलिए कि उसको यह तबियत दी ही नहीं गई जबकि माँ अपने बच्चों के साथ पूरा दिन रहती है और उनके नाज़ बर्दाश्त करती है, रातों को चुप करवाती है। इसलिए कि अल्लाह तआला ने उनकी तबियत ही ऐसी बनाई है। तो फ़ितरत का तक़ाज़ा यह है कि मर्द के काम का दायरा अलग हो और औरत के काम का दायरा अलग हो। अब औरतें ख़ुद सोचें अगर घर में यह रात को सोई हुई हों और बाहर से कोई दरवाज़ा खटखटाए तो उस वक़्त यह ख़ुद बाहर निकलती हैं? अपने मियाँ को भेजती हैं तो यह इस बात की दलील है कि औरत इसलिए नहीं बनी कि वह बाहर निकलकर लोगों के सामने अपनी हिफ़ाज़त ख़ुद करे। उसकी हिफ़ाज़त के लिए अल्लाह तआला ने मर्द को बनाया तो ज़ेहन में यह बात अच्छी तरह बिठा लें कि मर्द की ज़िम्मेदारी घर के बाहर की है

और औरत की ज़िम्मेदारी घर के अन्दर की है।

मुवद्दत और रहमत

मर्द व औरत जब घर में एक दूसरे के साथ हों तो जितना मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारें उतना ज़्यादा अच्छा है। इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमायाः

﴿حب الی من دنیاکم ثلث﴾

मुझे तुम्हारी दुनिया में से तीन चीज़ें पसन्द हैं, फ़रमायाः

1. खुशबू
2. नेक बीवी
3. नमाज़

नमाज़ रुहानी मैअराज है, रुहानी सुरूर है और इन्सान का जिस्मानी सुरूर वह उसकी बीवी के साथ जुड़ा हुआ है। इससे औरत की जमालियाती फ़ितरक की तरफ़ भी इशारा है। इसलिए औरतों में आमतौर से हुस्न व जमाल का ख़्याल रखना अपने आपको मेनटेन करना उनकी फ़ितरत में अल्लाह तआला ने रख दिया है। इर्शाद बारी तआला है ﴿ومن اٰیٰتہ﴾ और अल्लाह तआला की निशानियों में से यह हैः

﴿ان خلق لکم من انفسکم ازواجا.﴾

कि उसने तुम में से तुम्हारे लिए जोड़ा बनाया ﴿لتسکنوا الیھا﴾ ताकि तुम उससे सुकून पाओ। तो क़ुरआन पाक की तालीम के मुताबिक़ शादी की असली वजह यह होती है कि बीवी ख़ाविन्द के ज़रिए सुकून पाए और ख़ाविन्द बीवी के ज़रिए सुकून पाए

और आगे फ़रमाया—

﴿وجعل بينكم مودة ورحمة.﴾

और तुम्हारे दर्मियान मुहब्बत रख दी।

अब देखिए शरीयत ने दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किए: (1) मुवद्दत, (2) रहमत।

मुवद्दत कहते हैं मुहब्बत को तो जवानी की उम्र में क्योंकि मियाँ-बीवी को एक दूसरे की फ़ितरी तौर से ज़रूरत भी होती है तो इस कैफ़ियत को मुवद्दत कहा और जब बुढ़े हो जाते हैं तो उस वक़्त उनकी जिस्मानी ज़रूरत तो घट जाती है लेकिन एक दूसरे के साथ जुड़े रहने के लिए एक दूसरे की गुज़री हुई ज़िन्दगी का गुज़रा ज़माना याद करें और एक दूसरे के साथ रहमत का मामला करें। बुढ़ापे में ख़ाविन्द यह सोचे कि यह वह बीवी है कि जिसने जवानी मेरी ख़ातिर गुज़ार दी और उसने अपनी ज़िन्दगी के बीस साल, पच्चीस साल, तीस साल मेरी ख़िदमत में गुज़ार दिए लिहाज़ा अब अगर इसका मिज़ाज चिड़चिड़ा बन गया है या इसकी तबियत ठीक नहीं रहती तो इतना अर्सा मेरे साथ गुज़ारने का भी तो इसको नफ़ा मिलना चाहिए।

इसी तरह बीवी भी सोचे कि आज मेरा ख़ाविन्द लाठी के सहारे चल रहा है मगर यह वही है जिसने जवानी की लज़्ज़तें मुझे दीं, मेरे बच्चों का बाप बना, मेरी इज़्ज़त व असमत की हिफ़ाज़त का सबब बना, इसने इतने साल माल व दौलत कमाकर मुझे सुकून की ज़िन्दगी दी तो अब अगर यह बूढ़ा हो

गया, चिड़चिड़ापन इसकी तबियत में आ गई, बात बात पर यह मस्‌अला बना देता है तो चलो इसकी पिछली ज़िन्दगी के एहसानों को सामने रखकर मुझे अब भी इसके साथ गुज़ारा करना है तो क़ुरआन मजीद का हुस्न देखो कि उसने दो लफ़्ज़ इस्तेमाल किए (1) मुवद्‌दत, (2) रहमत। जवानी में मुवद्‌दत की वजह से मियाँ-बीवी इकठ्‌ठे रहते हैं और बुढ़ापे में रहमत की वजह से दोनों इकठ्‌ठा रहते हैं।

साथी की तलाश

क़ुरआन मजीद में है कि,

﴿فانکحوا ما طاب لکم من النسآء.﴾

तुम निकाह करो औरतों में से जो तुम्हें पसन्द हो। लिहाज़ा शादी से पहले मर्द को भी इख़्तियार दिया गया कि वह अपने मिज़ाज के मुताबिक़, अपनी सोच के मुताबिक़ जो लड़की उसकी ज़िन्दगी की शरीअतबेहतरीन साथी बनकर रह सकती है वह ऐसी लड़की की तलाश करे और लड़की को भी इख़्तियार दिया गया कि वह भी अपने माँ-बाप के ज़रिए इसकी पूरी तहक़ीक़ करवा ले और जो उसकी समझ में आए कि यह मेरी ज़िन्दगी का बेहतरीन साथी हो सकता है तो इस लड़की की मर्ज़ी से माँ-बाप हाँ करें। तो माँ-बाप की हैसियत सलाहकार की होती है। फ़ैसला शरीअत ने लड़के या लड़की के पास रखा है। जब तक लड़की हाँ न करे माँ-बाप के लिए ज़बरदस्ती उसका निकाह करना बहुत बड़ा गुनाह है हाँ क्योंकि बच्चियों

में अल्लाह तआला ने हया व शर्म रखी है। इसलिए अगर उसके सामने प्रोपोज़ल आए और वह बच्ची ख़ामोश रहे या मुस्करा पड़े तो यह मुस्कुराना या ख़ामोश रहना ही उसकी इजाज़त बन जाती है।

मियाँ-बीवी को लिबास से मुशाबिहत

मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ को जिस तरह क़ुरआन मजीद ने ख़ूबसूरत अन्दाज़ में बयान किया इतना दुनिया में किसी मज़हब ने बयान नहीं किया। लिहाज़ा क़ुरआन मजीद में इर्शाद फ़रमाया,

﴿هن لباس لكم وانتم لباس لهن.﴾

वह तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो।

यानी बीवियाँ ख़ाविन्दों के लिए लिबास हैं और ख़ाविन्द बीवी के लिए लिबास हैं। ये गिनती के कुछ बोल हैं लेकिन मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ को जितना थोड़ा लफ़्ज़ों में यहाँ समेटा गया, दुनिया की किसी किताब नहीं समेटा गया। यह क़ुरआन मजीद का ऐजाज़ है।

- लिबास से तश्बीह देने में बहुत सारी हिक्मतें हैं। एक हिक्मत तो यह है कि इन्सान के जिस्म के सबसे ज़्यादा क़रीब उसका लिबास होता है। लिबास से ज़्यादा कोई चीज़ उसके जिस्म के क़रीब नहीं होती तो लिबास इसलिए कहा कि बीवी यह समझे कि अब मेरी ज़ात के सबसे ज़्यादा क़रीब अगर दुनिया में कोई हस्ती है तो वह मेरा

ख़ाविन्द है और ख़ाविन्द यह समझे कि अब अगर मेरी ज़ात के सबसे ज़्यादा क़रीब कोई हस्ती है तो वह मेरी बीवी है। इसको कहते हैं यकजान और दो क़ालिब कि जिस्म तो उनके दो होते हैं लेकिन जान उनकी एक होती है।

- एक हिक्मत यह है कि लिबास के ज़रिए से इन्सान के ऐब छिप जाते हैं। कोई भी आदमी बग़ैर लिबास के लोगों के सामने नहीं आना चाहता यहाँ तक कि मर्द को भी अगर कोई कहे मैं तुझे लोगों के सामने नंगा कर दूँगा तो मर्द को इतनी हया आती है कि उसका जी चाहता है कि ज़मीन खुल जाती और मैं नीचे उतर जाता। तो मर्द अगर इस तरह बेलिबास दूसरों के सामने होना पसन्द नहीं करता है तो औरत में तो अल्लाह तआला ने और भी हया रखी है। तो इससे मालूम हुआ कि लिबास से इन्सान के ऐब छिपते हैं लिहाज़ा बीवी के ज़रिए से ख़ाविन्द के ऐब छिप जाते हैं और ख़ाविन्द के ज़रिए बीवी के ऐब छिप जाते हैं और इन्सान ग़ौर करे कि अगर शादी न हो तो उसमें कैसी कैसी कोताहियाँ लोगों के सामने आ जाएं, वह कैसी कैसी ग़लतियों को कर गुज़रे। इस ज़िल्लत से बचाने के लिए अल्लाह तआला ने यह शादी-शुदा ज़िन्दगी का रास्ता दिया कि हराम कामों के पीछे पड़ने के बजाए तुम हलाल तरीक़े से अपनी ज़िन्दगी गुज़ारो।
- एक इसका मतलब यह भी है कि लिबास से इन्सान की ख़ूबसूरती में इज़ाफ़ा हो जाता है। इसीलिए औरत जब

अच्छे कपड़े पहनती है तो वह समझती है कि मेरी शख़्सियत में ज़्यादा ख़ूबसूरती आ जाती है। मर्द भी समझता है कि मैं अच्छा लिबास पहनूँगा तो ज़्यादा ख़ूबसूरत नज़र आऊँगा तो जिस तरह लिबास से इन्सान को ज़ीनत मिलती है। इसी तरह ख़ाविन्द को बीवी से ज़ीनत मिलती है और बीवी को ख़ाविन्द के ज़रिए से ज़ीनत मिलती है अगर बीवी न होती तो मर्द लोग तो जंगलों की झोपड़ियों में ज़िन्दगी गुज़ारा करते, यह महल्लात बनाने और घरों के अन्दर आराम व आसाइश की हर चीज़ का होना और हर तरह की नाज़ व नेमत की ज़िन्दगी यह मर्द को औरत के सबब मिली है इसलिए हम ने देखा मर्द जहाँ अकेले रहते हैं वहाँ बेचारों के लिए कपड़े धोकर इस्तरी करना मुसीबत होता है, मैले कुचैले कपड़े पहने फिर रहे होते हैं बग़ैर इस्तरी के कपड़े पहने फिर रहे होते हैं यह साफ़ सुथरा होकर जो रहना होता है। यह बीवी की बरकतें होती हैं।

- लिबास के अन्दर एक ख़ूबी और भी है कि वह इन्सान को सर्दी से भी बचाता है, गर्मी से भी बचाता है लिहाज़ा अगर सर्दी में किसी को कहें कि लिबास के बग़ैर बाहर निकलो तो उसकी क़ुल्फ़ी ही जम जाए तो इसके बचाव के लिए लिबास है इसी तरह गर्मी से बचने के लिए भी लिबास होते हैं। अल्लाह तआला ने मियाँ-बीवी को एक दूसरे का लिबास कहा इसलिए कि ज़िन्दगी की ऊँच-नीच के हालात की मुशक़्क़तों से बचने के लिए ख़ाविन्द को बीवी काम

आती है और बीवी को ख़ाविन्द काम आता है।

- फिर लिबास के बग़ैर इन्सान अधूरा होता है। लिबास पहनकर उसकी तकमील होती है। इसी तरह मर्द औरत के बग़ैर अधूरा होता है। औरत मर्द के बग़ैर अधूरी होती है। उनकी ज़िन्दगी एक दूसरे के बग़ैर अधूरी है।
- फिर इसमें एक नुक्ता है कि अगर लिबास इन्सान का कहीं दूर पड़ा हो और उसको डर हो कि कहीं लोग न आ जाएं तो यह कैसे जल्दी से भागता है। इसी तरह कुँवारा मर्द बेक़रार होकर अपनी बीवी की तरफ़ आता है और बीवी अपने मियाँ की तरफ़ आती है।
- और एक नुक्ता इसमें मुफ़स्सिरीन ने और भी लिखा कि लिबास इन्सान के ताबे होता है और यहाँ पर ﴿هن لباس لكم﴾ औरतों का ज़िक्र पहले किया तो इससे भी पता चलता है कि औरतों को अल्लाह तआला ने मर्दों के ताबे किया अगर कोई सवाल करे कि मर्द भी तो औरतों का लिबास हैं तो इससे पता चलता है कि मर्द भी औरतों के ताबे होते हैं तो इसका जवाब यह है कि औरतें तो शरई हुक्म की वजह से मर्दों के ताबे होती हैं और मर्द मुहब्बत की वजह से औरतों के ताबे होते हैं इसलिए जो नेक बीवियाँ होती हैं अच्छे अख़्लाक़ वाली बीवियाँ होती हैं वे अपने हुस्ने सुलूक के साथ अपने ख़ाविन्दों को ताबे बना लेती हैं, वे इतने अच्छे मशवरे देती हैं कि उनके ख़ाविन्द उनके मशवरे को मानते हैं।

उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा का अहम मशवरा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सुलह हुदैबिया के वक़्त काफ़िरों के साथ सुलह करना चाहते थे तो आपने सुलह के ऊपर दस्तख़त फ़रमा दिए। सहाबा इकराम रज़ियल्लाहु अन्हुम की आम समझ यह थी कि हमें काफ़िरों से दबकर सुलह नहीं करनी चाहिए अगर यह हमारा रास्ता रोकेंगे तो हम उनसे लड़ेंगे, वे कौन होते हैं हमारा रास्ता रोकने वाले और फिर बड़े अर्से के बाद बैतुअल्लाह का दीदार करने जा रहे थे तो उनकी तबियतें चाहती थीं कि बस अब हम ने एहराम बाँध लिया और क़ुर्बानी के जानवर हमारे साथ हैं, तलवारें हमारे पास हैं कौन है जो हमारे सामने आए मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने सुलह को तरजीह देते हुए उनके साथ इस मौक़े पर एक समझौता कर लिया और समझौते की ज़ाहिर शर्तें भी ऐसी मालूम होती थीं कि जैसे मुसलमान दबकर सुलह कर रहे हैं, काफ़िर ग़ालिब होकर सुलह कर रहे हैं। मिसाल के तौर पर उसमें एक शर्त थी कि अगर एक काफ़िर मुसलमान होकर मुसलमानों के पास आए तो ये उसको वापस करने के पाबन्द होंगे और अगर कोई मुसलमान काफ़िर बनकर चला जाए तो काफ़िर उसको वापस नहीं करेंगे तो इस क़िस्म की शर्तों से सहाबा इकराम रज़ियल्लाहु अन्हुम के दिल में यह ख़्याल था कि हमें इतना दबकर सुलह नहीं करनी चाहिए मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने सुलह कर ली। जब सुलह पर

दस्तख़्त हो गए तो आपने सहाबा इकराम रज़ियल्लाहु अन्हुम को फ़रमाया दिया कि अब तुम अपने एहराम उतार दो, जानवरों को यहीं ज़िब्ह कर दो और फिर हम दोबारा कभी उमरा करेंगे। अब यह हुक्म सहाबा के लिए अजीब व ग़रीब था वह इतनी हैरत में डूब गए कि उनकी तबियतें एहराम उतारने के लिए आमादा नहीं थीं तो वे यह हुक्म सुनकर ख़ामोश तो हो गए मगर उनमें एहराम उतारने के लिए कोई भी नहीं उठा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब देखा तो आप अपने ख़ेमे में तशरीफ़ लाए। आपकी अहलिया उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा ख़ेमे में थीं। आपने उनके सामने ज़िक्र किया कि इस तरह मैंने सुलह पर दस्तख़त कर दिए और मैंने सहाबा को कह दिया कि तुम एहराम उतारो मगर उनकी तबियतें आमादा नहीं हो रही हैं। तो उन्होंने आगे से नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में मशवरा दिया ऐ अल्लाह के महबूब! ये आपके जानिसार हैं, आपके बेदाम ग़ुलाम हैं क्योंकि ये दिल में नियत लेकर आए थे कि हम बैतुल्लाह जा रहे हैं तो उमरे की जो मुहब्बत और शौक़ था उसकी वजह से अब उनकी तबियतों पर हैरानी है। आप ऐसा कीजिए कि बाहर जाकर अपनी सवारी के जानवर को ज़िब्ह कर दीजिए। जब ये देखेंगे कि आप यह काम कर रहे हैं तो चुपचाप आपकी इत्तिबा करेंगे। इसलिए अहलिया के इस मुफ़ीद मशवरे के बाद नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बाहर तशरीफ़ लाए और आपने अपने जानवर को ज़िब्ह किया तो उनको देखकर सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने अपने अपने जानवरों को

ज़िब्ह कर दिया, एहराम उतार लिया तो इस हदीस पाक से पता चलता है कि औरत अगर नेक हो समझदार हो तो वह ऐसे क़ीमती मशवरे देती है कि मर्द के लिए बड़ी-बड़ी मुसीबतें आसान हो जाती हैं। इसी तरह अगर ख़ाविन्द समझदार हो और अच्छा हो तो जो चीज़ औरत के लिए पहाड़ से बड़ी मुसीबतें होती हैं, मर्द उन मुसीबतों का आसान हल ढूंढ लेता है और औरत को परेशानी से बचा लेता है तो इससे पता चला कि दीन-ए-इस्लाम ने मर्द व औरत को जो एक दूसरे का लिबास कहा तो उससे बेहतर तश्बीह कोई और नहीं दी जा सकती।

निकाह करने वालों के लिए बशारत

हदीस पाक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तीन आदमियों की मदद करना अल्लाह के ऊपर हक़ है। अल्लाह तआला पर कोई चीज़ ज़रूरी नहीं मगर अल्लाह तआला की शान देखिए कि उसने अपने महबूब की ज़बान से कैसे प्यारे अल्फ़ाज़ कहला दिए कि तीन आदमियों की मदद करना अल्लाह तआला के ऊपर हक़ है। उनमें से एक वह मर्द जो निकाह करना चाहे उसके लिए निकाह की आसानियाँ करना, असबाब जमा करना या जो नौजवान लड़की निकाह करना चाहे उसके लिए अच्छे ख़ाविन्द का मुहैया करना, इसमें मदद करना अल्लाह पर हक़ है। इसलिए नौजवान लड़के-लड़कियाँ अगर दो रक्अत नफ़िल पढ़कर अल्लाह से

दुआ मांगे तो अल्लाह तआला उनके लिए अच्छे रिश्ते का मुहैया होना आसान फ़रमा देते हैं।

जीवन-साथी के चुनाव में ग़लती

एक बात ज़ेहन में रखिए कि आजकल एक बहुत बड़ी ग़लती यह की जाती है कि मर्द शादी करने के लिए औरत में सिर्फ़ औरतपन (हुस्न व ख़ूबसूरती) देखते हैं। तीन लफ़्ज़ों को याद कर लेंः–

- एक निसवानियत,
- एक इन्सानियत,
- और एक ईमानियत।

ये तीनों अलग-अलग चीज़ें हैं। ईमानियत तो यह है कि कोई औरत अल्लाह पर, उसके रसूल पर ईमान लाए कलिमा पढ़कर मुसलमान बन जाऐ, इस दीन को क़ुबूल कर लेना यह ईमानियत है लेकिन इसके बाद उसके अन्दर अख़्लाक़ भी अच्छे हों, सदाक़त हो, दयानत हो, अमानत हो, ख़िदमत हो, वफ़ा हो। इन सारी चीज़ों को इन्सानियत कहते हैं और ज़ाहिर में भी उसके नैन-नक़्श अच्छे हों। क़द व क़ामत अच्छा हो, देखने में मर्द के लिए उसमें कशिश हो इसको निवानियत कहते हैं।

आजकल नौजवान लड़की के अन्दर सिर्फ़ निसवानियत देखते हैं इसलिए अगर कोई तीखे नैन व नक़्श वाली मॉडल

क़िस्म की लड़की नज़र आ जाऐ तो बस फ़ौरन फ़ैसला कर लेते हैं कि इससे शादी करनी है। यह चीज़ नहीं सोचते कि उसके अन्दर ईमानियत भी है या नहीं लिहाज़ा कितने नौजवान हैं जो काफ़िर लड़कियों के साथ शादी को तैयार फिरते हैं और यह भी नहीं देखते कि उसके अन्दर इन्सानियत भी है कि नहीं क्योंकि लड़की के शक्ल का ख़ूबसूरत होना और बात है उसकी सीरत का ख़ूबसूरत होना यह एक अलग बात है लिहाज़ा अगर वह देखने में ख़ूबसूरत है लेकिन उसकी आदतें अच्छी नहीं हैं तो फिर उसकी ख़ूबसूरती किस काम की? आपने देखा नहीं कि ख़ूबसूरत लड़कियों की तलाक़ें हो जाती हैं।

ज़िन्दगी किस वजह से उजड़ती है?

कुछ दिनों पहले एक क़िस्सा सामने आया कि एक लड़की को ब्युटी-क्वीन कहा जाता था। उसकी सहेलियों और उसके रिश्तेदारों ने उसका नाम ब्युटी-क्वीन रखा हुआ था। कुछ दिनों के बाद उसकी तलाक़ हो गई इसलिए कि उसके अन्दर हुस्न व जमाल तो बहुत था मगर बहुत ज़्यादा ज़िद्दी लड़की थी। बात-बात पर ख़ाविन्द के साथ ज़िद करना, अपनी मनवाना, छोटी सी बात को बड़ी बात बना देना। तो औरत जब इस तरह मर्द को परेशान करने लग जाए तो फिर वह जितनी भी ख़ूबसूरत हो वह ज़हर लगती है। इसलिए उसके साथ कुछ महीने ख़ाविन्द ने गुज़ारा किया, आख़िर में उसको तलाक़ देकर उसके घर वापस भेज दिया तो निसवानियत और चीज़ है, इन्सानियत और चीज़ है और ईमानियत और चीज़ है।

दर्द भरा वाक़िआ

बाहर मुल्कों में रहने वाले नौजवान अक्सर औरत में निसवानयित देखते हैं कि देखने में बड़ी ख़ूबसूरत है, गोरी है और शादी कर बैठते हैं और फिर उनके अन्दर वह मुसीबतें उठाते है कि किसी को बता भी नहीं सकते।

लिहाज़ा एक नौजवान ने इसी तरह निसवानियत को देखकर किसी से शादी कर ली। अब उस गोरी से उसका एक बेटा भी हो गया, एक बेटी भी हो गई। काफ़ी मालदार आदमी था। जब बेटी ज़रा बड़ी होने लगी तो उसने सोचा कि हम अपने मुल्क वापस चले जाते हैं ताकि बच्ची ग़लत माहौल से बच जाए चुनाँचे उसने लाहौर में एक बड़ी कोठी बनाई और अपने बीवी-बच्चों को लेकर वहाँ चला गया। दो तीन साल वहाँ गुज़ारे। इस दो तीन साल में उस औरत को यह महसूस हुआ कि यहाँ आकर तो मैं बस घर के अन्दर क़ैद होकर रह गई हूँ, अब बाहर भी जाना होता है तो ख़ाविन्द ख़ुद लेकर जाता है फिर वापस आता है। जो ऐश-इशरत मुझे बाहर निकलने की अपने वतन में थी वह यहाँ नहीं है। लिहाज़ा उसने अपने वतन भागने की नियत कर ली। एक किसी मामूली सी बात पर बाप ने अपने बेटे को समझाया कि तुमने नमाज़ में क्यों सुस्ती की? जल्दी पढ़ लिया करो। लड़का पन्द्रह साल का था, बाप तो समझाकर चला गया। माँ ने कहा तुम्हारा बाप तो बस तुम्हें हर वक़्त डाँटता ही रहता है क्यों न

हम इस मुसीबत से जान छुड़ाएं। अब वह बच्चा कच्चा था, माँ की बातों में आ गया। लिहाज़ा उस औरत ने बेटे को भी लिया, बेटी को भी लिया, पासपोंट लिए और सीधे अपने मुल्क की एम्बेसी में गई और वहाँ जाकर कहा कि ख़ाविन्द ने तो हमें मुसीबत में रखा हुआ है, मैं जाना चाहती हूँ और आप उस ख़ाविन्द के लिए उस मुल्क में आने के रास्ते बन्द कर दें। इस तरह खुद तो बच्चों को लेकर वापस चली गई। जब ख़ाविन्द को पता चला कि मेरा पासपोंट भी ले गई। उसने रुजू किया तो ऐम्बेसी वालों ने कहा कि हाँलाकि तुम्हारे पास वहाँ की नेशनेलिटी थी लेकिन अब तुम हमारे मुल्क में नहीं जा सकते। तुम्हारी बीवी ने तुम्हारा रास्ता बन्द करवा दिया है। अब बताओ जिसका जवान बेटा भी गया और बालिग़ होने के क़रीब बेटी भी चली गई और ज़िन्दगी के पच्चीस साल का साथ रहा अब उसको कैसे सुकून मिले। लिहाज़ा वह इतना रोता इतना रोता की कोई हद नहीं। अब वहाँ क्या हुआ कि वहाँ जाकर औरत ने नौकरी करनी थी तो नौकरी के बहाने उसको तो बाहर निकलने का मौक़ा मिल गया लिहाज़ा वह रोज़ाना शाम को नाईट क्लबों में अपना वक़्त गुज़ारती। लड़का एक साल के बाद जवान हो गया तो उसको वहाँ बहुत सारी दोस्तियों की सूरतें निकल आयीं तो उस ज़िन्दगी में मशग़ूल हो गया ओर बेटी जवान हुई तो उसने भी उसी रास्ते को अपना लिया। अब बताइए कि इस नौजवान ने शादी करते हुए औरत के अन्दर निसवानियत तो देखी थी मगर ईमानियत को ना

देखा, इन्सानियत को न देखा। अब बैठकर रो रहा है। उसकी ज़िन्दगी तो तबाह हो गई तो बहुत बड़ी ग़लती नौजवान यह करते हैं कि सिर्फ़ हुस्न व ख़ूबसूरती देखते हैं।

बीवी में क्या-क्या तलाश करें?

जब बीवी की तलाश करनी हो तो पहले उसक अन्दर ईमानियत देखो। पक्की मोमिना है या ढीली ज़िन्दगी है, नमाज़ पढ़ती है या नहीं? नेकी करती है? पर्दा करती है? ये ईमानियत की लाईन की चीज़ें हैं और फिर देखो कि इसके अन्दर इन्सानियत भी है या नहीं? मसलन है तो बड़ी नमाज़, रोज़ा करने वाली मगर ग़ुस्से की तेज़ है, ज़िद्दी क़िस्म की लड़की है, कामचोर लड़की है, बेवफ़ा क़िस्म की लड़की है, हिर्स करने वाली है, मलतब-परस्त है तो ये चीज़ें बताएंगी कि उसके अन्दर इन्सानियत नहीं है तो ऐसी लड़की भी इन्सान को सुकून नहीं दे सकती है। तो पहले ईमानियत देखें और फिर उसके अन्दर इन्सानितय देखें और इन्सानियत देखने के लिए आप देखें कि उसको किस माँ ने पाला है, आमतौर पर माँ की परवरिश का औलाद पर ज़्यादा असर होता हे अगर माँ नेक है तो वह फिर बच्चियों को नेकी सिखाती है और बच्ची ने नेकी सीखी या नहीं इसकी तसदीक़ सहेलियों से होती है:

A man is known by the company he keeps.

उस लड़की की जिस दूसरी लड़कियों के साथ ज़्यादा दोस्ती है ज़्यादा उठना-बैठना ज़्यादा क़रीब है उन लड़कियों की

ज़िन्दगी से पता चलेगा कि उसने माँ का रंग पकड़ा भी है या नहीं तो पहले माँ को देखें और फिर उसकी सहेलियों को देख लें जिनके वह क़रीब है। इससे पता चल जाएगा कि उस लड़की की अपनी शख़्सियत क्या है अगर फ़ैशनेबल, बेपर्दा, बेनमाज़ी लड़कियों से उसकी दोस्ती है तो धोखे में मत पड़ें कि यह ख़ुद बड़े अच्छे घर की लड़की है, शादी के बाद अच्छे घर को बन्दे ने नहीं चूसना होता बीवी के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी होती है। अच्छी माँओं ने भी बदकार बेटे जने हैं तो दो चीज़ों को देखना चाहिए एक तो माँ नेक हो ताकि बुनियाद ठीक हो और दूसरा यह कि उसने रंग पकड़ा या नहीं। इसके लिए उसकी सहेलियों से पता करवाएं तो दो बातों से तसदीक़ हो जाएगी कि बच्ची का बैठना-उठना, तौर-तरीक़े, चाल-चलन, पसन्द न पसन्द कैसी है अब ज़ाहिर है कि यह काम आदमी ख़ुद तो कर सकता नहीं तो यह बात साफ़ हो जाए कि शरीअत ने निकाह से पहले मर्द को इजाज़त दी है कि वह औरत को पहले देख ले या औरत मियाँ को देख ले मगर वे तो कुछ मिनट में एक दूसरे को देखकर क्या पहचानेंगे, शक्ल ही देख सकते हैं तो शक्ल से क्या पता चले कि अन्दर दिल कैसा है अन्दर चाहतें कैसी हैं लिहाज़ा यह काम फिर लड़की के क़रीब के महरम मर्द और औरतें कर सकती हैं और लड़के के भी क़रीबी मर्द और औरतें कर सकती हैं तो माँ-बाप के मशवरे से कोई काम करना यह सबसे ज़्यादा महफ़ूज़ तरीक़ा है।

जो लड़के-लड़कियाँ आपस में एक दूसरे से दोस्तियाँ कर

लेते हैं और फिर माँ-बाप को परेशान करते हैं कि जल्दी हमारा निकाह करो और माँ-बाप को जोड़ नज़र नहीं आता, वे लड़के और लड़कियाँ मुसीबत ख़रीदते हैं। जब तक कोई बड़ा बीच में समझाने वाला, जोड़ को देखने वाला न हो, जवान लड़के और लड़कियाँ एक दूसरे के साथ जोड़ नहीं समझ सकते इसलिए पढ़ी लड़कियाँ और लड़के ग़लती करते हैं और एक दूसरे को देखकर समझते हैं कि बस हमारी तबियतें बहुत मिलती हैं और क्योंकि वह कुँवारे होत हैं उनको पता ही नहीं होता की शादी-शुदा ज़िंदगी की ज़रूरियात क्या होती हैं। जब शादी होती है तो बाद में जाकर उनको पता चलता है कि हमने जिन चीज़ों को अनदेखा किया उनको तो सबसे ज़्यादा अहमियत देनी चाहिए थी तो इसलिए शादी के चुनाव करने में बेहतर तरीक़ा यही है कि फ़ैसला लड़के और लड़की का होना चाहिए मगर मशवरा इसमें बड़ों का, माँ-बाप का शामिल होना चाहिए ताकि दोनों तरफ़ की मुनासबत (जोड़) को देखकर उनका आपस में निकाह हो सके।

चुनाव से पहले सेहत की जाँच

इसमें एक चीज़ और भी है कि कुछ जगहों पर ख़ानदानों में यह तरीक़ा है कि जब लड़के और लड़की के लिए आपस में फ़ैसला होने लगता है तो वे लड़के लड़की का डाक्टरी जाँच करवाते हैं। यह बुरी बात नहीं है, अच्छी बात है मिसाल के तौर पर अगर लड़के में कोई ऐसी बीमारी है कि जो लाइलाज

है तो भाई लड़की की ज़िन्दगी को क्यों बर्बाद करें।

क़रीब ही के अर्से की बात है कि इसी मुल्क में एक नौजवान आया और कहने लगा कि पन्द्रह दिन के बाद मेरी शादी है और मैं एच०वाई०वी० पौज़िटिव हूँ। अब मैं परेशान हूँ कि मैं किसको कैसे बताऊँ। अब लड़की वालों की भी तैयारी है, निकाह भी हो चुका है, रुख़्सती होनी है, पन्द्रह दिन रह गए तो इसने एक दफ़ा तो लड़की को बर्बाद ही कर दिया। हदीस पाक में आता है कि तुम अपने बीमार ऊँट को तंदुरुस्त ऊँट के पास मत बाँधो। इससे पता चला कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने भी इस चीज़ को पसन्द किया कि कोई ऐसी बीमारी हो जो दूसरों को लगने वाली हो तो उसको अलग रखना चाहिए।

एक हदीस पाक में आता है कि कोढ़ के मरीज़ से भी मिलने में तुम्हें एहतियात करनी चाहिए। एक हदीस पाक में आता है न ख़ुद नुक़सान उठाओ न दूसरे को नुक़सान पहुँचाओ, तो इन सारी हदीसों को सामने रखकर उलमा ने इस चीज़ को पसन्द किया कि अगर लड़की को कोई लेडी डाक्टर देखे, लड़के को कोई डाक्टर देखे और वह जाँच कर ले कि कोई ऐसी बीमारी नहीं जिसका कोई हल मौजूद न हो तो यह एक अच्छी बात है तो ऐसा भी हुआ कि माँ-बाप ने शादी कर दी और शादी के बाद पता चला कि मर्द तो बीवी के क़ाबिल ही नहीं। इस जवान लड़की की ज़िन्दगी तो तबाह हो गई क्योंकि उसके ऊपर तो ठप्पा लग गया कि यह शादी-शुदा है। अब उसने अगर तलाक़ ले भी ली तो वह तलाक़-शुदा

कहलाएगी, कुँवारी तो नहीं कहला सकती चाहे मर्द उसके क़रीब भी नहीं हुआ हो तो ये परेशानियाँ फिर पूरी ज़िन्दगी की परेशानियाँ होती हैं। इसलिए एक दूसरे से खुद ही बता दिया जाए अगर कोई ऐसा मामला है तो वह सबसे बेहतर है।

और कई मर्तबा ग़ैर ख़ानदानों में शादी होती है तो लोग चीज़े छिपाते हैं तो इसमें अगर दोनों सुलह सफ़ाई से बच्चे और बच्ची के तिब्बी सर्टिफ़िकेट भी लें यानी किसी डाक्टर से इसकी रिर्पोट ले लें। डाक्टर बच्चे के बारे में कह दे कि यह नॉरमल है और लेडी डाक्टर बच्ची के बारे में कह दे यह नॉरमल है तो यह एक अच्छा अमल है हाँ यह ज़रूरी नहीं क्योंकि ख़ानदान में लड़के को भी सब जानते हैं, लड़कियों को भी जानते हैं। इस लिए आमतौर पर इसकी ज़रूरत पेश नहीं आती है। इस चीज़ की ज़रूरत वहाँ ज़्यादा आती है कि जहाँ दूर के रिश्ते होते हैं और एक दूसरे के बैकग्राउन्ड का कोई पता नहीं होता इसलिए मैंने शरई नुक़्ते नज़र से इस नुक्ते को खोला कि भाई शरीअत में इसकी भी इजाज़त मौजूद है।

निकाह किससे करें?

ज़िस तरह लड़के वालों को चाहिए कि वह नेक लड़की देखें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि बीवी को तलाश किया जाता है उसके माल की वजह से, उसके जमाल की वजह से, उसके ख़ानदान की वजह से, उसकी दीनदारी की वजह से तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने

फ़रमाया कि तुम अपनी बीवी को उसकी दीनदारी की वजह से पसन्द करो यानी पहले दीनदारी हो और बाद में बाक़ी चीज़ें भी हों मसलन दीनदार भी हो और ख़ूबसूरत भी हो तो सोने पे सुहागा। इसी तरह बेटी वालों को भी चाहिए कि वे अपनी बेटी को नेक दामाद के सुपुर्द करें। बेटी वाले भी ग़लती करते हैं कि लड़के के पास पैसा है या नहीं और इस पर फिर बच्ची को सारी ज़िन्दगी रोना पड़ता है याद रखना जो शख़्स अपने ख़ुदा का वफ़ादार नहीं हो सकता वह मख़्लूक़ का कभी वफ़ादार नहीं हो सकता। हमारे बुज़ुर्ग अपनी बेटियों के लिए नेक रिश्तों को ढूंढा करते थे।

नेक दामाद ढूंढ़िए जिसके अन्दर दीनदारी हो जिसके अन्दर इन्सानियत हो, रह गई बात उसके माल व दौलत की तो बच्ची का नसीब अच्छा होता है तो अल्लाह तआला उसको परेशानियों में नहीं रहने देते। बरकतें घर में अता फ़रमा देते हैं तो दोनों तरफ़ से दीनदारी को सामने रखना चाहिए।

बेटी को नसीहत

आमतौर से देखा गया है कि जब बच्ची की शादी होती है तो माँ या बाप उस बच्ची को नसीहतें करते हैं कि अब उसने नई ज़िन्दगी में किन बातों का ख़्याल रखना है। लिहाज़ा हमारे बुज़ुर्गों ने जो नसीहतें की हैं उसमें कुछ नुक्ते समझ लीजिए।

- एक बात तो यह है कि बेटी को समझाया एक बुज़ुर्ग ने कि बेटी ज़िद और ग़ुरूर से बचना कि यह तलाक़ की

कुंजी है अगर आप ग़ौर करें तो सौ औरतों को अगर तलाक़ हुई है तो शायद नव्वे से ज़्यादा वे होती हैं जिनकी ज़िद और जिनके तकब्बुर से परेशान होकर ख़ाविन्द उनको तलाक़ देते हैं।

- फिर उन्होंने फ़रमाया कि बेटी सुरमे का और पानी का इस्तेमाल कसरत से करना। सुरमे से मुराद यह कि तुम अपने मियाँ के लिए तैयार होना और पानी से मुराद यह कि कसरत से नहाना-धोना, यह न हो कि तुम्हारे जिस्म से पसीने की बदबू आती रहे।
- क़नाअत और इन्किसारी (झुकने) को अपना हथियार समझना यानी इन्किसारी से मुराद आजिज़ी है। मियाँ-बीवी के ताल्लुक़ में अल्लाह तआला ने मर्द को क़व्वाम बनाया। फ़रमाया ﴿الرجال قوامون على النساء﴾ कि मर्द औरतों के क़व्वाम हैं तो यूँ समझो कि एक छोटा सा घर है इसमें अल्लाह तआला ने मर्द को सरबराह बना दिया जिस तरह लोग दफ़्तरों में किसी को मैनेजर बना देते हैं, फ़ैक्टरियों में मैनेजर बना देते हैं तो आख़िर किसी न किसी को तो जवाबदेह होना ही पड़ता है तो जो हर बात के नफ़े नुक़सान का ज़िम्मेदार हो उसको मैनेजर कहते हैं। घर के अन्दर भी अल्लाह तआला ने नफ़े व नुक़सान का ज़िम्मदारे मर्द को बनाया और इस मैनेजर का नाम उसने ख़ाविन्द रखा। लिहाज़ा औरत को चाहिए कि वह अपने ख़ाविन्द को अपना सरबराह तसलीम करे।

औरत को एक मशवरा

हमारे इल्म में यह बात आई है कि बहुत सारी औरतें अपनी ज़िन्दगी का ज़्यादा वक़्त अपने ख़ाविन्द के साथ झगड़े में गुज़ार देती हैं कि मैं तुमसे बेहतर हूँ, मेरा मशवरा चलेगा, मेरी बात चलेगी। औरत के लिए बेहतर तरीक़ा यह है कि अगर वह अक़्ल में मर्द से बेहतर भी है फिर भी शौहर का हाथ ऊपर रखे। इस वजह से कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसे यह रुत्बा दिया है। ऐसा करने से अल्लाह तआला के यहाँ उसे बहुत ज़्यादा अज्र मिलेगा तो नेक बीवियाँ अपने कम अक़्ल ख़ाविन्दों को भी इज़्ज़त दिया करती हैं। उनको अच्छे मशवरे इस अन्दाज़ से देती हैं कि ख़ाविन्द उनसे फिर खुद मशवरा लेते हैं। मशवरा भी ज़बर्दस्ती न दिया करें। मशवरा दे दिया करें, ख़ाविन्द क़ुबूल कर ले तो बहुत अच्छा है, नहीं क़ुबूल करेगा तो फिर ठोकर खाएगा और जब दो चार दफ़ा देखेगा कि मेरी बीवी ने मुझे ये मशवरे दिए थे अगर मैं इस पर अमल कर लेता तो अच्छा होता तो वही ख़ाविन्द जिसने दो-तीन बातों को अन्देखा किया वह तीसरी बार पहले मशवरा पूछेगा फिर कोई क़दम उठाएगा। यह ज़्यादा बेहतर तरीक़ा है लड़ाई करने के मुक़ाबले में कि मेरी बात क्यों नहीं मानी जाती।

- एक माँ ने अपनी बेटी को नसीहत की कि बेटी अपने ख़ाविन्द के खाने-सोने के वक़्त का ख़्याल रखना। कई बार यह चीज़ें भी झगड़े का सबब बनती हैं। मसलन औरतें

कुछ दफ़ा सुस्त होती हैं, ख़ाविन्द के दफ़्तर जाने का वक़्त आ गया। उसकी मीटिंग है और अभी खाना ही तैयार नहीं या ख़ाविन्द को कहीं जल्दी जाना है और उसका सफ़र का सामान तैयार नहीं या उसके कपड़े ही तैयार नहीं या ख़ाविन्द को ज़रूरत पड़ी किसी चीज़ की और बीवी साहिबा ने ऐसी जगह रखी कि अब उसे याद नहीं कि मैं कहाँ रखी मिल ही नहीं रही तो इस क़िस्म के जो वाक़िआत हो जाते हैं फिर वह एक दूसरे के साथ झगड़े का सबब बनते हैं तो औरत को चाहिए कि वह मर्द के खाने पीने के वक़्त का ख़ास ख़्याल रखे।

- उसके अहल व अयाल के मतर्बे का भी ख़्याल रखे। मसलन जब मियाँ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो जो मियाँ के माँ-बाप हैं उनको भी अपने माँ-बाप की तरह इज़्ज़त दे। यह तो नहीं हो सकता कि अब जिन्होंने पाल-पोसकर बड़ा किया, जवान किया, शादी के बाद वह उनसे मिलना ही छोड़ दे और सिर्फ़ बीवी के साथ ही बैठा रहे। ये सब बेवक़ूफ़ियाँ होती हैं। अच्छी बीवी हमेशा इस बात का ख़्याला रखती है कि जिस तरह हमें अपने ख़ाविन्द को ख़ुश रखना है उसी तरह ख़ाविन्द के क़रीबी रिश्तेदारों को भी ख़ुश रखना है। अच्छे ख़ाविन्द हमेशा इसका ख़्याल रखते हैं कि जिस तरह हमने अपनी बीवी का दिल ख़ुश रखना है, बीवी के माँ-बाप का और बहन-भाईयों का भी दिल ख़ुश रखना है।

- बीवी को चाहिए कि अपने ख़ाविन्द का राज़ फ़ाश न करे अगर कोई कमज़ोरी है या कोई ऐसी ऊँच-नीच की बात है तो अपने ख़ाविन्द के राज़ को अपने सीने में रखे। कई लड़कियों की आदत होती है कि वे शादी के बाद अपनी माँ को, बहन को पूरी कारगुज़ारी सुनाने की आदी होती हैं और कई माँएं भी ऐसी होती हैं कि वह बेटी को रिमोट कन्ट्रोल बनाकर रखती हैं तो अगर माँ अपनी बेटी को रिमोट कन्ट्रोल बनाकर रखे तो इस बेटी का घर तो कभी आबाद नहीं होगा।

- बीवी को चाहिए कि ख़ाविन्द की ख़ुशी के वक़्त में रंजीदा न बने और उसके रंजिश के वक़्त में ख़ुशी ज़ाहिर न करे यानी अपनी ख़ुशी और ग़मी को ख़ाविन्द की ख़ुशी और ग़मी के साथ रखे किसी वजह से ख़ाविन्द ग़मज़दा है तो बीवी को चाहिए कि वह इस के ग़म को महसूस करे और अगर यह हँस रही है उसकी बातों पर तो साफ़ ज़ाहिर है कि उसको ग़ुस्सा आएगा और ग़ुस्सा ही बुनियाद बनता है जुदाईयों का, तलाक़ होने का।

- बीवी को चाहिए कि न तो हर वक़्त अपने शौहर को साथ रखे क्योंकि कुछ औरतों को आदत होती है कि वे यह चाहती हैं बस मर्द तो बाहर जाए ही नहीं। हर चीज़ एक हद तक होती है। हद के अन्दर जो चीज़ रहे वही अच्छी होती है तो जितना दिन का वक़्त मियाँ-बीवी ने इक्ठ्ठा गुज़ारना होता है वह इकठ्ठा गुज़ारें और जो बाक़ी

काम-काज का वक़्त है वह काम-काज का वक़्त है वह काम-काज में गुज़ारे।

- एक माँ ने अपनी बेटी को नसीहत की शादी के वक़्त कि बेटी तू अपने ख़ाविन्द के लिए बीवी और माँ का किरदार अदा करना। क्या मलबल कि बीवी तो तुम हो ही सही मगर हर मर्द की मिसाल बच्चे की सी होती है और यह सौ फ़ीसद ठीक बात है, लोहे की लकीर है। मर्द जितना भी बड़ा बनता फिरे घर में उसकी मिसाल बड़ी उम्र के ब्रच्चे के जैसे होती है तो बीवी को अपने मर्द को भी इस तरह संभालना होता है जिस तरह छोटी उम्र के बच्चे को संभालना होता है तो बीवी यह न समझे कि मैंने बस ख़ाविन्द की ज़रूरत पूरी कर दी। मैंने खाना बना दिया। अच्छी बीवियाँ वही होती हैं जो ख़ाविन्द की हर चीज़ का ख़्याल रखती हैं जिस तरह माँ उनकी हर चीज़ का ख़्याल रखती है अच्छी बीवियाँ भी अपने ख़ाविन्द की हर चीज़ का ख़्याल रखती हैं तो उस माँ ने देखो कितनी प्यारी नसीहत की अपनी बेटी को कि बेटी! तू अपने ख़ाविन्द की बीवी और माँ का किरदार अदा करना। वह खुद-ब-खुद तुम्हारा मोहताज हो जाएगा।

ख़ाविन्द को नसीहतें

जिस तरह दुल्हन को ये नसीहतें की जाती हैं उसी तरह दुल्हा को भी नसीहतें की जाती हैं। लिहाज़ा नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने जब अपनी लाडली बेटी सैय्यदा फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का निकाह करना था तो तिबरानी शरीफ की रिवायत है कि आपने अली रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि देखो फ़ातिमा तुम्हारी है बशर्ते उसके साथ तुम ठीक तरीक़े से रहो। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अलफ़ाज़ में बहुत बड़ी हक़ीक़त मौजूद है। फ़रमाया कि फ़ातिमा तुम्हारी है बशर्ते कि तुम उसके साथ ठीक तरीक़े से रहो। इस हदीस पाक से पता चलता है कि बीवी तो ख़ाविन्द ही की होती है। वह तो अपने माँ-बाप को बहन भाई को अपने मैके को छोड़कर, क़ुर्बान करके उस ख़ाविन्द के लिए आ चुकी है। अब यह ख़ाविन्द पर मुनहसिर है अगर वह उसके साथ अच्छे सुलूक का मामला करे तो घर आबाद हो जाएगा और अगर बीवी का मिस-हैंडिल कर ले तो घर बर्बाद हो जाएगा तो इस हदीस पाक से पता चला कि घर का आबाद करना न करना ख़ाविन्द पर मुनहसिर होता है।

- जो ख़ाविन्द अपनी बीवी को मुहब्बत दे, प्यार दे, उसकी ज़रूरतों को पूरा करे तो उस लड़की का दिमाग़ ख़राब है कि वह अपने घर को आबाद नहीं करेगी। आख़िर वह अपने घर को छोड़कर क्यों आई। हमारा तजरिबा बताता है कि कलिमा पढ़ने वाली हमारी मुसलमान बच्चियों में सौ में से निन्नानवे बच्चियाँ जब अपने घरों से चलती हैं। अब आगे ख़ाविन्द उसके साथ अच्छा सलूक करे तो घर आबाद हो गया और ख़ाविन्द ही बेवक़ूफ़ निकला तो घर बर्बाद हो गया।

- एक चाचा ने अपने भतीजे की शादी के वक़्त यह नसीहत की कि बेटे मैंने तुम्हें अपना समझकर अपनी बेटी का तुम्हारे साथ निकाह कर दिया। अब मेरी बेटी को ख़ुश रखना ताकि मेरी ज़बान पर तुम्हार अच्छा तज़्किरा रहे। अपने दिल को मेरे दिल से दूर न होने देना यानी अगर तुम मेरी बेटी को ख़ुश रखोगे तो तुम्हारा दिल मेरे दिल से मिला रहेगा और अगर इसको ग़मज़दा करोगे तो मेरा दिल तुम्हारे दिल से दूर होगा।
- ख़ाविन्द के लिए यह भी अच्छा नहीं कि हर वक़्त ही बीवी का तवाफ़ करता रहे और यह भी बीवी को नहीं चाहिए कि मर्द को अगर ज़रूरत हो तो वह अपने ख़ाविन्द को रोक लगाए। शरीअत ने इस चीज़ को ना पसन्द किया है।

एक बीवी का अहदे वफ़ा

हज़रत अबूदरदा रज़ियल्लाहु अन्हु ने शादी की पहली रात अपनी बीवी से फ़रमाया कि हम दोनों एक दूसरे के लिए नए लोग हैं लिहाज़ा जब तुम मुझे ग़ुस्से में देखना तो मुझे ख़ुश करने की कोशिश करना और अगर कभी मैं तुम्हें ग़ुस्से में देखूँगा तो तुम्हें ख़ुश करने की कोशिश करूँगा और ज़्यादा शिकवे शिकायत न करना कि इससे मुहब्बत कम होती है और याद रखना कि जिसकी दिल में मुहब्बत हो और फिर उससे तकलीफ़ पहुँचे तो मुहब्बत दिल से रुख़्सत हो जाया करती है तो इन बातों को मियाँ-बीवी ने पल्ले बाँध लिया। लिहाज़ा

उनकी ज़िन्दगी इतनी खुशी से गुज़री कि फिर एक वक़्त आया कि जब उनकी बीवी ने उनको कहा कि देखें एक वक़्त था कि मेरे माँ-बाप ने मुझे आपके निकाह में दिया था और आज शादी के इतने साल गुज़ारने के बाद मैं आपसे खुश हूँ कि मैं अपने आपको आख़िरत के लिए भी आपके निकाह में देती हूँ। क्या मतलब? मतलब यह था कि मैं इतना आपसे खुश हूँ कि हदीस पाक में आता है कि मियाँ-बीवी जन्नत में अगर जाएंगे, औरत अपने आख़िरी शौहर के साथ जन्नत में जाएगी तो अगर आपकी वफ़ात भी हो गई तो मैं आपके बाद दूसरा निकाह हर्गिज़ नहीं करूँगी और मैं जन्नत में भी आपकी ही बीवी बनना चाहूँगी। यह होती है पुरसुकून शादी-शुदा ज़िन्दगी।

अब अपने गिरेबान में झांक कर देखें कि क्या आपकी बीवियाँ आपसे इतना खुश हैं कि वे आपको कहें कि हम यहाँ तो आपके निकाह में हैं हम आगे भी आप ही के निकाह में रहना चाहती हैं।

शौहर के सामने हर वक़्त मायके का ज़िक्र मत करना। शौहर ही तुम्हारी कुल काएनात है लिहाज़ा अपने शौहर से टूटकर प्यार करना यह जो एक नेमत है इसको शरीअत में बहुत ज़्यादा पसन्द किया गया है और यह जन्नती हूरों की सिफ़त है क़ुरआन मजीद में फ़रमाया कि वह अपने शौहर की आशिक़ा होंगी तो अल्लाह तआला जिस औरत को दुनिया में हूरों की सिफ़त दे तो वह औरत अपने शौहर से टूटकर प्यार करती है। मियाँ-बीवी दोनों को चाहिए कि एक दूसरे के पास

जब हों तो आपस में एक दूसरे के लिए संवरा करें। शरीअत ने इस चीज़ को बहुत पसन्द किया। इसलिए हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हुमा फ़रमाते थे कि मैं अपनी बीवी के लिए अपने आपको इस तरह संवारता हूँ जिस तरह वह मेरे लिए अपने आपको संवारती है यानी औरत का संवरना तो यह हुआ कि वह अच्छे कपड़े पहने, खुशबू लगाए और मर्द का संवरना भी यह कि वह अपने आपको साफ़ सुथरा रखे, अच्छे कपड़े पहने, खुशबू इस्तेमाल करे। ऐसा न हो कि उसके बाल ही इतने बढ़े हुए हैं कि देखने में इन्सान कम और जिन्न ज़्यादा नज़र आए, ऐसे शौहर से बीवी को क्या मुहब्बत होगी, बीवी को वहशत होगी।

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की अदालत में

लिहाज़ा अमीरुल-मोमिनीन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास एक मियाँ-बीवी आए और बीवी ने कहा अमीरुल-मोमिनीन न यह मेरे लिए है और न मैं इसके लिए हूँ तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जब इस शौहर को देखा तो वह बड़ा नेक आदमी था, अल्लाह वाला बन्दा था, ख़ूब इबादतें करता था, उसके बाल ख़ूब लम्बे-लम्बे बढ़े हुए थे और उसने कंघी भी नहीं की हुई थी और कपड़े भी ऐसे ही थे तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस शौहर को बुलाकर कहा कि अभी जाओ और अपनी मूंछों को तरशवाओ, बालों को कटवाओ और ग़ुस्ल करो और खुशबू लगाओ और साफ़ सुथरे कपड़े

पहनकर फिर मेरे पास आओ और उसकी बीवी को कहा कि आप फ़लाँ जगह बैठकर इन्तिज़ार करें। लिहाज़ा जब शौहर नहा धोकर और तैयार होकर ख़ुशबू लगाकर आ गया तो आख़िर वह भी भरपूर नौजवान था मगर उसने अपनी हालत ही ऐसी बनाई हुई थी कि बिल्कुल बूढ़ों जैसी थी जो जब वह वापस आया तो आपने उसकी बीवी को बुलावाया। जब बीवी आई तो उसने उसको देखकर पहले तो पहचाना ही नहीं और वह ज़रा झिझक गई पीछे हटने लगी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि पीछे न हटो यह तुम्हारा ही शौहर है। अब जब उसने देखा कि उसका शौहर जो इतना साफ़ सुथरा अच्छा लग रहा है और कपड़े भी साफ़ सुथरे हैं, ख़ुशबू भी लगी हुई है तो वह औरत देखकर हैरान रह गई। हदीस पाक में आता है कि आगे बढ़ी और अपने शौहर के हाथ का बोसा लिया और कहने लगी अमीरुल-मोमिनीन अब मैं झगड़ा आपके सामने पेश नहीं करती, अब मैं इसकी बीवी बनकर घर में रहूँगी।

जिन वक़्तों में शरीअत ने बच्चों और ग़ुलामों को घर में आने के लिए मना किया है कि वह इजाज़त लें उन वक़्तों में औरत को चाहिए कि ख़ासतौर से तैयार और साफ़ सुथरी रहे। इसलिए कि शरीअत की नज़र में वह तन्हाई के अवक़ात हैं और वह अवक़ात कौन से हैं? फ़ज्र से पहले, दोपहर के वक़्त और इशा के बाद।

औरत की तबियत को पहचानना कि उसको शौहर से किस तरह ज़्यादा सुकून मिलता है, उसका दिल ख़ुश होता है,

मियाँ-बीवी के मेल मिलाप में किस तरह ज़्यादा ख़ुशी होती है यह मर्द का काम होता है। मर्द अपनी बीवी को जितना ख़ुश रखेगा तो बीवी भी उतना ही उसका घर आबाद करेगी और यह घर छोटी सी जन्नत बन जाएगा। अल्लाह तआला हमें दुनिया और आख़िरत में सुकून नसीब फ़रमाए।

﴿وآخر دعوانا عن الحمد لله رب العلمين.﴾

o o o

मुनाजात

दिले मग़मूम को मसरूर कर दे
दिले बेनूर को पुरनूर कर दे
फ़रोज़ां दिल में शम-ए-तूर कर दे
यह गोशा नूर से पुरनूर कर दे
मेरा ज़ाहिर संवर जाए इलाही
मेरे बातिन की ज़ुलमत दूर कर दे
मय-ए-वहदत पिला मख़मूर कर दे
मुहब्बत के नशे में चूर कर दे
न दिल माएल हो मेरा उनकी जानिब
जिन्हें तेरी अता मग़रूर कर दे
है मेरी घात में खुद नफ़्स मेरा
ख़ुदाया उसको बे मक़दूर कर दे

O O O

بسم الله الرحمن الرحيم

ومن ايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها وجعل بينكم مودة ورحمة ان فى ذلك لايت لقوم يتفكرون.

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

की बहार

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब

दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

इक़्तिबास

मुस्कुराता चेहरा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुश मिज़ाज शौहर थे लिहाज़ा जब आप घर आते थे अज़्वाजे मुतह्हरात के पास तो आपके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती थी और आजकल देखो कि शौहर हज़रात बाहर तो बहुत ख़ुश मिज़ाज रहते हैं और घर में दाख़िल होते हैं तो ऐसी सड़ी हुई शक्ल बनाकर आते हैं जैसे पता नहीं मुसीबत का मारा कौन आ गया, यह चीज़ अच्छी नहीं है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घरों में अपनी बीवियों के साथ काम में उनका हाथ बटा दिया करते थे। जब मुहब्बत होती है तो मिलकर काम करने में मज़ा और ज़्यादा आता है।

अज़ इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब मद्दज़िल्लुहू

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد.

اعوذ بالله من الشيطان الرجيم.
بسم الله الرحمٰن الرحيم.

ومن ايته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها
وجعل بينكم مودة ورحمة ان في ذلك لأيٰت لقوم يتفكرون.

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين
والحمد لله رب اللمين.
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل على سيدنا محمد وعلى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

ख़ुशियाँ कैसे हासिल करें?

शादी-शुदा ज़िन्दगी किस तरह पुरसुकून हो इस बारे में बातचीत हो रही है क्योंकि बीवी का उनवान चल रहा है तो इसी बारे में कुछ और बातें बताने का इरादा है। औरतें इनको दिल के कानों से सुनें और अमल की नियत से सुनें। आप ख़ुद तजरिबा करेंगी कि घरों के अन्दर इन उसूलों पर अमल करने की वजह से ख़ुशियाँ आएंगी। जो मियाँ-बीवी सालों से एक दूसरे के साथ अजनबियत की ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं उनको आपस में मुहब्बत की ज़िन्दगी नसीब हो जाएगी। जिस तरह

बीवी चाहती है कि मेरा शौहर बदल जाऐ उसी तरह शौहर भी चाहता है कि मेरी बीवी बदल जाए, अच्छी बन जाए तो इसी उनवान पर बात हो रही है कि बीवी कैसे अच्छी बन सकती है। जब बीवी अच्छी बन जाएगी तो फिर शौहरों को भी उसूल व क़ायदे बताएंगे जो शरीअत ने बताए हैं।

ख़ाविन्द की नाफ़रमान रब की नाफ़रमान

हदीस पाक में आता है कि जो औरत अपने शौहर की नाफ़रमान होती है उसकी नमाज़ क़ुबूल नहीं होती बल्कि उसकी नमाज़ उसके सिर से ऊपर उठाई ही नहीं जाती, जब तक कि वह अपने शौहर के पास न लौट आए। इससे मुराद यह है कि वह बीवियाँ जो झगड़े करती हैं, बात बात पर मायके भागती हैं, शौहर से बातचीत बन्द कर देती हैं, मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से शौहर को अपना पाबन्द करने की कोशिशें करती हैं ये नाफ़रमान बीवियाँ हैं अगर अल्लाह तआला की इबादत भी करें, उनकी नमाज़ें उनके सिरों से ऊपर नहीं जातीं, जब तक कि ये अपने शौहर को राज़ी न कर लें।

घर की बर्बादी

अक्सर बीवियाँ अपने घरों को ख़ुशियों से आबाद करती हैं मगर कहीं कहीं ऐसी ज़िद्दी तबियत बीवियाँ भी होती हैं जिनके अन्दर अकड़-मकड़ होती है, हटधर्मी होती है, छोटी-छोटी बात का पतंगड़ बना लेती हैं और इस वजह से

अपनी ज़िन्दगी भी बर्बाद करती हैं और अपने शौहर की ज़िन्दगी भी बर्बाद करती हैं और कई बीवियों को शौक़ होता है कि अपने शौहर को अपने रौब में रखें। इससे बढ़कर और बेवक़ूफ़ी और क्या होगी शौहर को जब अल्लाह तआला ने इज़्ज़त दी है तो बीवी को चाहिए कि वह भी इज़्ज़त व इकराम के साथ रहे। कई औरतों को तो शौहर को डांट डपट से ही फ़ुर्सत नहीं होती अगर पढ़ी लिखी हैं, अक़्लमंद और समझदार हैं या माल में बढ़ी हुई हैं तो बस उनको शौहर को डांटने में ही मज़ा आता है और यही चीज़ घर की बर्बादी का सबब बनती है और ऐसी बीवी से शौहर जान छुड़ाकर के खुश होता है।

अजीब औरत

ख़ालिद रह० एक बुज़ुर्ग हैं कहते हैं कि मैंने सुना कि बनू असद की एक ख़ूबसूरत औरत है तो मैंने उसकी तरफ़ निकाह का पैग़ाम भेजा। उस औरत ने मुझे बुलवाया कि मैं आपसे बातचीत करना चाहती हूँ। मैं जब गया तो उसने एक जाली नुमा बारीक पर्दा लगाया हुआ था और उसके पीछे वह बैठी हुई थी तो जब उसने देखा कि मैं बैठ गया हूँ तो वह पर्दे के क़रीब बैठ गई। उसने उस वक्त अपना खाना मंगवाया। एक थाल के अन्दर पुलाव रखा हुआ था और उस पर भुना हुआ गोश्त रखा हुआ था। वह खाने बैठी और पूरा थाल उसने ख़ाली कर दिया। फिर इसके बाद उसने दूध का कटोरा मंगवाया और दूध के कटोरे को एक साँस में पी गई और

उसके बाद उसने अपनी बाँदी से कहा कि बीच का पर्दा हटा दो ताकि मैं इस बन्दे से बात कर सकूँ। कहते हैं कि बीच का पर्दा उठाया गया तो कहते हैं कि बहुत ज़्यादा ख़ूबसूरत थी मगर अच्छी खुराक की वजह से वह काफ़ी मोटी ताज़ी भी थी। वह शेर की खाल के ऊपर बैठी हुई थी। वह मुझ से कहने लगी कि मैं बनू असद की असदा हूँ। असदा का मतलब शेरनी। यह तुमने मेरी खुराक देखी और अब तुम मुझे देख रहे हो अगर चाहते हो तो मैं निकाह के लिए हाज़िर हूँ। मैंने उसे कहा कि मैं इस्तिख़ारा करूंगा और यह कहकर मैं वहाँ से निकला और लौटकर कभी भी वहाँ नहीं गया तो अगर इस तरह अपने आपको घर में शेरनी बनाकर रखना चाहे और शौहर को यह समझे कि हिरन बनकर रहे तो ज़िन्दगी कैसे गुज़रेगी? ऐसी बुरी औरत से तो अल्लाह तआला हर एक को पनाह अता फ़रमाए।

मियाँ-बीवी कैसे रहें

शरीअत ने यह हुक्म दिया कि मियाँ-बीवी आपस में मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारें। लिहाज़ा जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं उन्होंने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में अर्ज़ किया ऐ अल्ला के नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम मैंने निकाह किया। आपने फ़रमाया तुमने किससे निकाह किया। उन्होंने बताया कि एक बेवा औरत से तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि

कितना अच्छा होता कि तुम कुँवारी से निकाह करते वह तुम से खेलती तुम उससे खेलते तो यह जो फ़िकरा है कि तुम उससे खेलते वह तुमसे खेलती इससे मुराद यह है कि शरीअत ने इस चीज़ को पसन्द किया है कि मियाँ-बीवी आपस में मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारें अगर आपस में हँसी मज़ाक़ भी रहे, ऐसा हँसी मज़ाक जो नागवारी का सबब न बने बल्कि ख़ुश दिली का सबब बने तो मियाँ-बीवी का हँसी मज़ाक भी इबादत में शुमार होता है।

ग्यारह औरतें

हदीस पाक में आता है कि एक बार ग्यारह औरतें इकठ्ठी हुईं क्योंकि अरब में पानी भरने की जगह पर दूर दूर से औरतें अपने बर्तन लेकर आती थीं और पानी भरकर ले जाती थीं तो ग्यारह नौजवान लड़कियाँ जमा हुईं। उन्होंने आपस में तय किया कि आज हम अपने दिल की सब बातें बता देंगे, कुछ भी नहीं छिपाएंगी। उनमें से हर औरत ने अपने शौहर के बारे में अपने तास्सुरात ब्यान किए आख़िर में उनमें एक औरत थी उम्मे ज़रा उसने अपने शौहर अबू ज़रा की ख़ूब तारीफ़ की कि उसने मुझे कितने सुकून और प्यार से रखा। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह वाक़िआ आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को सुनाकर फ़रमाया कि अबू ज़रा जितना उम्मे ज़रा के लिए अच्छा था मैं उससे भी ज्यादा तुम्हारे लिए अच्छा हूँ।

मियाँ-बीवी आपस में इतने मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी

गुज़ारें कि बीवी बात करे तो शौहर की तारीफ़ करते न थके और शौहर की नज़र उठे तो बीवी को देखकर उसका दिल खुशी से बाग़ बाग़ हो जाए। ऐसी अच्छी शादी शुदा ज़िन्दगी का तसव्वुर शरीअत ने पेश किया है।

प्यार व मुहब्बत का प्यारा नमूना

हदीस पाक में आता है कि हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा एक बार प्याले में पानी पी रही थीं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने देखा तो फ़रमाया "हुमैरा" नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा का नाम मुहब्बत से "हुमैरा" रखा हुआ था। सुर्ख़ व सफ़ेद चेहरे वाली क्योंकि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उनको इतनी ख़ूबसूरती दी थी कि उनके चेहरे पर हर वक़्त लाली भी होती थी सफ़ेदी भी होती थी तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उनको कभी कभी "आएश" कहते थे मुहब्बत में और कभी "हुमैरा" फ़रमाते थे तो यह भी पता चला कि शौहर बीवी का मुहब्बत में कोई ऐसा नाम लेकर पुकारे जो बीवी को भी पसन्द हो तो वह आपस में एक दूसरे के लिए मुहब्बत का पैग़ाम होता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया "हुमैरा" मेरे लिए भी पानी बचा देना। अब ग़ौर करें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि "हुमैरा" मेरे लिए भी पानी बचा देना। अब ग़ौर करें नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अलग भी तो पानी मंगा सकते थे मगर मुहब्बत अपनी जगह चनाँचे आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पानी बचा दिया तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वह

प्याला अपने हाथों में लिया और आप रुक गए और फिर आपने पूछा कि आएशा तुम ने कहाँ से अपने लब लगाकर पानी पिया था तो आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने बताया कि इस जगह से पानी पिया था। हदीस पाक में आता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम प्याले के रुख़ को फेरा और जहाँ से ज़ौजा ने लब लगाकर पानी पिया था, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उसी जगह पर अपने लब मुबारक लगाकर पानी नोश फ़रमाया। अब सोचें जब शौहर बीवी को ऐसी मुहब्बत दे तो फिर घर क्यों आबाद नहीं करेगी। शरीअत चाहती है कि मियाँ-बीवी ऐसे मुहब्बत व प्यार से रहें।

एक हदीस पाक में आया है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि जब तुम में से कोई खाना खाए तो उस वक़्त हाथ न पोंछे जब तक कि खुद न चाट ले या चटा न ले तो मुस्लिम शरीफ़ की इस रिवायत से पता चलता है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यहाँ तक तालीम दी कि अगर खाना खाया तो अब जो खाना उंगलियों पर लगा हुआ है उसको धोने से पहले साफ़ करने से पहले या तो इन्सान खुद अपने मुँह से साफ़ कर ले या मियाँ-बीवी में इतनी मुहब्बत हो कि शौहर की उंगलियाँ बीवी साफ़ करे तो शरीअत ने इसको पसन्द फ़रमाया है।

मुस्कुराता चेहरा

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ख़ुश मिज़ाज शौहर थे

लिहाज़ा जब आप घर अज़वाजे मुतह्हरात के पास आते थे तो आपके चेहरे पर हमेशा मुस्कुराहट रहती थी और आजकल देखो कि शौहर लोग बाहर तो बहुत ख़ुशमिज़ाज रहते हैं और घर में दाख़िल होते हैं तो ऐसी सड़ी हुई शक्ल सड़ी हुई शक्ल बनाकर आते हैं जैसे पता नहीं मुसीबत का मारा कौन आ गया, यह चीज़ अच्छी नहीं है।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अपने घरों में अपनी बीवियों के साथ काम में उनका हाथ बटा दिया करते थे। जब मुहब्बत होती है तो मिलकर काम करने में मज़ा और ज़्यादा आता है।

सीरत का अनोखा नमूना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की हैसियत देखिए कि आप नबी भी हैं और शौहर भी हैं। हदीस पाक में आता है कि जब सफ़ीया रज़ियल्लाहु अन्हा से शादी हुई हो और सफ़र की हालत में रुख़सती हुई। वहाँ से कूच करना था तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ऊँट के क़रीब आए और आप ऊँट के क़रीब बैठ गए और आपने सफ़ीया रज़ियल्लाहु अन्हा से फ़रमाया कि तुम मेरे घुटने पर पाँव रखकर ऊँट पर सवार हो जाओ लिहाज़ा अल्लाह के महबूब इस तरह बैठे कि उनकी ज़ौजा मोहतरमा ने उनके घुटने पर पाँव रखा और सीढ़ी की तरह बनाकर फिर उस पर सवार हुईं। अल्लाह के महबूब अगर अपनी बीवियों को इस तरह मुहब्बत दे सकते हैं तो आज के शौहर अपनी बीवी को क्यों नहीं मुहब्बत दे सकते। नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम बहुत क़द्रदानी फ़रमाया करते थे।

हदीस पाक में आता है, एक सफ़र में एक सहाबी अज़्वाजे मुतह्हरात के ऊँटों को मुहार से पकड़े ले जा रहे थे तो उन्होंने ऊँटों को ज़रा तेज़ चलाना शुरू कर दिया तो अंजशा सहाबी थे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन्हें देखकर फ़रमाया अंजशा! ऊँटों को ज़रा आहिस्ता चलाओ इसलिए कि उनके ऊपर आबगीने सवार हैं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने औरतों को आबगीने से तशबीह दी यानी हीरे और मोती। तो इससे अंदाज़ा लगा सकते हैं कि महबूब सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम किस तरह तालीम देते थे कि ख़ाविंद अपने घरों में अपनी बीवियों की कितनी क़द्रदानी से रखें।

अच्छी बात की हक़ीक़त

शरीअत ने कहा कि जब मियाँ-बीवी आपस में बात करें तो ऐस अच्छे अलफ़ाज़ से ऐसे अच्छे अन्दाज़ से बात करें कि मुहब्बत बढ़ती चली जाए। यह जो बातचीत है इसी से मुहब्बत बढ़ती है और इसी से मुहब्बत घटती है। सड़ी हुई बात कर दो तो दूसरे का दिल बेज़ार हो जाएगा, प्यार की बात कर दो तो सोया हुआ इन्सान उठकर बैठ जाएगा और क़ुरआन मजीद से इसका सुबूत मिलता है चुनाँचे सुनिए क़ुरआन मजीद में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बीवियों के बारे में मगर पूरी उम्मत की औरतों को यह सबक़ है कि अगर किसी ग़ैर मर्द से तुम्हें बात करने को मौक़ा आए,

﴿فلا تخضعن بالقول فيطمع الذى فى قلبه مرض.﴾

तो तुम अपनी आवाज़ में नरमी न रखो, मुनासिब अन्दाज़ से बात करो ऐसा न हो कि तुम्हारी बात सुनकर आवाज़ सुनकर वह शख़्स तमा करे। वह शख़्स जिसके दिल के अन्दर मर्ज़ है। अब क़ुरआन मजीद में जो तमा का लफ़्ज़ है यह बता रहा है कि अल्लाह तआला ने औरत की आवाज़ में भी मर्द के लिए कशिश रखी है। यह एक हक़ीक़त है और अजीब बात है कि औरतें अपनी सिफ़त को अपने शौहर के सामने इस्तेमाल नहीं करतीं। बेचारी तावीज़ ढूंढती फिर रही होती हैं कि शौहर हमारे ताबे हो जाए। उन्हें क़ुरआन ने तावीज़ बता दिया कि अगर औरत की नरम आवाज़ की बातचीत से ग़ैर मर्द मुजवज्जेह हो सकता है तो शौहर क्यों नहीं मुतवज्जेह हो सकता मगर बहुत कम देखा गया है कि औरतें इस सिफ़त को शौहर के लिए इस्तेमाल करें। शरीअत यह चाहती है कि औरत जब शौहर से बात करे तो इतने प्यार भरी आवाज़ से बोले कि शौहर का दिल ख़िंचता चला आए।

बीवी शौहर का दिल कैसे जीते?

बीवी अपने शौहर के दिल को माइल करे। उसकी आँख में भी जाज़िब बने साफ़ सुथरी रहकर, अच्छे कपड़े पहनकर ताकि शौहर आँखों से देखे तो दिल में मुहब्बत बढ़े। अच्छी ख़ुशबू इस्तेमाल करे ताकि शौहर नाक से सूंघे तो शौहर के अन्दर मुहब्बत का जज़्बा और बेदार हो और कान के ज़रिए से भी अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करे प्यार करे। ऐसे बोल बोले ऐसे

बाले इस्तेमाल करे कि शौहर के दिमाग़ में वह बोल गूँजते रहें। जब क़ुरआन मजीद बता रहा है कि अल्लाह तआला ने औरत की फ़ितरत ही ऐसी बनाई है कि उसकी आवाज़ का भी मर्द के दिल पर असर होता है तो औरत को एक औज़ार मिल गया जिससे वह अपने शौहर को अपने दिल के क़रीब रख सकती है तो यहीं औरतें ग़लती कर बैठती हैं कि शौहर के साथ ऐसी बेरुख़ी से बात करती हैं न अल्फ़ाज़ का अच्छा चुनाव होता है न अल्फ़ाज़ को अच्छे अन्दाज़ से ब्यान करती हैं बस झगड़ालू अन्दाज़ में बातें करती हैं जिसकी वजह से शौहर का दिल उलटा उचाट हो जाता है और दूसरी तरफ़ फिर क्या होता है कि यही शौहर जब अपने दफ़्तर में जाता है और उसकी सेक्रेटरी उसके साथ मीठे बोल बोल लेती है सर! आप कैसे हैं, सर! आज आप कुछ परेशान लग रहे हैं तो इस मनहूस सेक्रेटरी के ये दो फ़िक़रे इसके शौहर की घरेलू ज़िन्दगी को बर्बाद कर देते हैं। लिहाज़ा बीवी घर में रहती है और शौहर फिर अपनी सेक्रेटरी के शौक़ व ख़्याल में रहता है या कभी किसी और औरत से बात करने का मौक़ा मिल गया और उस औरत ने नरम अन्दाज़ में बात कर ली तो शौहर का दिल उसकी तरफ़ माइल हो जाता है।

फ़ोन या ईमान का ख़ून

यह सेल फ़ोन का इस्तेमाल इतना, इतना बुरा कि पूछो मत इसने नौजवान लड़के और लड़कियों को गुनाह के रास्ते पर

डाल दिया और शादी शुदा लोगों के घरों का सुकून लूट लिया। कहीं शौहर परेशान है कि बीवी फ़ोन पर ग़ैर मर्दों से बातें करती है। चोरी छिपे बातें हो रही हैं। शौहर के घर से निकले की देर है कि अब फ़ोन बिज़ी मिल रहा है और कई जगह ग़ैर शादी शुदा लड़के लड़कियाँ वह आपस में टेलीफ़ोन पर इतनी बातें करते हैं कि उनको किसी और का होश ही नहीं होता। इसीलिए यह आजिज़ सेल फ़ोन को हैल फ़ोन कहता है कि यह इन्सान के जहन्नम में जाने का सबब बन जाता है, नौजवान बच्चे बच्चियों को टेलीफ़ाने उठाने की इजाज़त ही नहीं होनी चाहिए। मर्द उठाए, मर्द नहीं तो बड़ी उम्र की औरत उठाए और फिर जिसका फ़ोन है उसको दे दे मगर हमने तो ऐसा भी देखा कि सारे घर के लोग बैठे हैं और कुँवारी जवान उम्र लड़की वही फ़ोन अटैन्ड करती है। अब सहेली के फ़ोन भी उसे आ रहे हैं और सहेलों के फ़ोन भी आ रहे हैं। वह कई मर्तबा घर में फ़ोन ऐसे करती है कि लड़की से बात कर रही है हक़ीक़त में आगे से लड़का बोल रहा होता है और लक़ब भी लड़की का इस्तेमाल करती है कि तुम कैसी हो? तुम क्या कर रही हो? माँ-बाप को बेवक़ूफ़ बना रही होती है और मुतमइन होती है अच्छा अपनी सहेली से बातें कर रही है तो पहले ज़माने में शैतान के पास जितने आलात थे गुमराही के सैल फ़ोन ने उन आलात में और इज़ाफ़ा कर दिया। इसकी वजह से गुमराही फैल रही है। ज़िन्दगियाँ बर्बाद हो रही हैं। नौजवान बच्चे बच्चियाँ न तो तालीम में ध्यान देते हैं और न उनकी आने वाली ज़िन्दगी अच्छी गुज़र रही होती है।

मुस्तक़बिल का फ़ैसला किसके सुपुर्द करें?

लिहाज़ा माँ-बाप चाहते हैं कि शादी फ़लाँ जगह की जाए, ज़्यादा ठीक रहेगी, ज़्यादा जोड़ है और बच्ची ने टेलीफ़ोन के ज़रिए किसी और को दिल में बसाया हुआ होता है न कोई जोड़ न कोई हिसाब पूरे ख़ानदान की समझ में नहीं आ रहा होता मगर लड़की है कि मानने को तैयार ही नहीं होती और यह बेवक़ूफ़ होती है अगर इसी लड़के से शादी कर दी जाए तो वह आशिक़ मिज़ाज लड़का उसको ज़िन्दगी में इतना रुलाए कि यह सारी ज़िन्दगी रोती रहे मगर बातों के चक्कर में आकर उसको समझ नहीं आती कि मेरे लिए क्या अच्छा है और क्या बुरा है? तो नौजवान बच्चे और बच्चियों को चाहिए कि अपनी आने वाली ज़िन्दगी का फ़ैसला ख़ुद न करें, मुसीबत में न पड़ें। इसमें अपने माँ-बाप के मशवरे को अहमियत दें जिन्होंने पाल पोसकर बड़ा किया। जितना दर्द उनको होगा उतना दर्द किसी को नहीं होगा। लिहाज़ा मर्द हज़रात एक एक वक़्त में दो दो चार चार छः छः लड़कियों के साथ वही बातें कर रहे होते हैं। लड़की संजीदा होती है और उसको यह नहीं पता होता कि दूसरी तरफ़ सिर्फ़ वक़्त गुज़ारी हो रही है। इसलिए नौजवान बच्चियों को चाहिए कि फ़ोन को हाथ लगाने से पहले डरा करें कि कहीं यह फ़ोन मेरी ज़िन्दगी को ख़ून करने का सबब न बन जाए।

औरत फ़ोन पर किस तरह बात करे?

अगर बात करनी भी हो तो फ़ोन पर ऐसे बात करें कि जैसे कोई नाराज़ आदमी बात कर रहा होता है यानी ऐसे औरत फ़ोन पर मर्द से ऐसे बात करे कि अगले ने अगर दो बातें करनी हों तो वह एक ही बात करके फ़ोन बन्द क़र दे। ऐसा अन्दाज़ ग़ैर मर्द के साथ अपनाने पर औरत को अल्लाह तआला की तरफ़ से अज्र मिलता है। तो मुसीबत यही है कि शौहर से बात करती हैं तो ज़बान में सारी दुनिया की कढ़वाहट आ जाती है, ग़ैर मर्द से बात करती हैं तो सारी दुनिया की शीरनी आ जाती है।

इसी से घर बर्बाद होते हैं तो शरीअत कहती है कि जब बीवी शौहर से बात करे तो आवाज़ में नरमी भी हो गर्मी भी हो शीरनी भी हो। ऐसे बोल का चुनाव हो कि अपनी बीवी की बात से शौहर का दिल खुश हो जाए। इसलिए शायर ने कहा—

सलमा ऐसे बात करती है जैसे मोतियों की लड़ी टूट गई और मोती गिरते चले जा रहे हैं।

तो बीवी सोचे कि क्या मैं भी ऐसी बातें करती हूँ कि मेरे अल्फ़ाज़ मेरे शौहर की नज़रों में मोतियों की तरह बन जाएं।

अच्छी बातों का कमाल

वाक़िआ न० (1) एक बार एक बादशाह के पास एक बाँदी लाई गई मगर उसकी नाक दबी हुई थी और चेहरे पर

कई दाग़ भी थे तो बादशाह ने देखा तो उसे नापसन्द किया कि मेरी ख़िदमत के लिए ऐसी बदसूरत लड़की? मुझे नहीं चाहिए तो लड़की ने कहा अगर बादशाह सलामत इजाज़त हो तो मैं भी कुछ कहूँ। उसने कहा हाँ। कहने लगी कि आपने मेरी नाक दबी हुई देखी है और मेरे चेहरे पर दाग़ हैं तो आपने सुना होगा कि हिरन का हुस्न और चाँद का हुस्न बेमिसाल है जबकि हिरनी की नाक दबी हुई होती है और चाँद के ऊपर दाग़ होते हैं। उसने ऐसे मौक़े से बात कही कि बादशाह ने उसको अपनी ख़िदमत के लिए पसन्द कर लिया।

वाक़िआ न० (2) ख़लीफ़ा मेंहदी के पास जब ख़िज़रान बाँदी आई तो बहुत ही दुबली पतली सी लड़की थी तो बादशाह ने देखकर कहा कि यह दुबली पतली लड़की मेरी क्या ख़िदमत करेगी तो ख़िज़रान बोली कि बादशाह सलामत मैं दुबली पतली हूँ मेरे हुस्न का बड़ा वज़न है। ऐसे अन्दाज़ से उसने बात कही कि ख़लीफ़ा मेंहदी को पसन्द आई लिहाज़ा उसकी तमाम बीवियों में सबसे ज़्यादा असरदार यही लड़की थी और बड़े-बड़े फ़ैसले ख़लीफ़ा मेंहदी उसके कहने पर कर दिया करता था।

वाक़िआ न० (3) अली बिन जहम ने निकाह किया। बीवी ख़ूबसूरत थी तो उसने एक रात बीवी को कहा कि आओ ज़रा बाहर चाँदनी रात है, खुले आसमान के नीचे बैठें तो बीवी ने ख़ाविन्द को देखकर मुस्कुराकर कहा जब आप मुझे खुले आसमान के नीचे बिठाएंगे तो दो चाँदों को आप एक वक़्त में कैसे देख सकेंगे। मक़सद क्या था कि आसमान के चाँद को देखेंगे या मैं ज़मीन का चाँद हूँ मुझे देखेंगे तो यह बातें सिर्फ़

इसलिए बताई जा रही हैं कि जो अच्छी बीवियाँ होती हैं वह प्यार के अन्दाज़ से बात करके ग़ुस्से में भरे शौहर को भी मोम कर लेती हैं।

वाक़िआ न० (4) लिहाज़ा ख़ालिद बिन यज़ीद ने एक बार अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा के बारे में कोई नापसन्दीदा बात कह दी। अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा की बहन रमला बिन्त ज़ुबैर रज़ियल्लाहु अन्हुमा उनकी बीवी थीं। वह पास बैठी सुन रही थीं तो जब उसने नापसन्दीदा बातें कीं और देखा कि बहन ये बातें सुन लीं मगर चुप बैठी हुई है तो हैरत से कहने लगा कि क्या तुम मेरी बातों की तसदीक़ करती हो या तुम्हें मेरी बात समझ ही नहीं आई तो रमला ने आगे जवाब दिया कि न मैं तसदीक़ करती हूँ और न यह कहती हूँ कि तुम्हारी बात मुझे समझ नहीं आई बल्कि बात यह कि हम औरतें हैं हमें मर्दों की बातों के बीच में बोलने की क्या ज़रूरत है। अल्लाह तआला ने हमें फूल की तरह बनाया जिस फूल की ख़ूशबू सूंघी जाती है तो हमें तो फूल ही बनकर रहना है। रमला की यह बात ग़ुस्से में भरे ख़ाविन्द को इतनी अच्छी लगी कि उसने आगे बढ़कर अपनी बीवी की पेशानी का बोसा लिया और जो ग़ुस्सा था वह सब ख़त्म हो गया तो इससे अन्दाज़ा लगाइए कि जो अच्छी बीवियाँ होती हैं वह ऐसी बात करती हैं कि जिससे मुहब्बतें बढ़ जाती हैं।

वाक़िआ न० (5) एक शायर और एक बीवी का वाक़िया किताबों में लिखा है। कुछ लोग कहते हैं कि अली रज़ियल्लाहु

अन्हु और फ़ातिमा रज़ियल्लाहु अन्हा का है। जिसका भी हो शायर ग़ुस्से में था तो बीवी को देखकर उसने शे'र कह दिया—

ان النساء شياطين خلقن لنا
نعوذبالله من شر شياطين

औरतें शैतान हैं जिनको अल्लाह ने हमारे लिए बनाया है। हम इन शैतानों की शैतानियत से अल्लाह की पनाह मांगते हैं।

बीवी ने शे'र सुन लिया और आगे से शे'र को बदल कर यूँ बढ़ा दिया—

ان النساء رياحين خلقن لكم
وكلكم تشتهى شم رياحين

हम औरतें फूल हैं जिनको तुम्हारे लिए पैदा किया गया और तुममें से हर कोई फूल की ख़ुशबू सूंघना पसन्द करता है।

उसके जवाब देने से शायर का ग़ुस्सा ख़त्म हो गया और मियाँ-बीवी के बीच प्यार मुहब्बत की ज़िन्दगी शुरू हो गई।

वाक़िआ न० (6) एक बार एक ख़ाविन्द बीवी से नाराज़ था। ख़ूब बरसता रहा, ख़ूब बरसता रहा। बीवी चुप रही। जब उसने देखा ख़ाविन्द बोल बालकर चुप हो गया और कुछ ठंडा हो गया तो उसने मुस्कराकर ख़ाविन्द की तरफ़ देखा और कहने लगी मैं जानती हूँ कि मेरा शौहर इतना अच्छा है कि उसका इलाज एक नरम निगाह और एक तबस्सुम है। इन बोलों को सुनकर ख़ाविन्द को पशेमानी हुई उसने माफ़ी मांगी और फिर अपनी बीवी के साथ मुहब्बत से रहना शुरू कर दिया।

तो पता चलता है कि शरीअत इसको पसन्द करती है कि मियाँ-बीवी एक दूसरे के साथ जब बातचीत करें तो अन्दाज़ भी मुहब्बत का अपनाएं और बोल भी ऐसे चुनें कि एक दूसरे के दिल में बात उतर जाए और अगर कभी ऐसा हो कि मियाँ-बीवी में से कोई एक ग़ुस्से में हो तो दूसरे को सब्र कर लेना चाहिए। इसलिए हदीस पाक में आता है कि अगर तुम्हें अपनी बीवी की कोई बात बुरी लगे तो उसकी दूसरी बातों में ग़ौर करो। उसकी कितनी ही बातें ऐसी होंगी जो तुम्हें अच्छी लगेंगी। क़ुरआन मजीद में है:

﴿عسٰی ان تکرھو شیئا وھو خیر لکم.﴾

मुमकिन हो तुम एक चीज़ को नापसन्द करो और उसमें अल्लाह ने तुम्हारे लिए ख़ैर रखी हो। इसलिए जब शादी के बाद जब बच्चे हो जाएं और शादी के बाद कई साल गुज़र जाएं तो अगर किसी मामले में कोई छोटी मोटी तलख़ी भी हो जाए तो उसे दरगुज़र कर देना चाहिए। बीवी भी दरगुज़र करे, ख़ाविन्द भी दरगुज़र करे। आमतौर से देखा गया जब उम्रें ज़्यादा हो जाती हैं, पचास या उससे ऊपर की उम्र हो गई। जब मियाँ-बीवी को जिस्मानी एतिबार से एक दूसरे की ज़्यादा ज़रूरत नहीं रहती तो फिर इस उम्र में मियाँ-बीवी के झगड़े बढ़ जाते हैं तो बूढ़े मियाँ-बीवी ज़्यादा झगड़ते हैं। उस वक़्त यह उसूल काम आता है कि अगर किसी एक ने कोई बात ग़ुस्से में कह भी दी तो दूसरा उसको बर्दाशत कर ले और अपने घर के सुकून को बर्बाद न करे।

लिहाज़ा एक बूढ़े मियाँ-बीवी हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास आए कि जी मुझे अब अपनी बीवी में ज़रा दिलचस्पी नहीं रही तो उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि घर की तामीर सिर्फ़ मुहब्बत पर नहीं की जाती। इस्लाम पर भी की जाती है। अब तुम्हारे बाल-बच्चे हो गए, अब तुम सिर्फ़ मुहब्बत को न देखो बल्कि इस्लामी तालीमात को देखते हुए अपने घरों को आबाद रखो।

प्यारे महबूब का वाक़िआ

लिहाज़ा एक बार सैय्यदना आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा किसी बात पर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के सामने बातचीत कर रही थीं कि इतने में अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु पहुँच गए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि अबूबक्र! हम तुम्हें फ़ैसला करने वाला बना लेते हैं। अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु बात सुनने लगे तो आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ग़ुस्से में थीं तो ग़ुस्से में कह दिया कि बिल्कुल सच सच बात करना तो जब उन्होंने यह बात कही तो अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु ने इतने ज़ोर से थप्पड़ लगाया कि आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के मुँह से ख़ून आ गया। फ़रमाने लगे तुम अल्लाह के महबूब को यह कह रही हो कि सच सच बात करना। ओ ख़ुदा की बन्दी वह सच नहीं कहते तो क्या कहते हैं। अब आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा को जब बाप का थप्पड़ लगा तो उम्र छोटी थी तो वह और थप्पड़ से बचने

के लिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पीछे हो गईं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अबूबक्र! हमने तो तुम्हें सालिस (तीसरा यानी फ़ैसल) बनाया था हम तो यह नहीं चाहते थे चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु को कहा आप अब बेशक जाएं, हम आपस में फ़ैसला कर लेंगे तो अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हु वापस हो गए तो जब आप वापस आए तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मुस्कुराकर आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की तरफ़ देखा और फ़रमाया देखा बाप ने तो थप्पड़ लगाया मेरे ही पीछे छिपकर जान बची ना और फिर आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा के साथ इसी तरह प्यार से रहने लगे।

तो इससे अन्दाज़ा होता है कि कभी कभी इन्सान की तबियत ग़ुस्से में है, खुशी में है। ऐसे अलफ़ाज़ कोई कह सकता है कि दूसरे को बुरे लगें मगर फ़ौरन कोशिश करनी चाहिए कि एक दूसरे को मना लें, माफ़ी मांग लें ताकि घर की मुहब्बत का माहौल प्यार मुहब्बत का ही रहे।

जन्नती औरत की पहचान

हदीस पाक में है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शादा फ़रमाया कि तुम्हें जन्नती औरत के बारे में न बताऊँ? तो सहाबा ने अर्ज़ किया ऐ अल्लाह के नबी ज़रूर बताएं। तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर वह औरत जो शौहर से बहुत मुहब्बत करने वाली, ज़्यादा बच्चे जनने

वाली, जब उसका शौहर नाराज़ हो तो वह अपने शौहर के हाथ में हाथ देकर कहे कि उस वक़्त तक इस जगह से नहीं हिलूँगी जब तक कि आप मुझसे राज़ी नहीं हो जाएंगे तो जितनी भी नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने निशानियाँ बतायीं कि जन्नती औरत वह होती है कि जो शौहर से बेपनाह मुहब्बत करने वाली हो, औलाद वाली हो और अगर कभी उसका शौहर किसी बात पर नाराज़ हो तो वह अपने शौहर के हाथ में अपना हाथ देकर कहे मैं तुम्हारी हूँ और यहाँ से नहीं हटूँगी जब तक कि आप मुझसे राज़ी नहीं हो जाएंगे, इस तरह मना ले। यह मनाने का अमल अल्लाह तआला को इतना पसन्द है कि अल्लाह के महबूब ने जन्नती औरत की पहचान बताई और आज तो कई बीवियाँ ऐसी बात करती हैं कि जानबूझकर ख़ाविन्द को सताती हैं, उसका दिल दुखाती हैं। उन औरतों को जन्नत की हवा भी नहीं लगेगी।

बेहतरीन औरत की अलामतें

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें बेहतरीन औरत बताऊँ कि जिसको ख़ाविन्द देखे तो उसका दिल खुश हो जाए अब कौन सी बीवी को ख़ाविन्द को देखेगा तो दिल खुश होगा जो मुहब्बत करने वाली हो, ख़िदमत करने वाली हो तो बेहतरीन बीवी की पहचान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह बतलाई कि जिसको ख़ाविन्द देखे तो उसका दिल ख़ुश हो जाए या यूँ समझे कि वह अपने दिल में "अलहम्दुलिल्लाह" पढ़े। ऐसी बीवी न हो कि जिसको ख़ाविन्द

देखे तो दिल में "अऊज़ुबिल्लाह" पढ़े तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बेहतरीन औरत वह है जिसको शौहर देखे तो उसका दिल ख़ुश हो जाए अगर मियाँ किसी काम का हुक्म करे तो वह औरत उसका कहना माने और अपने नफ़्स और माल में अपने मियाँ की मुख़ालिफ़त न करे। अपने नफ़्स से क्या मुराद है? अपनी इज़्ज़त आबरू के मामले में और मियाँ के माल के मामले में ख़्यानत न करे तो इस हदीस में चार निशानियाँ बताई गयीं किः

1. मियाँ देखे तो उसका दिल ख़ुश हो जाए,
2. जब कोई काम के लिए वह कहे तो फ़ौरन उसकी बात को मान ले,
3. अपनी इज़्ज़त,
4. और अपने माल में अपने मियाँ की ख़्यानत न करे।

अब औरत के लिए ये चार काम कितने आसान हैं। इसीलिए आजिज़ कहता है कि मर्दों को वली बनने के लिए तो कितनी नमाज़ें, कितनी तिलावतें और क्या-क्या मुजाहिदे करने पड़ते हैं और औरत को तो वलिया (अल्लाह वाली) बनने के लिए अल्लाह तआला बहुत आसानियाँ दे दीं यह चार काम कर ले और अल्लाह की वलिया बनकर ज़िन्दगी गुज़ारे।

डरने की बात

इसलिए जो लोग किसी औरत को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काते हैं उनके बारे में बहुत बड़ी धमकी है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया दिल के कानों से सुनें कि जिसने

बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह मेरी उम्मत में से नहीं। हदीस पाक की एक किताब "मुस्तदरक" है जिसके अन्दर यह हदीस बयान की गई है। कितनी सख़्त डाँट है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने भी बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह मेरी उम्मत में से है नहीं। अल्लाहु-अकबर यानी क़यामत के दिन उसको महबूब के झंडे के नीचे हाज़िरी की तौफ़ीक़ ही नहीं होगी या यूँ समझ लीजिए कि उसकी ईमान के ऊपर मौत नहीं होगी। इतनी बड़ी डाँट अल्लाहु-अकबर और यह काम बहुत सारे लोग करते हैं। मिसाल के तौर पर बीवी अपनी सहेली को मिली उसने कहा क्या वही कपड़े पहने फिरती हो, तुम्हारा मियाँ तुम्हें नए कपड़े बनावाकर नहीं देता, किसी काम का नहीं तुम्हारा मियाँ। अब यह सहेली साहिबा जो अलफ़ाज कह रही है कि जिसको सुनकर बीवी के दिल में मियाँ के ख़िलाफ़ नफ़रत आए। यह औरत इतने बोल बोलकर जहन्नम में जाने का रास्ता हमवार कर रही है तो आप ज़रा इस उसूल पर ग़ौर करें कई मर्तबा बहनें इस पर अमल करती हैं। अपनी बहन को कहती हैं देखा तेरे मियाँ ने यह नहीं किया, वह नहीं किया, तेरा मियाँ तो ऐसा है। तो कोई भी ऐसी बात जिसने भी की चाहे सगी बहन हो चाहे वह सगी माँ हो, कई बार खुद माँ अपनी बेटी को मियाँ के बारे में बातें करती हैं कि वह यह नहीं करता वह वह नहीं करता कि बीवी के दिल में मियाँ के बारे गुस्सा आ जाए तो ऐसी माँ, ऐसी बहन, ऐसा भाई, ऐसी पड़ौसन जो लोग भी इस तरह की बातें कर रहे हैं ये सारे लोग अपने वास्ते जहन्नम का रास्ता हमवार कर रहे हैं। यह कोई छोटी डाँट नहीं है कि नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसने बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह मेरी उम्मत में से नहीं। इस गुनाह में आप अगर देखेंगी तो बहुत सारे लोग मुलव्विस हैं तो एक दस्तूर समझ लें कि हमेशा बीवी से ऐसी बात करें कि उसके दिल में मियाँ की मुहब्बत बढ़े। अगर आप चाहती हैं कि ईमान पर आपकी मौत आए, वरना नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह मेरी उम्मत में से नहीं और इसका एक अन्दाज़ा और भी है और वह अन्दाज़ा यह है कि कुछ मर्द भी ऐसे होते हैं जो देखने में मर्द हक़ीक़त में शैतान, वे भी यह काम करते हैं। एक बीवी अपने मियाँ के साथ ख़ुशी के साथ ज़िन्दगी गुज़ार रही है। अब उसकी तारीफ़ करके उसको अपनी तरफ़ माइल करने की कोशिश करते हैं। जिसने शादी-शुदा औरत को अपनी तरफ़ माइल करने की कोशिश की उसने गोया उस औरत के दिल में मियाँ की नफ़रत को पैदा किया यह आदमी भी ईमान की मौत नहीं मरेगा। अब सोचें की कितने मर्द हैं जो इस गुनाह में मुलव्विस हैं। बीवी किसी की और तारीफ़ करके उसको अपनी तरफ़ मुतवज्जेह करते हैं। कहते हैं तेरा मियाँ तो तुझे ऐसे रखता है तुझे ऐसे रखना चाहिए, तू तो इतनी अच्छी है तो यह उसूल समझ लें कि जिस किसी ने भी ऐसी बातें कीं जिस बात से बीवी अपने मियाँ से दूर होती है उस बन्दे के बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिसने बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह मेरी उम्मत में से नहीं तो ऐसा काम करना तो का रास्ता हमवार करने वाली बात है।

एक इबरतअंगेज़ वाक़िआ

बनी इसराईल का एक किसान था उसकी बीवी बहुत ख़ूबसूरत थी। वह ग़रीब आदमी था। बादशाह की कहीं इस औरत पर निगाह पड़ गई तो बादशाह उस पर आशिक़ हो गया। उसने किसी औरत के ज़रिए उस बीवी को मुतवज्जेह किया कि अगर तुम मेरे साथ शादी कर लो तो मैं तुम्हें महल के अन्दर मलिका बनाकर रखूँगा और तुम यहाँ मिट्टी में मिलकर मिट्टी बनती चली जा रही हो। इसलिए उस बूढ़ी औरत ने जाकर उस तरह की बातें कीं कि वह औरत अपने मियाँ के साथ बेरुख़ी बरतने लगी। किसान ने पूछा कि क्या बता है तुम्हारे अन्दर मुहब्बत की वह झलक नहीं देख रहा हूँ जो पहले थी। तो बीवी ने कहा मुझे तुम से कोई मुहब्बत नहीं। ख़ाविन्द ने कहा तुम क्या चाहती हो? कहने लगी तुम मुझे तलाक़ दे दो। नेक नियत ख़ाविन्द था। उसने सोचा कि जब इसको मेरी मुहब्बत ही नहीं और तलाक़ मांग रही है तो उसने उसको एक तलाक़ दे दी। जब औरत को तलाक़ हो गई तो उसने इद्दत गुज़ारने के बाद बादशाह को पैग़ाम भेजा कि मैं फ़ारिग़ हो चुकी हूँ तो बादशाह ने उससे शादी कर ली। जब पहली रात बादशाह उस औरत से मिलने के लिए आया और उसकी तरफ़ हाथ उठाए तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ग़ैरत को इतना जोश आया कि दोनों पर फ़ालिज का हमला हुआ और दोनों के आज़ा बेकार हो गए। लिहाज़ा दोनों ज़िन्दा लाशें बन गयीं। जब सुबह को लोगों ने देखा कि उनके हाथ-पाँव सब के

सब फ़ालिज के असर में थे। वह ज़िन्दा लाश यह भी ज़िन्दा लाश, एक दूसरे के काम के ही नहीं रहे। अल्लाह तआला ने उन दोनों को इबरत की निशानी बना दी। बादशाह पर इस वजह से फ़ालिज हुआ कि तुम ने एक नेक इंसान के घर को बर्बाद किया और औरत पर फ़ालिज इस वजह से हुआ कि तुमने एक नेक मियाँ से बदनियती के साथ जान छुड़ाकर दुनिया की तरफ़ क़दम बढ़ाया तुम दुनिया की लज़्ज़तें हासिल नहीं कर सकोगी। तो इससे अन्दाज़ा लगाइए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इसको पसन्द फ़रमाते हैं कि मियाँ-बीवी मुहब्बत व प्यार की ज़िन्दगी गुज़ारें क्योंकि उन्होंने अल्लाह के नाम पर एक दूसरे को मियाँ-बीवी के तौर पर क़ुबूल कर लिया। अब अगर उनके बीच कोई तीसरा बन्दा रुकावट बने तो वह आदमी अपने लिए जहन्नम का रास्ता बनाएगा तो कोई मर्द या कोई औरत ऐसी बात करे कि जिससे बीवी मियाँ से दूर हो अल्लाह तआला इस चीज़ को बहुत नापसन्द फ़रमाते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो भी किसी बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काए वह मेरी उम्मत में से नहीं।

बुढ़िया क्यों नाबीना हुई?

एक और वाक़िआ है। इस उम्मत में एक बड़े बुज़ुर्ग गुज़रे हैं अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह०। इतने नेक और इतने अल्लाह के वली थे कि उनको मुसैलमा बिन कज़्ज़ाब ने गिरफ़्तार किया जिसने झूठी नबुव्वत का दावा किया था और उसने कहा तुम मुझे अपना नबी मानो। उन्होंने इन्कार किया। उसने आग

जलवाई कहा मैं तुम्हें आग में डाल दूँगा तो अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० ने फ़रमाया ﴿فاقض ما انت قاض﴾ तू जो करना चाहता है कर ले मैं दीन से पीछे नहीं हट सकता। लिहाज़ा उसने उनको आग में डलवा दिया। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की रहमत का ज़हूर हुआ और यह बहुत देर तक आग के अन्दर रहे मगर उनके लिए उसी तरह गुले-गुलज़ार बन गई जिस तरह इब्राहीम अलैहिस्सलाम के लिए बन गई थी। इसलिए उसने इनको डर के मारे छोड़ दिया तो फिर ये नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के रौज़ा-ए-अक़दस पर हाज़िरी के लिए मदीना तैय्यबा आए। उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पता चला तो वह उनको अबूबक्र रज़ियल्लाहु अन्हु के पास लेकर गए तो सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको देखकर कहा अल्लाह का शुक्र है जिसने उम्मते मुहम्मदिया में ऐसे लोग पैदा किए जिनकी ख़ातिर अल्लाह तआला ने आग को इसी तरह गुले-गुलज़ार बना दिया जैसे उसने अपने ख़लील के लिए आग को गुले-गुलज़ार बना दिया था। यह अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० जो इतने नेक बुज़ुर्ग थे "मुस्तजाबुद-दावात" (जिसकी दुआ क़ुबूल होती है) थे। उनकी बीवी उनसे बहुत मुहब्बत करती थी। जब भी यह घर में आते थे तो उनकी बीवी आगे बढ़कर मुस्कुराकर इस्तिक़बाल करती और उनके जूते अपने हाथों से खुद निकालती। एक दिन क्या हुआ एक बुढ़िया फ़ितने की पुड़िया कहीं से उनकी बीवी के पास आ गई और उसने उनकी बीवी को कहा कि तुम्हारे मियाँ के साथ तो वक़्त का हाकिम इतनी मुहब्बत करता है, इतना एहतिराम करता है तुम अपने

मियाँ से क्यों नहीं कहती कि वह तुम्हारे लिए कोई माहाना तय कर दे और तुम्हें कोई ख़िदमत करने के लिए बाँदी लाकर दे तो उस बुढ़िया ने यह मशवरा दिया जिस पर उनकी बीवी के दिल में यह बात आ गई कि मुझे ख़ाविन्द को यूँ कहना चाहिए। लिहाज़ा अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० जब घर आए तो न तो बीवी ने मुस्कुराकर इस्तिक़बाल किया और उनके पाँव से जूते उतारे बल्कि ख़ामोश, सोचों में डूबी हुई अपनी जगह बैठी रही। अबू मुस्लिम ख़ौलानी रह० बड़े फ़िरासत वाले थे पहचान गए कि मेरी बीवी को किसी ने बिगाड़ा तो उनकी ज़बान से यह बोल निकल गए कि अल्लाह उस शख़्स को अन्धा करे जिसने मेरी बीवी को बिगाड़ा। तो कहते हैं कि उनके बोल निकलते ही वह बुढ़िया अपनी जगह अन्धी हो गई। उनकी बीवी ने जब बच्चे को भेजकर पता करवाया और उसे यक़ीन हो गया कि सही में वह औरत अन्धी हो गई तो उसने अपने मियाँ के सामने माफ़ी मांगी और उनको पूरा वाक़िआ सुनाया और फ़िर कहने लगी कि जी आप रहम फ़रमाएं और उस बुढ़िया के लिए दोबारा दुआ करें कि अल्लाह तआला उसको बीनाई अता फ़रमा दे। तो बीवी के तौबा करने पर उन्होंने उस बुढ़िया के लिए दुआ की। अल्लाह तआला ने उनकी बीनाई को फिर वापस फ़रमा दिया। तो इन वाक़िआत से आप अन्दाज़ा लगाएं कि जो आदमी किसी बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ उकसाए वह अपने लिए जहन्नम का रास्ता हमवार कर रहा है।

इसलिए चाहिए कि अगर कोई बीवी मियाँ से नाराज़ भी हो

तो कोई ऐसी बात न करें जिससे उसकी नाराज़गी बढ़ जाए बल्कि ऐसी बात करें कि जिससे ग़ुस्सा ठंडा हो जाए और वह मियाँ के क़रीब हो जाए। यह उसूल सारी औरतें अपनी ज़िन्दगी में अपना लें। उनके लिए ईमान पर मरना भी आसान हो जाएगा। हमेशा इस बात को ज़ेहन में रखें कि कभी भी कोई बीवी अपने मियाँ के ख़िलाफ़ आपसे बातें करे तो कभी भी उसकी हाँ में हाँ न मिलाएं। दुनिया में कोई इन्सान भी फ़रिश्ता नहीं है। हर इन्सान में कमियाँ होती हैं। उस बीवी को हर सूरत में ठंडा करने की कोशिश करें। आप उसको समझाने की कोशिश करें ताकि वह अपने मियाँ के क़रीब हो जाए अगर आपने बीवी को मियाँ के क़रीब कर दिया तो आपको कलिमे पर मरना आसान हो जाएगा। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें शरीअत व सुन्नत वाली ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। हमारा यह मज़मून इतना बड़ा है कि अभी आने वाले कुछ दिनों तक इसी पर बातचीत होती रहेगी लिहाज़ा यह आजिज़ कल इसी उनवान पर बात करेगा कि घर को कैसे बसाया जाता है, ख़ुशगवार ज़िन्दगी कैसे हासिल की जा सकती है, बीवी किन बातों को ध्यान में रखे तो उसका घर जन्नत का नमूना बन सकता है। अल्लाह तआला हमें दुनिया की परेशानियों से निजात अता फ़रमाए और अपने मक़बूल बन्दों में शामिल फ़रमाए।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

शौक़िया अशआर

बनाऊँगा अपने नफ़्से सरकश को या रब ग़ुलाम तेरा
मैं छोड़कर कारोबार सारे करूँगा हर वक़्त काम तेरा
किया करूँगा बस अब इलाही मैं ज़िक्र सुबह व शाम तेरा
जमाऊँगा दिल में याद तेरी रटूँगा दिन रात नाम तेरा

हर दम करूँगा ऐ मेरे रब बारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह
मिस्ले नफ़्स अब रखूँगा जारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह

मैं ऐ ख़ुदा दम भरूँगा तेरा बदन में जब तक कि जां जारी रहेगी
पढूँगा हर वक़्त तेरा कलिमा दहन में जब तक ज़ुबां रहेगी
कोई रहेगा न ज़िक्र लब पर, तेरी ही दास्तां रहेगी
न शिकवा-ए-दोस्तां रहेगा न ग़ीबते दुश्मनान रहेगी

हर दम करूँगा ऐ मेरे रब बारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह
मिस्ले नफ़्स अब रखूँगा जारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह

रहा मैं दिन रात ग़फ़लतों में यूँ ही ज़िन्दगी गुज़ारी
किया न कुछ काम आख़िरत का कटी गुनाहों में उम्र सारी
बहुत दिनों मैंने सरकशी की मगर अब है सख़्त शर्मसारी
मैं सिर झुकाता हूँ मेरे मौला मैं तौबा करता हूँ मेरे बारी

हर दम करूँगा ऐ मेरे रब बारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह
मिस्ले नफ़्स अब रखूँगा जारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह

मैं दीन लूँगा, मैं दीन लूँगा न लूँगा मैं ज़ीनहार दुनिया
दिखा के नक़्श निगार अपने लुभाए मुझको हज़ार दुनिया
इसे मैं ख़ूब आज़मा चुका हूँ बहुत है बे एतिबार दुनिया
लगाऊँगा इससे दिल न हर्गिज़ यह चार दिन की है दुनिया

हर दम करूँगा ऐ मेरे रब बारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह
मिस्ले नफ़्स अब रखूँगा जारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह

बुताने दिलबर तो सैकड़ों हैं मगर कोई बा वफ़ा नहीं है
वदूद और लाएक़ मुहब्बत फ़क़त है तू दूसरा नहीं है
कोई तेरे ज़िक्र के बराबर मज़े की शै ऐ ख़ुदा नहीं है
मज़े की चीज़ें हैं गो हज़ारों किसी में ऐसा मज़ा नहीं है

हर दम करूँगा ऐ मेरे रब बारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह
मिस्ले नफ़्स अब रखूँगा जारी अल्लाहु अल्लाह अल्लाहु अल्लाह

O O O

ومن ایٰته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها وجعل
بينكم مودة ورحمة ان فی ذٰلك لاٰيٰت لقوم يتفكرون.

इज़्दिवाजी ज़िन्दगी

की बहार

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब

दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

	मज़मून	पेज न०

इक़्तिबास

बीवी को चाहिए कि शादी के बाद न तो वह अपने मियाँ के ख़िलाफ़ कोई बात सुने न किसी ऐसी बात के ऊपर ध्यान दे, बीवी को ध्यान रखना चाहिए कि दुनिया में उसका एक ही सच्चा दोस्त हो सकता है और वह उसका ख़ाविन्द है। ख़ाविन्द के सिवा पूरी दुनिया में उसका सच्चा दोस्त कोई भी नहीं हो सकता।

इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद मद्दज़िल्लुहू

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد اللّٰه و كفٰى وسلام علٰى عباده الذين اصطفٰى اما بعد.

اعوذ باللّٰه من الشيطان الرجيم.

بسم اللّٰه الرحمٰن الرحيم.

ومن اٰيٰته ان خلق لكم من انفسكم ازواجاً لتسكنوا اليها
وجعل بينكم مودة ورحمة ان فى ذٰلك لاٰيٰت لقوم يتفكرون.

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام علٰى المرسلين
والحمد للّٰه رب اللمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى اٰلِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

मियाँ-बीवी को वरग़लाने वाले

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का इर्शाद है कि जिसने बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ भड़काया वह हम में से नहीं। इस हदीस पाक से मालूम हुआ कि कोई आदमी अगर किसी बीवी के सामने कोई ऐसी बात करे जिससे बीवी के दिल में मियाँ की नफ़रत पैदा हो तो यह इतना बड़ा गुनाह है कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि वह हम में से नहीं है। यूँ समझो कि उसकी कलिमे पर मौत नहीं आएगी। इसी

तरह जो आदमी मियाँ को बीवी के ख़िलाफ़ भड़काए इसको भी इस पर क़यास किया जाएगा और आज ग़ौर करें कि यह गुनाह हमारे समाज में बहुत आम हो गया। क़रीब-क़रीब रिश्तेदार कहीं तो बीवी के ख़िलाफ़ बात कर देते हैं और कहीं मियाँ को बीवी के ख़िलाफ़ कर देते हैं। इसकी कई वजह हैं। एक वजह तो हमदर्दी जताना हे मसलन मियाँ ग़रीब है, कम पढ़ा हुआ है। अब लड़की की सहेलियाँ, लड़की की बहनें, लड़की की माँ उसकी हमदर्द बनकर उसको कहेंगी तेरा मियाँ तो यह नहीं, यह भी नहीं। तो हमदर्दी में औरतें बैठी हुई जहन्नम कमा रही हैं। सगी माँ कई बार बेटी को ऐसी बात कर देती है कि उसके दिल में मियाँ के ख़िलाफ़ नफ़रत पैदा होती है तो यह माँ इसकी हमदर्दी की आड़ में अपने आपको जहन्नम का ईंधन बना रही है और हमने तो यहाँ तक भी देखा कि रंजिश बड़ों की और माँ-बाप ने बेटी को घर बिठाया हुआ है कि हम इसको नहीं जाने देते। बेटी अपने मियाँ के पास जाना चाहती है और माँ-बाप कहते हैं कि ख़बरदार! अगर तुमने बाहर क़दम रखा। यह किस लिए कि उन्होंने दीन इस्लाम की तालीम को पढ़ा ही होता अगर पढ़ लेते तो कभी भी बीवी को मियाँ से दूर करते?

इसी तरह कई बार जब सास देखती है कि मेरा बेटा अपनी बीवी के ज़्यादा क़रीब होता जा रहा है तो उसे डर हो जाता है कि कहीं मेरे हाथ से निकल न जाए और बीवी का न बन जाए तो वह उसकी बीवी की छोटी-मोटी बातों का बतंगड़

बनाकर अपने बेटे को इस तरह से पेश करती है कि उसके दिल में नफ़रत आ जाती है। यह माँ अपने बेटे को तो मुठ्ठी में ले लेगी लेकिन खुद जहन्नम में जाएगी। इसलिए जब किसी लड़की और लड़के का निकाह हो गया, अब क़रीब वालों में से किसी को भी कोई ऐसी बात नहीं करनी चाहिए कि मियाँ बीवी के ख़िलाफ़ हो या बीवी को मियाँ के ख़िलाफ़ हो बल्कि अगर उनके दिलों में फ़ासले होने भी लगें तो उनको जोड़ने की कोशिश करनी चाहिए। यह काम इतना अहम है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इसकी ख़ातिर अपना हक़ माफ़ कर दिया।

झूठ ना पसन्दीदा चीज़

शरीअत में झूठ बोलने को बहुत नापसन्द किया गया है। अल्लाह तआला ने क़ुरआन अज़ीमुश्शान में फ़रमा दिया:

﴿كبر مقتا عند الله ان تقولوا ما لا تفعلون.﴾

कि जब इन्सान वह बात कहे जो करता नहीं तो अल्लाह तआला का गुस्सा भड़कता है तो अल्लाह को झूठ से इतनी नफ़रत है लेकिन अगर मियाँ-बीवी के बीच सुलह करवाने के लिए कोई झूठ की बात भी कर दे तो शरीअत कहती है कि यह चाहे झूठ है मगर अल्लाह तआला इस बन्दे से इस गुनाह पर पूछताछ नहीं फ़रमाएंगे तो इसकी अहमियत को समझने की कोशिश करें कि शरीअत ने हर ऐसी बात जो मियाँ-बीवी को दूर करे उसे नापसन्द किया और उनको क़रीब करने के लिए अगर कोई झूठ भी बोले तो अल्लाह तआला ने उसको भी

माफ़ करने का इज़्हार फ़रमा दिया तो यहाँ से साबित हुआ कि दीन इस्लाम में शरीअत मुहम्मदी में इसी चीज़ को पसन्द किया गया कि जब कोई लड़का लड़की आपस में निकाह के ज़रिए मियाँ-बीवी बन गए तो तुम उनको जोड़े रखो और उनको दूर करने की कोशिश न करो बल्कि वे दूर होना भी चाहें तो उनको जोड़ो। इस पर अल्लाह तआला की तुम पर रहमतें होंगी लिहाज़ा नन्दों, सास, ससुर को चाहिए कि वह अपने बेटे को बीवी के ख़िलाफ़ कभी भी न करें। अगर करेंगे तो जहन्नम कमाएंगे।

इसी तरह मैके वालों को चाहिए कि वे शादी के बाद लड़की पर अपने हक़ न जताएं। अब शादी हो गई। अब वह अपने घर की है अगर वह मियाँ के साथ खुशी से ज़िन्दगी गुज़ार रही है तो कोई ऐसी बात न करें कि जिससे बीवी के दिल में मियाँ के ख़िलाफ़ कोई बात आए। सोचने की बात है कि कौन सा इन्सान है जिसके अन्दर ग़लतियाँ नहीं होतीं, कोताहियाँ नहीं होतीं अगर एक बन्दा दूरबीन ही फ़िट कर ले तो उसको बीवी में भी सौ बुराईयाँ नज़र आ जाएंगी और मियाँ में भी सौ बुराईयाँ नज़र आ जाएंगी तो इसका यह मतलब तो नहीं है कि मियाँ बीवी को जुदा ही करते रहो। ग़लतियों के बावजूद उनको चाहिए कि वह इकठ्ठा रहें। अच्छा जो लोग उनकी ग़लतियों को बड़ा करके बता रहे होते हैं, ये सास ससुर नन्दें क्या उनके अन्दर उनकी ग़लतियाँ नहीं होतीं। उनकी अपनी ज़िन्दगी देखो तो सौ ऐब उनके अन्दर निकल आएंगी।

मियाँ-बीवी के दुश्मन

शरीअत के मिज़ाज को समझना चाहिए कि जब भी मियाँ-बीवी की हैसियत से कोई जुड़ जाए तो अब तीसरे बन्दे को इजाज़त नहीं कि कोई ऐसा अमल करे या ऐसा बोल बोले जिससे कि मियाँ-बीवी के बीच फ़ासले पैदा हो जाएं। उनमें कई बार शैतान मर्दों और औरतों को नफ़्सानी रंग में भेजता है तो कुछ औरतें ऐसी होती हैं जो इस औरत के मियाँ को अपनी तरफ़ मुतज्जोह कर लेती हैं और देखा गया है बेपर्दगी की वजह से अक्सर जो क़रीब की रिश्तेदार लड़कियाँ होती हैं या उस लड़की की सहेलियाँ होती हैं वही उसके मियाँ को अपनी तरफ़ माईल कर लेती हैं और कई बार मियाँ के रिश्तेदारों में से दोस्तों में से सगे भाईयों में से ऐसे नामाक़ूल मर्द होते हैं जो उसकी बीवी को अपनी तरफ़ मुतज्जोह कर लेते हैं और कई बार बीवी घर तो नहीं छोड़ती मगर उसका दिल मियाँ के दिल से जुदा हो जाता है तो जिसने उसके दिल को मियाँ के दिल से जुदा कर दिया वह भी इसी हुक्म में शामिल होगा तो यह बहुत बड़ा गुनाह है क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया ऐसा करने वाला मेरी उम्मत में से नहीं है।

बीवी का सच्चा दोस्त कौन?

बीवी को चाहिए कि शादी के बाद न तो वह अपने मियाँ के ख़िलाफ़ कोई बात सुने न किसी ऐसी बात के ऊपर ध्यान दे, बीवी को ध्यान रखना चाहिए कि दुनिया में उसका एक ही

सच्चा दोस्त हो सकता है और वह उसका ख़ाविन्द है। ख़ाविन्द के सिवा पूरी दुनिया में उसका सच्चा दोस्त कोई भी नहीं हो सकता।

अभी तीन चार महीने पहले मुझे साउथ अफ़्रीका में एक शहर का दौरा करने का मौक़ा मिला। दूर का शहर था एक वाक़िआ सामने आया कि मियाँ-बीवी खुशी की ज़िन्दगी गुज़ार रहे थे। मियाँ के किसी कारोबारी दोस्त को पता चल गया कि उसकी बीवी बड़ी ख़ूबसूरत है। उसने किसी तरीक़े से फ़ोन पर बात करनी शुरू कर दी और यह पढ़ी लिखी बेवक़ूफ़ लड़की उसको मियाँ का दोस्त समझते हुए उसकी बातों का जवाब देती रही। अब यह बातूनी इन्सान था। बातों-बातों में उसने उसके साथ ऐसा मामला किया कि उसके दिल को मियाँ से दूर कर दिया फिर उसने उसको तरीक़ा सुनाया कि तुम्हारे रिश्तेदार इंगलैंड में रहते हैं लिहाज़ा अपने मियाँ से कहो कि मैं अपने रिश्तेदारों के पास जाना चाहती हूँ। लिहाज़ा उसने ज़िद करके इजाज़त ले ली और अकेले सफ़र किया और उस मर्द ने खुद उसके साथ सफ़र किया और एक महीने दोनों ने हरामकारी में वक़्त गुज़ारा। वह लड़की समझने लगी कि यह आदमी मुझसे बहुत प्यार करता है। लिहाज़ा जब वह वापस आई तो उसने अपने मियाँ से तलाक़ ले ली तो उसके बाद उस मर्द का कोई फ़ोन ही नहीं आया—

न इधर के रहे न उधर के रहे
न ख़ुदा ही मिला न विसाले सनम

अब वह बच्ची ख़त लिखकर पूछती है कि मैं क्या करूँ? इस बच्ची पर तरस भी आया, अफ़सोस भी हुआ कि देखो हँसते बसते घर में रहने वाली बच्ची ने ग़ैर मर्द की बातों पर यक़ीन करके अपनी ज़िन्दगी को तबाह कर लिया तो यह बात इसलिए ज़रा तफ़्सील से बताई कि इस तरह के वाक़िआत पेश आ रहे हैं। ख़बरें मिल रही हैं इसलिए बीवियों को बहुत मोहतात रहना चाहिए।

एक वाक़िआ

किताबों में लिखा है कि एक बहुत ग़रीब आदमी था और अल्लाह तआला ने उसे बहुत ख़ूबसूरत बीवी दी थी मगर वह ख़ूबसूरत ही नहीं वह ख़ूबसीरत भी थी नेक भी थी। वक़्त के एक बादशाह ने उसे देखा और उसने ज़ोर लगाया कि यह औरत उससे तलाक़ ले ले और मैं उसको मलिका बना लूँ मगर उस औरत ने बादशाह को पैग़ाम भिजवाया कि मैं तेरे ख़ज़ानों पर लात मारती हूँ और जिसको अल्लाह ने मेरा जीवन साथी बना दिया मैं उसके क़दमों की ख़ाक बनकर रहना चाहती हूँ तो ऐसी नेक बीवियाँ भी दुनिया में मौजूद होती हैं कि जो ग़रीबी में रहती हैं, तंगी में रहती हैं मगर अल्लाह तआला के हुक्म को सामने रखते हुए वह किसी शैतान की तरफ़ आँख उठाकर भी नहीं देखतीं तो हमेशा यह बात ज़ेहन में रखें कि शैतान हर वक़्त पीछे लगा होता है कि किसी न किसी तरह इन्सान के घर को बर्बाद करे। इन्सान के ईमान को बर्बाद

करे।

इसलिए यह बात अच्छी तरह ज़ेहन में बिठा लें कि आप कोई ऐसी बात किसी भी मर्द को या किसी भी औरत को न कहें कि जिससे मर्द बीवी के ख़िलाफ़ हो या बीवी मर्द के ख़िलाफ़ हो मसलन आपने इतना ही कह दिया कि तेरे मियाँ तुझे कपड़े बनवाकर नहीं देता। इतनी सी बात करने से भी बीवी के दिल में मियाँ के ख़िलाफ़ बात आ जाती है। उसको अपनी महरूमी का एहसास होने लगता है तो बातचीत के अन्दर बहुत एहतियात करनी चाहिए। हमेशा ऐसी बात करें कि मियाँ-बीवी अगर दूर हो रहे हैं तो वह एक दूसरे के क़रीब हो जाएं जो बिछड़े हुए को एक दूसरे से क़रीब करेगा अल्लाह तआला उस बन्दे को अपने क़रीब फ़रमा लेंगे।

घर बनाना और है घर बसाना और है

घर को बनाना मर्द की ज़िम्मेदारी होती है घर को सजाना घर को बसाना यह औरत की ज़िम्मेदारी होती है। इसलिए हर मियाँ को चाहिए कि जितना जल्दी हो सके वह अपने और अपनी बीवी के लिए अपना घर बनाए। हमारे मुर्शिदे आलम यहाँ तक फ़रमाते थे ﴿لا ايمان لمن لا مكان له﴾ कि जिस बन्दे का मकान नहीं उस बन्दे का ईमान ही नहीं। एक दफ़ा मैंने अर्ज़ किया, हज़रत इतनी बड़ी बात कैसे कर दी कि जिसका मकान नहीं उसका ईमान ही नहीं तो हज़रत ने फ़रमाया कि हमने ख़ुद देखा कि किराए के मकानों में रहने वाले मियाँ-बीवी हैं। मियाँ

किसी हादसे की वजह से फ़ौत हो गया। अब बीवी का कोई मकान ही नहीं धक्के खाती फिर रही है और क़रीब उसका कोई मदद करने वाला नहीं तो वह मायूस होकर ऐसे कलिमे ज़बान से बोल देती है जो कुफ़्र के कलिमे होते हैं जिनसे बन्दे का ईमान ही ज़ाए हो जाता है तो इसलिए मियाँ की सबसे पहली ज़िम्मेदारी यह है कि अल्लाह तआला अगर उसको कुछ ज़रिया दे तो वह मेहनत करे, कोशिश करे और पहली फ़ुर्सत में अपना मकान बनाए। सास ससुर का यह सोचना कि बेटा सारी उम्र हमारे साथ ही रहे यह परले दर्जे की बेवक़ूफ़ी है। याद रखना जिस तरह चुल्हे में आग जलती है उसी तरह चुल्हा इकठ्ठे होने की वजह से दिलों में आग जलती है। अक़्लमंद सास ससुर वे होते हैं जो अपने बेटे को अलग मकान में रखें मगर अपने क़रीब रखें ताकि वह मियाँ-बीवी सारा दिन उनकी ख़िदमत में गुज़ारें। ऐसी सूरत में यह मियाँ-बीवी सारी ज़िन्दगी उनके गुलाम बनकर ज़िन्दगी गुज़ारेंगे और जहाँ चुल्हा एक हो वहाँ पर शैतान औरतों के दिलों में लड़ाईयाँ जल्दी डलवा देता है।

नौजवानों को खाने और तरह के पसन्द होते हैं, बूढ़ी औरतों के खाने के तौर-तरीक़े और तरह के होते हैं। बूढ़ी औरतों को और तो कोई काम होता नहीं, बस बैठी हुई तन्क़ीद कर रही होती हैं। बीवियाँ कहती हैं कि हमें तो यहाँ साँस लेने की इजाज़त नहीं हमें तो फ़्रिज का दरवाज़ा खोलने की भी इजाज़त नहीं तो अपने आपको क़ैदी महसूस करती हैं। इसलिए दिलों में अपनी सास से नफ़रत महसूस करती हैं तो बहू के जिस्म को क़रीब रखना और उसके दिल में नफ़रत भर देना

यह कहाँ की अक़्लमंदी है। इससे तो ज़्यादा बेहतर है कि वह बेशक साथ वाले मकान में रहे मगर उसके दिल में सास ससुर की मुहब्बत भरी हुई हो। अक्सर वहाँ लड़ाईयाँ देखी गयीं जहाँ सब लोग एक घर में इकठ्ठे रहते हैं वहीं पर झगड़े ज़्यादा फैल जाते हैं और ऊपर से वे ज़ाहिरदारी में एक जगह रहते हैं दिलों में नफ़रतें होती हैं। ऐसे घरों में जहाँ कोई बन्दा होगा वह हमेशा दूसरे की ग़ीबत कर रहा होगा तो ज़ाहिरदारी में तो ये लोग इकठ्ठे नज़र आ रहे होते हैं मगर उनके दिलों में पूरब पच्छिम का फ़ासला होता है। इतना हराम वहाँ हो रहा होता है, ग़ीबत, झूठ, बोहतान, चुग़लख़ोरी अगर इन्सान इन गुनाहों को गुनाह समझता तो यूँ समझें कि इस घर में हर वक़्त यही कुछ हो रहा होता है। इससे ज़्यादा बेहतर है कि क़रीब-क़रीब हों या एक बड़ा घर हो तो उसके कुछ हिस्से बना लिए जाएं जिससे कि सारे बच्चों के चूल्हे का मामला अलग-अलग हो मगर क़रीब रहकर आपस में प्यार मुहब्बत की ज़िन्दग गुज़ारें तो घर बनाना यह मियाँ की ज़िममेदारी है और घर को सजाना या घर को बसाना यह बीवी की ज़िम्मेदारी है। इसलिए बीवी को घरवाली कहते हैं कि वह घर को आबाद करने का सबब बनती है।

दिल की मलिका कैसे बने

एक बात ज़ेहन में रख लें कि औरत कितनी ही ख़ूबसूरत क्यों न हो पढ़ी लिखी क्यों न हो और मालदार क्यों न हो

मियाँ के दिल की मलिका बनने के लिए उसको कोशिश करनी पड़ती है यह नहीं होता कि जी अब मेरा निकाह हो गया अब मैं मियाँ के दिल की मलिका बन गई। आप मियाँ की बीवी तो बन गयीं हैं, अपने घर से चलकर उसके घर में पहुँच गयीं हैं मगर उसके दिल में घर बनाने के लिए आपको खुद मेहनत करनी पड़ेगी। वह जब आपके अन्दर ख़ूबियाँ देखेगा, अच्छाईयाँ देखेगा अब आप उसके दिल में अपना घर बना लेंगी तो मियाँ के घर में पहुँचना तो बहुत आसान है कि माँ-बाप निकाह करके बेटी को रुख़्सत कर देते हैं और इधर सास-ससुर उसको दुल्हन बनाकर अपने बेटे के घर पहुँचा देते हैं तो घर पहुँचना तो बड़ा आसान काम है लेकिन घर पहुँचने के बाद मियाँ के दिल में अपना घर बनाना यह असल काम है और यह बीवी तब बन पाती है जब उसके अन्दर नेकी हो, जब उसके अन्दर ख़िदमत हो, वफ़ादारी हो, मियाँ के साथ मुहब्बत हो। इन सिफ़ात के ज़रिए अपने मियाँ के दिल में अपना घर बनाती है। लिहाज़ा जो औरतें शिकवे करती फिरती हैं कि मियाँ मेरी तरफ़ देखता नहीं, तवज्जोह नहीं करता, माँ की बात ज़्यादा मानता है ये सब वे औरतें होती हैं जो अपने मियाँ के दिल में घर बनाने की कोशिश ही नहीं करतीं। वे यही सोचती हैं कि बस मियाँ के घर में पहुँच गयीं अब यही काफ़ी है। घर तक नहीं पहुँचना मियाँ के दिल तक पहुँचना है। उसके दिल में अपना घर बनाना है।

कामयाब ज़िन्दगी के कुछ उसूल

1. मियाँ अगर ग़रीब भी हो तो भी उसको अपना अमीर समझे अपना बड़ा समझे। रिज़्क़ अल्लाह तआला के क़ब्ज़े में है जब मियाँ-बीवी में मुहब्बत होगी तो अल्लाह तआला उस मुहब्बत की वजह से उनके रिज़्क़ में बरकत अता फ़रमाएंगे लिहाज़ा कितनी ही बार ऐसा हुआ कि शादी से पहले कारोबार अगर लाखों में था तो जब बीवी पहुँची तो अल्लाह ने रिज़्क़ में ऐसी बरकत दी कि अब उनका काम करोड़ों में पहुँच गया तो बीवी जब आती है तो अपना रिज़्क़ लेकर आती है।

2. मियाँ की ख़ुशी को अपनी ख़ुशी से आगे रखें, उसकी ज़रूरत को अपनी ज़रूरत से आगे रखें। मिसाल के तौर पर आपको नींद आई हुई है और मियाँ काम से देर से आया। अब आपकी ज़रूरत है कि आप सो जाएं और मियाँ की ज़रूरत है कि उसको गर्म खाना दिया जाए और पास बैठकर उससे बातचीत की जाए तो ऐसी सूरत में अपनी ज़रूरत पर मियाँ की ज़रूरत का पहले नम्बर पर रखा करें अगर आप अपनी नींद क़ुर्बान कर देंगी, मियाँ को गर्म खाना दे देंगी, पास बैठेंगी और उससे बातचीत करेंगी तो उसकी थकन भी उतर जाएगी और उसके दिल में आपकी मुहब्बत बढ़ जाएगी और अगर आप कहें जी फ़्रिज में खाना पड़ा हुआ है आप खा लें और मैं तो सो रही हूँ तो जिस तरह फ़्रिज का ठंडा खाना खाएगा उसी

तरह उसका दिल भी आपकी तरफ़ से ठंडा हो जाएगा।

3. मियाँ के साथ हमेशा अच्छे तरीक़े से पेश आएं जैसे हदीस पाक में आता है कि अच्छी बीवी वह होती है कि मियाँ उसको देखे तो उसका दिल बाग़ बाग़ हो जाए तो आप घर में ऐसी बनकर रहें कि मियाँ आपको देखे तो अपनी परेशानियों को भूल जाए। उसके लिए आप नहाएंगी, अपने को साफ़ सुथरा रखेंगी, साफ़ सुथरे कपड़े पहनेंगी, ख़ुशबू लगाएंगी जो जितना आप मियाँ के लिए अपने आपको सजाएंगी। आप यूँ समझें कि इतनी देर आपने मुसल्ले वाली इबादत से ज़्यादा अफ़ज़ल काम करने में लगा दिया। मुसल्ले पर बैठकर नफ़ल पढ़कर आपको वह अज्र नहीं मिल सकता जो आपको मियाँ के लिए तैयार होने पर मिल सकता है। इसके लिए ज़रूरी नहीं होता कि रोज़ नए जोड़े हों, बस कपड़े साफ़ होने चाहिएं तो साफ़ सुथरे इंसान हमेशा दूसरे बन्दे को अच्छा लगता है। ऐसा न हो कि मियाँ बाहर से खुश आए और उल्टा घर में आकर परेशान हो जाए और कई औरतों का वतीरा होता ही है यही कि जहाँ मियाँ घर में आया और उन्होंने कोई झगड़े का मसूअला आगे रख दिया। ख़ुश आदमी को परेशान कर देना बड़ी बेवक़ूफ़ी होती है तो हदीस पाक के मुताबिक़ आप ऐसी बनकर रहें कि मियाँ आपको देखे तो अपनी परेशानियों को भूल जाए।

4. अगर खाना खाने का वक़्त है तो बीवी को चाहिए कि वह

कोशिश करे कि अपने मियाँ के हाथ खुद धुलाए अब अगर इसमें औरतें अपनी बेइज़्ज़ती समझें तो उनकी अक़्ल का क़ुसूर है। मियाँ को अल्लाह तआला ने मर्तबा ही ऐसा दिया है। याद रखें कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का फ़रमा देना कि अगर अल्लाह तआला के सिवा किसी और को सज्दा करने की इजाज़त होती तो मैं बीवी को हुक्म देता कि वह मियाँ का सज्दा करे। यह कोई छोटी सी बात नहीं कही गई। वहाँ तो सज्दे की बात हो रही है और यहाँ हाथ धुलाने में भी बेइज़्ज़ती महसूस कर रही हैं। क्या अपने घर में अपनी माँ के हाथ नहीं धुलातीं, अपने वालिद के हाथ नहीं धुलातीं तो अगर माँ-बाप के हाथ धुला सकती हैं एहतिराम की वजह से तो फिर मियाँ को भी तो अल्लाह तआला ने एहतिराम अता किया है। इसके भी हाथ धुलाएं ताकि उसको पता चले कि यह मेरी बीवी ख़ादिमा भी है, मेरे साथ मुहब्बत करती है और दस्तंख़्वान पर बैठें तो खुश मिज़ाजी के साथ खाना खाएं। हर खाने को यादगार बनाएं।

5. कभी भी मियाँ की गुंजाईश से ज़्यादा फ़रमाइश न करें। आप समझदार हैं अगर आप महसूस कर सकती हैं कि मियाँ दस रुपए ख़र्च कर सकता है तो बस इतना ही ख़र्चा सामने रखें और वह दस रुपए ख़र्च कर सकता है और आपने प्लानिंग सौ रुपए की बनाई तो यह तो अपने घर का सुकून बर्बाद करने वाली बात हुई। दुनिया की चीज़ों

की ख़ातिर मियाँ के दिल में नफ़रत पैदा कर लेना यह कहाँ की अक़्लमंदी है। मियाँ को आप यक़ीन दिलाओ कि आपको उसके पैसे का दर्द है। समझदार औरतें हमेशा अपने मियाँ के माल को सलीक़े से इस्तेमाल करती हैं तो मियाँ के दिल में उनका मक़ाम बढ़ जाता है और जो औरत मियाँ के माल को लूट का माल समझें तो मियाँ के दिल में उस औरत का मक़ाम गिर जाता है। इसलिए हदीस पाक में आता है कि जन्नती औरत की पहचान उनमें से एक यह बताई गई है कि वह अपने नामूस के बारे में और माल के बारे में मियाँ के साथ ख़्यानत न करे। तो यह उसूल बना लें कि मियाँ को यक़ीन हो जाए कि मेरी बीवी को मेरे माल का दर्द है यह उसको सोच समझकर इस्तेमाल करती है जिस तरह करना चाहिए। जब उसको यह यक़ीन हो जाएगा तो फिर वह बैंक के बजाए आपको अपना बैंक समझना शुरू कर देगा।

6. कुछ औरतें ग़लती करती हैं कि बेमौक़ा अपनी दास्तान सुनाने बैठ जाती हैं। यह नहीं देखतीं कि उसको जल्दी दफ़्तर जाना है या जल्दी बाहर जाना है या यह थका हुआ आया। इस वक़्त उसका दिल बातों के बजाए अराम करने को जा रहा है तो बे मौक़े अपनी दास्तान को छेड़कर बैठ जाना यह बहुत बेवक़ूफ़ी होती है। वक़्त को देखा करें और ऐसे वक़्त पर बात किया करें कि दूसरा आदमी तवज्जोह के साथ बात सुने ताकि आपकी बात की क़द्रदानी हो सके।

7. मियाँ के निजी काम हमेशा अपने हाथों से खुद करने को इबादत समझें।

8. मियाँ की परेशानी को अपनी परेशानी समझें बल्कि अगर आप देखें कि वह बहुत मुश्किल मुसीबत में किसी वजह से आ गया तो ऐसे मुश्किल वक़्त में अगर मुमकिन हो तो अपना ज़ेवर उसको पेश करें और साथ में यह भी कहें कि अगर मेरे पास कुछ और भी होता तो वह भी आपके क़दमों में डाल देती। अल्लाह तआला आपका साया सलामत रखे। अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे इससे बहुत अच्छा बना कर देंगे। इससे मियाँ के दिल में खुशी भी होगी और वह समझेगा कि यह बीवी तो वाक़ई मुझ पर क़ुर्बान होने वाली बीवी है।

9. जब कभी मियाँ को ग़ुस्सा की हालत में देखें तो बिल्कुल नरम पड़ जाएं। थोड़ी देर बाद वही मियाँ जो इतना ग़ुस्से में था वह आपको प्यार के साथ अपनी तरफ़ बुलाएगा। आपने बच्चे को नहीं देखा माँ झिड़कती भी है, थप्पड़ भी लगाती है और एक मिनट के अन्दर अन्दर बच्चा फिर उसी की गोद में होता है तो अल्लाह तआला ने बच्चे के अन्दर यह सिफ़त रख दी कि वह ऐसी चीज़ों को भूल ही जाता है। इतना जल्दी भूलता है कि आप उसको थप्पड़ लगाएं वह रो पड़ेगा और अगले लम्हे आप उसको कैंडी दें तो वह खुश होकर आपके गले लग जाएगा अगर बड़े इन्सानों की तरह उसके दिल में भी ये चीज़े असर कर

सकतीं तो जिस माँ ने थप्पड़ मारा है, बच्चा उसके बुलाने पर कभी उसके पास वापस न आता तो औरत को चाहिए कि वह भी उसी तरह बच्चे वाली सिफ़त अपने अन्दर पैदा कर ले कि मियाँ किसी वक़्त ग़ुस्सा भी है तो बस एक मिनट के अन्दर आप उसको देख रही हैं कि ग़ुस्सा ठंडा हुआ तो उसके साथ इतना प्यार वाला अमल करें, मुहब्बत वाला, नरमी वाला कि जैसे आपके दिल पर तो कोई असर हुआ ही नहीं। अक्सर घरों में जो मुसीबतें शुरू होती हैं कि मियाँ ने बिला वजह के ग़ुस्सा किया और बीवी ने समझा कि यह तो हर वक़्त डाँट-डपट ही करता रहता है और आगे से बोल पड़ी तो शैतान को तो फिर आगे से मौक़ा मिल जाता है।

10. इसीलिए अगर मियाँ किसी वक़्त ग़लत तंक़ीद भी करे तो भी आप ख़ामोश रहें। ख़ामोशी कई बार बेहतरीन जवाब हुआ करती है। आप अपने मियाँ को अपने घर के अन्दर सुकून देंगी तो वह दफ़्तर और दुकान से भाग भागकर घर आएगा, वह तो दोस्तों से जान छुड़ा, छुड़ाकर घर आएगा, तेज़ तेज़ क़दमों से चलता घर आएगा।

एक लतीफ़ा

हज़रत ख़्वाजा अब्दुल मालिक सिद्दीक़ी रह० का मुरीद था। उसने एक बार हज़रत को कहा कि हज़रत एक अजीब बात है हम आपकी तरफ़ आते हैं तो बड़े भारी क़दमों के साथ

और जब आपके घर से वापस अपने घर जाते हैं तो बड़े तेज़ तेज़ क़दमों के साथ भागे भागे जाते हैं तो हज़रत मुस्कुराए और फ़रमाने लगे कि जो तवज्जोह तुम्हें बीवी देती है वह तवज्जोह तुम्हें मैं नहीं दे सकता तो इस वाक़िए से पता चला कि बीवी को तो अपने मियाँ को ऐसी तवज्जोह देनी चाहिए कि वह भागा भागा घर आए। दोस्तों से जान छुड़ाकर घर आए। हम कई मर्दों को देखते हैं जिनके घर आबाद होते हैं कि वह बहाने बना बनाकर घर जा रहे होते हैं तो हमें देखकर ख़ुशी होती है और हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं कि अल्लाह का शुक्र इस नौजवान का घर आबाद है।

11. एक उसूल और ज़ेहन में रखें कि मर्द हुस्न परस्त होता है मियाँ सीरत पसन्द होता है। यह बात थोड़ी गहरी है मर्द हुस्न परस्त होता है मगर मियाँ सीरत परस्त होता है इसका क्या मतलब? कि फ़ितरती तौर पर मर्द जो है वह हुस्न की तरफ़ माइल होगा। जब वही मर्द कहीं मियाँ की हैसियत से होगा तो अब उसको सीरत चाहिए। इसीलिए कुँवारेपन में जो लोग आपस में इश्क़ व मुहब्बत के ताल्लुक़ात बढ़ा लेते हैं तो वही मर्द जो उसका आशिक़ बना हुआ होता है और जब दोनों का निकाह हो जाता है तो एक साल के बाद दोनों में तलाक़ हो जाती है। इसकी क्या वजह है कि जब इस मर्द ने मियाँ की शक्ल अपनाई, रूप धारा, अब उसको हुस्न के बजाए हुस्ने सीरत चाहिए था तो अगर कोई सिर्फ़ मर्द है है तो वह हुस्ने सूरत पर मरेगा और अगर वही मर्द मियाँ का रूप धार ले तो वह

हुस्ने सीरत को पसन्द करेगा। इसलिए बीवी को चाहिए कि अपने अच्छी आदतों, अपने अच्छे अख़्लाक़ से अपना बनाएं। यहाँ औरतें ग़लती करती हैं और इसी ज़ोअम मे रहती हैं कि जी मैं ख़ूबसूरत हूँ, पढ़ी लिखी हूँ, मेरे मियाँ को क्या ज़रूरत है कहीं और देखने की।

दर्द भरा क़िस्सा

कुछ दिन पहले एक ऐसा ही मामला इस आजिज़ के सामने पेश हुआ। लड़की पढ़ी लिखी हुई काफ़ी थी और शक्ल सूरत में बहुत अच्छी थी तो मियाँ पढ़ा हुआ भी नहीं था और शक्ल का भी उतना अच्छा नहीं था मगर था कारोबारी अच्छा पैसे वाला। अब बीवी को बड़ा नाज़ नख़रा था कि मैं तो बड़ी ख़ूबसूरत और पढ़ी लिखी हुई हूँ तो बात बात पर मियाँ को ताना देती थी कि मेरे माँ-बाप ने मुझे आपके साथ बाँध दिया। उसको यह घमंड था कि मैं इतनी ख़ूबसूरत और इतनी पढ़ी लिखी हूँ और मियाँ को बार बार यही कहती बस मेरे माँ-बाप ने आपके अन्दर पता नहीं क्या देखा कि मुझे आपके साथ बाँध दिया। कुछ अर्से तो मियाँ इस ताने को सुनता रहा। क्योंकि उसके पास माल पैसा था उसने ठान लिया कि अच्छा फिर मैं इसे दिखाता हूँ कि मुझे और अभी अच्छे रिश्ते मिल सकते हैं लिहाज़ा उसने उसी शहर में एक और हूर परी लड़की के साथ निकाह कर लिया और निकाह करने के बाद फ़िर एक दिन उसे लेकर घर आया और अपनी बीवी से कहा देखो तुम

तो कहती थीं दुनिया में तुम्हें कोई और ऐसा रिश्ता मिल ही नहीं सकता था तुम से ज़्यादा ख़ूबसूरत लड़की है जिससे मैंने निकाह कर लिया है लिहाज़ा अब तुम सब्र की ज़िन्दगी गुज़ारना तो घर में तो हंगामा हुआ मगर उसने दूसरी बीवी को मकान भी ख़रीद कर दे दिया और डट गया कि मैं इसे तलाक़ नहीं दूँगा। अब यह औरत बेचारी मारी मारी फिरती है। अब मेरे पास उसने पैग़ाम भेजा कि वह मियाँ दो-दो, तीन-तीन साल मेरे घर नहीं आता, मैं उसकी राह तकती हूँ तो उस औरत ने ज़रा सी ग़लती से अपने घर को बर्बाद कर लिया। इसलिए कभी भी मियाँ को यह ताना न दे। उसके अन्दर भी ग़ैरत, एहसास होता है, कई बार अगर आपने उसे मुक़ाबलेबाज़ी पर खड़ा कर दिया तो घर तो आपका ही बर्बाद होगा, अकड़-मकड़, ग़ुस्सा, बदज़बानी, बदकलामी और बदगुमानी इन बातों से आमतौर से घर बर्बाद होते हैं।

12. एक बात यह भी याद रखें घर को भी साफ़ सुथरा रखें ख़ुद भी साफ़-सुथरी रहें और अपने दिल को भी साफ रखें परवरदिगार आपको दुनिया में इज़्ज़तें देगा। वह आपके मियाँ में आपकी मुहब्बत डाल देगा। लिहाज़ा अल्लाह तआला फ़रमाते हैं:

﴿ولله العزة ولرسوله وللمومنين.﴾

इज़्ज़त अल्लाह के लिए, रसूल के लिए और ईमान वालों के लिए है तो जो औरत अपने दिल को साफ़ कर लेगी और अपने मालिक की बाँदी बन जाएगी तो अल्लाह

तआला का वायदा है वह उसे इज़्ज़त देगा लिहाज़ा अल्लाह तआला आपके मियाँ के दिल में आपकी मुहब्बत डाल देंगे।

13. अपने मियाँ को आप हमेशा अच्छे मशवरे दें मगर उनको ठूंसने की कोशिश न करें। अच्छे मशवरे देना अच्छी आदत है, ठूंसने की कोशिश करना बुरी आदत है। अक्सर औरतें यह चाहती हैं कि मियाँ जो करे बस हम से पूछकर करे तो यह चीज़ ऐसे ज़बर्दस्ती हासिल नहीं होती। इसका तरीक़ा यह कि आप मौक़े मुनासिब हमेशा उसको भलाई वाले मशवरे दें और फिर अल्लाह से दुआएं मांगे। अब जब वह एक दो बार तजरिबा करेगा कि उसने आपका मशवरा नहीं माना तो उसको परेशानी हुई तो वह तीसरी बार सोचेगा कि बीवी जो मुझे कहती है कि फ़ायदा उसी में था तो वह बग़ैर किसी लड़ाई के अपने आप आपके मशवरे का पाबन्द बन जाएगा।

14. एक प्वाइन्ट और ज़ेहन में रखें कि मियाँ से मुहब्बत करना सीखें अगर अपने आप दिल में नहीं तो अपने आपको समझाएं कि यह अब मेरा मियाँ है, यह मेरा महबूब है, इसी की मुहब्बत मेरे दिल में होगी तो मेरा मालिक मुझसे राज़ी होगा लिहाज़ा अपने मियाँ की मुहब्बत अपने दिल में पैदा करने की कोशिश करें। जन्नत में जो औरतें बिला हिसाब-किताब जाएंगी, जिनके लिए जन्नत के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे हदीस पाक के मुताबिक़ ये वे औरतें होंगी जो अपने शौहरों की आशिक़ा होंगी। अल्लाह

तआला उनके लिए जन्नत का दरवाज़ा खोल देंगे बग़ैर हिसाब उसको जन्नत अता फ़रमा देंगे। हमने देखा मुहब्बत से बीवी आवारागर्द शौहर को भी नेक बना लेती है। आप सोचें कि अगर दफ़्तर में रहने वाली लड़की, गली में चलने वाली लड़की आपके शौहर को अपना बना सकती है तो आप जो चौबीस घंटे उसके घर में रहती हैं, उसके बिस्तर पर होती हैं, आप अपने शौहर को अपना क्यों नहीं बना सकतीं तो आपको अगर पता चल भी जाए कि मेरे शौहर का चाल चलन अच्छा नहीं है तो ग़ुस्से में आकर लड़ाई करने के बजाए आप ये सोचें कि अब किसी बदकिरदार औरत ने मेरे शौहर को अपनी तरफ़ खींचने की ज़्यादा कोशिश की है तो मुझे उससे दुगनी तिगनी मेहनत करनी चाहिए कि मैं अपने मियाँ को अपने ही पास रखूँ जब आप इस तरह अपनी मुहब्बत बढ़ा देंगी तो आपका शौहर बेइख़्तियार होकर आपकी तरफ़ मुतवज्जेह हो जाएगा तो नेक बीवियाँ अपनी मुहब्बत के ज़रिए से बदकिरदार शौहरों को भी नेक बना लेती हैं।

15. एक बात जो अक्सर झगड़े का सबब बनती है वह यह कि आप ग़ैर मर्द से बात करने में हमेशा परहेज़ करें जहाँ आपने बेपर्दगी की और ग़ैर मर्द से बेझिझक बात कर ली, मियाँ ने देख लिया कहे न कहे उसके दिल में दरार पड़ जाएगी या अगर फ़ोन पर आप बात करती हैं शौहर को शक हो गया कि यह फ़ोन पर किसी ग़ैर मर्द से बात

करती है तो वह आपको बताए या न बताए उसके दिल में फ़र्क़ आ जाएगा। शौहर बीवी की हर ग़लती को माफ़ कर सकता है उसकी बदकिरदारी वाली ग़लती को माफ़ नहीं कर सकता और याद रखें कि थोड़ी देर का साथी बनने के लिए तो हर मर्द तैयार हो जाएगा मगर ज़िन्दगी भर का साथी सिर्फ़ शौहर होता है। इसलिए यह ज़ेहन में रख लें कि दुनिया में शौहर से ज़्यादा सच्चा साथी कोई नहीं हो सकता। शौहर को हर वक़्त छलकते मचलते हुस्न की ज़रूरत नहीं होती बल्कि वफ़ादार ख़िदमत गुज़ार बीवी की ज़रूरत होती है।

16. शौहरों की बात समझ लें कि हर शौहर मासूम दिल बीवी को पसन्द करता है, मासूम दिल बीवी वह बीवी जो तबियतन नेक हो और वह बीवी जो शौहर की ग़लतियों को भी देखे तो उछालने के बजाए उनको माफ़ करे। ऐसे मासूम दिल बीवी को शौहर पसन्द करता है। वह बीवी जिसके दिल के अन्दर कीना हो, जो ज़िद्दी हो, जो झूठी हो, जो तोता चश्म हो, जो बदचलन हो उसको शौहर कभी पसन्द नहीं कर सकता। अक़्लमंद बीवी को चाहिए कि शौहर की अच्छी बातों पर उसकी ख़ूब तारीफ़ करे, इसमें बहुत सारी औरतें कोताही कर जाती हैं कई दफ़ा शौहर उनके कहने पर उनके काम कर देते हैं, घर के काम कर देते हैं, बच्चों के काम कर देते हैं और औरतें उसकी तारीफ़ करने में हमेशा कोताही करती हैं, यह बहुत बड़ी

ग़लती होती है। याद रखना नफ़सियात का उसूल है कि आप जब भी किसी की तारीफ़ करें वह इन्सान मुतास्सिर होगा, जब मुतास्सिर होगा तो फिर और ज़्यादा उस काम को करने की कोशिश करेगा तो जब आपने घर की कोई भी चीज़ कही और शौहर ने लाकर दी या कोई काम कहा और शौहर ने कर दिया तो उस मौक़े पर डटकर अपने शौहर के सामने उसकी तारीफ़ किया करें, उसका शुक्रिया अदा किया करें। हमें तो लगता है कि सौ औरतों में से शायद दस औरतें भी नहीं होंगी जो अपने शौहर का शुक्रिया अदा करती होंगी, नव्वे फ़ीसद बीवियाँ इस गुनाह को करती हैं कि अपने शौहर के एहसानात पर उनका शुक्रिया अदा नहीं करतीं। वे समझती हैं कि यह तो उसका फ़र्ज़ है, उसको करना ही चाहिए। भाई फ़र्ज़ तो है और करना भी चाहिए लेकिन अगर उसने कर दिया है तो आप यह भी तो चाहती हैं कि आइन्दा भी करता रहे तो आइन्दा करते रहने के लिए अगर आप उसका शुक्रिया अदा करती रहेंगी तो वह बड़े शौक़ से दोबारा भी उस काम को करेगा। कई बीवियाँ सोचती हैं शौहर की तारीफ़ कर दी तो फूल न जाए, भाई अगर फूला भी तो शौहर भी तो आपका ही है। इसलिए आप उसकी तारीफ़ करने में सुस्ती न करें।

17. यह भी ज़ेहन में रखें कि इन्सान, इन्सान है। गर्म खाना और गर्म दिल बर्फ़नुमा शौहर के दिल को पिघला देता है

यानी अच्छा खाना बनाएं, अपने शौहर को पेश करें और गर्म जोशी से अपने शौहर का घर में इस्तिक़बाल करें। यह दिल की गर्मी, खाने की गर्मी आपके शौहर को पिघला देगी। इसलिए औरत को चाहिए कि शौहर को अपनी मुहब्बत के जाल में ऐसा फँसाए कि उसको अपना दीवाना बना दे।

18. हमेशा ऐसे काम करें कि जिससे शौहर की इज़्ज़त बढ़े। यह उसूल याद रखें जब शौहर महसूस करेगा कि बीवी मेरी इज़्ज़त बढ़ाती है तो वह पूरी ज़िन्दगी के लिए आपका ममनून हो जाएगा। मसलन उसके माँ-बाप की नज़र में इतनी अच्छी बन जाएं कि वे अपने बेटे के सामने ख़ुशी का इज़्हार करें तो फिर देखें शौहर किस तरह आपके साथ मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारता है।

19. एक बात और ज़ेहन में रखें, शरीअत की नज़र में रूठे हुए शौहर को मनाना तहज्जुद गुज़ारी से भी बड़ी इबादत है। हदीस पाक में आया और मैं ज़िम्मेदारी से यह हदीस बयान कर रहा हूँ नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जो औरत शौहर को क़रीब करने के लिए चापलूसी भी करे उस पर भी अल्लाह तआला उसको सवाब अता फ़रमाता है। चापलूसी से मुराद यह है कि ऐसी मीठी-मीठी बातें करना कि शौहर को अपने क़रीब कर लें तो जब शरीअत यह कहती है शौहर के दिल में मुहब्बत पैदा करने के लिए उसकी चापलूसी करना भी इबादत है तो हमारे यहाँ तो कई बार औरतें मुहब्बत का भी इज़्हार नहीं करतीं और समझती हैं कि हम बड़ी

शर्मीली हैं, सारी दुनिया के साथ आपका वह शर्मीलापन बहुत अच्छा है मगर अपने मियाँ के साथ जब मामला है तो आप इस शर्म को एक तरफ़ रखें और अपनी मुहब्बत का इज़्हार करें, बताएं मियाँ को कि मुझे आपके पास रहकर सुकून मिलता है, मैं तो ख़ुश होती हूँ, मैं बहुत ख़ुश नसीब हूँ। जब आप यह बोल बोलेंगी तो आपके शौहर को इतमिनान हो जाएगा कि मेरी बीवी अपने घर के अन्दर ख़ुशियों भरी ज़िन्दगी गुज़ार रही है तो शौहर की आँख की पुतली बनकर रहें, शौहर की आँख का काँटा बनकर न रहें। शौहर की मर्ज़ी के मुताबिक़ जब आप अपने आपको ढाल लेंगी तो यक़ीनन शौहर के दिल में आपकी इज़्ज़त बढ़ जाएगी।

20. काफ़ी वक़्त हो चुका है। लिहाज़ा एक आख़िरी बात उसूल की बताकर आज इस उनवान को पूरा करते हैं और यह बात शायद आपको अजीब लगे मगर हदीस पाक के मुताबिक़ यह आजिज़ यह बात आपको बता रहा है कि मर्द को जन्नत में दाख़िले के लिए माँ-बाप की रज़ा का टिकट चाहिए। हदीस पाक में आता है तेरा बाप जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है और तेरी माँ के क़दमों में तेरे लिए जन्नत है तो मर्द को जन्नत में दाख़िल होने के लिए माँ-बाप के राज़ी होने का टिकट चाहिए और औरत को जन्नत में जाने के लिए शौहर की रज़ा का टिकट चाहिए। हदीस पाक में आता है कि जो बीवी फ़राईज़ पर अमल करने वाली हो, अपने नामूस की हिफ़ाज़त करने

वाली हो और इस हालत में मरे कि उसका शौहर उससे ख़ुश हो वह जिस दरवाज़े चाहे जन्नत में दाख़िल हो जाए तो शौहर का राज़ी होना यह जन्नत का टिकट है। इसी लिए शौहर अगर किसी से नाराज़ है तो हदीस पाक में आया है कि इस औरत की नमाज़ों को उसके सिर से भी ऊपर नहीं उठाया जाता तो इसलिए अगर आपका मियाँ अपने माँ-बाप की ख़िदमत में लगा हुआ हो तो आप इस पर रंजीदा न हों बल्कि ख़ुश हों कि वह जन्नत कमा रहा है अगर बीवी यह सोच लेगी तो फिर उसे सास-ससुर की ख़िदमत के लिए शौहर का जाना बुरा नहीं लगेगा। इन सारी चीज़ों का निचोड़ यह है कि बीवी को चाहिए कि शौहर के सामने मुहब्बत और आजिज़ी का ताल्लुक़ रखे। यह आजिज़ी ज़रा मुश्किल सी बात है क्योंकि इसमें झुकना पड़ता है और मिटना होता है और झुकना और मिटना मुश्किल है मगर शरीअत ने हुक्म दिया कि तुम अपने शौहर के सामने आजिज़ी के साथ रहो और यह काम बड़ा मुश्किल। यह ज़ेहन में रखें कि शैतान को भी झुकना न आया और जिस इन्सान में शैतानियत होती है उसको भी झुकना नहीं आता। अल्लाह तआला हमें आजिज़ी अता फ़रमाए और ख़िदमत गुज़ारी का शौक़ अता फ़रमाए और अल्लाह तआला हमारे घरों को जन्नत की मिसाल बनाए।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العالمين.﴾

○ ○ ○

मुनाजात

किससे मांगे कहाँ जाएं किससे कहें
और दुनिया में हाजत रवा कौन है

कौन मंज़ूर है कौन मरदूद है
बे ख़बर क्या ख़बर तुझको क्या कौन है

जब तुलेंगे अमल सबके मीज़ान पर
तब खुलेगा कि खोटा खरा कौन है

सबका दाता है तू सबको देता है तू
तेरे बन्दों का तेरे सिवा कौन है

है ख़बर भी तू ही मुब्तदा भी तू ही
नाखुदा भी तू ही और खुदा भी तू ही

रिज़्क़ पर जिसके पलते हैं शाह व गदा
तुझ अहद के सिवा दूसरा कौन है

सबका दाता है तू सबको देता है तू
तेरे बन्दों का तेरे सिवा कौन है

औलिया तेरे मोहताज ऐ रब्बे कुल
तेरे बन्दे हैं सब अंबिया व रूसुल

उनकी इज़्ज़त का बाइस है निसबत तेरी
उनकी पहचान तेरे सिवा कौन है

मेरा रब सुन रहा है यह मेरी दुआ
जानता है वह ख़ामोशियों की ज़ुबां

अब मेरी राह में कोई हाइल न हो
नामा बर क्या बला है सबा कौन है

औलिया अंबिया आले बैत और नबी
ताबईन व सहाबा पे जब आ बनी

गिर के सज्दे में सब ने यही अर्ज़ की
तू नहीं है तो मुश्किल कुशा कौन है

अहले फ़िक्र व नज़र जानते हैं तुझे
कुछ न होने पे भी मानते हैं तुझे

ऐ नसीर इसको तू फ़ज़्ले बारी समझ
वरना तेरी तरफ़ देखता कौन है

किससे मांगे कहाँ जाएं किससे कहें
और दुनिया में हाजत रवा कौन है

O O O

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿وقل رب ارحمها كما ربيني صغيرا.﴾

माँ का रुत्बा इस्लाम की नज़र में

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब

दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

इक़्तिबास

माँ को चाहिए कि अपने मर्तबे को पहचाने। याद रखें माँ के आँसू दुनिया की सबसे ज़्यादा ताक़तवर चीज़ होती है जो काम तलवार से नहीं किया जा सकता वह काम माँ अपने प्यार से करवा लेती है इसलिए जब माँ की आँखों से आँसू टपकते हैं तो फिर औलाद अपनी ज़िन्दगी के बड़े-बड़े फ़ैसले कर दिया करती है। इसलिए माँ को चाहिए कि अपनी मुहब्बतें अपनी शफ़क़तें इस पर ख़र्च करें कि औलाद दीनदार बन जाए और दीने इस्लाम को अपने जिस्म पर सजाए और अल्लाह तआला के बन्दे बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन जाएं और अगर माँ ही बिगड़ी हुई हो तो फिर औलाद क्या संवरेगी।

अज़ इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ुक़ार साहब मद्द ज़िल्लुहू

الحمد للّٰه وكفى وسلام على عباده الذين اصطفٰى اما بعد!

اعوذباللّٰه من الشيطان الرجيم.

بسم اللّٰه ارحمٰن الرحيم.

وقضٰى ربك الا تعبدوا الا اياه وبالوالدين احسانا اما يبلغن
عندك الكبر احدهما او كلاهما فلا تقل لهما اف ولا تنهر
هما وقل لهما قولا كريما واخفض لهما جناح الذل من
الرحمة وقل رب ارحمهما كما ربيٰنى صغيرا.

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام علٰى المرسلين
والحمد للّٰه رب اللٰمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

औरतों की इस मज्लिस में आज माँ के उनवान पर बातचीत की जाएगी। माँ का बोल तीन हरफ़ों से बना मीम, अलिफ़ और नून। यह ऐसा बोल है कि जिसके बोलते हुए इन्सान के अपने अन्दर नियाज़मंदी और मुख़ातिब को बेलौस मुहब्बत का ख़्याल ज़रूर आता है यह जो तीन हरफ़ हैं मीम, अलिफ़ नून इन तीनों की तफ़सील है:

मीम से मुहब्बत बनी,

अलिफ़ से ईसार,

और नून नियाज़मंदी से लिया गया।

माँ के अन्दर ये तीन सिफ़तें होती हैं। औलाद के साथ मुहब्बत भी बेइन्तेहा होती है, औलाद के लिए ईसार और क़ुर्बानी भी वह बे मिसाल करती है और औलाद के साथ उसको माँ होते हुए भी नियाज़मंदी का ताल्लुक़ रखना पड़ता है। तो माँ के शुरू का हरफ़ मीम है। इस लफ़्ज़ से मुहब्बत बनी, इस मीम के लफ़्ज़ से मग़फ़िरत बनी। माँ के अन्दर ये दोनों सिफ़त होती हैं। बच्चे की मुहब्बत भी होती है और अगर कोई बच्चा ग़लती करे तो उसको माफ़ करने का जज़्बा भी होता है अगर इन तीनों हरफ़ों को थोड़ा बदल लिया जाए तो मीम, अलिफ़ और नून के हरफ़ को बदलने से अमन का लफ़्ज़ बनता है। अलिफ़, मीम और नून और थोड़ा बदल लें तो उसी से नून अलिफ़ मीम नाम बनता और अगर नून का नुक़्ता भी लगा दें तो मीम अलिफ़ और नून ग़ुन्ना माँ का नाम बनता है। ये ऐसे अलफ़ाज़ हैं कि जिनका ताल्लुक़ माँ के साथ है। मसलन माँ की गोद बच्चे के लिए अमन का गहवारा होती है, बच्चे को अपनी माँ पर बड़ा अमान होता है और माँ के साथ ही बच्चे का नाम दुनिया में बुलन्द होता है। माँ की दुआओं के साथ। इसीलिए मीम, अलिफ़ और नून यह हरफ़ असली अगर लिए जाएं तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की वालिदा माजिदा का नाम आमना था। उसके भी हरफ़ यही बनते हैं और यही वह ख़ुश क़िस्मत माँ थी जिसको अल्लाह ने इस काएनात की सबसे अज़ीम हस्ती की माँ बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई।

माँ की मामता

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने माँ को एक नेमत दी है जिसको मामता कहते हैं। मामता का मतलब होता है बेग़र्ज़ मुहब्बत चुनाँचे माँ अपने बच्चे से बेलौस मुहब्बत करती है। इस छोटे बच्चे से उसको क्या लालच होती है लेकिन वह उसकी चौबीस घंटे की ख़ादिमा, उसकी बाँदी बनी होती है और उससे इतनी मुहब्बत करती है कि जिस मुहब्बत को अलफ़ाज़ के अन्दर ढालना मुश्किल है।

ख़ता पर अता

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने माँ को एक सिफ़त और भी दी है और उसको कहते हैं ख़ता पर अता की सिफ़त, यह अल्लाह तआला की अपनी सिफ़त है कि वह बन्दों की ख़ता पर भी उन पर अपनी रहमत फ़रमा देता है, उनको मग़फ़िरत अता फ़रमा देता है, आम दुनिया में जहाँ ख़ता होगी वहाँ अता नहीं होगी बल्कि वहाँ पर सज़ा होगी मगर माँ मुहब्बत की ऐसी शख़्सियत है जो ख़ता पर सज़ा की बजाए अता करती है चुनाँचे बच्चा ख़ता भी कर जाए तो सज़ा देने के बजाए माँ उसे मुहब्बत का बोसा अता करती है, माँ उसे अपने सीने से लगा लेती है, यह ख़ता पर अता की सिफ़त अल्लाह रब्बुइज़्ज़त की थी लेकिन अल्लाह तआला ने इसका नमूना दुनिया में भी दिखा दिया।

सब्र व तहम्मुल

एक सिफ़त अल्लाह तआला ने माँ को और दी है जिसको सब्र व तहम्मुल कहते हैं बच्चे की छोटी-छोटी बातों पर कई मर्तबा इतना इन्सान ग़ुस्सा हो जाता है कि डाँट डपट करने लग जाता है। इसीलिए अगर किसी मर्द को थोड़ी देर घर के बच्चे संभालने पड़ें तो बच्चों की पिटाई हो जाती है और मर्द के लिए उनको संभालना मुश्किल हो जाता है। यह माँ ही है जो सारा दिन उन बच्चों के साथ गुज़ारती है किस लिए? कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उसके अन्दर सब्र व तहम्मुल दिया, वह बच्चों की ऊँच-नीच की बातें देखती भी है सुनती भी है फिर भी बर्दाश्त करती है और अल्लाह तआला ने उसको ऐसा मुहब्बत का जज़्बा दिया कि जिसकी कोई इन्तिहा नहीं, वह कभी नहीं कह सकती कि बच्चे अब मैंने तुम्हारी बड़ी ख़िदमत कर ली, एक साल हो गया तुम्हारी ख़िदमत करते हुए तुम्हारी उम्र एक साल हो गई अब मैं तुम्हारी ख़िदमत से माज़ूर हूँ नहीं बच्चा जब तक जवान नहीं हो जाता माँ उसकी ख़िदमत करती रहती है और यह ऐसी ख़िदमत है कि जो वक़्त की पाबन्द नहीं चौबीस घंटे की है।

माँ की शख़्सियत

इसीलिए माँ वह शख़्सियत होती है कि जो बच्चे को ख़ूने जिगर पिला पिलाकर बड़ा करती है जो बच्चे को अपने सीने

का दूध पिलाकर उसको ज़िन्दगी बख़्शती है। इसीलिए माँ के अन्दर मुहब्बत और प्यार की इन्तिहा होती है अगर वह सख़्ती भी करे तो उसकी सख़्ती में भी नरमी की झलक होती है अगर कभी आपने नरम हाथों की थपकी देखनी हो, कड़ी निगाह की नरमी देखनी हो या सख़्त लहजे की मिठास देखनी हो तो अपनी माँ से शोख़ी करके देखो वह सख़्त निगाह भी देखेगी और उसमें भी नरमी होगी। वह सख़्त लहजे में भी बात कर रही होगी मगर उसमें भी मिठास होगी। इसलिए कि वह माँ जो हुई, माँ की मुहब्बत और उसके ख़ुलूस की सबसे बड़ी दलील यह है कि अगर वह किसी वक़्त बच्चे को एक थप्पड़ भी लगा दे तो बच्चा थप्पड़ खाने के बाद फिर भी माँ की ही गोद में आता है अगर माँ के अन्दर इख़्लास न होता तो बच्चा थप्पड़ खाने के बाद कभी वापस माँ की तरफ़ वापस न आता लेकिन डाँट भी खाता है थप्पड़ भी खा रहा होता है फिर उस माँ के सीने से आकर लिपट जाता है यह उस माँ की मुहब्बत की दलील होती है।

माँ के बारे में लोगों ने क्या कहा?

इसलिए माँ के बारे में दुनिया के दानिश्वरों ने अलग-अलग अक़्वाल कहे हैं। मिसाल के तौर परः

- शेख़ सादी रह० ने फ़रमाया कि माँ की मुहब्बत की तर्जमानी करने वाली ज़ात सिर्फ़ माँ की ज़ात है।

- औरंगज़ेब आलमगीर रह० कहा करते थे कि मुझे माँ के बग़ैर अपना घर क़ब्रिस्तान की तरह लगता है।

यहाँ तक कि कुफ़्र के माहौल में पले हुए काफ़िर लोगों ने भी माँ की मुहब्बत के बारे में अजीब व ग़रीब बातें कीं चुनाँचेः—

- शैक्सपियर ने कहा कि बच्चे के लिए सबसे अच्छी जगह माँ की गोद होती है अगरचे बच्चे की उम्र कितनी ही क्यों न हो।
- मिलटन ने कहा आसमान का बेहतरीन तोहफ़ा इन्सान के लिए माँ है।
- नादिर शाह ने कहा कि मुझे फूल और माँ में कोई फ़र्क़ नज़र नहीं आता।

लिहाज़ा जब बच्चा पैदा होता है तो माँ के होंटों के जो तबस्सुम और उसकी आँखों से शुक्र के आँसू होते हैं वह उसकी अज़्मत और तवाज़ोअ की दलील होती है।

माँ का रुत्बा इस्लाम की नज़र में

दीन इस्लाम ने माँ को बड़ा रुत्बा दिया। इसलिए फ़रमाया

﴿الجنة تحت اقدام امهاتكم﴾

कि जन्नत तुम्हारे लिए माँ के क़दमों के नीचे है।

जिस्म में पाँव सबसे नीची जगह की हैसियत रखते हैं, घटिया दर्जे की हैसियत रखते हैं इससे मालूम होता है कि अगर

माँ के जिस्म में कोई और घटिया जगह होती तो अल्लाह तआला उस उज़्व का नाम लेते। यहाँ क़दम का नाम लिया तो सोचिए अगर माँ के क़दमों तले वह जगह मिलती है जिसको जन्नत कहते हैं यानी जहाँ अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार नसीब होगा तो फिर सोचिए अगर माँ की दुआएं ले ली जाएं और उसकी ख़िदमत की जाए तो फिर अल्लाह तआला जन्नत की क्या क्या नेमतें अता फ़रमाएंगे। इसीलिए दीने इस्लाम ने कहा अगर माँ बूढ़ी हो जाए तो उसकी ख़िदमत सबसे अफ़ज़ल अमल है।

हज़रत अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु की तड़प

सैय्यदना अबू हुरैरा रज़ियल्लाहु अन्हु एक सहाबी हैं उनका बड़ा जी चाहा करता था कि वह अल्लाह तआला के घर का दीदार करें। जब भी हज के क़ाफ़िले जाने लगते तो वह आते और बड़ी हसरत और तमन्ना के साथ उन क़ाफ़िलों में जाने वाले लोगों को देखा करते थे। किसी ने कहा कि आप खुद क्यों नहीं चले जाते। कहने लगे मेरी बूढ़ी माँ है और उसकी ख़िदमत मेरे लिए सबसे अफ़ज़ल अमल है इसलिए मैं हज पर नहीं जा सकता। किसी ने कहा तुम एक बाँदी ख़रीद लो और वह तुम्हारी माँ की ख़िदमत करेगी। तो कहने लगे कि माँ की ख़िदमत तो हो जाएगी मगर जो रुत्बे और दर्जे मुझे मिलने हैं वह तो मुझे नहीं मिल सकेंगे। इसलिए जब उनकी वालिदा की वफ़ात हुई तो उसके बाद उन्होंने हज के सफ़र को इख़्तियार किया।

हज़रत असमा रज़ियल्लाहु अन्हा और वालिदा

दीने इस्लाम ने तो यहाँ तक कहा कि अगर माँ काफ़िरा हो तो भी औलाद को चाहिए कि उसके साथ हुस्ने सुलूक का मामला करे। इसलिए हज़रत असमा बिन्ते अबूबक्र सिद्दीक़ रज़ियल्लाहु अन्हा यह सैय्यदा आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा की बड़ी और सौतेली बहन थीं और उम्र में उनसे तक़रीबन पन्द्रह साल बड़ी थीं। जब उन्होंने हिजरत की उनका निकाह ज़ुबैर बिन अव्वाम रज़ियल्लाहु अन्हु से हुआ। यह बड़ी जलीलुक़द्र सहाबियात में से थी चुनाँचे उनकी वालिदा का नाम क़तीला था सिद्दीक़े अकबर रज़ियल्लाहु अन्हु की वह बीवी थीं। जब क़ुरआन मजीद की आयत उतरी कि मुसलमान मर्दों के निकाह में काफ़िरा औरत नहीं रह सकती तो उस वक़्त उन्होंने अपनी बीवी से पूछा कि अल्लाह की बन्दी तू दीने इस्लाम क़ुबूल कर ले मगर उसकी समझ में यह बात नहीं आती थी कि मैं अपने माँ-बाप के दीन को कैसे छोड़ूँ? उसके दिमाग़ में यह बात बैठी हुई थी कि मैं अपने माँ-बाप के रास्ते को नहीं छोडूंगी इसलिए उसने कहा मैं दीने इस्लाम को क़ुबूल नहीं कर सकती और आपस में इत्तेफ़ाक़ के साथ उनको तलाक़ हो गई। बहुत अरसा वह इसी तरह वह अलग रही मगर फिर माँ थी। एक दिन उसके दिल में अपनी बेटी अस्मा रज़ियल्लाहु अन्हा का जो ख़्याल आया तो दिल भर आया, आँखों में आँसू उमड़ आए। दिल ने चाहा कि मैं जाऊँ, अपनी बेटी से मुलाक़ात तो करूँ। लिहाज़ा वह मक्का मुकर्रमा से मदीना मुनव्वरा आयीं अपनी

बेटी से मिलने के लिए। जब बेटी के घर में गई तो बेटी अपनी माँ को देखकर हैरान हो गई कि मुहब्बत के हाथों मजबूर होकर मेरी काफ़िरा माँ मुझे मिलने के लिए यहाँ भी आ गई तो उसने अपनी माँ को बिठाया और असमा फ़ौरन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में गयीं। इसलिए कि उनको शरीअत का हुक्म पता नहीं था कि अगर माँ काफ़िरा हो तो उसके साथ कैसा सुलूक करना चाहिए चुनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पहुँचकर उन्होंने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! मेरी माँ मुझे मिलने के लिए आई है, मैं उसके साथ कैसा मामला करूँ तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तू अपनी माँ के साथ अच्छा सुलूक कर चुनाँचे उन्होंने अपनी माँ की अच्छी मेहमाननवाज़ी की।

माँ-बाप की नाफ़रमानी दोनों जहान की बर्बादी

हदीस पाक में आता है कि माँ-बाप की नाफ़रमानी करना ऐसा गुनाह है कि उस आदमी को आख़िरत में तो अज़ाब होगा ही, अल्लाह तआला दुनिया में भी अज़ाब देंगे। अब इस नाफ़रमानी से मुराद दुनिया के कामों में उनकी बात न मानना है, इससे मुराद यह नहीं है कि अगर कोई फ़ासिक़ व फ़ाजिर आपने बच्चे को कहे कि तू सुन्नत को छोड़ दे, दीन को छोड़ दे, फ़िरंगियाना ज़िन्दगी इख़्तियार कर ले, शरीअत ने कहा,

﴾لا طاعة لمخلوق فی معصية الخالق.﴿

अल्लाह की नाफ़रमानी में मख़्लूक़ की फ़रमांबरदारी नहीं होती, दुनियवी कामों में, मामलात में माँ के साथ बेरुख़ी करना या माँ की हुक्म को तोड़ना इस पर इन्सान को अल्लाह तआला की तरफ़ से सज़ा मिलती है।

दुनियवी कामों में माँ-बाप की इताअत

हदीस पाक में आता कि अगर माँ-बाप किसी दर्जे में बच्चे पर ज़्यादती भी कर रहे हों फिर भी बच्चे को चाहिए कि दुनिया के मामले में उनकी ताबेदारी करे। ज़रा ग़ौर कीजिए की शरीअत ने माँ-बाप का क्या दर्जा बताया

﴿وقضى ربك الا تعبدوا الا اياه.﴾

और हुक्म फ़रमाया तेरे रब ने कि तुम इबादत करो सिर्फ़ अल्लाह की ﴿وبالوالدين احسانا﴾ और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करो। अब यह कितनी मज़े की बात है कि अल्लाह तआला ने जहाँ अपनी इबादत का हुक्म दिया वहीं इसी फ़िक़रे में माँ-बाप की ख़िदमत का भी हुक्म दिया। "वाव आतिफ़ा" के साथ दोनों बातों को मिलाया। इमाम क़ुरतबी रह० फ़रमाते हैं कि समझदार आदमी इस आयत को पढ़कर माँ-बाप की अज़मत को समझ लेता है कि अल्लाह तआला ने जिस जगह जिस फ़िक़रे में, आयत में अपनी इबादत का हुक्म दिया कि किसी की इबादत मत करो सिवा अल्लाह तआला के, साथ ही यह भी कहा तुम ख़िदमत करो अपने माँ-बाप की।

औलाद के लिए क़ुरआनी हिदायत

क़ुरआन मजीद की एक दूसरी आयत में फ़रमाया,

﴿ان اشكرلى ولوالديك.﴾

कि तू मेरा भी शुक्र अदा कर और अपने माँ-बाप का भी, सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने एक ही आयत में अपने शुक्र के साथ माँ-बाप के शुक्र को भी लाज़िम ठहराया फिर आगे फ़रमाया,

﴿اما يبلغن عندك الكبر احدهما او كلاهما فلا تقل لهما اف.﴾

अगर बुढ़ापे की उम्र को पहुँच जाए उनमें से एक या दोनों तो उनको उफ़ भी न कर, क्या मतलब? कि ऐसा लफ़्ज़ न कह जिससे उनको नागवारी हो। कोई बोल अपनी बातचीत में ऐसा इस्तेमाल करना कि जिससे माँ-बाप का दिल दुखे, शरीअत ने उसको नाजाएज़ कहा है। उफ़ से मुराद इससे मुताल्लिक़ कोई भी बोल मिलता जुलता जिससे अपनी नापसन्दगी का इज़्हार हो मसलन माँ ने कोई बात कही, लड़की आगे से मुँह बनाकर कहती है क्या है? अब यह जो क्या है मुँह बनाकर कहा यह नागवारी का बोल है तो यह भी उफ़ में दाख़िल हो जाएगा। हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि अगर इससे भी कोई कम दर्जा होता तो अल्लाह तआला उससे भी मना फ़रमा देते। आगे फ़रमाया ﴿ولا تنهرهما﴾ तुम उन दोनों को मत झिड़को। झिड़कने से मुराद डाँटना। डाँटने से क्या मुराद है? माँ-बाप के साथ सख़्ती के

साथ बात करना। मिसाल के तौर पर बूढ़ी माँ ने कोई बात कही तो आगे से सख़्त लहजे में बेटी कहती है अम्मी तू बात क्यों नहीं समझती? अब यह जो बोल है कि अम्मी तू बात क्यों नहीं समझती, यह अपनी माँ को डाँटना हुआ और शरीअत में यह हराम है फिर तीसरी बात कही ﴿وقل لهما قولاً كريما﴾ और तुम उनसे बात करो मुहब्बत और शफ़क़त के साथ। क़ौले करीम मुफ़स्सरीन के नज़दीक यह कहा जाता है कि जैसे कोई आजिज़ ग़ुलाम सख़्त मिज़ाज आक़ा के सामने बदकर बात करता है पस्त आवाज़ में बात करता है, आजिज़ी के साथ बात करता है उसी तरह अपने माँ-बाप के साथ बातचीत करना इसको क़ौले करीम कहते हैं। यहीं पर बस नहीं बल्कि आगे भी फ़रमाया,

﴿واخفض لهما جناح الذل من الرحمة.﴾

और तू मुहब्बत के साथ अपने आजिज़ी के कन्धे को झुका दे यानी माँ-बाप के सामने इन्सान आजिज़ी के कन्धे को झुका दे। यह दिखावा न हो, ज़ाहिर की कार्यवाही नहीं होनी चाहिए ﴿من الرحمة﴾ दिली मुहब्बत की वजह से हो, माँ-बाप के सामने अपने आपको झुकाना हक़ीक़त में अपने आपको उठाना होता है, इस ज़िल्लत के अन्दर हक़ीक़त में इ़ज़्ज़त छिपी हुई होती है। देखें शैतान को अल्लाह तआला ने फ़रमाया कि आदम अलैहिस्सलाम के सामने झुको वह नहीं झुका तो उसका अन्जाम क्या हुआ इसी तरह अल्लाह तआला ने औलाद को फ़रमाया कि तुम माँ-बाप के सामने आजिज़ी के कन्धों को

झुकाओ जो नहीं झुकेगा तो उसका अन्जाम उसी के साथ होगा फिर आगे फ़रमाया,

﴾وقل رب ارحمهما كما ربينى صغيرا.﴿

और तू यूँ कह कि मेरे रब! इन मेरे माँ-बाप पर रहम फ़रमा जिस तरह उन्होंने छोटे होते हुए बचपन में मेरी तर्बियत की मुझ पर रहम किया, तो इसका मतलब यह कि इतना सब कुछ करके दुआ भी करे कि ऐ अल्लाह! मेरे माँ-बाप की मुश्किलात को आसान भी फ़रमा। मुफ़स्सरीन ने लिखा है कि यह जो दुआ है,

﴾وقل رب ارحمهما كما ربينى صغيرا.﴿

यह ज़िन्दगी में भी करनी चाहिए और माँ-बाप की वफ़ात के बाद भी औलाद को करनी चाहिए।

हुस्ने सुलूक का हुक्म

एक दूसरी आयत में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴾ووصينا الانسان بوالديه احسانا﴿

हम ने वसीयत की इन्सान को कि वह अपने माँ-बाप के साथ अच्छा सुलूक करे ﴾حملته امه كرها﴿ उसकी माँ ने बहुत मुशक़्क़त के साथ उसको उठाया यानी हमल के दौरान और जब बच्चे की पेदाईश का वक़्त था तो उस वक़्त भी उसकी माँ ने बहुत मुशक़्क़त के साथ उसको जन्म दिया,

﴾وحمله وفصاله ثلثون شهرا.﴿

और यह हमल, दूध पिलाई, छुड़वाना यह सब तीस महीने यानी ढाई साल की मुद्दत बनी तो यूँ समझें की जब से कोई माँ हामिला बनती है उस वक़्त से लेकर ढाई साल तक उसको बच्चे की बहुत ज़्यादा ख़बरगीरी करनी पड़ती है, हमल के दौरान तो उसको नौ महीने वैसे ही बीमार की तरह गुज़ारने पड़ते हैं, कभी खाना अच्छा नहीं लगता, कभी उल्टियाँ आती हैं, मतली आती है, कमज़ोर हो जाती है, ब्लड प्रेशर ऊपर नीचे हो जाता है। ये हमल की तकलीफ़ माँ किस तरह उठाती है यह माँ ही जानती है। जब बच्चे की पैदाईश का वक़्त होता है तो वह तो माँ के लिए ज़िन्दगी और मौत का वक़्त होता है। कितनी ऐसी औरतें हैं कि बच्चे की पैदाईश के वक़्त उनकी वफ़ात हो जाती है। इसीलिए हदीस पाक में फ़रमाया कि विलादत के वक़्त जिस औरत की वफ़ात हो अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसको शहीदों की क़तार में खड़ा फ़रमाएंगे। अब इस माँ ने जन्म देने के बाद बच्चे को किसी और के हवाले नहीं कर दिया बल्कि दूध भी खुद पिलाती है और यह मुद्दत कुल हमल से लेकर दूध छुड़ाने तक ढाई साल बनती है। अब इस दौरान माँ चौबीस घंटे की नौकरानी, बच्चे के साथ बंध गई, न कहीं तक़रीब में आ जा सकती है न कहीं अलग होकर रह सकती है। हर वक़्त बच्चा गोद में है या सीने से लगा हुआ है, या बच्चा साथ लेटा हुआ है और माँ उसकी हिफ़ाज़त कर रही है, कभी फीडर बनाकर दे रही है कभी बच्चे को साफ़ कर रही है, कभी कपड़े पहना रही है, न उसको खाने का होश होता है न बेचारी को पीने का होश होता है न सोने

की फ़ुर्सत मिलती है। चुनाँचे छोटा बच्चा तो दिन और रात को नहीं जानता। उसको क्या पता अब दिन है तो मुझे जागना है और अब रात हो गई तो मुझे सोना है। वह बच्चा तो दुनिया में आया तो अभी तो उसकी अक्ल पुख़्ता नहीं है। लिहाज़ा कई बार देखा कि बच्चा सारा सारा दिन सोता रहता है और जहाँ इशा के बाद का वक़्त हुआ तो बच्चा जागता है और फिर चाहता है कि कोई मेरे पास रहे, माँ मेरे साथ बातें करे, मुझे गोद में ले, माँ बेचारी नींद से बेज़ार आँखे बोझल, जिस्म टूटा हुआ है सारा दिन घर के काम भी किए और अब बच्चे की ख़ातिर उसे जागना पड़ा। इस माँ को यह कितनी मुशक़्क़त उठानी पड़ती है। इसका कोई दूसरा आदमी अन्दाज़ा ही नहीं लगा सकता। इसलिए शरीअत ने फ़रमाया,

﴿هل جزاء الاحسان الا الاحسان.﴾

एहसान का बदला एहसान ही होता है। आज जिस माँ ने बच्चे की इस तरह परवरिश की मुशक़्क़तें उठायीं जब यह बूढ़ी हो जाएगी, अब औलाद को चाहिए कि वह भी उनके साथ इसी तरह मुहब्बत का मामला करें।

बच्चे पर माँ के तीन हक़

एक दूसरी आयत में फ़रमाया, ﴿وهـن علـى وهن﴾ कि उस माँ ने बच्चे के हमल का बोझ उठाया थक-थक कर, घर का काम भी कर रही होती है और हामिला भी है, थकावट इतनी, और वैसे भी हमल की मुद्दत के साथ कमज़ोरी बढ़ती चली जाती है इसीलिए तीन बातें शरीअत ने कहीं हैं कि ﴿حملته امه كرها﴾

यह एक वजह कि हमल के दौरान तकलीफ़ उठाई, ﴿ووضعته كرها﴾ और पैदाईश की तक़लीफ़ उठाई, ﴿وحمله وفصاله ثلثون شهرا.﴾ यानी दूध पिलाई की तकलीफ़ उठाई। इन तीनों वजूहात से शरीअत ने बच्चे पर माँ के तीन हक़ ज़्यादा रख दिए चुनाँचे हदीस पाक में आता है। एक नौजवान आया उसने कहा ऐ अल्लाह के महबूब! माँ-बाप में से मैं किसके साथ अच्छा सुलूक करूँ? फ़रमाया माँ के साथ, उसने फिर पूछा फिर फ़रमाया माँ के साथ, उसने फिर पूछा, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फिर फ़रमाया माँ के साथ, फिर उसने चौथी बार पूछा तो फ़रमाया बाप के साथ भी अच्छा सुलूक करो तो तीन बार जो माँ का नाम लिया उसमें हुस्न यह था हिकमत यह थी कि शरीअत ने इसमें तीन मुशक़्क़तों का ज़िक्र किया और इसीलिए उसको तीन मर्तबे दिए।

मुहब्बत की नज़र पर मक़बूल हज का सवाब

शरीअत ने माँ-बाप को इतना रुत्बा दिया है कि हदीस पाक में आता है कि अगर कोई बच्चा अपनी माँ या बाप के चेहरे पर मुहब्बत की एक नज़र डालेगा तो अल्लाह तआला उसको एक मक़बूल हज का सवाब अता फ़रमाएगा। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने पूछा ऐ अल्लह के महबूब अगर कोई बार बार देखे तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जितनी बार देखेगा उतनी बार हज का सवाब अल्लाह तआला उसको अता फ़रमाएंगे।

आज इस ज़माने में माँ-बाप को अव्वल तो अपने रुत्बे का खुद ही नहीं पता और ज़्यादातर औलाद को बिल्कुल पता ही नहीं होता। औलाद तो माँ को अल्लह मियाँ की गाय समझती है। आजकल की नौजवान बच्चियाँ अपने घरों में जिस तरह माँ से ज़िद करती हैं, माँ के साथ डाँट डपट कर लेती हैं। इसलिए कि अव्व्ल तो उनको दीन की तालीम दी नहीं होती और न उनको माँ के दर्जे और रुत्बे का पता ही होता है। इसीलिए इस आजिज़ ने इन तर्बियती मजालिस में सबसे पहले माँ के बारे में बातचीत की ताकि पता चले कि औरत जब माँ होती है तो अल्लाह तआला के यहाँ उसका क्या मक़ाम होता है। औलाद को पता चले कि माँ किस हस्ती को कहते हैं। लिहाज़ा हदीस पाक में आता है क़यामत के क़रीब होने की निशानियों में यह है ﴿ان تلد الامة ربتها﴾ कि माँ अपनी हाकिमा को जनेगी यानी बेटी हाकिमा बनकर रहेगी और माँ उसकी नौकरानी बनकर रहेगी और आजकल तो यह देखने में आता ही है। सुबह उठकर बेटी को स्कूल जाने के लिए बनने संवरने की वजह से फ़ुर्सत नहीं होती लिहाज़ा वह तो आइने के आगे से हटती नहीं और माँ बेचारी उसके लिए नाश्ता बना रही है और नौकरानी की तरह मेज़ सजा रही है और अगर नाश्ता बनाने में ज़रा देर हो जाए तो यह बेटी साहिबा मेज़ पर ज़ोर से हाथ मारती है और माँ को सख़्त सुस्त कहती है और निकल जाती है इतनी बदतमीज़ी करके यह निकल गई और माँ की हालत देखो कि वह बेचारी बैठी कुढ़ रही होती है कि मेरी बेटी भूखी स्कूल चली गई। आजकल के दौर में इस मामले में बहुत ही ज़्यादा कमी

हो रही है। पहली कमी तो यह कि नौजवान बच्चियाँ माँएं तो बन जाती हैं मगर उनको माँ के मक़ाम का पता ही नहीं होता। वे बच्चों की सही दीनी तर्बियत ही नहीं करतीं। बहुत सी लड़कियों को तो टीवी से ड्रामों से नाविलों से फ़ुर्सत ही नहीं होती लिहाज़ा बच्चा अपने आप साथ साथ पल रहा होता है, बच्चे को वे सिखाती ही नहीं। किसी ने कुछ सिखा दिया, किसी ने कुछ सिखा दिया और ज़्यादातर ये देखा कि नौजवान लड़कियों में क्योंकि अंग्रेज़ों की तहज़ीब के असरात बढ़ते जा रहे होते हैं। टीवी प्रोग्रामों और फ़िल्मों की वजह से, इसलिए वे अपने बच्चे को भी अंग्रेज़ों का नमूना बनाना चाहती हैं। ये दुकानों पर जाएंगी तो पैंट औ शर्ट ख़रीदकर लाएंगी ताकि अच्छा ख़ासा अंग्रेज़ नज़र आएं। एक एक चीज़ उसकी अंग्रेज़ों जैसी कोई पूछे तो सही इस माँ से कि तुम बग़ैर तंख़्वाह के क्यों उनकी ऐजेंट बनी हुई हो। जिस परवरदिगार ने तुम्हें बेटा दिया है और जिस नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तुम उम्मती हो और क़यामत के दिन उनकी शफ़ाअत चाहती हो क्या तुम अपने बच्चे को उनके लिबास में नहीं रखना चाहती?

तिफ़्ल से बू आए क्या माँ-बाप के अतवार की
दूध डिब्बे का पिया तालीम है सरकार की

इसलिए नौजवान बच्चियों से गुज़ारिश है कि अपने बेटों को काला अंग्रेज़ न बनाइए, उनकी लिबास फ़िरंगी पहनाना बोलचाल अंग्रेज़ी सिखाना, तौर तरीक़े सिखाना ऐसा न हो कहीं बड़े होकर अल्लाह हश्र में भी उन्हीं के साथ कर दे।

तातारियों से ताज व तख़्त कैसे मिला

सुनिए उम्मते मुस्लिमा की बेटियों ने बहुत अज़ीम कारनामें अंजाम दिए लिहाज़ा इस्लाम की तारीख़ पर नज़र डाली जाए तो पता चलता है। सातवीं सदी हिजरी में तातारी क़ौम इस तरह दुनिया में फैली कि उन्होंने मुसलमानों से ताज व तख़्ता को छीन लिया पूरी दुनिया में कहीं भी मुसलामन के पास ताज व तख़्त नहीं था। उन्होंने लाखों मुसलमानों को ज़िब्ह किया और लाखों मुसलमान लड़कियों को अपने घरों में अपनी बीवी और बाँदी बना लिया। अब यह जो मुसलमान नौजवान बेटियाँ उनके घरों में बीवियाँ बाँदियाँ बनीं उनके दिल में ईमान था और उनके जिस्म पर इस्लाम था अगरचे ये उन काफ़िरों के घरों में थीं, उनके बच्चों की माँएं बन रही थीं, उनके घरों को आबाद कर रही थीं, मजबूर थीं, माज़ूर थीं मगर इस हालत में भी उन्होंने शरीअत को अपने सामने रखा और अपने बच्चों की तर्बियत दीने इस्लाम के मुताबिक़ की। ये बच्चे जब तीस साल के बाद भरपूर जवान हो गए तो उन बच्चों ने इस वक़्त उन माँओं की तालीम की वजह से दीन का इज़्हार करना शुरू किया और यह वह वक़्त था कि तीस साल के बाद पूरी तातारी क़ौम मुसलमान बन गई। कोई बताए तो सही तातारियों से यह ताज व तख़्त कैसे वापस आया?

यह काम दो हस्तियों ने किया। वक़्त के मशाइख़ ने बड़ी उम्र के तातारियों के दिलों पर तवज्जोह डाली और उनको मुतवज्जेह किया और जो नौजवान मुसलमान बेटियाँ थीं जो

उनके घरों में माँएं बन रही थीं उन्होंने साबित कर दिया कि हमारे जिस्म पर तो तुमने कंट्रोल पा लिया मगर हमारे दिलों पर तो अल्लाह का क़ब्ज़ा है हम अल्लाह की बंदियाँ हैं, उसके महबूब की बाँदियाँ हैं, हम तो शरीअत व सुन्नत की ज़िन्दगी को नहीं छोड़ेंगे लिहाज़ा उन्होंने बच्चों की अच्छी तर्बियत की और अल्लाह तआला ने उसकी बरकत से फिर दीन इस्लाम को बुलन्दी दी और मुसलमानों को तख़्त वापस दिया

है आज भी अयाँ तातार के अफ़साने से
पासबां मिल गए काबे को सनम ख़ाने से

अब ज़रा सोचिए कितना फ़र्क़ है कि वे नौजवान बच्चियाँ काफ़िरों के घरों में रहकर भी इस्लाम की पाबन्द रहीं और आज की नौजवान बच्चियाँ मुसलमानों के घरों में रहकर भी काफ़िरों की नुमाइंदगी करती हैं।

माँ के आँसुओं की क़ीमत

माँ को चाहिए कि अपना मर्तबा पहचाने। याद रखें माँ के आँसू दुनिया की सबसे ताक़तवर चीज़ होती है जो काम तलवार से नहीं हो सकता वह काम माँ अपने प्यार से करवा लिया करती है। लिहाज़ा जब माँ की आँखों से आँसू टपकते हैं तो फिर औलाद अपनी ज़िन्दगी के बड़े बड़े फ़ैसले कर दिया करती है। इसलिए माँ को चाहिए कि अपनी मुहब्बतें, अपनी शफ़क़तें इस पर लगाए कि औलाद दीनदार बन जाए और दीने इस्लाम को अपने जिस्म पर सजाए और अल्लाह के बन्दे

बनकर ज़िन्दगी गुज़ारने वाले बन जाएं और अगर माँ ही बिगड़ी हुई हो तो फिर औलाद क्या सँवरेगी। इसकी सबसे बड़ी दलील तो क़ुरआन मजीद में ही मौजूद है।

माँ की सोच का असर औलाद पर

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि हज़रत नूह अलैहिस्सलाम की जो बीवी थी अगरचे किरदार की ठीक थी अच्छी थी मगर सोच में हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से उसको इख़्तिलाफ़ था। वह भी कहती थी कि यहाँ रेत है कैसे सेलाब आएगा? नूह अलैहिस्सलाम ने कहा कि मैं "वही" इलाही की वजह से कह रहा हूँ कि सैलाब आएगा और मैं किश्ती बना रहा हूँ मगर काफ़िर लोग जैसे हँसते थे बातें करते थे तो उनकी बीवी भी उनकी इस बात पर हँसती थी, बातें करती थी चुनाँचे उनकी बीवी की इस बात का असर उनके बेटे पर पड़ा नतीजा यह हुआ कि जब सैलाब आया तो बेटा खड़ा है औ वक़्त का पैग़म्बर उसे कह रहा है,

﴿يا بنى اركب معنا.﴾

ऐ बेटे हमारे साथ किश्ती पर सवार हो जा, मगर वह बेटा कहता है कि नहीं मैं पहाड़ की चोटी पर चला जाऊँगा, ﴿يعصمنى من الماء﴾ अभी बेटे ने यह बात की,

﴿وحال بينهما الموج فكان من المغرقين.﴾

एक लहर उठी और बेटा बाप की आँखों के सामने ग़र्क़ हो

गया। सोचिए वक़्त के नबी की तमन्ना है कि बेटा मेरे पास आ जाए लेकिन बेटा नहीं आता इसलिए कि बेटा पर माँ का असर था तो अगर माँ ज़ेहनी मुताबक़त न रखती हो तो औलाद कभी नेक नहीं बन सकती। इसलिए शरीअत ने कहा तुम अपने घरों में नेक बीवियाँ लाओ और नौजवान आज यही ग़लती करते हैं कि शादी के वक़्त तो हूर परी ढूढते फिरते हैं, मॉडल ढूढते फिरते हैं। उसके अन्दर इन्सानियत नाम की कोई चीज़ नहीं ढूढते नतीजा यह होता है कि जब वह घर में आ जाती है न माँ-बाप के साथ अच्छे ताल्लुक़ात रखने देती है और खुद उसको भी तिगनी का नाच नचा देती है।

यह बात तयशुदा है कि बच्चे बाप की निस्बत माँ का असर ज़्यादा लेते हैं चुनाँचे इसकी दलील हदीस पाक में मिलती है। एक सहाबिया उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा उनकी शादी हुई थी। उनके शौहर का नाम था मालिक, उनको अल्लाह तआला ने एक बेटा दिया जिसका नाम उन्होंने अनस रखा चुनाँचे एक बार यह मालिक उनके शौहर तिजारती सफ़र पर गए हुए थे। उम्मे सुलैम रज़ियल्लाहु अन्हा नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के दर्स में आयीं तो उन्होंने ईमान की अहमियत को समझा और कलिमा पढ़कर ईमान क़ुबूल कर लिया जब मियाँ वापस आए तो मियाँ बीवी एक चारपाई पर बैठे हुए हैं आपस में बातें कर रहे हैं तो बातों बातों में बीवी ने तज़्किरा किया कि मैंने तो कलिमा पढ़ लिया है और मैं मुसलमान बन गयी हूँ। यह सुनते ही शौहर नाराज़ होने लगा तुझे क्या ज़रूरत थी जल्दबाज़ी करने की? तूने मेरे बग़ैर यह

फ़ैसला कैसे कर लिया? उन्होंने जवाब दिया मुझे डर हुआ कि ऐसा न हो कि कुफ़्र की हालत में मेरी मौत आ जाए लिहाज़ा मैंने कलिमा पढ़ने में जल्दी की। शौहर ने नाराज़ होकर कहा ठीक है तुमने पढ़ लिया बहरहाल मैंने अभी कलिमा पढ़ने का इरादा नहीं किया, मैं नहीं पढूंगा। अभी मियाँ-बीवी में तकरार हो रही थी कि छोटा नन्हा अनस अपने माँ-बाप के क़रीब आया, बेटे को देखकर बाप ने उससे कहा कि बेटे तुम्हारी माँ ने तो कलिमा पढ़ लिया लेकिन न मैं पढूंगा न तुम पढ़ना। जब शौहर ने यह कहा तो उम्मे सुलैम ने बेटे को मुतवज्जोह किया और कहने लगीं मैंने भी कलिमा पढ़ लिया है और मेरे बेटे तू भी कलिमा पढ़ ले। माँ ने इतने प्यार मुहब्बत से बात कही कि हदीस पाक में आता है कि बेटे ने माँ का असर क़ुबूल करते हुए कलिमा पढ़ लिया।

माँ बच्चे को बद्दुआ न दे

बाज़ दफ़ा माँ बच्चे की तंगी से तंग होकर बच्चे को बद्दुआ देती है। यह बहुत बड़ी ग़लती है। माँ को नहीं पता कि उसके मुँह से जो बद्दुआ के बोल निकलते हैं हदीस पाक में आता है आसमान के दरवाज़े खुल जाते हैं और फ़रिश्ते इस दुआ को अल्लाह तआला के हुज़ूर में क़बूलियत के लिए पेश कर देती हैं। अब यह बहाना बनाती हैं कि जी हम दिल से तो बद्दुआ नहीं देतीं। अल्लाह की बन्दी जब दिल से बद्दुआ नहीं देती तो ज़बान से क्यों देती हो? इसलिए सब्र तहम्मुल से काम

लेते हुए जितने भी तंग हो, जितने भी परेशान हो, बच्चा बदतमीज़ी कर रहा हो, नादानी कर रहा है, जिहालत कर रहा है, बच्चा आपकी क़द्र नहीं पहचान रहा है, आपको तंग कर रहा है, पर है तो आप ही का बेटा आप ही का ख़ून है आप ही के जिस्म से ही वह पला है, इस बच्चे को अगर आप बद्दुआ देंगी तो फिर इस बच्चे का अंजाम कैसे अच्छा होगा। इसलिए कभी भी बच्चे को बद्दुआ नहीं देनी चाहिए बल्कि तंग होकर भी दुआ ही देनी चाहिए, अल्लाह इसको नेक बना दे, अच्छा कर दे, उसको समझ अता कर दे, तो माँ को चाहिए कि वह अपने बच्चे की अच्छी तर्बियत करके अपने बच्चों को नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का ग़ुलाम बना दे, कल क़यामत के दिन महबूब की शफ़ाअत मिलेगी और उस औरत को मलिका बनाकर जन्नत में दाख़िल कर दिया जाएगा।

औरत की ज़िम्मेदारी

माँएं ही इन्सान को इन्सान बनाती हैं। शरीअत में माँएं इन्सान बनाने की फैक्टरियाँ होती हैं। औरत को अल्लाह तआला ने दुनिया में एक काम दिया है जो उसकी ज़िम्मेदारी है और वह काम यह है कि वह घर में रहकर इंसान तैयार करे बेटा हो या बेटी हो अच्छी तर्बियत करके उसको अल्लाह का नेक बन्दा या बन्दी बनाए तो गोया औरतें, माँएं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की नज़र में इन्सान को इन्सान बनाने की फ़ैक्टरियाँ हैं, कारख़ाने हैं।

माँ का अफ़सोस

हम अगर अपने बड़ों की ज़िन्दगियों को देखें तो जितनी बड़ी बड़ी शख़्सियतें हुई हैं उनके पीछे आपको उनकी माँओं का किरदार नज़र आएगा चुनाँचे इमाम ग़ज़ाली रह० के बारे में आता है कि माँ ने उनको पढ़ने के लिए भेजा। उन्होंने अपने उस्ताद से जो कुछ सुना उसके नोट्स तैयार करके तालीक़ात तैयार की, क़ुदरतन जब इल्म पूरा कर लिया तो वापस आ रहे थे कि डाकुओं ने सामान लूट लिया और उसमें उनके वे नोट्स भी चले गए। जब घर आए तो उन्होंने अपनी वालिदा को हाले सफ़र सुनाया और बताया कि अम्मी! मैंने जो इल्म पढ़ा था वह मेरे नोट्स डाकू लेकर चले गए तो माँ कहती है कि बेटे! मैंने तुम्हें ऐसा इल्म हासिल करने के लिए तो नहीं भेजा था जिसको डाकू लूटकर ले जाएं। बस माँ की इस बात का दिल पर असर हुआ, यह लौटकर वापस आए और उन डाकुओं से उन्होंने अपने नोट्स मांगे, मिन्नत ख़ुशामद की और अपनी माँ की बात सुनाई तो डाकू ने कहा हाँ तुम्हारी माँ ने ठीक कहा, चलो हम तुम्हें यह काग़ज़ लौटा देते हैं। उन्होंने नोट्स वापस कर दिए तो इमाम ग़ज़ाली रह० ने उन्हें ज़बानी याद करना शुरू कर दिया यहाँ तक कि सारे इल्म के हाफ़िज़ बन गए। ऐसी माँएं होती थीं। इनके एक बड़े भाई थे उनका नाम अहमद ग़ज़ाली था। वह बड़े इबादत गुज़ार थे मगर उनका इल्मी मक़ाम वह नहीं था जो छोटे भाई का था, इमाम ग़ज़ाली रह० का था। इमाम ग़ज़ाली रह० शहर की बड़ी मस्जिद में

ख़तीब थे, इमाम थे, बड़े क़ाज़ी थे, उनके बड़े भाई उनके पीछे नमाज़ नहीं पढ़ा करते थे। लोग बड़ी बातें करते थे आप भी कैसे आलिम हैं आपके भाई ही आपके पीछे नमाज़ नहीं पढ़ते। तो एक दिन उन्होंने अपनी माँ से कहा कि अम्मी भाई से कहें कि वह जमात के साथ मस्जिद में नमाज़ पढ़ा करें। अलग घर में न पढ़ा करें। माँ ने बुलाकर कहा तो बड़े भाई ने कहा ठीक है चुनाँचे अगली नमाज़ में वह पहली सफ़ में जाकर खड़े हो गए। इमाम ग़ज़ाली रह० ने नमाज़ पढ़ाई। जब दूसरी रकूअत में गए तो उनके बड़े भाई ने नियत तोड़ दी और जमात में से निकलकर घर आए और आकर अलग अपनी पढ़ ली। अब जब नमाज़ पूरी हुई तो लोगों ने शोर मचा दिया। इमाम ग़ज़ाली रह० के लिए बड़ी परेशानी बनी। ख़ैर टूटे दिल से घर वापस आए, माँ को कहा अम्मी पहले तो भाई नमाज़ पढ़ने नहीं जाता था, आज गया तो बीच में नियत तोड़कर वापस आया, उल्टा मुझे और ज़लील कर दिया तो माँ ने बेटे को बुलाकर कहा कि बेटे तुमने ऐसा क्यों किया तो उसने कहा अम्मी आपने हुक्म दिया था कि मैं इसके पीछे नमाज़ पढ़ूँ, जब तक यह नमाज़ पढ़ते रहे मैं इनके पीछे रहा, जब यह नमाज़ में ही नहीं था तो मैं इसके पीछे क्यों खड़ा होता। इससे इमाम ग़ज़ाली रह० का सिर नदामत से झुक गया। माँ ने पूछा बेटे क्या हुआ? कहने लगे अम्मी भाई ठीक कह रहा है। जब मैंने नमाज़ शुरू की थी तो मेरी सारी की सारी तवज्जोह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ थी, दूसरी रकूअत में खड़ा हुआ तो मैं नमाज़ से पहले मसाइल का मुताला कर रहा था। अचानक

एक मस्अला मेरे ज़ेहन में आ गया और मेरी सोच उस तरफ़ चली गई थोड़ी देर के लिए और यह वक़्त था कि बड़े भाई ने नमाज़ तोड़ दी और वापस आ गया। माँ ने जब यह बात सुनी तो उसने ठंडी साँस ली और कहा अफ़सोस! मेरे दो बच्चे और दोनों में से मेरा कोई भी न बना। जब माँ ने यह कहा कि मेरे दो बच्चे और दोनों में से कोई भी मेरा न बना तो इस पर दोनों बच्चे हैरान हुए और दोनों ने पूछा आप कैसे कह रही हैं कि दोनों में से आपका कोई भी नहीं बना तो माँ ने कहा बेटे इस तरह कि अगला नमाज़ पढ़ाने खड़ा था और नमाज़ के दौरान हैज़ व निफ़ास के मसाईल सोच रहा था और पिछला भी नमाज़ में खड़ा था और नमाज़ की हालत में अपने भाई के दिल पर कश्फ़ की नज़र डालकर देख रहा था न अगले की तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ थी न पिछले की तवज्जोह अल्लाह की तरफ़ थी तुम दोनों में से तो कोई भी मेरा न बना। वह बड़े बड़े तसव्वुफ़ के मसाइल जो वक़्त के मशाइख़ हल किया करते थे उस वक़्त की माँएं अपने बच्चों को यूँ समझा दिया करती थीं।

माँ की नसीहत

शेख़ अब्दुल क़ादिर जिलानी रह० की माँ उनको नसीहत की थी कि सच बोलना और फिर आपने वाक़िआ पढ़ ही लिया होगा या सुना होगा कि उन्होंने सच बोला और अल्लाह तआला ने उनकी वजह से डाकुओं को तौबा करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा दी।

बायज़ीद बुस्तामी रह० भी बचपन में यतीम हो गए थे। उनकी माँ ने उनको पढ़ाया था। क़ारी साहब को कहा था कि उनको वापस न आने देना, घर रहने की आदत पड़ गई तो इल्म हासिल नहीं कर सकेगा। इसलिए क़ारी साहब ने उनको काफ़ी दिन मदरसे में रखा। एक दिन यह छुट्टी लेकर घर आए। माँ वुज़ू कर रही थी तो उन्होंने दरवाज़ा खटखटाया। माँ समझ गई कि मेरा बेटा आ गया मगर उन्होंने सोचा कि अगर मैंने इनको घर में आने दिया तो फिर यह वापस मदरसे नहीं जाएगा तो दरवाज़े के क़रीब आकर पूछने लगीं कौन? उन्होंने कहा बायज़ीद। तो माँ कहने लगी एक मेरा भी बायज़ीद है मैंने उसको अल्लाह के नाम वक़्फ़ कर दिया और वह तो मदरसे में है तुम कौन बायज़ीद हो? जो मेरा दरवाज़ा खटखटा रहे हो। माँ की यह बात सुनकर बच्चा समझ गया कि माँ क्या चाहती है चुनाँचे लौटकर मदरसे वापस आए और पूरा इल्म हासिल किया। जब वहाँ से निकले तो बायज़ीद बुस्तामी बन चुके थे।

ख़्वाजा मुईनुद्दीन अजमेरी रह० ने बंगाल का सफ़र किया। सात लाख हिन्दू मुसलमान हुए। उनके हाथ पर सत्तर लाख मुसलमानों ने बैअत तौबा की। घर आकर ख़ुश हुए। घर आकर अपनी माँ से कहा अम्मी! मुझे अल्लाह तआला ने यह सआदत अता फ़रमाई। माँ ने कहा यह तुम्हारा कमाल नहीं यह मेरा कमाल है। (आपने कहा) अम्मी सही कहा, इसकी तफ़सील भी बता दें। माँ कहा तफ़सील यह है कि जब तुम छोटे बच्चे थे मैंने कभी भी तुम्हें बेवुज़ू दूध नहीं पिलाया, वह उसकी बरकत है कि अल्लाह तआला ने तुम्हारे हाथों पर लाखों

इन्सानों को कलिमा पढ़ने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। उस वक़्त की माँएं तो बावुज़ू दूध पिलाती थीं और आजकल की नौजवान बच्चियाँ बच्चे को गोद में लेकर सीने से लगाकर दूध पिलाती हैं और टीवी के ऊपर ड्रामा देख रही होती हैं, नाच देख रही होती हैं, गाने सुन रही होती हैं, ये बच्चा बड़ा होकर बायज़ीद बुस्तामी कैसे बनेगा? या वक़्त का मुजद्दिद अल्फ़े सानी कैसे बनेगा?

बच्चे का यक़ीन कैसे बना?

ख़्वाजा क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रह० की माँ का भी इसी तरह का वाक़िआ है कि जब छोटे थे तो उनकी माँ ने उनके दिल में अल्लाह की मुहब्बत डालने के लिए एक तरीक़ा अपनाया। जब यह मदरसे से आए, कहा अम्मी! भूख लगी है। माँ ने कहा बेटा हम भी अल्लाह तआला से मांगते हैं वह देता है आप भी उसी से मांगो, कैसे मांगू? बेटे मुसल्ले पर बैठ जाओ, हाथ उठाओ, दुआ मांगो। बच्चे ने दुआ मांगी और फिर पूछा अम्मी अब क्या करूँ? माँ ने कहा कमरे में जाओ। अल्लाह तआला ने कहीं तुम्हारा खाना रख दिया होगा तो माँ ने खाना बनाकर छिपाया हुआ था। बच्चे ने ज़रा देखा तो मिल गया। तो अब बच्चे का यह मामूल बन गया। रोज़ दुआ मांगता और उसे खाना मिल जाता। तो बच्चे के दिल में अल्लाह तआला की मुहब्बत बढ़ने लगी। माँ बड़ी ख़ुश थी कि मेरी तर्बियत अच्छी चल गई। अल्लाह तआला की शान कि

एक दिन माँ को रिश्तेदारी में किसी तक़रीब में जाना पड़ा और वहाँ देर हो गई। जब उसको वक़्त का ख़्याल आया तो बच्चे के आने का वक़्त हो चुका था और वह रोटी पकाकर आई नहीं थी। लिहाज़ा माँ बेचारी ने बुर्क़ा सिर पर रखा और तेज़ तेज़ क़दम उठा रही है, चल रही है, आँखों में आँसू हैं और दिल में फ़रियाद है मेरे मौला मैंने तो बच्चे का यक़ीन बनाने के लिए यह सारा मामला किया था अगर आज मेरे बच्चे को खाना न मिला तो तो कहीं उसका यक़ीन न टूट जाए, मेरी ग़लती को छिपा लेना, मेरी मेहनत को ज़ाए न करना। माँ दुआएं मांगकर घर आई देखा बच्चा सो रहा है, माँ जल्दी से आकर खाना बनाया और फिर बच्चे का गाल का बोसा लिया, उसको उठाकर सीने से लगाया कहा बेटा! आज तो तुम्हें बहुत भूख लगी होगी? उसने कहा नहीं, पूछा क्यों? इसलिए अम्मी मैं जब मदरसे से आया था, आप भी घर में नहीं थीं, मैंने मुसल्ला बिछाया, दुआ मांगी कि अल्लाह मुझे भूख लगी है और आज अम्मी भी घर पर नहीं हैं मुझे खाना दे दे, अम्मी उसके बाद मैं कमरे में गया तो मुझे एक रोटी पड़ी हुई मिल गई। वह मैंने खाई मगर अम्मी जो मज़ा मुझे आज आया उससे पहले वह मज़ा कभी नहीं आया था। लिहाज़ा उनका नाम पड़ गया क़ुतुबुद्दीन बख़्तियार काकी रहमतुल्लाहि अलैहि। यह इतने बड़े शेख़ बने कि वक़्त के मुग़ल बादशाह भी उनके मुरीद बन गए तो देखिए माँएं कैसी थीं जो इन्सान को इन्सान बना देती थीं जिनकी बरकतों से बच्चे औलिया बनते थे। ऐसी माँ के लिए फिर शरीअत ने कुछ हक़ूक़ बताए हैं।

माँ के हक़ूक़ बच्चे पर

चुनाँचे फ़ुक़हा ने लिखा कि माँ के हक़ूक़ में से हैः—

- एक यह कि बच्चा ज़बानी भी और अमली तौर से भी माँ की ताज़ीम करे।
- दूसरा हक़ यह कि शरई कामों में माँ का कहना माने यहाँ तक कि अगर बूढ़ी माँ है तो नफ़ली काम को छोड़कर अपनी माँ की ख़िदमत को तरजीह दे।
- तीसरा हक़ यह है कि माँ को दुख न पहुँचाए चाहे उसकी तरफ़ से कुछ ज़्यादती भी हो।
- चौथा हक़ यह है कि माँ अगर काफ़िरा भी हो तो भी उसकी ज़रूरत का ख़्याल रखें और जान माल से उसकी ख़िदमत करें।
- पाँचवाँ हक़ यह है कि अगर माँ के ज़िम्मे कोई क़र्ज़ा हो तो औलाद को चाहिए कि वह ख़ुद अदा करे।
- छठा हक़ यह है कि माँ से जो मिलने वाली हैं मसलन माँ की बहनें, माँ के रिश्तेदार, माँ की सहेलियाँ उनके साथ भी उसी तरह अदब से पेश आएं जिस तरह माँ के साथ अदब से पेश आता है।
- सातवाँ हक़ यह है कि माँ के मरने के बाद उसके लिए दुआए मग़फ़िरत करें, नफ़ली सदक़ात या इबादतों के ज़रिए अपनी माँ को सवाब पहुँचाता रहे, मग़फ़िरत की

दुआ करता रहे। ये माँ के हक़ूक़ हैं किस लिए? कि इस माँ ने इन्सान को इन्सान बनाया।

माँ से ज़्यादा कुत्ते से प्यार

अगर कुफ़्र के माहौल में चले जाएं तो आपको तो वहाँ यह नेमत नज़र ही नहीं आ सकती। चुनाँचे एक मुल्क की रियासत में माँ ने बेटे पर मुक़द्दमा दायर किया जो अख़बारों की ज़ीनत बना और टीवी पर भी दिखाया गया। माँ ने कहा मेरा शौहर फ़ौत हो गया है और मैं जवान बेटे के साथ घर में रहती हूँ। मेरा यह बेटा कुत्ता पालता है और रोज़ाना तीन घंटे उस कुत्ते के साथ ही गुज़ारता है और मैं माँ हूँ यह मेरे कमरे में पाँच मिनट के लिए भी नहीं आता कि मैं उसका चेहरा देख लूँ लिहाज़ा अदालत मेरे बेटे को हुक्म दे कि यह पाँच मिनट तो मेरे पास आकर बैठा करे आख़िर मैं एक ही घर में रही हूँ। बेटे ने भी वकील किया, माँ ने भी वकील किया और दोनों तरफ़ से मुक़द्दमा चला और आख़िर में मुक़ामी अदातल ने कहा क़ानून के मुताबिक़ बच्चे ने जो कुत्ता पाला है तो कुत्ता लायबलिटी (ज़िम्मी) है उसकी ज़रूरत का ख़्याल बच्चे को रखना पड़ेगा तीन घंटे तो क्या छः घंटे भी लगाने पड़े तो लगाने पड़ेंगे रह गई बात माँ की तो क्योंकि बच्चे की उम्र अठ्ठारह साल से ज़्याद हो चुकी है अब बच्चे पर उसकी कोई ज़िम्मेदारी नहीं है। माँ को तकलीफ़ है तो वह हुकूमत से कहे तो हम उसको बूढ़ों के घर में दाख़िला दे देंगे। अब बताएं

जिस माहौल में माँ का यह मक़ाम है, आप अपने बच्चे को वह लिबास पहनाती हैं, वह ज़बान सिखाती हैं और वह तौर तरीक़े सिखाती हैं। इसलिए हमें चाहिए कि हम अपने बच्चों का उठान इस्लामी तौर तरीक़ों पर करें अपने बच्चों को नेक बनाएं, माँ को तो मुहब्बत होती है और माँ की मुहब्बत अल्फ़ाज़ में बयान ही नहीं हो सकती।

चुनाँचे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की माँ का वाक़िआ है कि जब जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने उनको ख़ुशख़बरी दी कि अल्लाह तआला आपको बेटा अता करेंगे तो उनके लिए हैरानकुन बात थी क्योंकि वह समझती थीं कि बेटा होता है दो तरीक़ों से या इन्सान निकाह करे या इन्सान बुराई यानी ज़िना करे और ये दोनों चीज़ें मेरी ज़िन्दगी में नहीं हैं तो मेरा बेटा कैसे हो सकता है? हज़रत जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बताया कि अल्लाह के लिए बेटा देना आसान है लिहाज़ा वह हामिला हो गईं। अब उनको अपने माँ-बाप की बदनामी का डर हुआ। हमल की मुद्दत तो उन्होंने गुज़ार ली। जब जनने का वक़्त आया तो बहुत परेशान हुईं। उनकी नेकी के चर्चे थे, उनके ख़ानदान की नेकी के तज़्किरे थे और अब उन्हें सारी इज़्ज़त ख़ाक में मिलती नज़र आ रही थी। इतनी परेशान थीं कि कहने लगीं,

﴿يا ليتنى مت قبل هذا وكنت نسيا منسيا﴾

वक़्त की कमी की वजह से मैं इस पूरे वाक़िए की तफ़सील बयान नहीं कर सकता। बस इतना बता देता हूँ कि

जब बेटा हुआ तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उनको इत्तिला दी कि तुमने नहीं बोलना अगर तुम से कोई पूछे भी तो बच्चे की तरफ़ इशारा कर देना, ﴿فاتت به قومها تحمله﴾ चुनाँचे जब वह अपने बच्चे को लेकर अपने घर की तरफ़ वापस आयीं तो लोगों ने देखा कुँवारी जवान लड़की थी और यह बच्चा उठाए हुए आ रही है,

﴿قالوا يا مريم لقد جئت شيئا فريا.﴾

कहने लगे कि ऐ मरियम! तू यह क्या तूफ़ान चीज़ लेकर आई है? यह तो सुबूत है कि तुमने बुराई की है।

﴿فاشارت به اليه.﴾

बीबी मरियम ने बच्चे की तरफ़ इशारा कर दिया और ज़बाने हाल से उनको यह कह दिया कि मेरा सिर न खाओ इसी बच्चे से पूछो मैंने रहमान के लिए रोज़ा रखा है। लिहाज़ा जब उन्होंने बच्चे की तरफ़ इशारा किया तो बच्चे बोलते तो नहीं हैं मगर माँ की अज़मत देखिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस माँ के दिल के ग़म को दूर करने के लिए और पाकदामन माँ के ऊपर इलज़ाम को उतारने के लिए आम मामूल से हटकर यह मामला करते हैं कि इस बच्चे को बुलवाते हैं कि ऐ बच्चे! हालाँकि बच्चे बचपन में बोला नहीं करते मगर तेरी माँ की पाकदामनी का मामला है इलज़ाम लग रहा है लिहाज़ा तुझे बोलना होगा, लिहाजँ हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बच्चे थे,

قال انی عبد الله اتنی الکتاب وجعلنی نبیا وجعلنی مبارکا
این ما کنت واوصانی بالصلوة والزکوة ما دمت حیا وبرا

بوالدتي ولم يجعلني جبارا شقيا ذلك عيسى ابن مريم.

सुब्हानअल्लाह! अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ माँ का बड़ा मक़ाम है।

माँ की मुहब्बत का अजीब वाक़िआ

माँ की मुहब्बत के बारे में एक हक़ीक़ी वाक़िआ है। एक इंजीनियर था। माँ-बाप उसके बुढ़ापे की उम्र में देहात में रहते थे और यह शहर में नौकरी करता था। कार थी, कोठी थी, वक़ार था, अच्छी हालत थी। उसने शहर के अमीर घराने की हूर परी से शादी कर ली। उस लड़की ने कहा मैं तो देहात में नहीं रहूँगी, शहर में रहूँगी। माँ-बाप ने भी इजाज़त दे दी। जब कभी यह माँ-बाप से मिलने जाता तो बीवी उसे परेशान करती कि तुम चले जाते हो पिछले तुम्हारे लिए मर जाते हैं, तुम्हें कोई याद नहीं रहता, तुम बस वहीं के होकर रह जाते हो, इस क़िस्म की जली कटी बातें करती। बच्चा परेशान होता। उसी दौरान उसको सऊदी अरब जाने का मौक़ा मिला तो माँ-बाप से उसने इजाज़त मांगी। उन्होंने कहा बेटे तुम अपना आने वाला वक़्त अच्छा बनाने के लिए चले जाओ। हमारा अल्लाह मालिक है। कभी-कभी तुम ख़त लिखते रहना, आते रहना। उसने वायदे तो सारे कर लिए लेकिन जब सऊदी अरब गया तो वहाँ की नेमतों वाली ज़िन्दगी में जाकर मशग़ूल हो गया। कभी-कभी माँ को पैसे भेज देता मगर तेरह साल तक घर वापस नहीं आता। हर साल हज करता। तबियत में नेकी थी।

एक दिन यह हरम शरीफ़ में खड़ा रो रहा था। किसी ने देखा तो पूछा भाई क्यों रो रहे हो? कहने लगा मैं जब भी हज करता हूँ मैं ख़्वाब में देखता हूँ कोई कहने वाला कहता है तुम्हारा हज क़ुबूल नहीं है। वह भी अल्लह वाले थे पहचान गए। ज़रा हालात पूछे तो उन्होंने पहचान लिया कि इसने माँ-बाप के हुक़ूक़ में कोताही की है लिहाज़ा उसको चाहिए कि उनसे माफ़ी मांगे। जब उन्होंने एहसास दिलाया तो बच्चे को ख़्याल आया चुनाँचे यह वापस आया और तैयारी की और वतन वापास आने लगा तो बीवी ने इधर उधर की बात करनी शुरू कर दी तो उसने शेर की नज़र से देखा और कहा तुम्हारी वजह से मैं इतना अरसे यह हक़ मारता रहा, ख़बरदार! अब अगर तुम ने बात की तो मैं तुम्हें अलग कर दूँगा। अब जब बीवी ने देखा कि शौहर इस मामले में बहुत संजीदा नज़र आता है तो भीगी बिल्ली बनकर एक कोने में बैठ गई। बच्चा घर आया जब अपनी बस्ती में पहुँचा। अब उसके दिल में ख़्याल आ रहा था कि पता नहीं तेरह साल से मेरा कोई राब्ता नहीं, फ़ोन उस ज़माने में देहातों में होते नहीं थे और ख़त कभी-कभी शुरू में लिखे थे और बाद में ख़त का सिलसिला भी नहीं रहा, पता नहीं मेरे माँ-बाप किस हाल में हैं। एक दस बारह साल के बच्चे से उसने पूछा कि फ़लाँ बूढ़े बुढ़िया का क्या हाल है? उसने कहा जी बड़े मियाँ तो गुज़र गए और बुढ़िया है उसको भी फ़ालिज हो गई और वह भी मरने के क़रीब है और उनका एक बेटा है सुना है सऊदी अरब में रहता है। पता नहीं कैसा मनहूस है उसने कभी माँ-बाप का ख़्याल ही

नहीं किया। उस बच्चे को क्या पता कि वह उसी आदमी से बात कर रहा है। अब उसके दिल को और तकलीफ़ हुई। अब यह सोचने लगा कि मैं जाऊँगा, मेरी अम्मी तो मुझ से बात ही नहीं करेगी, मैं अम्मी को पाँव पकड़कर मनाऊँगा, मैं हाथ जोड़कर मनाऊँगा, मैं यूँ करूँगा, मैं यूँ करूँगा। सारी प्लानिंग करके जब यह घर पहुँचा, दरवाज़ा देखा तो कुंडी तो नहीं लगी हुई थी, किवाड़े मिले हुए थे। इसने दरवाज़ा खोला अन्दर गया तो देखा चारपाई पर उसकी माँ लेटी हुई थी। वह बेचारी बुढ़िया हड्डियों का ढांचा बीमारियों की वजह से बिस्तर पर लेटी हुई थी। उसके दिल में ख़्याल आया कि कहीं अम्मी सोई हुई न हो अगर जाग रही होगी तो मैं सलाम करूँगा मैं इन्तिज़ार कर लूँगा। जब क़रीब जाकर देखा तो हैरान हुआ उसकी माँ ने हाथ उठाए हुए दुआएं कर रही है। उसने सोचा अम्मी क्या बोल रही है मैं ज़रा सुनूँ तो सही। माँ को दिखता तो था नहीं चुनाँचे यह क़रीब होता गया क़रीब होकर जब उसने सुना तो उसकी माँ यह दुआएं कर रही थी ऐ अल्लाह! मेरा शौहर तो दुनिया से गुज़र गया, मेरा एक ही बेटा है ऐ अल्लाह! उसे ख़ैरियत के साथ वापस लौटा देना ताकि जब मेरी मौत आए तो मुझे क़ब्र में उतारने वाला कोई महरम मौजूद हो। अन्दाज़ा लगाइए कि बेटा सोच रहा है अम्मी मुझ से बात ही नहीं करेगी और माँ की मुहब्बत का यह हाल है कि उस बुढ़ापे में भी दुआएं मांग रही है अल्लाह मेरे बेटे को ख़ैरियत से वापस लाना ताकि अगर मेरी मौत आ जाए तो मुझे क़ब्र में उतारने वाला मेरा कोई महरम हो।

क़िस्सा एक अज़ीम माँ का

माँ की मुहब्बत देखनी हो तो हज़रत हाजरा साबरा रज़ियल्लाहु अन्हा की ज़िन्दगी को देखिए। सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम उनको और उनके बेटे इस्माईल अलैहिस्सलाम को, ﴿بِوَادٍ غَيْرِ ذِي زَرْعٍ﴾ ऐसी जगह कि जिसमें हरियाली का नाम व निशान नहीं था। वहाँ छोड़ते हैं। एक मशक़ पानी की और कुछ सूखी रोटियाँ हैं। जब वापस आने लगते हैं तो पूछती हैं आप हमें क्यों छोड़कर जा रहे हैं? ख़ामोश। फिर पूछती हैं क्यों छोड़कर जा रहे हो? ख़ामोश। आख़िर नबी अलैहिस्लाम की सोहबत पाई हुई थीं, हमराज़ थीं। पहचान गयीं। तीसरी बार सवाल करती हैं क्या आप हमें अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहे हैं? तो उन्होंने इशारे में फ़रमाया हाँ, मैं अल्लाह के हुक्म से छोड़कर जा रहा हूँ। तो हाजरा साबरा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं अच्छा फिर अल्लाह हमें ज़ाए नहीं करेगा। उस अल्लाह की बन्दी का ईमान देखिए। अल्लाह ऐसा ईमान और यक़ीन हमारी बीवियों को भी अता फ़रमाए, हमारी बेटियों को भी अता फ़रमाए, ऐसा अल्लाह ने उनको यक़ीन दिया, अब शौहर तो चले गए कोई और इन्सान वहाँ क़रीब में नहीं, पानी का नाम व निशान क़रीब में नहीं। जिधर देखो ख़ुश्क पहाड़ इन्सान का मुँह चिढ़ाते नज़र आते हैं, एक मशक पानी की कहाँ तक चलती, कुछ रोटी के टुकड़े कितने दिन चलते। एक वक़्त आया पानी ख़त्म हो गया, बच्चे को पानी की तलब थी वह रोने लगा। अब माँ तड़प उठी। उसे यह

महसूस होने लगा कि न मेरे सीने में इतना दूध है कि बच्चे को पिला सकूँ न पानी कि बच्चे के मुँह में डाल सकूँ। मेरे बेटे का क्या बनेगा? अब इस माँ ने परेशान होकर बच्चे को चट्टान के साए में सुला दिया, लिटा दिया और खुद पानी की तलाश में निकल पड़ी। अब अल्लाह की इस बन्दी की एक नज़र बेटे पर है और एक नज़र पानी पर है बल्कि यूँ कहना चाहिए कि दिल बेटे की तरफ़ है और आँख पानी की तरफ़ है। लिहाज़ा यह पहाड़ी के एक सिरे से भागती हैं और दूसरे सिरे तक चली जाती हैं, कभी इधर जाती हैं कभी उधर जाती हैं। इस परेशान हाल माँ की मुहब्बत की कैफ़ियत मेरे मौला को इतनी पसन्द आई कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने उस माँ के इस अमल की यादगार क़यामत तक जारी फ़रमा दी और इस अमल को आने वालों के लिए हज की सई का अमल बना दिया। अन्दाज़ा तो लगाइए कि माँ का अल्लाह के यहाँ क्या मक़ाम है। लिहाज़ा जब बच्चे के क़रीब आयीं तो उसने देखा कि अल्लाह तआला ने उस मासूम बच्चे के पाँव के ज़रिए उन चट्टानों के अन्दर से पानी निकाल दिया। बीबी हाजरा साबरा आती हैं और उसके चारों तरफ़ पत्थर रखकर उसे "ज़मजम्" कहती हैं यानी ठहर जा, ठहर जा। पानी आ गया और यह पानी क्या था मीठा पानी था बल्कि यूँ कहो कि अमृत था। उस पत्थरीली ज़मीन में जहाँ कोई आबादी का नाम व निशान नहीं था, खेती नहीं थी, अल्लाह तआला ने एक बेक़रार माँ के सदक़े उस मासूम बच्चे के पाँव से यह पानी का चश्मा जारी किया। इसलिए कुछ अर्से के बाद क़बीला बनू जरहम आबाद हो गया

और इस तरह अल्लाह तआला ने बैतुल्लाह के क़रीब इन्सानों की आबादी का इन्तिज़ाम फ़रमा दिया। लिहाज़ा इसको एक शायर ने यूँ कहा है–

पैग़म्बर ने दुआ के बाद उस वादी से मुँह मोड़ा
जनाब हाजरा को और बच्चे को यहीं छोड़ा

जनाब हाजरा बैठी थीं इस वादी-ए-वहशत में
संभाले तिफ़्ल आलीशान को आग़ोशे मुहब्बत में

वहाँ सहरा ही सहरा था चट्टानें ही चट्टानें थीं
जनाब हाजरा या एक बच्चा दो ही जानें थीं

न दाना था न पानी था भरोसा फ़क़त रब पर
पड़ी जब धूप की गर्मी तो जां आने लगी लब पर

ज़मीं का ज़र्रा ज़र्रा मेहर की सूरत चमकता था
बहुत बेताब थी माँ गोद में बच्चा बिलकता था

सफ़ा मरवा पे हर सू वह तलाशे आब में दौड़ी
बुलन्द व पस्त पर फ़िकरे मय-ए-नायाब में दौड़ी

कभी इस सिम्त जाती थी कभी उस सिम्त जाती थी
ख़्याल आता था बच्चे का तो फ़ौरन लौट आती थी

न ढूँढा न कुछ आसार पानी के नज़र आए
जिधर उठी नज़र झुलसे हुए टीले नज़र आए

क़यामत की घड़ी थी पड़ गए पाँव में छाले
चली जाती थी आँखें आब में बच्चे में दिल डाले

सुनी आवाज़ नन्हे के बिलकने की और रोने की
तड़प उठी कि साअत आ गई जान खोने की

यह वब बेक़रारी का वक़्त था कि जब अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त

ने हाजरा साबरा की बेक़रारी के सदक़े में आबे ज़मज़म अता किया। आज पूरी दुनिया के मुसलमान इस पानी से बकरतें भी हासिल करते हैं, इसको पीते हैं। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया जिस नियत से पिया जाए अल्लाह तआला उस बन्दे की दुआ क़ुबूल फ़रमा लेते हैं। बच्चे की बेक़रारी पर रहमते इलाही को जोश आ गया लिहाज़ा उसकी एड़ियों की रगड़ से अल्लाह तआला ने आबे शीरीं अता फ़रमा दिया।

जो बच्चे या बच्चियाँ या जो औरतें अपनी ज़िन्दगी में अपनी माँ की ख़िदमत नहीं कर सकें हदीस पाक में आता है कि उनको चाहिए कि उनकी वफ़ात के बाद उनके लिए ईसाले सवाब करें और उनकी जो रिश्तदार औरतें थीं ख़ाला थीं, सहेलियाँ थीं उनके साथ अच्छा सुलूक रखें तो अल्लाह तआला इस कमी को पूरा फ़रमा देंगे। बहरहाल जिन्होंने ख़िदमत न की और उनकी माँ चली गई यह एक ऐसी हसरत है जो कभी भी पूरी नहीं हो सकती। इसलिए अल्लामा इक़बाल रह० ने अपनी वालिदा की याद में कहा—

किसको होगा आह! वतन में मेरा अब इन्तिज़ार
कौन मेरा ख़त न आने पर रहेगा बेक़रार

ख़ाक मरक़द पर तेरी लेकर यह फ़रियाद आऊँगा
अब दुआएं नीम शब में किसको मैं याद आऊँगा

उम्र भर तेरी मुहब्बत मेरी ख़िदमत गर रही
मैं तेरी ख़िदमत के क़ाबिल हुआ तो चल बसी

आसमां तेरी लहद पर शबनम अफ़शानी करे
सब्ज़-ए-रस्ता इस घर की निगहबानी करे

हमें चाहिए कि अपनी माँ की ख़िदमत करके हम उनकी दुआएं लें। माँ की दुआ अल्लाह के यहाँ बड़ा दर्जा रखती है।

एक अहम वाक़िआ

एक वाक़िआ सुनाकर यह आजिज़ अपनी बात को पूरी करता है। ज़रा ध्यान के साथ सुनिए। एक सिपाही था फ़ौज का जिसका नाम सुबकतगीन था। घर में बहुत तंगी थी। उसके पास एक घोड़ा था जिस पर सवार होकर यह कभी-कभी शिकार खेलने चला जाता था। शिकार मिल जाता तो घर में कुछ खाना पीना हो जाता था न मिलता तो घर में फ़ाक़ा होता। एक बार यह शिकार की नियत से जा रहा था कि इसने एक हिरनी को देखा जिसके साथ छोटा सा बच्चा था। उसने अपना घोड़ा जो उसके पीछे दौड़ाया तो हिरनी तो भाग गई मगर छोटा बच्चा न भाग सका तो इसने उस बच्चे को पकड़ लिया। जब माँ ने दखा कि मेरे बच्चे को इस आदमी ने पकड़ लिया तो भागती हुई हिरनी फिर वापस आ गई और उसने इसके क़रीब आकर अपनी इस बेक़रारी का इज़्हार करना शुरू कर दिया। आसमान की तरफ़ मुँह उठाती थी और दर्द भरी आवाज़ निकालती थी। यह रहम दिल इन्सान था समझ गया कि यह माँ बेक़रार है, मेरा बेटा इस शिकारी के हाथ में चला गया। लिहाज़ा इसने उसकी बेक़रारी को देखते हुए उसके बच्चे को छोड़ दिया। वह माँ अपने बच्चे को लेकर चली गई। यह वापस आया, रात को सोया तो ख़्वाब में उसको नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का दीदार नसीब हुआ। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि तूने एक माँ की बेक़रारी को देखकर उस पर रहम खाया। यह तेरा अमल अल्लाह को इतना पसन्द आया कि अल्लाह तआला ने तुझे दुनिया का ताज अता फ़रमाएंगे और तूने उसका बेटा वापस किया उसके बदले अल्लाह तआला तुझे बेटा अता फ़रमाएंगे लिहाज़ा उसके यहाँ बेटा हुआ जिसका नाम सुल्तान महमूद ग़ज़नवी रखा गया जो पूरे हिन्दुस्तान का फ़ातेह बना और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इस ग़रीब बन्दे को एक बादशाह का बाप बनने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाई। अगर जानवर जैसी माँ की बेक़रारी का ख़्याल रखा जाए तो इन्सान को दुनिया की शाही मिलती है। ये नौजवान बच्चे और बच्चियाँ यह बात कान खोलकर सुन लें अगर ये अपनी माँ की बेक़रानी के दौरान उसके साथ मुहब्बत का मामला करेंगे तो अल्लाह तआला उन्हें दुनिया और दीन की बादशाही अता फ़रमाएंग अल्लाह तआला हमारी कोताहियों से दरगुज़र फ़रमाएं और हमेंनेकों कारी और परहेज़गारी की ज़िन्दगी नसीब फ़रमाएं।

एक वली की वालिदा की वफ़ात

एक वली के बारे में आता है कि उनकी माँ की वफ़ात हुई तो अल्लाह तआला ने इल्हाम फ़रमाया ऐ मेरे प्यारे बन्दे! जिसकी दुआएं तेरी हिफ़ाज़त किया करती थीं वह हस्ती हमारे पास आ गई अब ज़रा संभलकर क़दम उठाना। खुश नसीब हैं

वे लोग जिनके माँ-बाप ज़िन्दा हैं। वे ख़िदमत करके अल्लाह के यहाँ अपना मर्तबा बढ़ा लें और जिनके माँ-बाप फ़ौत हो चुके हैं रमज़ानुल मुबारक के इस महीने में उनकी तरफ़ से सदक़ात करें, ख़ैरात करें और उनके लिए दुआएं करें। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त आगे उनके दर्जात बुलन्द फ़रमाएं और हमें इस शरीअत के मस्अले में सही समझ नसीब फ़रमाए।

﴿و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

लब पे ज़िक्रुअल्लाह की तकरार हो
दिल में हर दम हक़ का इस्तेहज़ार हो
इस पे तू कर ले अगर हासिल दवाम
फिर तो बस कुछ दिन में बेड़ा पार हो

मज्ज़बू रहमतुल्लाहि अलैहि

○ ○ ○

मुनाजात

हवा व हिंस वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

बदल दे दिल की दुनिया बदल दे
ख़ुदाया फ़ज़ल फ़रमा दिल बदल दे

गुनाहगारी में कब तक उम्र काटूँ
बदल दे मेरा रास्ता दिल बदल दे

सुनूँ मैं नाम तेरा धड़कनों में
मज़ा आ जाए मौला दिल बदल दे

करूँ क़ुर्बान अपनी सारी ख़ुशियाँ
तू अपना ग़म अता कर दिल बदल दे

हटा लूँ आँख अपनी मा सिवा से
जियूँ मैं तेरी ख़ातिर दिल बदल दे

सहल फ़रमा मुसलसल याद अपनी
ख़ुदाया रहम फ़रमा दिल बदल दे

पड़ा हूँ तेरे दर पर दिल शकिस्ता
रहूँ क्यों दिल शकिस्ता दिल बदल दे

तेरा हो जाऊँ इतनी आरज़ू है
बस इतनी है तमन्ना दिल बदल दे

मेरी फ़रियाद सुन ले मेरे मौला
बना ले अपना बन्दा दिल बदल दे

हवा व हिंस वाला दिल बदल दे
मेरा ग़फ़लत में डूबा दिल बदल दे

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

﴿شهر رمضان الذیٓ انزل فيه القران.﴾

रमज़ान का महीना

रहमत का ख़ज़ीना

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब

दामत बरकातुहुम (नक़्शबंदी, मुजद्दी)

विषय सूची

इक़्तिबास

एक और नुक्ता समझ लीजिए कि शरीअत ने हुक्म दिया कि अगर कोई मज़दूर किसी के घर मज़दूरी करे और वक़्त ख़त्म हो तो इस आदमी को चाहिए कि वह इसका पसीना सूखने से पहले उसको मज़दूरी दे दे। जब शरीअत हम कमज़ोरों को यह हुक्म देती है कि हम मज़दूर का पसीना सूखने से पहले उसको मज़दूरी दे दें तो क्या ख़्याल है जिस बन्दे ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए सारा दिन मज़दूरी की, रोज़ा रखा भूखा रहा, प्यासा रहा, तकलीफ़ उठाई अब जब उसकी इफ़्तारी का वक़्त होगा तो क्या अल्लाह तआला उसको फ़ौरन मज़दूरी नहीं अता फ़रमाएगा? फ़र्क़ इतना है कि जिस मज़दूर को हम घर में लाते हैं काम करने के लिए हम उसके साथ ही मज़दूरी तय कर लेते हैं कि भाई इतना तुम्हें देंगे। तुम हमारा यह काम कर दो तो काम करने के बाद हम उसको मज़दूरी अदा कर देते हैं लेकिन जो बड़े होते हैं वह तय नहीं करते वह कहते हैं जितना कहोगे उतना दे देंगे हमारा यह काम करो। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भी यही मामला फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे महबूब की उम्मत के राज़ेदारो! तुम मेरे लिए रोज़ा रखो और जब इफ़्तारी का वक़्त होगा तो मैं तुम्हें मुँह मांगा ईनाम दूँगा।

इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद मद्द ज़िल्लुहू

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد الله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى. امابعد!

اعوذبالله من الشيطان الرجيم.
بسم الله الرحمٰن الرحيم.

﴿شهر رمضان الذیٓ انزل فيه القران.﴾

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين
والحمد لله رب العلمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

माहे रमज़ानुल मुबारक की अहमियत

रमज़ानुल मुबारक का महीना अल्लाह तआला की रहमतों का ख़ज़ाना है जितनी भी आसमानी किताबें नाज़िल हुईं सब की सब रमज़ानुल मुबारक में नाज़िल हुयीं। तौरात, ज़बूर, इन्जील, क़ुरआन मजीद या जो सहीफ़े नाज़िल हुए। इसलिए यह महीना अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़ास रहमतों का महीना है। उसकी रहमतों की इन्तिहा देखिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम जो नबी रहमत हैं वह भी इस महीने के आने का इन्तिज़ार फ़रमाते थे। इसलिए एक दुआ नबी सल्लल्लाहु

अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाईः

﴿اللهم بارك لنا فى رجب و شعبان وبلغنا الى رمضان.﴾

अल्लाह हमें रजब और शाबान में बरकत अता फ़रमा दे और ख़ैरियत से हमें रमज़ानुल मुबारक तक पहुँचा।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब जिस महीने तक पहुँचे की तमन्ना फ़रमाते हों उस महीने के बरकत का अन्दाज़ा तो इसी से हो सकता है।

सलफ़ सालिहीन के यहाँ रमज़ानुल मुबारक का इन्तिज़ार

किताबों में लिखा है कि सलफ़ सालिहीन छः छः महीने रमज़ानुल मुबारक के आने की दुआएं मांगा करते थे और जब रमज़ानुल मुबारक ख़ूब इबादत के साथ गुज़ार लेते तो बक़िया पाँच छः महीने अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त से उसकी क़बूलियत की दुआएं मांगते थे। इस हद तक रमज़ानुल मुबारक का उनके यहाँ एहतिमाम था कि जब किसी बन्दे की बुज़ुर्गी की बात करनी होती तो कहते फ़लाँ बन्दे ने ज़िन्दगी के इतने रमज़ान गुज़ारे, उसके इतने दर्जात बुलन्द हैं।

मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० का क़ौल

इमाम रब्बानी मुजद्दिद अलफ़ेसानी रह० फ़रमाते हैं कि कश्फ़ की नज़र से औलिया अल्लाह ने अल्लाह की रहमतों की

बारिश को जब उतरते हुए देखा तो पता चला कि साल के बाक़ी महीनों की रहमत दरिया की तरह है जबकि रमज़ानुल मुबारक की रहमतें समुंद्र की तरह हैं कि जिनका कोई किनारा नज़र नहीं आता। इसलिए वह अपने एक ख़त में फ़रमाते हैं कि रमज़ानुल मुबारक का महीना इन्सान के बाक़ी साल के लिए नमूने की तरह है जिस आदमी ने रमज़ानुल मुबारक जिस तरीक़े से गुज़ारा अल्लाह तआला उसको बाक़ी साल उस तरह गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देते हैं। मिसाल के तौर पर अगर कोई औरत चाहे कि मैं तहज्जुद गुज़ार बन जाऊँ तो उसको चाहिए कि रमज़ानुल मुबारक में तहज्जुद की पाबन्दी करे जो चाहे कि मैं आँखों की हिफ़ाज़त करूँ तो उसको चाहिए कि रमज़ानुल मुबारक में अपनी आँखों की हिफ़ाज़त कर ले। जो चाहे कि मैं अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर लूँ, रमज़ानुल मुबारक में अपनी ज़बान की हिफ़ाज़त कर ले। जो अमल रमज़ानुल मुबारक में जमाव के साथ वह करेगी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपनी रहमत, क़ुदरत, मशीयत से बाक़ी साल उस अमल को करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा देंगे।

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु का फ़रमान

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया करते थे कि अगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को अज़ाब देना होता तो न रमज़ानुल मुबारक अता फ़रमाते न सूरहः इख़्लास अता फ़रमाते। ये दो ऐसी नेमतें हैं—

1. एक रमज़ानुल मुबारक,

2. और क़ुरआन मजीद में "क़ुल हुवल्लाहु अहद" वाली सूरहः।

फ़रमाते थे कि इन दो चीज़ों के बाद यूँ मालूम होता है कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की उम्मत को अज़ाब देने का इरादा नहीं रखते।

रमज़ानुल मुबारक ग़मख़्वारी का महीना

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक बार शाबान के आख़िरी दिन में सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को ख़ुत्बा दिया और उनको बताया कि तुम्हारे ऊपर एक रहमत का महीना आ रहा है जिसके रोज़े को अल्लाह तआला ने फ़र्ज़ फ़रमाया और रात की इबादत को अल्लाह तआला ने अपने क़रीब होने का ज़रिया बनाया। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह ﴿شهر المواسات﴾ है ग़मख़्वारी का महीना, हमदर्दी का महीना यानी इन्सान रोज़ा रखता है, भूखा प्यासा रहता है तो नेमतों की क़द्र आती है, दिल में एहसास होता है कि जो लोग आम साल के दौरान भूखे प्यासे रहते हैं उन पर क्या गुज़रती है जिनके बच्चे भूखे प्यासे रहते हैं उनके माँ-बाप पर क्या गुज़रती है तो इन्सान के दिल में दूसरों का एहसास पैदा होता है। वह दूसरों के साथ हमदर्दी करता है और यही इन्सानियत है। लिहाज़ा हदीस पाक का मफ़हूम है कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला एक बन्दे से फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे बन्दे मैं

भूखा था तूने मुझे खाना नहीं खिलाया, प्यासा था तूने मुझे पानी नहीं पिलाया, मैं बीमार था तूने मेरी बीमारपुर्सी नहीं की। तो वह बन्दा बड़ा हैरान होकर पूछेगा ऐ परवरदिगार! आप इन सारी चीज़ों से बुलन्द व बाला हैं, पाक हैं बरी हैं यह कैसे हो सकता है? अल्लाह तआला जवाब में फ़रमाएंगे कि ऐ मेरे बन्दे! फ़लाँ मौक़े पर तेरा एक पड़ौसी भूखा था, प्यासा था अगर तू उसे खिला पिला देता तो ऐसा होता जैसे तूने मुझे खिलाया पिलाया हो, अगर तूने उसकी बीमारपुर्सी की होती तो ऐसे ही होता जैसे तूने मेरी बीमारपुर्सी की। उस वक़्त इंसान की आँख खुलेगी कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के यहाँ एक दूसरे के साथ उलफ़त व मुहब्बत की ज़िन्दगी गुज़ारने का क्या मक़ाम है तो यह महीना ग़मख़्वारी का महीना है। अब ज़रा सोचिए कि जिस महीने का नाम ही ग़मख़्वारी का महीना हो अगर इस महीने में अल्लाह की कोई बन्दी अल्लाह के सामने अपने ग़म ब्यान करे, अपनी परेशानियाँ ब्यान करे, अपने दुखड़े सुनाए, अपनी मुश्किलों की तफ़्सील अकेले में बैठकर दुआ में बताए तो परवदिगारे आलम उसकी ग़मख़्वारी क्यों नहीं फ़रमाएं? जिस महीने का नाम ही ग़मख़्वारी का महीना है तो मालूम हुआ कि हम ग़मज़दों के लिए ख़ुशी की बात है। हम अपने ग़म तहज्जुद में तन्हाइयों में अपने परवरदिगार के सामने दामन फैलाकर ब्यान करें वह परवरदिगार जिसने बन्दों को ग़मख़्वारी का हुक्म दिया वह परवरदिगार ख़ुद भी अपने बन्दों की ग़मख़्वारी फ़रमाएगा।

नेकी के मंहगे दाम

इस महीने की नेकी का अज्र ज़्यादा कर दिया जाता है चुनाँचे अगर कोई आदमी एक फ़र्ज़ पर अमल करे तो सत्तर फ़र्ज़ पर अमल करने के बराबर सवाब मिलता है, नफ़ली अमल करे तो ग़ैर रमज़ान में गोया फ़र्ज़ पर अमल करने के बराबर सवाब मिलता है।

शैतानों की गिरफ़्तारी

हदीस पाक में आता है कि अल्लाह तआला जिब्राईल अलैहिस्सलाम को भेजते हैं फ़रमाते हैं कि जाओ और सरकश शैतानों को क़ैद कर दो ताकि वह मेरे महबूब की उम्मत के रोज़ेदारों के रोज़ों को ख़राब न कर सके। तो गोया बड़े-बड़े शैतान तो क़ैद हो गए और उनको समुंद्र में बाँध कर फेंक दिया जाता है, अब अगर नेकी के रास्ते में कोई रुकावट है तो या तो छोटे छोट शैतान हैं जिनको शतूंगड़े कहते हैं या तो फिर हमारा अपना नफ़्स है। इसलिए रमज़ानुल मुबारक में आमतौर से इन्सान को नेकी करने में आसानी होती है अगर किसी को रुकावट पेश आए तो वह समझ ले कि मेरा अपना नफ़्स इतना ख़राब हो चुका है कि अब शैतान के बहकाने की ज़रूरत ही नहीं रही। मेरा नफ़स ही मुझे सुस्त कर देता है नेकी से महरूम कर देता है।

नेकियों का मौसम

यह भी हदीस पाक में आया है कि जो बन्दा रोज़ा रखता है तो अल्लाह तआला की मख़्लूक़ उसके लिए मग़फ़िरत की दुआएं करती है। फ़रिश्ते भी दुआ करते हैं,

﴿وليستغفرون للذين امنوا.﴾

क़ुरआन मजीद में है कि फ़रिश्ते भी ईमान वालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं और हवा में परिन्दे, पानी में मछलियाँ और बिलों में चींटियाँ रोज़ेदार की मग़फ़िरत की दुआ करती हैं। कहते हैं कि ज़बाने ख़ल्क़ को नक़्क़ारा-ए-खुदा समझो तो जब परवरदिगार ने इतनी मख़्लूक़ को दुआ मांगने पर लगा दिया तो यह इस बात का सुबूत है कि अल्लाह तआला मोमिन की मग़फ़िरत करना चाहते हैं। मोमिन को चाहिए कि इस महीने की ख़ूब क़द्र करें जैसे सीज़न होता है। बहार का सीज़न हर तरफ़ फल और फूल नज़र आते हैं, खुशबूएं होती हैं, हरे भरे लहलहाते हुए पेड़ नज़र आते हैं इसी तरह रमज़ानुल मुबारक नेकियों का सीज़न होता है। इन्सान जितनी नेकियाँ कमाना चाहे आसान है बल्कि अलग अलग जगहों पर देखा गया है कि चीज़ों की सेल लगती है। सेल लगने का मतलब यह होता है कि क़ीमती चीज़ें कम दाम पर मिल जाती हैं अगर क़ुरआन व ह़दीस को पढ़ा जाए तो यूँ महसूस होता है कि अल्लाह तआला रमज़ानुल मुबारक में जन्नत की सेल लगा देते हैं तो आजकल जन्नत बहुत सस्ती मिलती है बस हाथ उठाकर मांगने की बात

है कि अल्लाह तआला के सामने आजज़ी दिखाने की बात है और परवरदिगार तो जन्नत देने के लिए आमादा हैं। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया कि जब रमज़ान की पहली रात होती है तो अल्लाह तआला हुक्म देते हैं कि ऐ रिज़वान! जन्नत के दरवाज़ों को खोल दे, अब सोचिए! कि जब अल्लाह तआला ने जन्नत के दरवाज़ों को खोल दिया और हदीस पाक में यह भी आता है कि पूरे साल जन्नत को रमज़ानुल मुबारक के लिए सजाया जाता है, ख़ूबसूरत बनाया जाता है फिर रमज़ानुल मुबारक की पहली रात को उसके दरवाज़े उम्मत के गुनाहगारों के लिए खोल दिए जाते हैं तो मालूम हुआ कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त चाहते हैं कि मेरे बन्दे रमज़ानुल मुबारक के रोज़े रखें, नेकी करें, तरावीह पढ़ें और इबादतों को करके जन्नत के मुस्तहिक़ बन जाएं।

रोज़े के दर्जात

रोज़े के दर्जात होते हैं:—

1. एक तो यह है कि इन्सान सारे दिन न खाए न पिए न मिलाप करे तो इस इन्सान ने भी रोज़ा रख लिया। इसको आम आदमी का रोज़ा कहते हैं।
2. दूसरा इससे बुलन्द दर्जे का रोज़ा है। इसको ख़ास आदमी का रोज़ा कहते हैं। ख़ास लोगों का रोज़ा, औलिया का रोज़ा। ये लोग वे होते हैं जो खाने पीने और मियाँ-बीवी वाले काम से तो परहेज़ करते ही हैं इससे बढ़कर अपने

जिस्म के आज़ा को गुनाहों से बचाते हैं। आँख का परहेज़, ज़बान का परहेज़, कान का परहेज़ सारे आज़ा को गुनाहों से बचाते हैं लिहाज़ा उनका रोज़ा और बुलन्द दर्जे का होता है।

3. और एक तीसरा दर्जा है जिसको कहते हैं ख़ासुल-ख़ास का रोज़ा ये वे लोग होते हैं जो खाने, पीने, मिलाप से भी परहेज़ करते हैं जिस्म के आज़ा को गुनाहों से भी बचाते हैं और सारे दिन में एक लम्हा भी अपने दिल को अल्लाह से ग़ाफ़िल नहीं होने देते। यह सबसे आला दर्जे का रोज़ा है।

मर्तबे में फ़र्क़

देखिए एक मन वज़न लोहे का, चाँदी का या सोने का तो वज़न तो एक जैसा लेकिन एक मन लोहे की क़ीमत और है, चाँदी की क़ीमत और है और सोने की क़ीमत कुछ और है तो रोज़ा तो सब ने दिन में एक ही रखा मगर जिसने आम लोगों का रोज़ा रखा उसको लोहे का भाव देंगे, जिसने सालिहीन का रोज़ा रखा उसको चाँदी का भाव देंगे और जिसने आरिफ़ीन का रोज़ा रखा उसको सोने का भाव अता फ़रमाएंगे और अगर रोज़ा रखकर गुनाह करते रहे टीवी स्क्रीन के तमाशे देखे, गाने सुने, ग़ीबतें कीं, लोगों के दिल दुखाए तो फिर ऐसे रोज़े पर मिट्टी का भावा भी नहीं लगाएंगे। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया कि कुछ लोग ऐसे होते हैं कि जिनको रोज़ा

रखने के बाद भूखा और प्यासा रहने के अलावा कुछ हाथ नहीं आता तो हमें चाहिए कि हम अपने रोज़े को कामिल दर्जे का रोज़ा बनाएं।

तीन बातों का एहतिमाम

उम्मुल मोमिनीन फ़रमाती हैं कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ानुल मुबारक में तीन बातों का बहुत एहतिमाम फ़रमाते थे किः

1. एक तो यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम रमज़ानुल मुबारक में दुआओं में बहुत ज़्यादा रोया धोया करते थे,
2. और दूसरी बात यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इबादत में बहुत ज़्यादा मुजाहिदा फ़रमाते थे,
3. और तीसरी बात यह कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम अल्लाह तआला के रास्ते में माल इस तरह ख़र्च करते थे कि जिस तरह भागने वाला कोई घोड़ा होता है।

इफ़्तार के वक़्त दुआ

रमज़ानुल मुबारक में क़ुबूलियते दुआ के बड़े मौक़े हैं। एक बात पर ज़रा ग़ौर कीजिएगा सारी औरतें ज़रा तवज्जोह से बात सुनें। एक नुक्ता समझाना मक़सूद है अगर मान लो अल्लाह को कोई बड़ा कामिल वली, कोई बड़ा आरिफ़, कोई बड़ा नेक मुत्तक़ी, पाकबाज़ इन्सान आपको बताए कि मुझे कश्फ़ में या ख़्वाब में यह बताया गया है कि इस वक़्त जो दुआ मांगोगे वह क़ुबूल होगी, यह दुआ के क़ुबूल होने का वक़्त है तो यह बात

सुनकर आप कैसी दुआ मांगेगी? ख़ूब रो रोकर, बड़ी तवज्जोह के साथ, बड़ी आह व ज़ारी के साथ अपने लिए भी मांगेगी, धर बार के लिए भी मांगेंगी, रिश्तेदारों के लिए भी मांगेंगी, आम मुसलमानों के लिए भी, सब के लिए अच्छी अच्छी दुआएं मांगेंगी और आप कहेंगी मैं बड़ी खुशनसीब हूँ कि मुझे पता चल गया कि इस वक़्त की दुआएं क़ुबूल होती हैं तो जितनी दुआएं मांग सकती हूँ मांग लूँ। अगर वली के कहने पर आपकी यह कैफ़ियत है तो वलियों के सरदार, फ़रिश्तों के सरदार, अंबिया और रसूलों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इर्शाद फ़रमाया कि रोज़दार आदमी इफ़्तिार के वक़्त जो दुआ करता हे अल्लाह तआला उसकी दुआओं को क़ुबूल फ़रमता है तो अब हमें इफ़्तार के वक़्त कितने एहतिमाम से दुआ मांगनी चाहिए। हमारी ज़बानें झूठी ही सही मगर महबूब ने सच्ची ज़बान से फ़रमा दिया। अल्लाह रब्बुलइज्ज़त उनकी सच्ची ज़बान की लाज रखते हुए हम गुनाहगारों की झूठी ज़बानों से निकली हुई दुआओं को क़ुबूल फ़रमा लेंगे अगर किसी आदमी का बेटा वायदा कर ले तो बाप उसकी लाज रखता है तो क्या ख़्याल है कि अगर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमा दिया तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त अपने महबूब की लाज नहीं रखेंगे?

एक नुक्ता

एक और नुक्ता समझ लीजिए कि शरीअत ने हुक्म दिया

कि अगर कोई मज़दूर किसी के घर में मज़दूरी करे और वक़्त ख़त्म हो तो इस बन्दे को चाहिए कि उसका पसीना सूखने से पहले उसकी मज़दूरी दे दे। जब शरीअत हम कमज़ोरों को यह हुक्म देती है कि हम मज़दूर का पसीना सूखने से पहले मज़दूरी दे दें तो क्या ख़्याल है कि जिस बन्दे ने अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के लिए सारा दिन मज़दूरी की रोज़ा रखा भूखा प्यासा रहा तकलीफ़ उठाई अब जब उसकी इफ़्तारी का वक़्त होगा तो क्या अल्लाह तआला उसको फ़ौरन मज़दूरी नहीं अता फ़रमाएंगे। फ़र्क़ इतना है कि जिस मज़दूर को हम घर लाते हैं काम करने के लिए हम उसके साथ मज़दूरी तय कर लेते हैं कि भाई तुम्हें इतना देंगे तुम हमारा यह काम कर दो तो काम करने के बाद हम उसको मज़दूरी अदा कर देते हैं लेकिन जो बड़े लोग होते हैं वह तय नहीं करते। वे कहते हैं कि जितना कहोगे दे देंगे। तुम हमारा यह काम कर दो। इसीलिए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने भी यह मामला फ़रमाया कि ऐ मेरे प्यारे महबूब की उम्मत के रोज़दारो! तुमने मेरे लिए रोज़ा रखो और जब इफ़्तारी का वक़्त होगा तो मैं तुम्हें मुँह मांगा ईनाम दूँगा जो तुम मांगोगे। मैं परवरदिगार तुम्हारे मांगने के मुताबिक़ तुम्हें अता करूँगा। मांगना तुम्हारा काम है और तुम्हारे दामन को भर देना मेरा काम है। इसलिए फ़रमाया कि रोज़ेदार की दुआ क़ुबूल होती है।

अच्छा आपसे अगर कोई पूछे कि आपकी कोई परेशानी हो तो हम ख़त्म कर देते हैं। तो आप सबसे पहले बताएंगी जी

मेरी यह भी परेशानी है, यह भी परेशानी है। एक फ़िहरिस्त गिनवाएंगी और फिर यह कहेंगी कि अगर मेरी ये सब परेशानियाँ दूर हो जाएं तो मुझे सुख का साँस नसीब हो जाए। अल्लाह तआला जब इफ़्तारी के वक़्त मुँह मांगा ईनाम देना चाहते हैं तो आप अपने सब ग़म, सब दुख, सब परेशानियाँ अपने रब को सुनाया करें। अपने रब के सामने पेश किया करें। सारा साल जो तुम दूसरों के सामने दुखड़े रोती हो, शौहर अच्छा सुलूक नहीं करता, मुझ पर तवज्जोह नहीं देता, शौहर की नज़र बाहर किसी तरफ़ है अगर ये सारे दुखड़े आपने सारा साल मख़्लूक़ से करने हैं तो मख़्लूक़ तो सारी मोहताज है जिसके सामने आप दुख कह रही हैं। वे ख़ुद दुखों वाली होती हैं तो इसका क्या फ़ायदा? अब आपने दुख उस परवरदिगार के सामने कहें जो सबके दुखों को दूर करने वाला और सबकी मुश्किलों और परेशानियों को हल करने वाला है लिहाज़ा इफ़्तारी के वक़्त में आप अपनी ज़िन्दगी और आख़िरत की बेहतरी के लिए ख़ूब दिल खोलकर दुआ मांगा करें। एक आदमी ने कहा या अल्लाह! मुझे आप इतने मिलयन डॉलर अता कर दीजिए। तो सुनने वाले ने कहा इतने ज़्यादा? तो उसने कहा भाई आप से नहीं मांगे परवरदिगार से मांगे हैं तो जो दुआ आप मांगेगी तो किसी बन्दे से नहीं मांग रही हैं, बन्दों के परवरदिगार से मांग रही हैं। जिस ज़ात ने कहा कि मेरे हाथ में ज़मीन व आसमान के ख़ज़ाने हैं। अब जब उससे मांगेगी तो महसूस करेंगी कि मांगने वाली का दामन छोटा है और परवरदिगार का देना उससे बहुत ज़्यादा है,

टूटे रिश्ते वह जोड़ देता है
बात रब पे छोड़ देता है
उसके जूद व करम का क्या कहना
लाख मांगो करोड़ देता है

रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ

वह परवरदिगार तो हमारे मांगने से बढ़कर हमें अता फ़रमाता है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि रोज़ेदार के लिए दो ख़ुशियाँ होती हैं,

1. ﴾فرحة عند الافطار﴿ एक तो जब रोज़ा इफ़्तार करता है उस वक़्त उसको ख़ुशी होती है कि उसकी दुआएं क़ुबूल होती हैं।
2. और एक फ़रमाया ﴾فرحة عند لقاء الرحمن.﴿ कि जब क़यामत के दिन रोज़ादार आदमी अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से मिलेगा तो उस वक़्त भी उसको ख़ुशी नसीब होगी। क्यों ख़ुशी नसीब होगी? इसलिए कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त उसका इस्तिक़बाल फ़रमाएंगे चुनाँचे हदीस पाक में है कि कुछ लोगा ऐसे होंगे कि क़यामत के दिन अल्लाह तआला के सामने खड़े होंगे। ये अल्लाह को देखकर मुस्कुराएंगे और परवरदिगार उनको देखकर मुस्कुराएंगे और उनका इस्तिक़बाल फ़रमाएंगे।

हाज़िरी की दो हैसियतें

ज़रा ग़ौर करें! कि रिश्तेदारों में कुछ ऐसे भी घर होते हैं

कि वे औरतें आपके साथ अच्छा सुलूक नहीं करतीं। अब शौहर कहें कि चलो उसके घर चलना है तो आप इन्कार करेंगी आप कहेंगी कि मुझे तो वहाँ नहीं जाना, वे औरतें तो मुझ से कलाम करके राज़ी नहीं, मेरे लिए तो वहाँ पाँच मिनट गुज़ारने मुसीबत हैं, मैं तो उस घर में जाना नहीं चाहती तो जिस घर की औरतें आपका इस्तिक़बाल नहीं करतीं, आपसे अच्छा सुलूक नहीं करतीं, आप वहाँ जाना ही पसन्द नहीं करतीं।

और कहीं आपका बहुत क़रीब का ताल्लुक़ होता है मुहब्बत का ताल्लुक़ होता है, शौहर जाना नहीं चाहता आप मजबूर करके ले जाएंगी कि अजी फ़लाँ घरवालों ने दावत दी है तो मुझे तो वहाँ ज़रूर जाना है, उन्होंने बुलाया है तो जो आपसे मुहब्बत का सुलूक करती हैं आप ज़िद करके वहाँ पहुँचती हैं और जो नहीं करतीं कहने के बावजूद आप वहाँ नहीं जातीं अगर दुनिया में यह मामला है तो सोचिए! कि क़यामत के दिन दो हाल में इन्सान अल्लाह के सामने पेश होगा एक तो नेकोकार बनकर जो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का दीदार करेगा और परवरदिगार ख़ुशी से उसका इस्तिक़बाल करेंगे और दूसरा गुनाहगार की शक्ल में और गुनाहगार कैसे अल्लाह के सामने पेश होगा? क़ुरआन मजीद में फ़रमा दिया,

﴿ولو ترى اذ المجرمون ناكسوا رءوسهم عند ربهم﴾

अगर तुम देख सकते कि काफ़िर क़यामत के दिन किस हाल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने पेश होंगे उनके सिर झुके होंगे और रब के सामने अपनी निगाह उठा भी नहीं

सकेंगे। अब हम सोचें कि हम दोनों हालतों में से किस हाल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने पेश होना चाहते हैं। तो दिल से जवाब आएगा कि नहीं हम तो अल्लाह तआला से उसके महबूब बन्दे, मक़बूल बन्दे, उसके दोस्त बनकर पेश होना चाहते हैं तो उसका आसान तरीक़ा यह है कि हम अपने रोज़ों को सही अन्दाज़, आदाब से रखें और इफ़्तारी के वक़्त दुआ करें कि ऐ अल्लाह! हमें यहाँ पर मग़फ़िरत अता करके ख़ुशी अता फ़रमा और जब क़यामत के दिन आपके सामने हाज़िरी हो तो ऐ अल्लाह! वहाँ भी मुस्कुराकर हमें अपनी तजल्ली नसीब फ़रमा।

जन्नतियों के लिए ख़ास दाख़िला

चुनाँचे कितने लोग होंगे कि जो क़यामत के दिन अल्लाह तआला का दीदार करेंगे,

﴿وجوه يومئذ ناضرة الى ربها.﴾

कैसे ख़ुश नसीब लोग होंगे उनको क़यामत के दिल अल्लाह का दीदार नसीब होगा। इसलिए हदीस पाक में आता है कि जन्नत के दरवाज़ों में से एक दरवाज़ा है जिसका नाम बाब-उर-रैयान है यह ख़ास दरवाज़ा है। इससे वे लोग दाख़िल होंगे जो आदाब और एहतिमाम के साथ अपने रोज़ों को पूरा किया करते थे। इसकी मिसाल यूँ समझिए जैसे आप किसी मुल्क में उतरते हैं तो वहाँ इमीग्रेशन वाले होते हैं। उन्होंने

लाईनें बनाई हुई होती हैं तो बैरूने मुल्क के लोगों के लिए अलाहिदा लाईनें और जो मुल्की लोग होते हैं, वतनी होते हैं उनके लिए अलाहिदा लाईनें होती हैं तो वतनी लोग बहुत जल्दी निकले चले जाते हैं न उनको काग़ज़ भरने पड़ते हैं न और कोई सिलसिला न कोई और पूछताछ होती है न वीज़ा की चैकिंग बस वे पासपोर्ट दिखाते हैं ठप्पा लगता है और चले जाते हैं। तेज़ लाईन होती है। इसी तरह अल्लह तआला क़यामत के दिन जन्नत के आठ दरवाज़ों में एक दरवाज़ा रोज़ेदारों के लिए बनाएंगे जिन्होंने एहतिमाम से रोज़े रखे हों। इधर से उन्हें फास्ट ट्रेक के ऊपर जन्नत में ले जाएंगे तो दो वक़्त बहुत ख़ास हैं एक इफ़्तारी का वक़्त और दूसरा वक़्त है जिसको सहरी का वक़्त कहते हैं।

लैल-तुल-क़द्र

एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बनी इसराईल के हालात बताए और फ़रमाया कि बनी इसराईल के चार लोग ऐसे थे जिन्होंने अस्सी साल अल्लाह तआला की ऐसी इबादत की कि एक लम्हा के लिए भी नाफ़रमानी नहीं की। सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने जब यह सुना तो उनके दिल में हसरत हुई कि काश! हमें भी इतनी लम्बी ज़िन्दगी इबादत गुज़ारी के लिए मिल जाती तो उनकी इस कैफ़ियत को देखकर करीम रब ने सूरहः क़द्र नाज़िल फ़रमाई जिसमें फ़रमाया कि इसमें एक ऐसी रात है जिसको लैल-तुल-क़द्र कहते हैं,

﴿ليلة القدر خير من الف شهر.﴾

इसकी इबादत हज़ार महीनों की इवादत से भी ज़्यादा बेहतर है। अब हज़ार महीनों के अगर साल बनाएं तो तिरासी साल से कुछ ऊपर बनता है। इसका मतलब यह हुआ कि जो बन्दा रमज़ानुल-मुबारक की इस रात में इबादत का सवाब पा लेगा उसने ऐसा है जैसे तिरासी साल की इबादत का सवाब पा लिया और आजकल हमारे ज़माने के लोगों की उम्रें साठ और सत्तर साल के बीच हैं अस्सी तक लोग मुश्किल से ही पहुँचते हैं तो गोया एक रात की इबादत एक तरफ़ और सारी ज़िन्दगी की इबादत एक तरफ़ तो जब इतना ख़ास मामला है तो हर मोमिन के दिल में यह तड़प होनी चाहिए कि हमें लैल-तुल-क़द्र में इबादत करने का सवाब नसीब हो जाए।

यह कौन सी रात है इसके बारे में हमें मालूम नहीं मगर हदीस पाक में कुछ इशारे कर दिए गए हैं:—

1. एक तो यह फ़रमाया गया कि यह साल की कोई भी रात हो सकती है।
2. दूसरा फ़रमाया कि रमज़ानुल-मुबारक की रात होती है।
3. तीसरी जगह फ़रमाया की रमज़ानुल-मुबारक की आख़िरी दस दिनों में से कोई रात होती है।
4. और एक हदीस पाक में फ़रमाया गया कि आख़िरी दस दिनों में से जो ताक़ अदद हैं, ताक़ रातें होती हैं उनमें से कोई रात होती है यानी 21, 23, 25, 27, 29 में से कोई एक रात होती है। ज़्यादा रिवायतें इसी की हैं। अब इस

अशरे में लैल-तुल-क़द्र तलाश करने के लिए एतिकाफ़ में बैठते हैं। इसलिए मौतकिफ़ हर रात में जागें ताकि उनको लैल-तुल-क़द्र में क़याम का सवाब नसीब हो जाए।

अब यह रात कौन सी है? इस बारे में हम कुछ नहीं कह सकते हाँ बुज़ुर्गों ने कहा कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त को सात का अदद पसन्द है। आसमान भी सात हैं, ज़मीनें भी सात हैं, इन्सान के आज़ा जिनसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के सामने सज्दा रेज़ होता है वे भी सात हैं और सात तरह का जिस्मानी रिज़्क़ दिया,

فانبتنا فيها حبا و عنبا وقضبا و زيتونا ونخلا و
حدآئق غلبا وفاكهة وابا.

तो इस आयत में सात क़िस्म का जिस्मानी रिज़्क़ अता कर दिया तो इससे मुफ़स्सिरीन ने कहा कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने इन्सान को रूहानी रिज़्क़ की रात भी वही अता की होगी जो सात वाली है लिहाज़ा 27 की रात ज़्यादा ग़ालिब है कि वह लैल-तुल-क़द्र की रात हो। कुछ मुफ़स्सिरीन ने इसमें एक नुक्ता और दे दिया, फ़रमाते हैं कि देखो लैल-तुल-क़द्र का जो लफ़्ज़ है उसमें नौ हरफ़ हैं और अल्लाह तआला ने इसको तीन बार सूरत में फ़रमाया,

انا انزلنه في ليلة القدر وما ادرك ليلة القدر ليلة
القدر خير من الف شهر.

तो नौ हरफ़ हैं और तीन बार लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ तो मालूम होता है कि सत्ताइसवीं रात लैल-तुल-क़द्र की रात होती है।

रब का सलाम उम्मत के नाम

इस रात में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से मोमिनों के लिए बड़ी बरकतें और रहमतें होती हैं। लिहाज़ा मोमिनीन पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम उतरते हैं "सलामती का पैग़ाम" जिब्राईल अलैहिस्सलाम फ़रिश्तों को लेकर आते हैं और इस रात में इबादत करने वालों से हाथ मिलाते हैं किताबों में लिखा है कि इस रात में कोई आदमी वैसे ही जाग रहा होता है तो आम फ़रिश्ते उससे हाथ मिलाते हैं और अगर कोई आदमी अल्लाह का ज़िक्र कर रहा होता है जागते हुए तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम उससे हाथ मिलाते हैं और अगर कोई आदमी नमाज़ पढ़ रहा होता है तो उस नमाज़ पढ़ने वाले पर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त सलाम भेजते हैं। यह इस उम्मत की खुशनसीबी है कि इस उम्मत पर अल्लाह तआला की तरफ़ से सलाम भेजे गए हाँलाकि यह बड़े दर्जे के नबियों को नेमतें नसीब हुई।

देखिए नूह अलैहिस्सलाम के बारे में अल्लाह तआला फ़रमाते हैं,

﴿سلام علىٰ نوح فى العٰلمين.﴾

इब्राहीम अलैहिस्सलाम के बारे में फ़रमाया,

﴿سلام علىٰ ابراهيم.﴾

इसी तरह हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम पर हज़रत ईसा अलैहिस्साम पर सलाम भेजे गए। खुद ईसा अलैहिस्सलाम ने

फ़रमाया,

﴿والسلام علىّ يوم ولدت ويوم اموت ويوم ابعث حيا.﴾

. अल्लाह तआला ने अंबिया अलैहिमुस्सलाम पर सलाम भेजे तो यह वे नेमतें थीं जो अल्लाह तआला ने अपने अंबिया अलैहिमुस्सलाम को अता फ़रमायीं लेकिन नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत के लिए इतनी दुआएं कीं, इतनी दुआएं कीं, इतनी दुआएं कीं कि परवरदिगार इन दुआओं से इतना ख़ुश हुए कि इन दुआओं को बहाना बनाकर, सबब बनाकर इस गुनाहगार उम्मत पर भी सलाम भेजा,

﴿تنزل الملآئكة والروح فيها باذن ربهم من كل امر سلام.﴾

देखिए इस गुनाहगार उम्मत पर भी अल्लाह तआला की तरफ़ से सलामती नाज़िल हो रही है लिहाज़ा पता चला कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इस उम्मत को नेमतें अता फ़रमाना चाहते हैं और इस उम्मत का इकराम करना चाहते हैं चुनाँचे इस उम्मत को भी अल्लाह तआला ने वही मक़ाम दिया जो पहले वक़्त के बड़े दर्जे के नबियों को मिला करता था।

जिब्राईल अलैहिस्सलाम की शान

हदीस पाक में आता है कि जब वह रात आती है तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम चार झंडे लेकर उतरते हैं और एक झंडा जिसको "लिवा-ए-रहमत" कहते हैं रहमत का झंडा उसको बैतुल्लाह पर लगाते हैं। एक को "लिवा-ए-मग़फ़िरत" कहते हैं

मग़फ़िरत का झंडा उसको मस्जिदे नबवी पर लगा देते हैं और एक "लिवा-ए-करामत" है उसको बैतुलमुक़द्दस पर लगा देते हैं और एक "लिवा-ए-अहमद" है इसको ज़मीन व आसमान के बीच लगाते हैं फिर इस उम्मत मुहम्मदिया के वे लोग जो रात में बैठे हुए दुआएं करते हैं ये फ़रिश्ते उनकी दुआओं पर आमीन कहते हैं अब सोचिए अल्लाह तआला के फ़रिश्ते अगर हमारी दुआओं पर आमीन कहते हैं तो फिर क्या बात है—

अब भी न हो क़ुबूल तो क़िस्मत की बात है
आमीन कह रहे हैं वह मेरी दुआ के साथ

लैल-तुल-क़द्र कैसे पाएं?

तो हमारी दुआओं पर अल्लाह के फ़रिश्ते आमीन कहेंगे इससे बढ़कर हमारे लिए और क्या बड़ी नेमत हो सकती है। इसलिए हदीस पाक में आता है कि जो लोग इन दिनों रोज़ा रखेंगे। जब अल्लाह के यहाँ क़यामत के दिन जाएंगे बाब-उर-रैयान में से उन्हें गुज़ारा जाएगा तो फ़रिश्तें उन्हें कहेंगे,

﴿كلوا واشربوا هنيئا بما سلفتم فى الايام الخالية.﴾

तो मुफ़स्सिरीन ने एक तफ़सीर यह भी लिखी है कि ये वे रोज़ेदार होंगे जो अल्लाह के लिए भूखे रहे, प्यासे रहे तो परवरदिगार उन्हें खुशख़बरियाँ देंगे। फ़रिश्ते कहेंगे ओ अल्लाह के लिए भूखा रहने वालों! प्यासा रहने वालों! आओ जन्नत की नेमतें तुम्हारे लिए हैं,

﴿كلوا واشربوا هنيئا بما سلفتم فى الايام الخالية.﴾

अब दिल तो चाहता है हर बन्दे का कि मुझे लैल-तुल-क़द्र में इबादत की सआदत नसीब हो लेकिन वे नेमतें कब नाज़िल होती हैं, रहमतें कब नाज़िल होती हैं? जिब्राईल अलैहिस्सलाम कब नाज़िल होते हैं? हमें इस बात का पता नहीं तो मुमकिन है हम ग्यारह बजे इबादत करें और यह रहमतों का नज़ूल उसके बाद हो, मुमकिन है कि हम बारह बजे तक इबादत करें और यह रहमतों का नज़ूल उसके बाद शुरू हो, ﴿تنزل الملائكة﴾ मलाईका नाज़िल होते हैं। अब कब नाज़िल होते हैं इसका तो हमें इल्म नहीं लेकिन क़ुरआन मजीद से एक इशारा मिलता है और वह बड़े मज़े का है। परवरदिगारे आलम ने एक तरफ़ तो बात छिपाई है लेकिन दूसरी तरफ़ बन्दों को राह दिखाई जैसे माँ बच्चे को कुछ देना चाहती है तो वह छिपा देती है मगर कुछ इशारे भी देती है। दिल में होता है कि मैंने उसको महरूम तो नहीं करना, थोड़ी सी कोशिश करेगा तो उसे मिल जाएगा तो एक तरफ़ छिपाई भी जाती है और दूसरी तरफ़ इशारे से बताई भी जाती है। यूँ ही लगता है कि अल्लाह तआला बन्दों पर इतना मेहरबान है कि लैल-तुल-क़द्र को एक तरफ़ तो छिपा भी दिया कि तुम उसको ढूंढने के लिए एतिकाफ़ में बैठो, रातों को जागो मगर दूसरी तरफ़ इशारा भी कर गए यह खुला राज़ है परवरदिगार का कहने को तो राज़ है मगर इस राज़ को एक तरफ़ से बता भी गए वह क्या? कि परवरदिगार ने यह बता दिया कि जब वे फ़रिश्ते नाज़िल होते हैं तो,

﴿هي حتى مطلع الفجر.﴾

वे बरकतें तुलू फ़ज्र तक नाज़िल होती रहती हैं। अब हमें यह तो नहीं पता कि वह किस रात में किस वक़्त शुरू होती है लेकिन इतना पता है जो रात भी होगी और जब भी होगी उसमें वे रहमतें नाज़िल होंगी तो वे रहतमें सहरी के वक़्त ख़त्म होने तक जारी रहेंगी। अब हमें यहाँ से एक नुक्ता मिल गया कि अगर हम रोज़ा रखने के लिए एक घंटा पहले उठ जाएं वक़्त ख़त्म होने से और इसमें हम आधा घंटा अपने रोज़ा रखने में लगा लें, खाने पीने में इस्तेमाल कर लें और जो आख़िरी आधा घंटा है अगर उसको हम अल्लाह तआला की इबादत में ज़िक्र में, तिलावात में और दुआएं मांगने में लगा दें तो जब भी वह रमज़ान की रात होगी चूँकि उसकी रहमतें फ़ज्र तुलू तक रहती हैं तो गोया इस आख़िरी घंटे में रमज़ान के तीस दिन में जो इबादत यह औरत कर लेगी उसको लैल-तुल-क़द्र मुबारका की उन ख़ास रहमतों के वक़्त में इबादत का अज्र नसीब हो जाएगा।

वक़्त कैसे ज़ाए होता है?

आमतौर पर आप देखेंगे कि शैतान और नफ़्स इतने मक्कार होते हैं कि बस ऐसी नींद तारी कर देते हैं कि औरतें कहेंगी कि जी उठिए, उठिए, अच्छा उठता हूँ, अच्छा उठता हूँ और कोई आधा घंटा पहले उठता है, कोई पन्द्रह मिनट पहले उठेगा, कोई दस मिनट पहले उठेगा और पानी का घूंट पीकर

कहेगा कि चलो रोज़ा रख लिया, नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हमारे और अहले किताब के रोज़ों में फ़र्क़ यह है कि वह बग़ैर सहरी के रोज़ा रखते थे और हम लोग सहरी के साथ रोज़ा रखते हैं तो एक तो वह खाना वैसे ही इबादत का खाना और दूसरे इस वक़्त अल्लाह तआला की ख़ास रहमतें नाज़िल होती हैं लिहाज़ा औरतों को चाहिए कि इफ़्तारी के वक़्त की भी क़द्र करें और सहरी का जो आधा घंटा है उसकी भी क़द्र करें जिनको भी खाना खाना है उनका खाना एक घंटा पहले दस्तरख़्वान पर रख दीजिए अब उसको जब खाना हो खाए आप अपने आख़िरी घंटा में मुसल्ले पर आ जाएं।

लैल-तुल-क़द्र में क्या मांगे

हज़रत आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी! अगर लैल-तुल-क़द्र को पाऊँ तो क्या दुआ मांगू? देखिए उम्मत पर कितना बड़ा एहसान नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तुम लैल-तुल-क़द्र को पाओ तो यह दुआ मांगाना,

﴿اللهم انك عفو تحب العفو فاعف عنى﴾

ऐ अल्लाह! आप तो माफ़ करने वाले हैं, माफ़ करने को पसन्द फ़रमाते हैं मुझे माफ़ फ़रमा दीजिए तो यह इतनी प्यारी दुआ है कि आप इसको इस वक़्त में कई मर्तबा मांग सकती हैं तो इस आख़िरी वक़्त में कुछ इस्तिग़फ़ार की तस्बीह पढ़ ली, दरूद पाक पढ़ लिया, कलिमा पढ़ लिया,

﴿لا اله الا انت سبحانك انى كنت من الظالمين.﴾

चन्द बार पढ़ लें और ये दुआएं मांग ली और उसके बाद वैसे बैठकर अल्लाह से दुआएं मांग लीं तो यह रोज़ाना का आधा घंटा पन्द्रह मिनट इसको आप मुसल्ले पर गुज़ार देंगी इसकी आप आदत बना लें। यक़ीनन आपको लैला-तुल-क़द्र का अज्र नसीब होगा। हमें हर साल रमज़ानुल-मुबारक के बाद कितने मर्द व औरत के ख़त मिलते हैं, वे लिखते हैं कि हम ने रमज़ानुल-मुबारक में इफ़्तारी के वक़्त दुआओं का एहतिमाम किया, सहरी के वक़्त दुआओं का एहतिमाम किया। हमारी ये दुआएं क़ुबूल हुईं। अल्लाह ने मेरी यह मुराद पूरी कर दी। बीसियों ख़त मिलते हैं जिनमें सैंकड़ों वाक़िआत होते हैं कि हमने इन वक़्तों में दुआएं मांगी और परवरदिगार ने क़ुबूल की।

लिहाज़ा अब हमारे बाज़ वे एहबाब जो ताल्लुक़ वाले हैं उनका यह हाल हो चुका है कि वे सारे साल रमज़ान का इन्तिज़ार करते हैं। उनके दिल में पक्का यक़ीन बैठ चुका है कि हम रमज़ानुल-मुबारक के इस महीने में सहरी-इफ़्तारी के वक़्त दुआओं का एहतिमाम करेंगे तो परवरदिगार हमारी दुआओं को ज़रूर क़ुबूल फ़रमाएंगे इसलिए आपको एक अच्छी बात राज़ की बतला दी अगर आप इस वक़्त अपने रब से दुआएं मांगेगी तो इन्शाअल्लाह तआला आपको आज के बाद न तावीज़ों की ज़रूरत पड़ेगी न किसी सिफ़ली अमल की ज़रूरत पड़ेगी। बस अपने रब को दिल का हाल सुना दीजिए,

रब्बे करीम दिलों की कैफ़ियत को बदल देंगे और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त आपकी मुरादें अता फ़रमा देंगे, रमज़ानुल-मुबारक के इन दिनों में अपने रब से ख़ूब मांगो।

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से क्या मांगे?

इस बात को ज़ेहन में रखना कि आप जिस हाल में भी हैं उस हाल में अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की मोहताज हैं। यह नुक्ता भी खोलना ज़रूरी है। एक औरत ने ख़त में लिखा कि जी मैं दुआ तो मांगती नहीं सिर्फ़ नमाज़ पढ़ती हूँ, पूछा क्यों? कहने लगी कि अल्लाह तआला का सब कुछ दिया हुआ है। अब वह बेचारी समझती थी कि मुहब्बत करने वाला शौहर मिल गया, अच्छा घर मिल गया, कारोबार मिल गया और अपनी मन मर्ज़ी की औलाद भी मिल गई। सब नेमतें मिल गयीं, अब मुझे और चीज़ें मांगने की क्या ज़रूरत है? तो यह ग़लत फ़हमी है। इन्सान ज़िन्दगी के किसी हाल में भी हो वह अल्लाह का मोहताज है कैसे? या तो वह आदमी अल्लाह तआला की नेकी वाली ज़िन्दगी गुज़ार रहा होगा लिहाज़ा अगर कोई आदमी नेकी परहेज़गारी की ज़िन्दगी रहा है तो वह इस बात का मोहताज है कि अपने इन अमलों की क़ुबूलियत की दुआ अल्लाह तआला से मांगे। भाई नेक अमल कर लेने से तो काम नहीं हो जाता जब तक कि वह अल्लाह के यहाँ क़ुबूल न हो तो जो आदमी नेकी के हाल में है वह अल्लाह तआला से उस नेकी की क़ुबूलियत की दुआ मांगने का मोहताज है और जो

आदमी गुनाहों में फँसा हुआ है वह अल्लाह तआला से तौबा की तौफ़ीक़ मांगने का मोहताज़ है कि ऐ अल्लाह! मुझे इन गुनाहों से तौबा की तौफ़ीक़ अता फ़रमा, कोई आदमी खुशहाली की कैफ़ियत में है खुला रिज़्क़ है, इज़्ज़तें हैं, ख़ुशियाँ हैं तो वह अल्लाह का शुक्र अदा करने का मोहताज है इसलिए अगर शुक्र करेंगे तो अल्लाह तआला उन नेमतों को सलामत रखेंग, बढ़ाएंगे ﴿لئن كفرتم﴾ नाशुक्री करोगे तो ﴿ان عذابی لشدید﴾ जो परवरदिगार नेमतें देना जानता है वह परवरदिगार नेमतें लेना भी जानता है तो अगर कोई खुशहाली में है तो वह अल्लाह तआला का शुक्र अदा करे ताकि अल्लाह तआला उसी हाल में उसकी पूरी ज़िन्दगी अता फ़रमा दे और अगर कोई तंग दस्ती के हाल में है तो वह अल्लाह के सामने सब्र करे और दुआएं मांगे ताकि परवरदिगार उसको सब्र अता फ़रमा दे और अल्लाह तआला उसको तंगदस्ती और मुश्किल के हालात को आसान फ़रमा दे तो मालूम हुआ कि इन्सान दुनिया में किसी हाल में भी हो वह अल्लाह तआला से मांगने का मोहताज है तो जब अल्लाह तआला से मांगना ही है तो फिर ख़ूब मांगे। रमज़ानुल-मुबारक का महीन अल्लाह तआला को हाले दिल सुनाने का महीना हे अल्लाह तआला को मनाने का महीना है। इस महीने में अल्लाह तआला को ख़ूब मना लीजिए दुआएं मांगिए, लम्बे सज्दे कीजिए, अल्लाह के सामने लम्बी नमाज़े पढ़िए, तिलावात के बाद मांगिए, मांगना हमारा काम है, परवरदिगार अता फ़रमा देंगे, परवरदिगार तो देना चाहते हैं।

ज़रा एक बात और तवज्जोह से सुनती जाइए आपको बहुत

काम आएगी अगर अल्लाह तआला ने आपको शादी के बहुत सालों के बाद बड़ी दुआओं के बाद, बड़ी तमन्नाओं के बाद ख़ूबसूरत बेटा अता किया। अब आपको बेटे से कितनी मुहब्बत होती है? इतनी कि बेटे पर जान छिड़कती हैं, बेटे के दुख बर्दाश्त नहीं कर सकतीं ज़रा तकलीफ़ हो तो आपको ऐसे लगता है कि जैसे मेरे अपने साथ हो रहा है। बेटे के साथ आपको इतना प्यार, अब बताइए कि अगर आपका वह दो तीन साल का जो छोटा सा मासूम बच्चा है अगर कोई बन्दा उस बच्चे के लिए बद्दुआ करे तो आप सुनना बर्दाश्त करेंगी? कोई बद्दुआ मांगकर तो देखे फ़ौरन बोलोगी कौन होती हो तुम मेरे बेटे के लिए बद्दुआ करने वाले? आप बर्दाश्त नहीं कर सकतीं चाहे वह आपकी कितना ही क़रीबी रिश्तेदार ही क्यों न हो आप फ़ौरन कहेंगी ख़बरदार! मेरे बेटे के लिए जो ऐसे लफ़्ज़ इस्तेमाल किए। आप अपने बेटे को सीने से लगाएंगी और कहेंगी अल्लाह इसको बद्दुआ से बचाए तो आप अपने बेटे के लिए बद्दुआ सुनना गवारा ही नहीं करतीं जो इतनी चाहतों से बच्चा आपको मिला है।

अच्छा ऐसा हो सकता है कि इस बच्चे के लिए आप खुद बद्दुआ मांगे? यह कैसे हो सकता है? या कोई बद्दुआ मांगे और आप उसकी बद्दुआ पर आमीन कह दें। यह तो हो ही नहीं सकता, माँ कैसे बर्दाश्त कर सकती है कि उसके बेटे के लिए कोई बद्दुआ करे और फिर वह इस बद्दुआ पर आमीन कह दे। उसका दिल कभी भी इसको बर्दाश्त नहीं कर सकता।

माँ तो वह होती है जो दुख भी बच्चे के लिए बर्दाश्त नहीं करती है तो भी उसके मुँह से बच्चे के लिए दुआएं निकल रही होती हैं। यह तो मुमकिन ही नहीं अच्छा जब आपकी यह हालत है कि बेटे के लिए कोई बद्दुआ मांगे तो आप उसकी बद्दुआ पर कभी भी आमीन नहीं कह सकतीं तो सुनिए और ज़रा दिल के कानों से सुनिए!

हदीस पाक में आता है। बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत है कि एक बार जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने बद्दुआ की बर्बाद हो जाए वह शख़्स कि जिसने रमज़ानुल-मुबारक का महीना पाया और उसने अपने गुनाहों की मग़फ़िरत न करवाई और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने यह दुआ सुनकर आमीन कह दी। अब अव्वल तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम की बद्दुआ ही बहुत काफ़ी थी। आप बद्दुआ से कितना डरती हैं? आम सी औरत अगर कोई बद्दुआ कर दे तो आप कहती हैं इसको दे दो, दे दो कहीं बद्दुआ न दे दे। फ़क़ीर की बद्दुआ से डरती हैं, ग़रीब की बद्दुआ से डरती हैं। बद्दुआ से डरकर अपना हक़ छोड़ देती हैं तो आम गुनाहगार बन्दे की बद्दुआ से तो इतनी डरती हो तो जिब्राईल अलैहिस्सलाम की तो अल्लाह के मुक़र्रब फ़रिश्ते हैं तो फिर उनकी बद्दुआ से क्यों नहीं डरतीं? और फिर जिब्राईल अलैहिस्सलाम की दुआ पर अल्लाह के महबूब ने आमीन कह दिया। अब इस बद्दुआ से हम क्यों न डरें?

अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त के महबूब ने आख़िर कैसे कह दी हॉलाकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका

तो यह है कि जब आप ताएफ़ के सफ़र पर गए और वहाँ के लोगों ने ईमान क़ुबूल नहीं किया और उन्होंने बच्चे पीछे लगा दिए और उन बच्चों ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पर पत्थर फेंके और आपके जिस्म मुबारक से ख़ून निकल आया। आपके नालैन मुबारक भर गए, आप अंगूर के बाग़ में थककर बैठ गए उस वक़्त अल्लाह के फ़रिश्ते हाज़िर होते हैं कि ऐ अल्लाह के नबी! उन्होंने आपकी नाक़द्री की हम फ़रिश्ते हैं पहाड़ों के आप इजाज़त दीजिए हम पहाड़ टकराकर इनको बीच में कुचलकर रख देंगे, दूसरे फ़रिश्ते ने कहा मैं हवाओं का ज़िम्मेदार हूँ हम इनकी बस्ती का नाम व निशान मिटा देंगे। अल्लाह के नबी ने उन काफ़िरों के लिए भी बद्दुआ नहीं फ़रमाई बल्कि फ़रमाया कि मुमकिन है कि उनकी औलादों में से कोई ऐसा हो जो दीन को क़ुबूल करने वाला हो और यह कहा,

﴿اللهم اهد قومی فانهم لا يعلمون.﴾

अल्लाह मेरी क़ौम को हिदायत दीजिए यह मेरे मक़ाम को जानते नहीं।

तो जो नबी रहमत काफ़िरों के लिए भी बद्दुआ न फ़रमाते थे आख़िर उन्होंने मोमिनों के लिए बद्दुआ पर आमीन कैसे कह दी? तो मुहद्दिसीन ने इसका जवाब लिखा है। वे फ़रमाते हैं कि अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त रमज़ान में बन्दे को इतना जल्दी आसानी से माफ़ कर देते हैं, माफ़ी के बहाने ढूँढते हैं, इतनी आसानी से बन्दा मग़फ़िरत हासिल कर सकता है कि जो बन्दा ग़फ़लत में

ही पड़ा रहे, अल्लाह की तरफ़ रुजू ही न करे, न रोज़ा रखे, न तरावीह पढ़े, न ज़िन्दगी में तब्दीली लाए, रमज़ान गैर रमज़ान में कोई फ़र्क ही न हो, ऐसा बन्दा जो रमज़ान की रहमतों से बिल्कुल महरूम हो तो वाक़ई उसने अल्लाह की बेक़द्री की कि अल्लाह तो इतना उसकी मग़फ़िरत करने को तैयार है, बहाने बना लेते हैं। उसने रब की रहमतों से ज़र्रा बराबर फ़ायदा न उठाया तो ऐसा बेक़द्र बन्दा वाक़ई बदबख़्त नहीं तो और क्या है। इससे पता चलता है कि अल्लाह के महबूब भी वही चाहते हैं कि हम दुआएं मांगे और अपनी मग़फ़िरत करवाएं। अब याद रखना कि रमज़ानुल-मुबारक का महीना जब ख़त्म होगा कुछ लोग होंगे जिनकी बख़्शिश हो चुकी होगी तो रमज़ान के बाद उनके लिए ईद का दिन होगा और जिनकी मग़फ़िरत न हुई तो रमज़ान के बाद उनके लिए वईद का दिन होगा।

महबूब की बद्दुआ लगेगी। जिब्राईल अलैहिस्सलाम की बद्दुआ लगेगी। सोचिए तो सही अपने ही अमल ऐसे बुरे हैं कि अपने गुनाहों के पहाड़ों जैसे बोझ सिर पर इकठ्ठे कर लिए और इस पर अगर फ़रिश्तों की बद्दुआ लगे और अल्लाह के महबूब की बद्दुआ लगे तो हमारा क्या हाल होगा। इसलिए हमारे पास दूसरा कोई रास्ता नहीं एक ही रास्ता है कि रमज़ानुल-मुबारक के वक़्त की क़द्र करते हुए इन महफ़िलों की क़द्र करते हुए हम अल्लाह से मग़फ़िरत मांगे। ख़्याल कीजिए कि जब आप यहाँ प्रोग्राम के लिए आती हैं, आख़िर कई सौ औरतें होती हैं, इन कई सौ औरतों में कोई तो अल्लाह की

नेक बन्दी भी होगी, कोई तो पाकदामनी वाली ज़िन्दगी गुज़ारने वाली होगी, कोई तो पर्दादार होगी, कोई तो अल्लाह की पसन्दीदा भी होगी अगर उस नेक बन्दी के हाथ उठे और अल्लाह की हुज़ूर में उसकी दुआ क़बूल हुई तो अल्लाह बाक़ी सबकी दुआओं को भी क़ुबूल फ़रमा लेंगे।

मैं गुनाहगार सही!

हदीस पाक में आता है कि एक बार नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाअज़ फ़रमाया ﴿وعظا بليغا﴾ बड़ा असरदार वाअज़ था कि सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम के दिल पर बड़ा असर हुआ। एक सहाबी ऊँची आवाज़ से रोने लग गए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने वाअज़ के बाद फ़रमाया कि अल्लाह को इनका रोना इतना पसन्द आया कि उनकी वजह से महफ़िल के जितने लोग थे सबकी मग़फ़िरत कर दी गई। सुब्हानअल्लाह! अगर महफ़िल में एक का रोना रब को पसन्द आ जाता है तो अल्लाह तआला बाक़ी सबकी दुआएं भी क़ुबूल कर लेते हैं तो यह तो अल्लाह तआला ने हमें दस दिन नेमत अता फ़रमाई है। आप बाक़ायदगी से पाबन्दी से इन महफ़िलों में आया करें। यह भी दिल में नियत लेकर बैठा करें मैं गुनाहगार सही, मैं ख़ताकार सही, मेरी ज़बान झूठी सही मगर मेरा रब बड़ा करीम है और मेरे आक़ा की दुआएं हैं और इस महफ़िल में कितनी अल्लाह की बन्दियाँ होंगी जिनके अमल अल्लाह के यहाँ मक़बूल होंगे लिहाज़ा मैं भी इनके साथ दुआ

मांगूगी तो परवरदिगार इन नेकों के साथ मिलकर मेरी दुआओं को क़ुबूल फ़रमा लेंगे।

कुत्ते से सबक़ लें

क्यों नहीं ग़ौर करतीं कि अस्हाबे कहफ़ का कुत्ता अस्हाबे कहफ़ के साथ मिल जाता है तो अल्लाह उसका तज़्करा क़ुरआन में कर देते हैं और उससे भी जन्नत का वायदा फ़रमा लेते हैं। इतनी नेक बीबियाँ मौजूद हैं। अपने आपको भी यही समझें कि अगर अस्हाबे कहफ़ की तरह तो मैं भी अस्हाबे कहफ़ के कुत्ते की तरह आकर बैठ गई हूँ और मैं भी रब के सामने दामन फैलाती हूँ कि ऐ अल्लाह मुझे भी माफ़ फ़रमा दीजिए, मेरे क़ुसूरों को माफ़ कर दीजिए तो यक़ीनन रब की रहमत होगी। अल्लाह तआला हमारे क़ुसूरों को माफ़ फ़रमाएंगे।

एक के तुफ़ैल ग्यारह की बख़्शिश

बुज़ुर्गों ने एक अजीब बात लिखी। वह फ़रमाते हैं कि याक़ूब अलैहिस्सलाम के बारह बेटे थे उनमें से एक यूसुफ़ अलैहिस्सलाम और ग्यारह दूसरे थे ﴿احد عشر كوكبا﴾ जिनको कहा गया वह ग्यारह बेटे और बारहवें यूसुफ़ अलैहिस्सलाम थे तो वह फ़रमाते हैं कि उनके ग्यारह बेटों की मग़फ़िरत बारहवें बेटे यूसुफ़ अलैहिस्सलाम की वजह से हो गई थी।

इसी तरह साल के बारह महीने होते हैं, ग्यारह महीने

गुनाहों की मग़फ़िरत रमज़ानुल-मुबारक का वह महीना जो यूसफ़ अलैहिस्सलाम की मिसाल है उसकी वजह से अल्लाह तआला फ़रमा देते हैं। इस महीने से फ़ायदा उठाइए और अपने रब से गुनाहों की बख़्शिश मांग लीजिए।

मजूसी जन्नत में किस तरह गया?

बुज़ुर्गों ने किताब में लिखा है कि एक मुसलमानों का शहर था उसमें एक मजूसी रहता था हाँलाकि कि किसी और की पूजा करने वाला था। उसके बेटे ने रमज़ानुल-मुबारक में दिन के वक़्त खुल्लम खुल्ला रास्ते में खाना खाया। उसको ग़ुस्सा आया थप्पड़ लगा दिया कि शर्म नहीं आती यह मुसलमानों का रमज़ान चल रहा है और तुमने इसमें खुले आम सबके सामने रोटी खाई, अदब कर लेते। लिहाज़ा जब वह फ़ौत हो गया तो किसी बुज़ुर्ग नें देखा कि जन्नत के बाग़ों में फिर रहा था तो बड़े हैरान हुए। उसे कहा तुम तो ग़ैर-मुस्लिम थे तुम जन्नत में कैसे पहुँच गए। वह कहने लगा कि मेरे बेटे ने रमज़ान में एक बार खुले आम रोटी खाई मैंने थप्पड़ लगा दिया कि तुम मुसलमानों के रमज़ान का एहतिराम क्यों नहीं किया? जव अल्लाह की हुज़ूर में पेश हुआ तो रमज़ान ने मेरी शिफ़ाअत की कि अल्लाह! इसने मेरा अदब किया अब तू इस पर रहम फ़रमा और अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने मेरी मग़फ़िरत फ़रमा दी और आख़िरी लम्हे में जब मैं दुनिया से जाने वाला था तो इस अदब की वजह से मुझे कलिमे पर मौत अता फ़रमा दी और अब मैं जन्नत में खुशियाँ मना रहा हूँ।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रिश्तों से क्या पूछा?

हदीस पाक में फ़रमाया कि कुरआन और रमज़ान ये क़यामत के दिन शिफ़ाअत फ़रमाएंगे, सुब्हानअल्लाह! लिहाज़ा एक हदीस पाक में यह भी आता है कि एक बन्दे को क़यामत के दिन फ़रिश्ते पीट रहे होंगे, मार रहे होंगे। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम देखकर फ़रमाएंगे कि मेरे उम्मती को क्यों मार रहे हो? फ़रिश्ते कहेंगे इसलिए कि मुतालबा करने वाला अल्लाह का बड़ा मक़बूल है चनाँचे नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम पूछेंगे कि कौन है जिसने मुतालबा किया? बताया जाएगा कि रमज़ान है रमज़ान ने मुतालबा किया है कि ऐ अल्लाह! यह बन्दा मेरा इकराम नहीं करता था और रमज़ान आता भी था तो न रोज़ा रखता था न तरावीह पढ़ता था। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़रमाएंगे कि अगर रमज़ान ने दावा किया है तो ऐसे बन्दे की शिफ़ाअत मैं नहीं कर सकता। अब सोचिए तो सही अगर रमज़ानुल मुबारक का हम ने अदब नहीं किया और इसमें मग़फ़िरत नहीं करवाई और क़यामत के दिन अल्लाह के महबूब ने भी यही कह दिया कि तुमने रमज़ानुल मुबारक पाया और अपनी मग़फ़िरत न करवाई आज मैं तुम्हारी शिफ़ाअत नहीं करता फिर हमारा क्या बनेगा?

रब्बे करीम हम पर एहसान फ़रमाएं और रमज़ानुल-मुबारक के इन अवक़ात में हमारी मग़फ़िरत फ़रमाएं। चुनाँचे एक

किताब में अजीब बात पढ़ी कि जो औरत रमज़ानुल-मुबारक में अपने शौहर को राज़ी कर लेती है अल्लाह तआला उसको क़यामत के दिन बीबी मरियम की सोहबत में जाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएंगे लिहाज़ा यह भी एक नुक्ता किसी किताब में पढ़ा था आपकी ख़िदमत में पेश कर दिया। रमज़ानुल-मुबारक में अपने रब को भी मना लीजिए और अपने शौहरों को भी मना लीजिए। उनसे अपनी हर कोताही की माज़रत कर लीजिए और उनके दिलों को ख़ुश कर लीजिए। उनको ख़ुश कर लिया तो यह भी जन्नत का एक दरवाज़ा है जो खुल जाएगा।

किताबों में लिखा है कि जिसने रमज़ान में अपने शौहर को राज़ी कर लिया अल्लाह तआला उसको जन्नत में बीबी मरियम की सोहबत में बैठने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएंगे लिहाज़ा इस पर भी अमल कर लीजिए। अल्लाह के हक़ भी पूरे हों, अल्लाह की मख़्लूक़ के हक़ भी पूरे हों। परवरदिगार हमें इन महफ़िलों में आने, सुनने, अमल करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं और हमारे गुनाहों को अपनी रहमत से माफ़ फ़रमाएं।

﴿و آخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين﴾

○ ○ ○

بسم الله الرحمن الرحيم

والكظمين الغيظ والعافين عن الناس والله
يحب المحسنين.

अख़्लाक़-ए-हमीदा

अज़ इफ़ादात

हज़रत मौलाना पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद साहब

दामत बरकातहुम (नक़्शबंदी)

विषय सूची

इक़्तिबास

दुनिया में वही औरतें पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारती हैं जो अपनी इज़्ज़त व नामूस के बारे में बहुत ग़ुस्से वाली होती हैं।

न किसी को कोइ बात की जुर्अत देती हैं और न किसी के सामने बेजा मुस्कुराहटें बिखेरती हैं। इस नेमत की वजह से फिर औरत को वह मक़ाम मिलता है जिसको पाकदामनी कहते हैं और इस पाकदामनी के सबब दुनिया में भी उसकी ज़िन्दगी में बरकतें आती हैं और क़यामत के दिन भी उसे जन्नत का रास्ता दिखाया जाता है।

इफ़ादात

हज़रत पीर ज़ुलफ़ेक़ार अहमद मद्द ज़िल्लुहू

الحمد لله و كفى وسلام على عباده الذين اصطفى اما بعد!

اعوذبالله من الشيطان الرجيم.
بسم الله ارحمٰن الرحيم.

﴿والكظمين الغيظ والعافين عن الناس والله يحب المحسنين.﴾

سبحان ربك رب العزة عما يصفون وسلام على المرسلين
والحمد لله رب العٰلمين.

اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.
اللهم صل علٰى سيدنا محمد وعلٰى الِ سيدنا محمد وبارك وسلم.

क़ुरआन मजीद की जो आयत तिलावत की गई अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त इर्शाद फ़रमाते हैं,

والكظمين الغيظ والعافين عن الناس والله يحب المحسنين.

गुस्से को पी जाने वाले और इन्सानों को माफ़ कर देने वाले, अल्लाह ऐसे नेकोकारों से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

गोया तीन सिफ़तें अगर इन्सान अपने अन्दर पैदा कर ले तो वह अल्लाह का महबूब बन जाए।

मुहब्बत की ज़रूरत

दुनिया हर औरत मुहब्बत चाहती है, माँ-बाप से भी मुहब्बत

चाहती है, भाई बहन से भी मुहब्बत चाहती है, शौहर से भी मुहब्बत चाहती है, औलाद से भी मुहबबत चाहती है। क़ुरआन मजीद की यह आयत बता रही है कि अगर यह अपने अन्दर कुछ सिफ़ात पैदा कर ले तो उसे अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की तरफ़ से भी मुहब्बत मिल सकती है, अल्लाह तआला उससे मुहब्बत फ़रमाएंगे यह अल्लाह की महबूबा बन्दी बन जाएगी तो जैसे दिल में तड़प होती है कि दुनिया में मुझे हर तरफ़ से मुहब्बतें मिलें तो मोमिन्म औरत के दिल में भी यह तड़प होनी चाहिए कि मैं अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की पसन्दीदा बन्दी बन जाऊँ, उसकी महबूबा बन्दी बन जाऊँ, अल्लाह तआला का प्यार नसीब हो, उसकी रहमत की नज़र मुझे नसीब हो, क़यामत के दिन मुझे उसके सामने पेश होने पर ख़ुशी नसीब हो और यह थोड़ी सी मेहनत से इन्सान को हासिल हो सकता है। इसमें जो सबसे बड़ी चीज़ बताई गई है वह फ़रमाया ﴿والكاظمين الغيظ﴾ ग़ुस्से को पी जाने वाले।

ग़ुस्से का मतलूब

इन्सान की तबियत अल्लाह तआला ने ऐसी बनाई है कि नापसन्दीदा बात पर इन्सान को ग़ुस्सा आता है, नापसन्दीदा चीज़ को देखे तो उसे ग़ुस्सा आता है मगर हर चीज़ की एक हद होती है शरीअत ने भी कहा है कि हम अपने ग़ुस्से को शरीअत की हद में रखें। जब यह ग़ुस्सा हद को पार कर जाता है और इन्सान ग़ुस्से की वजह से वह कुछ कर लेता है जो

शरीअत ने मना किया है तो यह ग़ुस्सा हराम बन जाता है। यही ग़ुस्सा जाएज़ था, ग़ुस्सा इबादत है अगर शरीअत के अन्दर हो मिसाल के तौर पर अगर बच्ची को माँ मना नहीं करेगी तो उसके अन्दर तो बुरी आदतें पैदा हो जाएंगी लिहाज़ा बच्ची को यह पता होना चाहिए कि मेरी अम्मी में ग़ुस्सा भी है वह फिर कोई ऐसा काम नहीं करेगी जो शरीअत के ख़िलाफ़ हो, कोई ऐसा अमल नहीं करेगी जिसका नतीजा ज़िल्लत और रुसवाई हो तो ऐसी माँ बच्चों की अच्छी तर्बियत कर सकेगी और जो माँ यही कहती रहे कि तुम्हारे अब्बू आएंगे तो मैं तुम्हें ठीक कराऊँगी तो गोया इन अलफ़ाज़ के कहने से औरत ने अपनी हार को मान लिया कि मैं अपने बच्चों की तर्बियत करने के क़ाबिल नहीं हूँ हाँलाकि जो अच्छी माँऐं होती हैं वे बच्चों को प्यार भी बहुत देती हैं मगर बच्चों पर अपना रौब भी रखती हैं। जिस तरह आम आदमी शेरनी से डरता है। इसी तरह बच्चे कोई भी बुरी हरकत करते हुए अपनी माँ से डरते हैं उनको पता होता है कि प्यार के काम पर अम्मी प्यार देगी और कोई उल्टा काम करेंगे तो हमें ग़ुस्से के साथ पेश आएगी तो अच्छी औरतें औलाद के ऊपर अपना रौब रखती हैं। यह शरीअत ने एक अच्छी चीज़ बनाई है। मर्द तो हर वक़्त घर में नहीं होता कोई दफ़्तर में है कोई खेती बाड़ी कर रहा है, कोई बिज़निस में लगा हुआ है, ज़्यादा वक़्त तो घर में औरत को ही गुज़ारना होता है तो औलाद की हिफ़ाज़त औरत को ही करनी है और वह इस तरह कि बच्चों को मुहब्बत भी दे, प्यार भी दे मगर इतना दे कि वे बिगड़ने न पाएं। इतना प्यार दे देना कि

वे औलाद बिगड़ जाए यह माँ की बेवक़ूफ़ी होती है। अच्छी माँ वह होती है जो अपनी औलाद को क़ाबिल बनाए, फ़रमांबरदार बनाए, आदाब सिखाए, उनकी अच्छी तर्बियत की जाए तो इसके लिए अल्लाह तआला ने इन्सान की फ़ितरत के अन्दर ग़ुस्सा रखा है तो ग़ुस्सा एक अच्छी सिफ़त है जो इन्सान की हिफ़ाज़त करता है। इस सिफ़त की वजह से माँ अपने बच्चे को सीधा रखती है अगर मान लिया जाए कि यही औरत किसी काम के लिए घर से निकली या घर में ही मौजूद है और किसी ग़ैर महरम ने उसकी तरफ़ देखने की कोशिश की तो अब अगर उसके अन्दर ग़ैरत होगी तो यह इस बात का बुरा मनेगी या अगर कोई ग़ैर महरम मर्द उसके साथ फ़ोन पर ज़रूरत से ज़्यादा कलाम करने की कोशिश करेगा तो यह ग़ुस्सा करेगी, यह कौन होता है मुझसे बात करने की जुर्अत करने वाला? अब यह ग़ुस्सा इसकी पाकदामनी को हासिल करने का सबब बन गया तो ग़ुस्सा अल्लाह तआला की नेमत है क्योंकि बात करने वाले मर्द को अगर महसूस हो कि मेरी बात को इस औरत ने बुरा माना तो वह कभी दोबारा बात करने की हिम्मत नहीं करेगा। जिसको पता हो कि मेरी आँखें उठने पर इस औरत ने बुरा माना तो वह कभी उस औरत की तरफ़ आँख उठाने की जुर्अत नहीं करेगा तो देखें कि यह ग़ुस्सा कितनी बड़ी नेमत है कि जिससे इन्सान की इज़्ज़त आबरू की हिफ़ाज़त होती है और इन्सान के बच्चों की भी हिफ़ाज़त होती है। इसलिए अल्लाह तआला ने इन्सान को यह सिफ़त अता फ़रमाई।

पाकदामन कौन?

दुनिया में वही औरतें पाकदामनी की ज़िन्दगी गुज़ारती हैं जो अपनी इज़्ज़त व नामूस के बारे में बहुत ग़ुस्से वाली होती हैं न किसी को कोई बात की जुर्अत देती हैं और न किसी के सामने बेजा मुस्कुराहटें बिखेरती हैं। इस नेमत की वजह से फिर औरत को वह मक़ाम मिलता है जिसको पाकदामनी कहते हैं और इस पाकदामनी के सबब दुनिया में भी उसकी ज़िन्दगी में बरकतें आती हैं और क़यामत के दिन भी उसे जन्नत का रास्ता दिखाया जाता है।

ग़ुस्से में एतिदाल

हर चीज़ में एक हद होती है। ग़ुस्सा अगर अपनी हद से बाहर निकलने लगे तो यही चीज़ नुक़सानदेह बन जाती है। इसकी मिसाल ऐसी ही है कि अगर आदमी अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ खाए तो वह सेहत का सबब बनती है और अगर ज़रूरत से ज़्यादा खा ले तो वह पेट ख़राब होकर बीमारी का सबब बन जाती है तो कमी-ज़्यादती दोनों ही ग़लत होती हैं देखिए खाने में नमक न हो तो मज़ा ही नहीं आता और ज़्यादा नमक हो जाए तो फिर रोटी का लुक़्मा मुँह में डालने का जी नहीं चाहता तो इसी तरह इन्सान के ग़ुस्से की मिसाल है कि यह अल्लाह की दी हुई एक नेमत है जिस औरत में ग़ुस्सा नहीं होता अक्सर वह औरत पाकदामन भी नहीं रह सकती बहुत कम ऐसा होता है कि वह औरत ग़ैर मर्दों से बच सके। यह

ग़ुस्सा वही नेमत है जो इसकी पाकदामनी की इ़ज़्ज़त देता है, पाकदामनी का ताज उसके सिर पर सजाता है और अगर इतना मीठा बनकर रहे कि हर हर बन्दा उसे हिप हिप करने को तैयार हो तो फिर ऐसी औरत की इ़ज़्ज़त व नामूस की हिफ़ाज़त ही नहीं होती तो यह ग़ुस्सा अल्लाह तआला की नेमतों में से एक नेमत है अगर हद में रहे अगर हद से बाहर हो जाए तो उसको रोका जाएगा और जिस तरह ग़ुस्सा करना अपनी इ़ज़्ज़त जान व माल आबरू बचाने के लिए ज़रूरी था उसी तरह अब ग़ुस्से को रोकना भी ज़रूरी हो जाएगा लिहाज़ा ज़रूरत से ज़्यादा ग़ुस्सा होना या बात बात पर ग़ुस्सा होना या मामूली बात पर ग़ुस्से में आ जाना यह चीज़ भी बुरी होती है, ग़ुस्सा आना चाहिए मगर ग़ुस्सा की बात पर आना चाहिए मामूली बातों पर ग़ुस्से में आ जाना यह अच्छाई की बजाए बुराई बन जाती है और इसक़ो रोकना इन्सान के लिए फिर सिफ़्त होता है।

ग़ुस्से की मिसाल

आमतौर पर देखा गया है कि औरतों में ग़ुस्सा बहुत जल्दी भड़क जाता है। ज़रा सी, छोटी सी बात हुई और ग़ुस्सा भड़क उठा। इस ग़ुस्से की मिसाल एक आग की तरह है जैसे आग की चिंगारी भड़की सब कुछ जला देती है इसी तरह ग़ुस्से की चिंगारी भड़कती है और सब कुछ जला देती है तो इस आग को हर वक़्त नहीं जलने देना चाहिए, हर वक़्त नहीं सुलगने

देना चाहिए। इस आग को क़ाबू में रखना चाहिए। इसी को कहते हैं ﴿والكظمين الغيظ﴾ गुस्से को पी जाने वाले यानी बन्दे के अन्दर इतनी क़ुव्वत इरादी हो कि अपने ग़ुस्से को बेमौक़े पर या बेवक़्त पर ज़ाहिर होने पर रोक ले जब उसने ग़ुस्से को रोक लिया तो अब यह अल्लाह तआला की एक पसन्दीदा सिफ़त बन गई।

ज़्यादा ग़ुस्सा किन को आता है?

आमतौर पर ग़ुस्सा कमज़ोरों को ज़्यादा आता है और ज़्यादा ग़ुस्सा आना कमज़ोरी की निशानी होती है। आपने ग़ौर किया होगा कि सेहतमंद आदमी की बजाए बीमार आदमी को ग़ुस्सा ज़्यादा आता है। लोग कहते हैं कि बीमार होकर आदमी की तबियत चिड़चिड़ी हो जाती है तो यह बिल्कुल ठीक बात है क्योंकि बीमारी है, कमज़ोरी है अब इसको बात बात पर ग़ुस्सा आता है। इसी तरह जवान के मुक़ाबले में बूढ़े आदमी को ग़ुस्सा ज़्यादा आता है, बूढ़े का क्या कहना वह तो कई मर्तबा हवा को गालियाँ निकाल देता है, अपना आप उसके बस में नहीं होता, सेहतमंद की निस्बत बीमार आदमी को ग़ुस्सा ज़्यादा आता है और मर्द की निस्बत औरत को ग़ुस्सा ज़्यादा आता है।

बच्चों पर ग़ुस्सा करना कैसा?

आमतौर पर जो औरतें ज़्यादा ग़ुस्से वाली होती हैं वह फिर

अपना ग़ुस्सा बेजा तरीक़े से निकालती हैं। कई तो ऐसी होती हैं कि वह अपने बच्चों की पिटाई करती हैं और गुनाहगार बनती हैं, मासूम बच्चे अगरचे आपकी औलाद हैं मगर आपके पास अल्लाह की अमानत हैं। ग़ुस्सा मियाँ पर है और निकाला बच्चों पर, ग़ुस्सा कोई काम ख़राब होने का है निकाला बच्चों पर, ग़ुस्सा अपनी कोई ख़्वाहिश पूरी न होने का निकाला बच्चों पर तो यह कहाँ का इन्साफ़ है यह तो उल्टा अपने आपको गुनाहगार बनाना हुआ।

माँ को तर्बिसत की ख़ातिर बच्चों को मारने की इजाज़त है लेकिन बेजा मारने पर माँ क़यामत के दिन अपने बच्चे की मक़रूज़ होगी, उनको उनका हक़ दिलवाया जाएगा। इसलिए बग़ैर वजह के हाथ उठा देना यह ठीक नहीं

ग़ुस्से का बेजा इज़्हार

कुछ औरतें तो फिर हाथ उठा देती हैं और कुछ फिर लानतें शुरू कर देती हैं यानी ज़बान क़ाबू में नहीं होती। इस पर भी लानत उस पर भी लानत हर चीज़ को बुरा कहना शुरू कर देती हैं। यह भी अल्लाह की नेमतों की नाशुक्री है तो यह ग़ुस्से का बेजा इज़्हार होता है चाहिए कि ग़ुस्से को क़ाबू करने वाली सिफ़त अपने अन्दर पैदा करें और यह सिफ़त पैदा होती है जब इन्सान इस पर ग़ौर करता है कि अगर मुझे ग़ुस्सा आया और मैं ग़ुस्सा दूसरे पर निकाल सकती हूँ अगर मेरे गुनाहों पर अल्लाह तआला का ग़ुस्सा आ गया और क़यामत

के दिन उन्होंने मुझ पर ग़ुस्सा किया तो फिर मेरा क्या बनेगा? जब भी ग़ुस्सा आए तो इन्सान फ़ौरन अपने मालिकुल मुल्क को याद करे और सोचे कि जितना ग़ुस्सा उतारने का मौक़ा मुझे नसीब है अल्लाह तआला को इससे ज़्यादा मेरे ऊपर उतारने की क़ुदरत हासिल है लिहाज़ा जब हम अपने दिल में यह मज़मून सोचेंगे तो हमारा ग़ुस्सा क़ाबू में आ जाएगा, हम कितने नापसन्द काम करते हैं गुनाहों के काम करते हैं हमारा मालिक हमें फ़ौरन तो सज़ा नहीं देता कितनी तहम्मुल मिज़ाजी है उसमें। अल्लाह के हिल्म पर क़ुर्बान जाएं कि बन्दे गुनाहों पर गुनाह कर रहे होते हैं वह परवरदिगार फिर भी उनको रिज़्क़ दिए चला जाता है। हम गुनाह करके सो जाते हैं और परवरदिगार जाग जागकर हमारी हिफ़ाज़त कर रहा होता है।

अल्लाह की हिफ़ाज़त

ज़ुन्नून मिस्री रह० एक बुज़ुर्ग हैं फ़रमाते हैं मैं दरिया के किनारे पर जा रहा था। मैंने एक मोटे से बिच्छू को देखा। वह बिच्छू पानी में जाने लगा। मैंने सुना हुआ था कि बिच्छू तैरना नहीं जानता, पानी में डूब जाता है तो मैंने सोचा देखूँ इस बिच्छू के साथ क्या मामला होता है? जब ज़रा क़रीब पहुँचा तो पानी के अन्दर एक कछुआ था इस तरह से बैठा हुआ कि उसकी कमर पानी से बाहर निकली हुई थी और बाक़ी पानी के अन्दर था तो यह बिच्छू उसकी पीठ पर बैठ गया और कछुवे ने पानी के अन्दर तैरना शुरू कर दिया। कहने लगे कि

अजीब सी बात मैंने देखी तो मेरे दिल में ख़्याल आया ज़रा देखता हूँ अंजाम क्या होता है। कहते हैं मैंने भी पानी के अन्दर अपना क़दम रख दिया। पीछे पीछे चल दिया यहाँ तक कि देखा कि वह कछुवा तैरते तैरते दरिया के किनारे पर पहुँचा जब खुश्की के ऊपर आया तो बिच्छू उसके ऊपर से उतरा और बिच्छू ने फिर दौड़ना शुरू कर दिया। कहने लगे मैं हैरान होकर बिच्छू को देख रहा था। काफ़ी दूर आगे जाने के बाद वह कहते हैं कि मैंने देखा कि एक पेड़ है और पेड़ के साए में एक नौजवान लड़का लेटा हुआ है मालूम हो रहा है यह बिच्छू बिल्कुल उसके क़रीब जा रहा था तो मेरे दिल में ख़्याल आया कि यह बिच्छू कहीं जाकर इसको काट न ले तो मैंने अपना जूता उतार कर अपने हाथ में ले लिया कि अगर यह बिल्कुल इसके क़रीब पहुँचेगा तो इससे पहले कि बिच्छू इसको काटे मैं इस बिच्छू को मार दूँगा। कहते हैं कि मैं जूता लिए हुए बिच्छू के पीछे पीछे और बिच्छू आग आगे दौड़ रहा है, अचानक मैंने क्या देखा कि एक बड़े फन वाला साँप चलता हुआ इस नौजवान की तरफ़ जा रहा है जैसे ही वह साँप ज़रा आगे हुआ यह बिच्छू उस साँप के साथ चिमट गया और उसने उस साँप को इतना सा डसा कि उसके ज़हर से वह साँप वहीं तड़प तड़प कर मर गया। जब साँप ठंडा हो गया तो यह बिच्छू फिर वापस हो गया। अब मैंने इसको देखा कि क्या करता है तो वापस जाते जाते बिच्छू फिर उस कछवे के क़रीब पहुँचा और उसकी पीठ पर बैठ गया और कछवे ने फिर उसे किनारे की तरफ़ पहुँचाने के लिए तैरना शुरू कर दिया। कहने लगे जब

यह सब कुछ मैंने देखा तो मैं क़ुदरत के इस मामले पर बड़ा हैरान हुआ कि देखो इस नौजवान को यह साँप डसना चाहता था और अल्लाह तआला इस नौजवान को बचाना चाहते थे अल्लाह तआला ने दरिया के इस दूसरे किनारे से बिच्छू को इस किनारे भेजा और बिच्छू क्योंकि तैरना नहीं जानता तो कछुवे को अल्लाह तआला ने मुताय्यन किया कि बिच्छू की सवारी बनकर यहाँ पहुँचाए और उसने साँप को डस लिया और इस तरह उस बन्दे की हिफ़ाज़त हो गई तो वह कहने लगे मेरा ख़्याल हुआ कि मैं जाऊँ और उस बन्दे को तो देखूँ कि वह कौन है? जब मैं वापस आया और उस नौजवान को देखा तो फ़रमाते हैं कि वह ग़ाफ़िल नौजवान नज़र आता था और उसके मुँह से शराब की बू आ रही थी तो मैंने उस नौजवान को झिंझोड़कर जगाया जब वह उठा तो मैंने उसे कहा कि देख तू तो शराब पीकर सो गया लेकिन तेरा परवरदिगार इस हालत में भी तेरी जान की हिफ़ाज़त कर रहा है फिर मैंने उसे सारा वाक़िआ सुनाया उस शराबी नौजवान ने उस साँप को देखा कि ज़हरीला है मगर मरा पड़ा है तो दिल ही दिल में बड़ा हैरान हुआ और उस वक़्त कहने लगा कि ऐ परवरदिगार! मैं गुनाह करके सो जाता हूँ तू जाग जाग कर मेरी जान की हिफ़ाज़त करता है आज मैंने गुनाह से तौबा कर ली और आइन्दा मैं आपकी रज़ा वाली ज़िन्दगी गुज़ारने का अहद करता हूँ चुनाँचे वह नौजवान उसके बाद नेक हो गया तो सोचिए कि किस तरह अल्लाह तआला हम गुनाहगारों की गुनाहों के बावजूद हिफ़ाज़त फ़रमाता है, गुनाहों के बावजूद अल्लाह हमें रिज़्क़

देता है, गुनाहों के बावजूद अल्लाह हमें इज़्ज़तें देता है, लोगों की ज़बानों से हमारी तारीफ़ें करवाता है। अल्लाह तआला का कितना बड़ा हौसला है।

इसके खिलाफ़ बन्दे का मामला देखिए ज़रा सी बात पर इतना बेहौसला बन जाता है कि उसका जी चाहता है कि दूसरे आदमी को जीते जागते ज़मीन में गाड़ दिया जाए तो ऐसा ग़ुस्सा शरीअत में नापसन्द किया गया है लिहाज़ा अच्छी औरतें वे होती हैं जो अपने ग़ुस्से को क़ाबू में कर लेती हैं।

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की प्यारी सिफ़त

सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम की प्यारी सिफ़त थी कि अगर किसी बात पर ग़ुस्सा आता भी था तो बहुत जल्दी उसको क़ाबू में कर लेते थे चुनाँचे एक बार सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के घर मेहमान आया और आपने अपनी बाँदी को फ़रमाया कि इसके लिए कुछ लाओ जो मेहमाने के सामने पेश करें। घर में कुछ शोरबा था। बाँदी ने गर्म किया और प्याला भर कर लाई लेकिन जब कमरे में दाख़िल होने लगी तो ख़ुदा की बन्दी देख रही थी कहीं और चल रही थी दूसरी जानिब थोड़ी सी ग़फ़लत से जो उसका पाँव अटका गिरने लगी और गर्म गर्म शोरबे का प्याला सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के ऊपर आकर गिरा। अब जब खौलता हुआ शोरबा जिस्म पर गिरे तो इन्सान का बदन जलता है, कितनी तकलीफ़ होती है। इस तकलीफ़ की शिद्दत में सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने

बड़े ग़ुस्से की हालत के साथ बाँदी की तरफ़ देखा कि यह कितनी बेध्यानी है तो वह बाँदी पहचान गई आख़िर इसी घर की बाँदी थी कि आपने बहुत ग़ुस्से से मेरी तरफ़ देखा तो जैसे ही उसने यह देखा कि आपने मेरी तरफ़ ग़स्से के साथ देखा तो उसने फ़ौरन क़ुरआना मजीद की आयत पढ़ी ﴿والكظمين الغيظ﴾ ग़ुस्से को पी जाने वाले, इन अलफ़ाज़ को सुनते ही सैय्यदना हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु ने ग़ुस्सा पी लिया। जब उसने देखा कि उन्होंने अपने ग़ुस्से का घूंट भर लिया तो उसने अगला हिस्सा आयत का पढ़ा ﴿العافين عن الناس﴾ इन्सानों को माफ़ कर देने वाले तो आपने कहा ऐ बाँदी! मैंने ग़ुस्से को भी पी लिया और मैंने तेरी इस ग़लती को माफ़ कर दिया तो बाँदी अगली आयत पढ़ी ﴿والله يحب المحسنين﴾ अल्लाह तआला नेकोकारों से मुहब्बत रखते हैं, यह सुनते ही उन्होंने फ़रमाया कि अच्छा मैंने तुम्हें अल्लाह के रास्ते में आज़ाद कर दिया। यह है क़ुरआन पर पूरा अमल कि चन्द लम्हे पहले इतना ग़ुस्सा था कि बाँदी को सज़ा देना चाहते थे और आयत के अलफ़ाज़ सुने तो यूँ अपने आपको बदला कि उस बाँदी को अल्लाह के रास्ते में आज़ाद कर दिया तो हमारे अन्दर भी यह सिफ़त होनी चाहिए कि हम अपने ग़ुस्से को क़ाबू में ले आएं।

अच्छे इन्सान की अलामत

कई घरों में मर्दों में बहुत ग़ुस्सा होता है। वे बेचारे भी मरीज़ होते हैं तो उन मर्दों को चाहिए कि वे भी अपने ग़ुस्से

को क़ाबू में लाने की कोशिश करें। अपने मामलात किसी अल्ला वाले के सामने जाकर बताएं, अपनी तबियत की कैफ़ियत ज़रा खोलें वह कुछ पढ़ने को बताएंगे या दुआएं करेंगे जिससे कि उन बुरी चीज़ों से हमारे लिए जान छुड़ाना आसान हो जाएगा क्योंकि औरतों की महफ़िल है इसलिए इस महफ़िल में तो औरतों की बात करनी होती है तो बताने का तो यह मक़सद था कि ग़ुस्सा जल्दी आना यह कमज़ोरी की अलामत है और इसी तरह ग़ुस्सा देर तक रहना यह भी कमज़ोरी की अलामत है। अच्छा इन्सान वह होता है जो कि जिसको ग़ुस्सा देर से आए और जल्दी ठंडा हो जाए, वह दिल से निकाल दे, दिल से उसको ख़त्म कर दे जैसे कहते हैं कि जी आप ग़ुस्से को थूक दें तो बन्दे की ऐसी शख़्सियत हो कि ग़ुस्से को दिल से निकाल दे तो ग़ुस्से पर क़ाबू पा लेना यह अल्लाह तआला की बड़ी पसन्दीदा सिफ़त है। इसलिए फ़रमाया ﴿والكاظمين الغيظ﴾ ग़ुस्से को पी जाने वाले ﴿العافين عن الناس﴾ और इन्सानों को माफ़ कर देने वाले।

इन्सान की ख़ूबी क्या है?

जब इन्सान दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारता है तो उसकी आसपास वाले लोगों से कमी कोताही होती रहती है। कभी जानबूझकर होती है कभी बग़ैर इरादे के भूल से हो जाती है तो लोगों की ग़लतियों को जल्दी माफ़ कर देना यह भी बहुत बड़ी सिफ़त है, यह सिफ़त भी हमें अपने अन्दर पैदा करनी चाहिए।

यह अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त का खुल्क़ है कि अल्लाह तआला "अफ़ुव्व" है माफ़ करने वाले हैं चुनाँचे आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा ने पूछा ऐ अल्लाह के महबूब! अगर मैं शबेक़द्र पा लूँ तो उस वक़्त क्या दुआ करूँ? तो नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हुमैरा तुम यह दुआ करना ﴿اللهم انك عفو﴾ ऐ अल्लाह! बेशक आप माफ़ करने वाले हैं ﴿تحب العفو﴾ माफ़ कर देने को पसन्द करते हैं ﴿فاعف عني﴾ मुझे भी माफ़ कर दीजिए। तो इस आयत से मालूम हुआ कि अल्लाह तआला माफ़ करने को पसन्द फ़रमाते हैं तो इन्सान को अपने अन्दर यह आदत पैदा करनी चाहिए। इसलिए हम भी दूसरों की ग़लतियों को जल्दी माफ़ करें। अपने नफ़्स की ग़लतियों को माफ़ न किया करें, दूसरों की ग़लतियों को जल्दी माफ़ कर दिया करें और आज का मामला बिल्कुल उल्टा है। हमारा नफ़्स जो कुछ भी कर ले उसको सज़ा देने की हम हिम्मत नहीं करते लेकिन दूसरे आदमी से थोड़ी सी कोई ऊँच नीच हो जाए तो बस हमारी आँखों में ख़ून उतर जाता है, हमारा जी चाहता है कि यह ज़िन्दा ही क्यों है? तो यह भी ठीक नहीं इसलिए हमें चाहिए कि हम ग़ुस्से को क़ाबू में करने की आदत डालें और अल्लाह के बन्दों की ग़लतियों को, कोताहियों को माफ़ कर दिया करें।

तीन चीज़ें अल्लाह को महबूब

हज़रत उमर बिन अब्दुल अज़ीज़ रह० फ़रमाया करते थे कि

तीन चीज़ें अल्लाह तआला को बेहद पसन्द हैं:—

1. पहली चीज़ क़ुदरत होने के बावजूद बदला न लेना यानी एक आदमी को इख़्तियार हासिल है अगर वह चाहे तो बदला ले सकता है लेकिन फिर भी अल्लाह के लिए माफ़ कर देता है यह चीज़ अल्लाह को बहुत पसन्द है लिहाज़ा हदीस पाक में आता है कि जो शख़्स दूसरों की ग़लतियों को जल्दी माफ़ करता होगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसकी ग़लतियों को भी जल्दी माफ़ फ़रमाएंगे।
2. दूसरी हदीस में आता है कि जो शख़्स दूसरों के उज़्र को जल्दी क़ुबूल करता होगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके उज़्रों को जल्दी क़ुबूल फ़रमा लेंगें इसी तरह हमारे बुज़ुर्गों ने क़यास करके कहा जो आदमी दूसरों के ऐबों को दुनिया में छिपाता होगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके ऐबों को छिपाएंगे।
3. हम अगर दुनिया में दूसरों के साथ भलाई करेंगे तो अल्लाह तआला क़यामत के दिन हमारे साथ भलाई करेंगे।

पर्दापोशी की अहमियत

लिहाज़ा हीदस पाक में आता है कि एक क़बीले के लोग गिरफ़्तार किए गए और नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की ख़िदमत में पेश किए गए। काफ़ी लोग थे हुजूम था। बहुत सारे मर्द थे औरतें भी थीं उसमें एक जवान उम्र लड़की भी थी और उसका बच्चा कहीं गुम हो गया था। अब वह अपने बच्चे

को तलाश करती फिर रही थी। उसको कुछ होश नहीं था। सिर से दुपट्टा उतरा हुआ नंगे सिर वह इधर उधर फिर रही थी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने जब उसको इस हाल में देखा तो आपने एक सहाबी को अपनी चादर दी और फ़रमाया जाओ और इस नौजवान बच्ची के सिर पर चादर डाल दो तो उन्होंने बड़े हैरान होकर पूछा कि ऐ अल्लाह के महबूब! वह तो काफ़िर लड़की है। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया अगरचे वह काफ़िरा है मगर बेटी तो है अगर तू आज उसके सिर पर चादर डालेगा अल्लाह तआला क़यामत के दिन तेरे गुनाहों पर रहमत की चादर डाल देंगे तो इससे पता चला कि हम अगर किसी के साथ सतर पोशी का मामला करेंगे, अगर किसी के ऐब पता चल भी जाए तो हम तन्हाई में उसे समझाएं मगर लोगों में उसको रुस्वा न करें, बदनाम न करें। इसको सतर पोशी कहते हैं यहाँ तक कि औरत को अगर अपने शौहर की कोई ऐसी बात महसूस करे जो नापसन्द हो तो उसका ढंढोरा न पीटे बल्कि उसकी पर्दापोशी करने की कोशिश करे और अल्लाह तआला से दुआएं भी मांगे कि अल्लाह तआला उसके शौहर की इस्लाह फ़रमा दे। इसलिए हदीस पाक में फ़रमाया गया है कि जो आदमी दुनिया में दूसरों के उज़्रों को जल्दी क़ुबूल कर लेता है अल्लाह तआला क़यामत के दिन उसके उज़्रों को जल्दी क़ुबूल फ़रमा लेंगे तो हमारे अन्दर माफ़ करने की आदत होनी चाहिए, जल्दी माफ़ कर देना चाहिए बल्कि हदीस पाक में आता है कि अगर किसी आदमी ने माफ़ी मांगी और दूसरे ने उसे माफ़ न किया तो नबी

सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि यह माफ़ न करने वाला क़यामत के दिन हौज़े कौसर पर मेरे सामने पेश न हो कितनी बड़ी डाँट है। क्या मतलब? दूसरे लफ़्ज़ों में यह कि अल्लाह तआला के महबूब फ़रमाते हैं कि मैं ऐसे बन्दे की क़यामत के दिन शक्ल ही नहीं देखना चाहता। अब जब अल्लाह तआला के महबूब उसकी शक्ल ही देखना नहीं चाहें तो उसको फिर नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की शफ़ाअत कैसे नसीब होगी? इसलिए हमें चाहिए कि अगर कोई बन्दा ग़लत काम कर ले और माफ़ी मांगे तो जल्दी माफ़ कर दिया करें कि ऐ अल्लाह! आप माफ़ करना पसन्द फ़रमाते हैं, हम आपकी निस्बत इस आदमी की ग़लती को माफ़ करते हैं।

अल्लाह सब्र करने वालों के साथ है

आजकल अक्सर रिवाज बन गया है कि जी हम तो ईंट का जवाब पत्थर से देंगे। यह कोई अख़्लाक़ नहीं है, यह आदत है। आप ईंट का जवाब पत्थर से तो दे लेंगी अगर ज़्यादती होगी तो क़यामत के दिन मज़लूमा की बजाए ज़ालिमा बनकर पेश होंगी। अल्लाह तआला की मदद उसके साथ होगी जिसके साथ ज़्यादती होगी तो इसलिए हर बात का हिसाब चुकाना भी ज़रूरी नहीं होता।

हम ने तो देखा कि बहुत सी औरतों की आदत होती है कि कोई बात शौहर ने कह दी फ़ौरन आगे जवाब देती हैं, कोई बात सास ने कह दी फ़ौरन आगे से बोलती हैं, उनकी ज़बान

टर्र-टर्र करने से बाज़ ही नहीं आती, बोलती रहती हैं और यही बोलना उनके लिए मुसीबत बन जाती है यही उन के लिए अल्लाह के यहाँ मरदूद होने का ज़रिया बन जाता है, यही ज़बान उनके लिए जहन्नम में जाने का ज़रिया बन जाती है तो इसलिए हर बात का जवाब देना भी ज़रूरी नहीं होता। ख़ासतौर पर जब आप महसूस करें आपका शौहर आप पर ग़ुस्सा हो रहा है, आपकी सास आप पर ग़ुस्सा हो रही है और आपका ससुर आप पर ग़ुस्सा हो रहा है और आपका क़ुसूर भी कोई नहीं होता तो ज़रूरी नहीं होता कि आगे से चटककर जवाब दें बल्कि अगर आप थोड़ी देर के लिए उनके ग़ुस्से को बर्दाश्त कर लेंगी तो उसके बदले अल्लाह तआला की मुहब्बत आपको नसीब होगी क्योंकि आप सब्र करेंगी और,

﴿ان الله مع الصّٰبرين.﴾

अल्लाह तआला सब्र करने वालों के साथ होता है,

﴿والله يحب الصّٰبرين.﴾

अल्लाह तआला सब्र करने वालों से मुहब्बत फ़रमाते हैं।

तो इसलिए हमेशा तुर्की-ब-तुर्की जवाब नहीं दिया जाता, ईंट का जवाब पत्थर से नहीं दिया जाता है।

आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की आदते मुबारका थी कि

आप दूसरे आदमी से बदला नहीं लिया करते थे जैसे आजकल औरतों की आदत होती है कि उसने यह बात की मैंने उसके जवाब में ऐसी बात की कि जलती रही होगी। यह जो कहती हैं कि वह जलती रहेगी तो फिर अगर इसके जवाब में अल्लाह तआला ने हम से हिसाब ले लिया तो फिर हम तो जहन्नम में जलते रहेंगे। इसलिए माफ़ करना चाहिए। सुनिए और दिल के कानों से सुनिए।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के अख़्लाक़ का आला नमूना

जब नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम फ़तेह मक्का के वक़्त मक्का मुकर्रमा में दाख़िल हुए तो उस वक़्त मक्का मुकर्रमा की हर जवान औरत के दिल में ख़्याल था कि आज की रात ये मुसलमान हमारे घरों को लूटेंगे, हमारा माल हम से छीनेंगे, हमारे मर्दों को क़त्ल करेंगे और मक्का मुकर्रमा की कोई जवान लड़की ऐसी नहीं होगी जिसकी आबरू सलामत रहे। इसलिए कि उन्होंने मुसलामानों को तेरह साल सताया था, तेरह साल मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुँचाई थीं, तेरह साल मुसलमानों के सीनों पर मूंग दली थी। तेरह साल का अर्सा कोई थोड़ा तो नहीं होता। उन्होंने जी भरकर मुसलमानों को तकलीफ़ें पहुँचायीं थीं। हर किसी को अपना किया याद रहता है। अब उन्हें अपना किया याद आ रहा था कि जब हम ने उनके साथ यह कुछ किया तो आज तो ये ग़ालिब होकर आ रहे हैं, फ़ातेह

बनकर आ रहे हैं तो आज तो ये गिन गिनकर बदले चुकाएंगे चुनाँचे मक्का मुकर्रमा की औरतें ख़ौफ़ज़दा थीं कि आज हमारे घर के मर्द जुदा हो जाएंगे, हम बेवा बन जाएंगी, माल भी हम से छीन लिया जाएगा और ये हमारी जवान लड़कियों को अपनी बाँदियाँ बनाएंगे और हमारी औरतों की इ़ज़्ज़तों को ख़राब करेंगे। अजीब बात कि आधी रात से ज़्यादा गुज़र गई और किसी काफ़िर के घर में कोई मुसलामन दाख़िल नहीं हुआ तो औरतों को तो डर और ख़ौफ़ की वजह से नींद नहीं आ रही थी। उन्होंने अपने मर्दों से कहा ज़रा पता तो करो ये मुसलमान कहाँ हैं? क्या सोच रहे हैं? चुनाँचे काफ़िर मर्द अपने घरों से निकले। उन्हें मक्के की गलियों में भी कोई मुसलमान नहीं मिला लिहाज़ा वे चलते चलते हरम शरीफ़ पहुँचे तो क्या देखते हैं कि अल्लाह के ये चाहने वाले, अल्लाह के नाम पर क़ुर्बान होने वाले अल्लाह तआला के ये दीवाने मस्ताने चूँकि अल्लाह के दर से बहुत दूर रहे थे और अब उनको यहाँ आना नसीब हुआ था तो यह सब के सब मताफ़ के अन्दर मौजूद थे कोई तवाफ़ कर रहा था, कोई ग़िलाफ़े काबा को पकड़ के दुआएं मांग रहा था, कोई मक़ामे इब्राहीम पर सज्दे कर रहा था कोई अपने रब से लौ लगाकर बैठा क़ुरआन की तिलावत कर रहा था तो मर्द लोग हैरान हो गए कि ये मुसलमान तो कुछ और ही तौर तरीक़े वाले लोग हैं, हमने बुरा सोचा था ये लोग तो ऐसे नहीं थे चुनाँचे यह रात सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम ने वह रात इबादत में गुज़ार दी जब अगला दिन चढ़ा तो उस वक़्त नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने तल्हा बिन उस्मान को

बुलाया। यह वह आदमी था जिसके पास बैतुल्लाह के दरवाज़े की चाबी होती थी और बुलाकर आपने कहा ऐ तल्हा बैतुल्लाह की चाबी मेरे हवाले करो चुनाँचे उसने कुंजी आपके हवाले कर दी। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने दरवाज़ा खुलवाया आप बैतुल्लाह के अन्दर तशरीफ़ ले गए। वहाँ जाकर आपने नमाज़ अदा की, अल्लाह के सामने अपनी और अपनी उम्मत के लिए दुआएं मांगी। जब आप बैतुल्लाह शरीफ़ से बाहर निकले तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम को उम्मीद थी कि अब अल्लाह के नबी बैतुल्लाह का दरवाज़ा बन्द करवाएंगे और उसकी चाबी किसी मुसलमान को देंगे। लिहाज़ा जितने बड़े सहाबा थे वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के साथ साथ सबके दिल में यह शौक़ अंगड़ाईयाँ ले रहा था काश! बैतुल्लाह की चाबीबरदार हमें बना दिया जाए। यह सआदत हमें नसीब हो जाए, हमारे ख़ानदान को यह सआदत मिले और दुनिया का दस्तूर भी यही है कि जब आदमी हुक्मुरान होता है तो अपनी पार्टी के लोगों को नवाज़ता है। जो ज़्यादा क़रीब होते हैं उन पर ज़्यादा इनायातें होती हैं तो सहाबा रज़ियल्लाहु अन्हुम इस ख़्याल से अल्लाह के नबी के क़रीब हो गए। नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने बैतुल्लाह का दरवाज़ा बन्द करवाया और इसके बाद तल्हा के पास आए और आपने फ़रमाया तल्हा तुम याद करो उस वक़्त को जब मैं हिजरत के वक़्त यहाँ से रवाना हो रहा था तो मेरा जी चाह रहा था कि बैतुल्लाह के अन्दर दाख़िल होकर दुआ करूँ। तल्हा मैंने तुम से गुज़ारिश की थी तुमने खोलने से और कुंजी देने से इन्कार कर दिया था और

मैंने तुम्हें उस वक़्त कहा था कि तल्हा एक वक़्त आएगा जहाँ तू खड़ा है वहाँ मैं खड़ा हूँगा और जहाँ मैं खड़ा हूँ वहाँ तू खड़ा होगा। तल्हा तुझे यह बात बुरी लगी थी और तूने उसके जवाब में मुझे गालियाँ देनी शुरू कर दी थीं। देखो आज मेरे अल्लाह ने वह वक़्त दिखा दिया तुम्हारे हाथ ख़ाली हैं कुंजी मेरे हाथ में है लेकिन तल्हा जो तूने मेरे साथ किया था मैं तेरे साथ वह नहीं करूँगा मैं यह कुंजी तुम्हें वापस करता हूँ। यह क़यामत तक तुम्हारी नस्लों में रहेगी। तल्हा की आँखों में आँसू आ गए कहने लगा आपने कुंजी तो दे दी अब कलिमा पढ़ाकर मुझे जन्नत की कुंजी भी अता फ़रमा दीजिए। यह नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के आला अख़्लाक़ थे कि आप दुश्मन को भी माफ़ करके उसके दिल को जीत लिया करते थे। इसलिए हर बात में नहीं चुकाना होता माफ़ करना भी एक सिफ़त होती है इसलिए अल्लाह के लिए माफ़ करना आप एक सिफ़त बना लें, गुस्सा आ जाए उसको अल्लाह के लिए क़ाबू कर लिया करें और अल्लाह की ख़ातिर अल्लाह के बन्दों की कोताहियों को माफ़ कर दिया करें।

बुराई कैसे मिटती है?

अगर आप दूसरे की बुराई के बदले में खुद भी बुराई का सुलूक करेंगी तो फिर बुराई मिटेगी कैसे? पहले ने एक बुराई की आपने भी बुराई के जवाब में बुराई की तो दुनिया में डबल बुराई हो गई। इस तरह बुराई ख़त्म तो नहीं हो सकती। आपने

शरीअत का मस्अला तो सुना ही होगा कि अगर कोई चीज़ नापाक हो जाए तो नापाक को पाक करने के लिए इसको पाकी की ज़रूरत होती है जब तक पाक पानी से उसे धोएंगे नहीं उसकी नापाकी ख़त्म नहीं होगी और अगर किसी की नापाकी को नापाक पानी से धोना शुरू कर दें तो नापाकी बढ़ तो सकती है ख़त्म नहीं हो सकती। इसी तरह अगर किसी ने आप के साथ बुराई की आप उसके जवाब में बुराई करने लग जाएं तो दुनिया से बुराई ख़त्म नहीं होगी बुराई को मिटाने के लिए अच्छाई का मामला करना पड़ेगा पाक पानी बुराई को मिटा देता है। गंदगी को मिटा देता है अच्छाई उसी तरह बुराई को मिटा देती है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त ने क़ुरआन पाक में यही उसलू बतला दिया, फ़रमाया, ﴿ادفع بالتی ھی احسن﴾ कि तुम बुराई को नेकी के साथ धकेलो फिर देखो उसका कितना अच्छा असर सामने आता है लिहाज़ा औरतों से गुज़ारिश है कि ये अपने अन्दर आज से अहद कर लें हम बुराई का बदला बुराई से नहीं देंगी, शौहर हमारे साथ बुराई कर रहा है हम उसकी ख़िदमत करके उसको ख़ुश करने की कोशिश करेंगी, सास हमारे साथ ज़्यादती कर रही है हम अपने रब के सामने अपना ग़म ब्यान करेंगी मगर हम उसके अदब में फ़र्क़ नहीं आने देंगी, हम ससुर के अदब में फ़र्क़ नहीं आने देंगी, हमारे रिश्तेदार औरतें जिन्होंने हमारे दिल दुखाए हम उनकी ग़ीबत नहीं करेंगी उनके ऊपर इल्ज़ाम तराशी नहीं करेंगी बल्कि उनकी ग़लतियों को माफ़ करके अपने अल्लाह के हुज़ूर क़ुर्ब चाहेंगी लिहाज़ा दूसरों की ग़लतियों को माफ़ कर देना एक

अच्छी सिफ़त है उसको कहते हैं कि क़ुदरत के बावजूद बदला न लेना तो इन्सान बदला ले सकता हो फिर भी बदला न ले यह अज़्मत हुआ करती है इस माफ़ करने को माफ़ करना कहते हैं। इसको नहीं कहते कि इन्सान का बस न चले और कह दे कि जी मैंने तुम्हें माफ़ कर दिया यह माफ़ करना नहीं होता माफ़ करना तो वहाँ होता है कि जहाँ क़ाबू भी हो, ग़ुस्सा इन्सान निकाल भी सकता हो, रद्दे अमल आदमी दिखा सकता हो मगर अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त की ख़ातिर इन्सान उसको न दिखाए अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त से डर जाए तो अल्लाह तआला को ऐसी मोमिना बड़ी पसन्द होती है।

अजीब वाक़िआ

ख़्वाजा निज़ामुद्दीन औलिया रह० के पास एक आदमी आया जिसको किसी हासिद ने परेशान कर रखा था और यह बड़ा परेशान था। हज़रत की ख़िदमत में आया और कहने लगा कि हज़रत फ़लाँ आदमी हर वक़्त मेरे रास्ते में काँटे बिछाता रहता है मैं उसके जवाब में अब कुछ करना चाहता हूँ। आप मुझे इसकी इजाज़त दीजिए वह एनओसी मांगना चाहता था कि मैं भी कुछ कर दिखाऊँ मगर अल्लाह वाले अजीब बातें करते हैं आपने कितना प्यारा जवाब दिया जो सोने की स्याही से लिखने के क़ाबिल है। आपने उससे फ़रमाया ऐ नौजवान! अगर कोई तेरे रास्ते में काँटे बिछाए तो तू उसके रास्ते में काँटें न बिछा, वरना पूरी दुनिया में काँटे ही काँटे हो जाएंगे। अब

इस बात पर ग़ौर करें अगर घर में किसी ने आपको सताया, दिल दुखाया और उसके जवाब में आप भी वैसा ही करने लग जाएंगी तो घर में तो बुराई दुगनी होना शुरू हो जाएगी। अच्छाई कहाँ से आएगी। इसलिए चाहिए कि यह अच्छी सिफ़त अपना कर हम क़ुदरत होने के बावजूद दूसरों से बदला न लें, उन्हें अल्लाह के लिए माफ़ कर दें।

मियाना रवी (बीच की चाल) किसे कहते हैं?

एक अच्छी आदत मियाना रवी अपनाना है। मियाना रवी कहते हैं कि बीच की चाल चलना, दर्मियान की कैफ़ियत को अपनाना मियानारवी कहलाती है न ज़्यादती हो न कमी हो। इनके दर्मियान में आदमी ज़िन्दगी गुज़ारे। मिसाल के तौर पर अल्लाह ने किसी औरत को बहुत माल व पैसा दिया अब इसका यह मलतब नहीं कि वह इसका इतना दिखावा करे कि लिबास से भी दिखावा अपनी बात से भी दिखावा और हर चीज़ से दिखावा, बात बात में दूसरों की नीचा समझे, ऐसा नहीं करना चाहिए बल्कि अज़मत यह होती है कि अल्लाह तआला ने इतना कुछ दिया और इन्सान फिर भी चुप रहे दर्मियाना रास्ता अपनाए यानी यूँ समझ लें कि एक तरफ़ कंजूसी है वह भी अल्लाह तआला को ना पसन्द है कि आदमी कंजूस मक्खी चूस ही बन जाए और दूसरी तरफ़ फ़िज़ूलख़र्ची है फ़िज़ूलख़र्ची भी अल्लाह को नापसन्द है,

﴿ان المبذرون كانوا اخوان الشيطين.﴾

अल्लाह तआला फ़रमाते हैं कि फ़िज़ूलख़र्च लोग तो शैतान के भाई होते हैं तो कंजूसी और फ़िज़ूलख़र्ची के बीच की जो चीज़ है उसे मियानारवी कहते हैं। औरतों को चाहिए कि अगर अल्लाह तआला ने बिल्फ़र्ज़ बहुत माल दिया है तो मियानारवी को अपनाएं। ऐसी बनकर रहें कि जिसमें आजिज़ी भी हो और अल्लाह की शुक्रगुज़ारी भी हो न इतनी कंजूसी की तरफ़ जाएं कि वह अल्लाह को नापसन्द हो जाए न इतनी फ़िज़ूलख़र्ची की तरफ़ जाएं कि वह अल्लाह को पसन्द न आए बल्कि मियानारवी को अपनाएं हर मामले में इस चीज़ को करना यह अल्लाह तआला को ज़्यादा पसन्द है इसलिए जब आपको अल्लाह की नेमत मिलें तो अल्लाह तआला को याद किया कर लिया करें।

और अगर आपको किसी वक़्त तैश आ जाए तो उस वक़्त अल्लाह का ख़ौफ़ दिल में रखा करें तो आप फिर दरम्यान के रास्ते पर रहेंगी। बहादुरशाह ज़फ़र ने एक क़ीमती शे'र कहा—

ज़फ़र आदमी उसको न जानिएगा
हो कितनी ही साहिबे फ़हम व ज़का

जिसे ऐश में यादे ख़ुदा न रही
जिसे तैश में ख़ौफ़े ख़ुदा न रहा

लिहाज़ा अगर अल्लाह ऐश का हाल हमें अता फ़रमा दे तो हम उसमें ख़ुदा की याद को न छोड़ दें और अगर किसी वक़्त हम तैश में आ जाएं तो हम ख़ुदा के ख़ौफ़ को याद रखें, कोई

उल्टा काम न करें तो यह जो बीच की सिफ़त है उसे कहते हैं मियानारवी। हदीस पाक में नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया, ﴿خير الامور اوسطها﴾ कि बेहतर काम दरम्यानी चाल चलना है तो आप हर काम में दर्मियानी रवैय्या अपनाएंगी तो आप हमेशा कामयाब रहेंगी यह इतनी अच्छी सिफ़त है कि कोई हद नहीं। इसका क्या मतलब? कि न इतनी मीठी बनो कि लोग हप हप कर जाएं न इतनी कढ़वी बनो कि लोग थू थू करें बल्कि दरम्यान की हालत अच्छी है, अच्छे अख़्लाक़ होने चाहिए कि लोग भी आपके साथ अच्छे अख़्लाक़ के साथ ज़िन्दगी गुज़ारें।

बेवक़ूफ़ औरत कौन?

कपड़े, जूते के मामले में दूसरे खर्चों के मामले में हमेशा मियाना रवी अपनाओ। अक्सर यह देखा गया है कि जब शौहर को अल्लाह ने ख़ूब माल दिया होता है तो फिर औरतें भी इस अन्दाज़ से बढ़कर खर्च करने लग जाती हैं, उसका माल बेदरेग़ ख़र्च करवाती हैं अगर शौहर ख़र्च करने के लिए खुशी से देता है तो ठीक है उसको आप ख़र्च करें जैसे अल्लाह तआला ने आपको इजाज़त दी है लेकिन इस शौहर के माल को ज़्यादा से ज़्यादा निकलवाना एक फ़रमाईश पर दूसरी फ़रमाईश डालना यह कम समझी होती है कौन औरत है जो पैसे की वजह से अपने शौहर के दिल में अपनी नफ़रत पैदा कर ले मगर औरतें इस बात को क्यों नहीं समझतीं कि

कई बार सिर्फ़ कपड़े जूती के न लाने पर शौहर से झगड़े कर लेती हैं, नाराज़ हो जाती हैं।

औरत की बहुत बड़ी ग़लती

शौहर कई बार औरत से तन्हाई की मुलाक़ात करना चाहता है तो वह इससे रोकती है और अपने मामले को एक "टोल" टैक्स के तौर पर इस्तेमाल करती है कि अब शौहर को हमारी ज़रूरत है हम इंकार करेंगी, यह तड़पेगा, यह तरसेगा, मिन्नतें करेगा हम उसे टैक्नीकल नोक-आऊट करेंगी और फिर अपने मुतालबे मनवाएंगीं यह शैतान की बहुत बड़ी चाल है। हदीस पाक में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि जिसका मफ़हूम है कि अगर औरत को उसका शौहर अपनी तरफ़ बुलाए ज़रूरत के लिए और औरत उसको इंकार कर दे तो जब तक वह उसकी ज़रूरत पूरा नहीं करती अल्लाह तआला के फ़रिश्ते उस औरत पर लानत करते रहते हैं। अब सोचिए उसने क्या कमाया? सारी रात अगर उसका शौहर ग़ुस्से में आकर सो गया अल्लाह की लानत में यह पड़ी रही, इसको क्या नसीब हुआ? इसकी ज़िन्दगी पर फिटकार पड़ेगी। ऐसी औरतों के चेहरों पर नहूसत नज़र आती है फिर उनके अन्दर शौहरों को भी दिलचस्पी नहीं रहती। बाद में रोती फिरती हैं कि शौहर हमारी तरफ़ मुतवज्जोह नहीं है। जब उसने तवज्जोह की तो आपने उसके साथ क्या मामला किया था? इसलिए कितनी पढ़ी लिखी बेवक़ूफ़ औरतें होती हैं जो इस तरह का मामला करके अपने शौहरों की तवज्जोह दूसरी तरफ़ कर देती

हैं। घर में उसने अपनी बीवी को अपनी तरफ़ बुलाया, बीवी ने बेरुख़ी दिखा दी शौहर ग़ुस्से में आकर बाहर निकला और दफ़्तर में उसको किसी बदकिरदार लड़की ने, फ़ैशनपरस्त दुनियादार लड़की ने मुस्कुराकर, देखकर कह दिया सर आप कैसे हैं? आप आज कुछ परेशान नज़र आ रहे हैं तो फिर मर्द के लिए इस मौक़े पर गुनाह कर जाना कौन सा मुश्किल होता है? अब इस गुनाह में शौहर तो सना ही सही मगर बीवी भी बराबर की शरीक है। यह घर में बैठी है मगर इसको मर्द के ज़िना करने का बराबर गुनाह मिल रहा है क्योंकि इसने अपने शौहर की ज़रूरत को पूरा नहीं किया। लिहाज़ा इस बात को अच्छी तरह समझने की ज़रूरत है।

इसलिए नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि औरत अगर ऊँट के ऊपर भी बैठी हो और उसका शौहर उसे अपनी ज़रूरत के लिए बुलाए तो उसको चाहिए कि ऊँट से नीचे उतरे और अपने मियाँ की ज़रूरत को पूरा करे। एक हदीस में फ़रमाया अगर तन्नूर पर रोटियाँ भी लगा रही हो और ठीक रोटियाँ लगाने के वक़्त उसका शौहर उसे अपनी तरफ़ बुलाए तो उसको चाहिए कि सब कुछ वहीं छोड़कर पहले अपने शौहर की ज़रूरत को पूरा करे बाद में कोई और काम करे तो अल्लाह के महबूब की तो ये तालीमात हैं और आजकल कई बार बेवक़ूफ़ी की वजह से अच्छी समझदार बच्चियाँ ग़लती कर जाती हैं कि अपने मामले को टोल के तौर पर इस्तेमाल करवाती हैं।

अपनी बात शौहर से कैसे मनवाएं?

अपने शौहर से अपने मुतालबात मनवाने के लिए, ख़्वाहिशात मनवाने के लिए यह हर्गिज़ अच्छा नहीं। मनवाने के लिए आजिज़ी का रास्ता सबसे बेहतर रास्ता है, मिन्नत, समाजत का रास्ता बेहतर रास्ता है। आप अपने मियाँ को मिन्नत समाजत से मनाएंगी सिर्फ़ आप मियाँ को ही नहीं मनाएंगी इससे पहले आप अपने रब को मना लेंगी तो यह तो ज़्यादा बेहतर है और अच्छा रास्ता है।

रस्म व रिवाज को न देखें

औरतें कई मौक़ों पर अपने शौहरों से इसलिए ख़र्चा करवाती हैं कि लोग क्या कहेंगे? यह इतने अजीब अलफ़ाज़ हैं लोग क्या कहेंगे? लोगों की ख़ातिर बेचारियाँ पता नहीं क्या क्या रस्म व रिवाज करती फिरती हैं और लोग तो फिर भी राज़ी नहीं होते। जिन औरतों को जहेज़ में कुछ भी नहीं मिलता लोग उन पर ऐतिराज़ करते हैं और जिनको जहेज़ में पता नहीं क्या सारी दुनिया की नेमतें मिल जाती हैं लोग उन पर भी ऐतिराज़ करते हैं तो लोग तो किसी हाल में भी राज़ी नहीं होते। आप लोगों को राज़ी करती फिरेंगी तो लोग आपको कभी भी खुश होकर बात का जवाब नहीं देंगे। इसके बजाए आपको अपने रब को राज़ी करना चाहिए। अल्लाह तआला जल्दी राज़ी हो जाते हैं। इसलिए औरतों को चाहिए कि यह न सोचा करें कि

लोग क्या कहेंगे? बल्कि अगर शरीअत के मुताबिक़ यह काम कर रही हैं तो आपको लोगों की फ़िक्र नहीं करनी चाहिए। अल्लाह तआला लोगों को ख़ुद ही मुवाफ़िक़ बना देंगे।

एक सुनहरा उसूल

चुनाँचे उम्मुल मोमिनीन आएशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं, याद रखने वाली बात है अगर कोई आदमी अल्लाह को नाराज़ करके मख़्लूक़ को राज़ी करने की कोशिश करेगा अल्लाह तआला थोड़े दिनों में मख़्लूक़ के दिल में भी उस आदमी के लिए नफ़रत और दुश्मनी डाल देंगे और अगर कोई बन्दा मख़्लूक़ के बजाए अल्लाह को राज़ी कर लेगा तो अल्लाह तआला नाराज़ होने वाली मख़्लूक़ के दिल थोड़े दिनों में राज़ी फ़रमा देंगे तो उसूल तो यही है। हम अपने रब को राज़ी करें। शादी ब्याह के मौक़े पर रस्म व रिवाज करना और नमूद व नुामईश के लिए बिला वजह के पैसे ख़र्च करना ये सब फ़िज़ूलियात हैं, इस पर गुनाह होता है तो इसलिए मियानारवी अपनाना यह एक अच्दी आदत है अल्ला तआला हमें मियानारवी की आदत अपनाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाएं। रह गई लोगों की बात उनको ख़ुदा ही राज़ी करे हम और आप उनको कभी राज़ी नहीं कर सकते।

एक वाक़िआ

बच्चों को एक वाक़िआ सुनाया जाता है। एक मियाँ बीवी

जा रहे थे एक गधा उनके पास था। उन्होंने सोचा कि हम गधे को ऊपर सवार हो जाते हैं। लिहाज़ा मियाँ बीवी दोनों गधे पर सवार हो गए। मियाँ आगे बैठा बीवी पीछे बैठी। जब ज़रा आगे चले एक आदमी ने देखकर कहा यह कितने ज़ालिम हैं कि गधा एक है और ऊपर दो बन्दे सवार हैं, इनको शर्म नहीं आती। इसलिए शौहर यह सुनकर गधे से नीचे उतर गया, बीवी बैठी रही। थोड़ी दूर आगे चले किसी ने उनको देखा कहने लगा यह कैसी औरत है खुद सवारी पर बैठी है और मियाँ औरत का मुरीद है आगे आगे चल रहा है। इसलिए यह देखकर औरत भी नीचे उतर आई तो मियाँ ऊपर चढ़कर बैठ गया। थोड़ी दूर आगे चले किसी ने देखा कहने लगा कैसा मर्द है खुद तो सवार है और बीवी बेचारी को पैदल चला रहा है। इसलिए शौहर भी नीचे उतर आया, दोनों ने पैदल चलना शुरू कर दिया। ज़रा आगे गए तो फिर किसी ने देखा वह कहने लगा कितने बेवक़ूफ़ हैं सवारी का जानवर भी है और फिर भी दोनों पैदल चल रहे हैं तो तब शौहर ने बीवी को समझाया कि देखो दुनिया तो किसी हाल में राज़ी नहीं होती और वाक़ई बात यही है कि दुनिया को आप राज़ी कर ही नहीं सकतीं। हाँ अपनी तरफ़ से कोशिश करें, शरीअत के दायरे के अन्दर रहते हुए पहले अपने रब को राज़ी करें और शरीअत की हद में रहते हुए जितना मख़्लूक़ को राज़ी कर सकते हैं उतना राज़ी करें अगर फिर भी राज़ी नहीं होते तो उनका मामला अल्लाह पर छोड़ दें अल्लाह तआला उनको अपने आप राज़ी कर देंगे।

अल्लाह के बन्दों पर रहम करना सीखें

अल्लाह के बन्दों पर रहम करना भी एक अच्छी आदत है। औरतें आमतौर से नरम दिल होती हैं। ज़रा किसी की तकलीफ़ हो उन बेचारियों से देखी नहीं जाती। उन्हें अल्लाह तआला ने गुदाज़ दिल दिया होता है। तड़पने वाला दिल दिया होता है, दुख दर्द में शरीक होने वाला दिल दिया होता है मगर पाँच उंगलियाँ बराबर नहीं होतीं। बहुत सी औरतें ऐसी भी होती हैं ज़िदबाज़ी में आकर जानबूझकर दूसरों का दिल दुखाती हैं। तो यह चीज़ बहुत बुरी होती है। यह बिगड़ी हुई बच्चियाँ होती हैं जो दूसरों के दिलों को दुख दें, तकलीफ़ पहुँचाएं, हमें चाहिए कि हम अल्लाह के बन्दों पर रहम खाना सीखें।

नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने एक हदीस में फ़रमाया कि अल्लाह तआला फ़रमाते हैं, "तुम ज़मीन वालों पर रहम करो तो आसमान वाला तुम पर रहम फ़रमाएगा।" हम अल्लाह की रज़ा के लिए अल्लाह के बन्दों पर रहम करें। जितना किसी के साथ हम भलाई कर सकें अपनी तरफ़ से करने की कोशिश करें अल्लाह तआला फिर हमारे हाल पर ख़ुद ही रहम फ़रमाएंगे तो अल्लाह तआला के बन्दों पर रहम खाना और उनकी ख़िदमत करना यह एक अच्छी आदत है और हमें भी अपने अन्दर यह सिफ़त अपनानी चाहिए।

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की तीन बातें

उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते थे कि इन्सान

की गुमराही के लिए तीन बातें काफ़ी होती हैं:—

1. एक तो वह फ़रमाया करते थे कि कोई आदमी लोगों की ऐसी बुराई करे जो अपने अन्दर मौजूद हो। यह चीज़ उसकी गुमराही के लिए काफ़ी है अगर ग़ौर करें तो कौन सा गुनाह है जो हमारी अपनी ज़िन्दगी में नहीं है लिहाज़ा हम दूसरों के अन्दर न उस बुराई को तलाश करें न लोगों की बुराई करें। अक्सर अवक़ात देखा गया कि औरतें जब मिल बैठती हैं तो वक़्त गुज़ारने के लिए आपस में तज़्किरे शुरू कर देती हैं और इस तज़्किरे में वह बातचीत करते हुए ग़ीबत करती हैं। सुन लीजिए ग़ीबत कहते हैं किसी की ऐसी बुराई ब्यान करना अगर इस बन्दे को पता चल जाए तो वह इस बात को बुरा माने। आज औरतों को अगर समझाया जाए कि आप ग़ीबत न करें तो यह आगे सब जवाब देती हैं हम सच कह रही हैं कोई झूठ तो नहीं कह रही हैं। ओ अल्लाह की बन्दी! शरीअत की बात समझने की कोशिश कीजिए अगर आप ने झूठ बोला तो इसको तो बोहतान कहेंगे। आप सच बोल रहीं हैं, हक़ीक़त ब्यान कर रही हैं, पीठ पीछे तज़्किरे कर रही हैं। इसी को ग़ीबत कहा जाता है तो ग़ीबत हमेशा इस सच्ची बात को कहते हैं जो पीठ पीछे की जाए मगर ऐसा कि सुनने वाला सुने तो उसको बुरा लगे कि मेरी यह बात क्यों की गई? और यह ग़ीबत आज बहुत आम हो गई है। इस बारे में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया,

﴿الغيبة اشد من الزنا.﴾

ग़ीबत तो ज़िना से भी ज़्यादा बुरा अमल है और बड़ा गुनाह है। इसलिए हमें चाहिए हम किसी तीसरे आदमी का तज़्किरा करने से ही बचें और सुनी सुनाई बातों पर ध्यान न दिया करें ﴿الخبر كالمعاينة﴾ सुनी हुई बातें और देखी हुई बात एक जैसी तो नहीं होतीं इसलिए इन्सान के झूठा होने के लिए काफ़ी है कि वह सुनी सुनाई बातें करता फिरे।

राज़दारी की कमी

और औरतों में यह चीज़ बहुत आम हो गई कि एक के पास कोई राज़ हो अगरचे वह कैसा ही हो तो दूसरी को बताएगी और बताकर कहेगी कि देखना तुम्हें बता रही हूँ आगे किसी को न बताना फिर वह दूसरी औरत तीसरी को बताती है और कहती है देखो तुम्हें बता रही हूँ किसी और को न बताना और यूँ एक एक करके यह बात बताती रहती हैं हत्ता कि वह हर ग़लत सही की ज़बान पर आ जाती है। खुला राज़ बन जाता है। हर औरत दूसरी को कह रही होती है मैं तुम्हें बता रही हूँ आगे न बताना और यह बुरी आदत है जिसकी वजह से इन्सान अल्लाह तआला के यहाँ बुरा बन जाता है। हमें चाहिए कि हम लोगों के अन्दर ऐसी बुराई कोई भी न ढूंढें जो हमारे अपने अन्दर मौजूद हो। हमें बुराई ढूँढनी है तो अपने मन में झांकर देखें, अपने नफ़्स पर नज़र डालकर देखें पता नहीं क्या क्या गुनाह नज़र आ जाएंगे, क्या क्या ख़ताएं नज़र आ

जाएंगी, क्या क्या बुराईयाँ नज़र आ जाएंगी। हमें बाहर की क्या पड़ी है। इसीलिए किसी ने कहा—

तुझ को पराई क्या पड़ी अपनी नबेड़ तू

हमारा अपना काम बिगड़ा पड़ा है। अन्दर घर में चिराग़ बुझ चुके हैं, दिल की बस्ती में स्याही आ चुकी है, अन्दर गुनाहों की ज़ुल्मत ने दिल को स्याह कर दिया है, अन्दर गुनाहों की बदूब आ रही है और हम दूसरों पर निगाह उठाएं फिरते हैं। कितनी अजीब बात है। आज इन्सान की गर्दन तनी रहती है, उसकी आँखें खुली रहती हैं, दूसरों के चेहरों पर पड़ रहती हैं, वे दूसरों के ऐब टटोलते फिरते हैं। ऐ काश! यह गर्दन झुक जाती, ये आँखें बन्द हो जातीं, ये निगाहें अपने सीने पर पड़तीं कि मेरे अन्दर क्या ऐब हैं। यही हम बैठकर थोड़ी देर मुराक़बा कर लेते तो अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हम से राज़ी हो जाते लिहाज़ा दूसरों की बुराई ढूंढने के बजाए अपनी बुराईयों पर नज़र रखनी चाहिए तो एक तो यह चीज़ ऐसी है जो इन्सान की गुमराही के लिए काफ़ी है कि वह दूसरों के अन्दर ऐसी बुराई ढूंढे जो अपने अन्दर मौजूद हो।

2. और दूसरा फ़रमाते थे कि लोगों के अन्दर वह ऐब ढूंढना जो अपने अन्दर मौजूद हो। यह उसकी गुमराही के लिए काफ़ी होता है।

3. और तीसरी चीज़ फ़रमाते थे कि अल्लाह के बन्दों को बिला वजह तकलीफ़ पहुँचाना तो यह चीज़ गुमराही के लिए काफ़ी है। अल्लाह हमें इससे महफ़ूज़ फ़रमाए कि हम

किसी का दिल दुखाएं। इसलिए कि बीमारियों में सबसे बुरी बीमारी दिल की बीमारी होती है और दिल की बीमारियों में सबसे बुरी बीमारी दिल की आज़ारी होती है। हम किसी की दिल आज़ारी न करें। इसलिए आज हम दूसरों का दिल दुखाएंगे कल क़यामत के दिन ऐसा न हो कि हमारा भी दिल दुखाया जाए। अल्लाह तआला हमारी शक्ल देखना ही गवारा न करे। अल्लाह तआला हमें जहन्नम में उल्टा मुँह करके नीचे डलवा देंगे। इसलिए क़ुरआन मजीद में आता है,

﴿ويل كل همزة لمزة.﴾

जो दूसरों के ऐब ढूंढने वाला और दूसरों के ऐब लोगों में ब्यान करने वाला होता है उसको अल्लाह तआला जहन्नम के अन्दर आग के बने हुए सुतूनों के साथ बंधवा देंगे और फिर आग के अंगारे होंगे जो उठेंगे और इन्सान के दिल पर जाकर लगेंगे,

﴿نار الله الموقدة التى تطلع على الافئدة,﴾

मुफ़स्सिरीन ने लिखा है कि यह अंगारे उसके दिल पर क्यों पड़ेंगे? इसलिए कि इसने दुनिया में लोगों के दिल दुखाए थे। आज उसके दिल को जहन्नम की आग से जलाया जाएगा, आज अगर कोई औरत दूसरे का दिल अगर बातों से जला रही है तो फिर याद रखना वह मालिकुल-मुल्क एक दिन तेरे दिल को जहन्नम की आग से जलाएंगे तो उस दिन से डरना चाहिए ऐसा न हो कि उस दिन अल्लाह तआला के सामने शर्मिंदगी

बर्दाश्त करनी पड़े। अल्लाह वाले तो जानवरों को भी दुख नहीं पहुँचाते, इन्सान तो फिर इन्सान है।

नेक अमल ज़ाए हो गए

हदीस पाक में आता है कि बनी इसराईल की एक इबादत गुज़ार औरत थी। उसने एक बिल्ली को बाँध लिया था, भूखा प्यासा रखा, बिल्ली मर गई। उसको भूखा प्यासा मारने पर अल्लाह तआला ने उसके सब नेक अमल ज़ाए कर दिया तो अगर एक बिल्ली को तकलीफ़ पहुँचाई जाए तो इन्सान के अमलों को ज़ाए कर दिया जाता है।

ज़ानिया की बख़्शिश

और अगर किसी जानवर का दिल खुश कर दिया जाए तो अल्लाह तआला बन्दे की नेकियाँ बढ़ा देते हैं। लिहाज़ा हदीस पाक में आता है कि बनी इसराईल की एक बदकार औरत थी, ज़ानिया औरत थी जिस पर जहन्नम वाजिब हो जाती है, जिसका रास्ता जहन्नम की तरफ़ जाता है, जिसकी तरफ़ अल्लाह तआला क़यामत के दिन रहमत की नज़र उठाकर नहीं देखेंगे, जिसके जिस्म से ऐसी बदबू आएगी कि जहन्नमी लोग भी इस बदबू से तंग हो जाएंगे, वह गंदी औरत बनी इसराईल की कहीं जा रही थी मगर उसने एक कुत्ते को देखा जो प्यास की शिद्दत से तड़प रहा था, क़रीब एक कुआँ था। उस औरत ने अपने दुपट्टे के एक तरफ़ अपने जूते को बाँधा जैसे बन्द

जूते होते हैं और उसके अन्दर पानी निकाला और कुत्ते के मुँह में डाला, चन्द बार ऐसा करने से जब कुत्ते की प्यास बुझ गई तो उसने खुशी में आकर आवाज़ निकाली। उसकी आवाज़ निकलते ही अल्लाह तआला इस बदकार औरत के लिए जन्नत का फ़ैसला कर दिया तो देखिए अगर हम जानवरों पर रहम खाएंग तो अल्लाह जन्नत अता फ़रमा देते हैं और इतने बड़े बड़े गुनाह माफ़ कर देते हैं अगर हम इन्सानों के दिल खुश करेंगे तो फिर अल्लाह तआला हमें किस क़द्र क़यामत के दिन इकराम अता फ़रमाएंगे। लिहाज़ा आज की इस महफ़िल में औरतें अपने दिल में यह अहद करें कि आज के बाद हम अपने शौहर का दिल खुश रखेंगी, आज के बाद हम अपने सास ससुर का दिल खुश रखेंगी, नन्दों का दिल खुश रखेंगी, अपने माँ-बाप के दिल को खुश रखेंगी, बहन-भाईयों के दिलों को खुश रखेंगी, मुसलमान औरतों के दिल खुश रखेंगी, अपने बच्चों के दिल खुश रखेंगी। आप उनके दिलों को खुश रखेंगी, ख़िदमत के ज़रिए से, क़यामत के दिल अल्लाह तआला आप के दिल को खुश कर देंगे, नूर के मेम्बरों पर बिठाएंगे और आपको जन्नत में आपके महल की मलिका बनाकर भेजेंगे। यही कामयाबी है। अल्लाह रब्बुलइज़्ज़त हमें दुनिया और आख़िरत की कामयाबी नसीब फ़रमाए।

﴿وآخر دعوانا ان الحمد لله رب العلمين.﴾

○ ○ ○